Dr. C.V. Raman University
Kargi Road, Kota, BILASPUR, (C. G.),
Ph. : +07753-253801, +07753-253872
E-mail : info@cvru.ac.in | Website : www.cvru.ac.in

Hindi Language aur Samvedena

Institute of **Open** and **Distance Education**

Faculty of Management

Hindi Language aur Samvedena

3BBA1

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur
A STATUTORY UNIVERSITY UNDER SECTION 2(F) OF THE UGC ACT

3BBA1

हिन्दी भाषा एवं संवेदना

3BBA1, Hindi Language aur Samvedena

Edition: March 2024

Compiled, reviewed and edited by Subject Expert team of University

1. Dr. Radha Sharma

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

2. Dr. Pooja Yadav

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

3. Ms.Pragya Sharma

(Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University)

Warning:
All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Published by:

Dr. C.V. Raman University

Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.),

Ph. +07753-253801,07753-253872

E-mail: info@cvru.ac.in

Website: www.cvru.ac.in

अनुक्रमणिका

1. **आचरण की सभ्यता:** सरदार पूर्ण सिंह 1
2. **जवानी (काव्य):** श्री माखनलाल चतुर्वेदी 5
3. **विज्ञान :** परिभाषा, शाखाएँ, संक्षिप्त इतिहास 10
4. **सपनों की उड़ान :** ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 16
5. **प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कार और हमारा जीवन** 22
6. **त्रुटि संशोधन** 30
7. **शिरीष के फूल-निबंध :** आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी 39
8. **विकास का भारतीय मॉडल :** धर्मपाल 43
9. **निबंध लेखन की कला** 46
10. **संधि समासः संरचना और प्रकार** 58
11. **निराला: संस्मरण** – महादेवी वर्मा 69
12. **माण्डव (यात्रा वृत्तांत) :** पं. रामनारायण उपाध्याय 78
13. **हिन्दी भाषा का मानकीकरण** 83
14. **भारतीय कृषि** 90
15. **जीवन: उद्भव और विकास** 98
16. **जनजातीय जीवन** 101
17. **उसने कहा था (कहानी):** श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 108
18. **महाजनी सभ्यता (निबंध):** प्रेमचन्द्र 117
19. **मुहावरे और लोकोक्तियाँ** 125
20. **सौरमण्डल** 143
21. **ब्रम्हाण्ड और जीवन** 152
22. **शिकागो (व्याख्या) : स्वामी विवेकानन्द** 157
23. **संक्षिप्तियाँ** 162
24. **मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल** 166
25. **फिल्टर तो चाहिए ही :** डॉ. देवेन्द्र दीपक 177
26. **भारतीय वनस्पतियाँ और जीव** 181
27. **पर्यावरण** 185
28. **भोलाराम का जीवन (व्यंग्य) :** हरिशंकर परसाई 193
29. **आँगन का पंछी :** विद्यानिवास मिश्र 199

NOTES

1. आचरण की सभ्यता

सरदार पूर्णसिंह

'आचरण' से अभिप्राय उस क्रियाकलाप और मनोवृत्ति से है, जो हम अपने प्रति अपनाते हैं और 'व्यवहार' वह है, जो हम दूसरे व्यक्ति के प्रति करते हैं। यदि हम अपने कर्त्तव्य का पालन उचित ढंग से कर रहे हैं- तो हम श्रेष्ठ आचरण कर रहे हैं। निबंधकार ने विभिन्न उद्धरणों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि श्रेष्ठ आचरण ही सबसे बड़ी सभ्यता है। अपने आचरण को श्रेष्ठ, सुंदर और दूसरों के लिए अनुकरणीय बनाना होगा। हमें श्रेष्ठ आचरण की प्राप्ति के लिए प्रकृति की गोद में ही रहना होगा।

निबंध सारांश :- विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजत्व से भी आचरण की सभ्यता अधिक ज्योतिष्मती है। आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल आदमी राजाओं के दिलों पर भी अपना प्रभुत्व जमा सकता है। आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है। इस भाषा का निघण्टु शुद्ध श्वेत पत्रोंवाला है। मृदु वचनों की मिठास के आचरण की सभ्यता मौन रूप से खुली हुई है। नम्रता, दया, प्रेम और उदारता सब-के-सब सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान हैं। मनुष्य के जीवन पर मौन व्याख्यापन का प्रभाव चिरस्थायी होता है। आत्म आचरण की उपस्थिति से मन और हृदय की ऋतु बदल जाती है। तीक्ष्ण गर्मी से जले-भुने व्यक्ति आचरण के काले बादलों की बूँदा-बाँदी से शीतल हो जाते है। मानसोत्पन्न शरद् ऋतु, क्लेशातुर हुए पुरूष इसकी सुगंधमय अटल बसंत ऋतु के आंनद का पान करते हैं। आचरण के मौन व्याख्यान से मनुष्य को एक नया जीवन प्राप्त होता है: नए-नए विचार प्रकट होने लगते हैं। सूखे काष्ठ सचमुच ही हरे हो जाते हैं। सूखे कूपों में जल भर आता है। नए नेत्र मिलते हैं। सूर्य, जल, वायु, पुष्प, पत्थर, घास-पात, नर-नारी और बालक तक में एक अश्रुतपूर्व सुंदर मूर्ति के दर्शन होने लगते है। मौनरूपी व्याख्यान के सामने क्या मातृभाषा, क्या साहित्यभाषा और क्या अन्य देश की भाषा सब-की-सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। कोई भाषा दिव्य नहीं केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है। मौन व्याख्यान आपके हृदय की नाड़ी-नाड़ी में सुंदरता को पिरो देता हैं। प्रेम की भाषा शब्द रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द रहित है। जीवन का तत्त्व भी शब्द से परे है। जीवन के अरण्य में धँसे हुए पुरूष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है। आचरण भी हिमालय की तरह एक ऊँचे कलशवाला मंदिर है। यह वह आम का पेड़ नहीं, जिसको मदारी एक क्षण में, तुम्हारी आँखों में मिट्टी डालकर अपनी हथेली पर जमा दे। इसके बनने में अनंत काल लगे है। परन्तु अभी तक आचरण के सुंदर रूप के पूर्ण दर्शन नहीं हुए। कहीं-कहीं उसकी अत्यन्त सुन्दर छटा दिखाई देती है।

आचरण प्राप्ति की इच्छा रखनेवाले को तर्क-वितर्क से कुछ भी सहायता नहीं मिलती। शब्द और वाणी तो साधारण जीवन के चोचले हैं। यहाँ इनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। ईश्वर तो सदा मौन है। ईश्वरी मौन शब्द और भाषा का विषय नहीं। यह केवल आचरण के कान में गुरू-मंत्र फूँक सकता है। यह केवल ऋषि के दिल में वेद का ज्ञानोदय कर सकता है।

पुष्प की कोमल पंखुड़ी के स्पर्श से किसी को रोमांच हो जाए, जल की शीतलता से क्रोध और विषय-वासना शांत हो जाए, बर्फ के दर्शन से पवित्रता आ जाए, सूर्य की ज्योति से नेत्र खुल जाएँ-परन्तु अँग्रेजी भाषा का व्याख्यान-चाहे वह कारलायल का ही लिखा हुआ क्यों न हो-बनारस में पण्डितों के लिए रामरोला ही है। इसी तरह न्याय और व्याकरण की बारीकियों के विषय में पण्डितों के द्वारा की गई चर्चाऐं और शास्त्रार्थ संस्कृत ज्ञान-हीन पुरूषों के लिए स्टीम इंजन के फुस-फुस शब्द से अधिक अर्थ नहीं रखते।

साधारण उपदेश तो हर गिरजे, हर मंदिर और हर मस्जिद में होते है, परन्तु उनका प्रभाव तभी हम पर पड़ता है जब गिरजे का पादरी स्वयं ईसा होता है-मंदिर का पुजारी स्वंय ब्रह्मर्षि होता है मस्जिद का मुल्ला स्वयं पैगम्बर और रसूल होता है। प्रेम का आचरण, दया का आचरण-क्या पशु क्या मनुष्य-जगत के सभी चराचर आप-ही-आप समझ लेते है। जगत् भर के बच्चों की भाषा इस भाष्यहीन भाषा चिन्ह के इस शुद्ध मौन का नाद और हास्य भी सभी देशों में एक ही सा पाया जाता है।

मनुष्य का जीवन इतना विशाल है कि उसके आचरण को रूप देने के लिए नाना प्रकार के ऊँच-नीच और भले-बुरे विचार, अमीरी और गरीबी, उन्नति और अवनति इत्यादि सहायता पहुँचाते हैं। पवित्र-अपवित्र उतनी ही बलवती है, जितनी कि पवित्र-पवित्रता। अन्तरात्मा वही काम करती है जो बाह्य पदार्थों के संयोग

का प्रतिबिम्ब होता है। जिनको हम पवित्रात्मा कहते हैं, क्या पता है, किन-किन कूपों से निकलकर वे अब उदय को प्राप्त हुए है। जिनको हम धर्मात्मा कहते हैं, क्या पता है, किन-किन अधर्मों को करके वे धर्म ज्ञान को पा सके हैं। जिनको हम सभ्य कहते हैं और जो अपने जीवन में पवित्रता को ही सब कुछ समझते हैं, क्या पता है, वे कुछ काल पूर्व बुरी और अधर्म पवित्रता में लिप्त रहे हों। अपने जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों से भरी हुई अन्धकारमय कोठरी से निकलकर ज्योति और स्वच्छ वायु से परिपूर्ण खुले हुए देश में जब तक अपना आचरण अपने नेत्र न खोल चुका हो, तब तक धर्म के गूढ़ तत्व कैसे समझ में आ सकते हैं।

कोई भी सम्प्रदाय आचरण रहित पुरूषों के लिये कल्याणकारक नहीं हो सकता और आचरण वाले पुरूषों के लिए सभी धर्म, सम्प्रदाय कल्याणकारक हैं। सच्चा साधु धर्म को गौरव देता है, धर्म किसी को गौरवान्वित नहीं करता। आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश है। आचरण के विकास के लिए जितने कर्म हैं उन सबको आचरण के संघटनकर्ता को धर्म का अंग मानना पड़ेगा। चाहे कोई कितना ही बड़ा महात्मा क्यों न हो, वह निश्चयपूर्वक यह नहीं कह सकता कि यों ही करों और किसी प्रकार नहीं। आचरण की सभ्यता की प्राप्ति के लिए वह सबको एक पथ नहीं बता सकता। आचरणशील महात्मा स्वयं भी किसी अन्य के बनाए हुए रास्ते पर चलकर अपने आचरण को आदर्श के ढाँचे में नही ढाल सकता। हर किसी को अपने देश, कालानुसार राम प्राप्ति के लिए अपनी नैया आप ही बनानी पड़ेगी और आप ही चलानी भी पड़ेगी।

न मैं गिरजे में जाता हूँ और न किसी मंदिर में, न मैं नमाज पढ़ता हूँ और न रोजा ही रखता हूँ, न संध्या ही करता हूँ और न कोई देव-पूजा ही करता और न किसी आचार्य के नाम का मुझे पता है और न किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया है। मैं तो अपनी खेती करता हूॅ अपने हल और बैलों को प्रात: काल उठकर प्रणाम करता हूँ, मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पत्तियों की संगीत से गुजरता है। आकाश के बादलों को देखते मेरा दिन निकलता है। मैं किसी को धोखा नहीं देता, हाँ यदि मुझे कोई धोखा दे तो उससे मेरी कोई हानि नहीं।

हाथ-पाँव मेरे बलवान हैं, शरीर मेरा अरोग्य है, भूख खूब लगती है, बाजरा और मकई, छाछ और दही, दूध और मक्खन मुझे और बच्चों को खाने के लिए मिल जाता है। क्या इस किसान की सादगी और सच्चाई में वह मिठास नहीं, जिसकी प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न धर्म, सम्प्रदाय लंबी-चौड़ी और चिकनी-चुपड़ी बातों द्वारा दीक्षा दिया करते हैं। जब साहित्य, संगीत और कला की अति ने रोम को घोड़े से उतारकर मखमल के गद्दों पर लिटा दिया-जब आलस्य और विषयविकार की लम्पटता ने जंगल और पहाड़ की साफ हवा के असभ्य और उद्दण्ड जीवन से रोमवालों का मुख मोड़ दिया, तब रोम नरम तकियों और बिस्तरों पर ऐसा सोया कि अब तक न आप जागा और न और न कोई जगा सका। लोग कहते हैं, केवल धर्म ही जाति की उन्नति करता है। यह ठीक है, परन्तु यह धर्मांकुर जो जाति को उन्नत करता है। इस असभ्य, कमीने पापमय जीवन की गंदी राख के ढेर के ऊपर नहीं उगता है। मन्दिरों और गिरजों की मन्द-मन्द टिमटिमाती हुई मोमबत्तियों की रोशनी से यूरोप इस उच्चावस्था को नही पहुँचा।

उसका विशाल जीवन समुद्र की छाती पर मूँग दलकर और पहाड़ों को फाँदकर उनको उस महानता की ओर ले गया और ले जा रहा है। धर्म और आध्यात्मिक विद्या के पौधे को ऐसी आरोग्यवर्द्धक भूमि देने के लिए, जिसमें वह प्रकाश और वायु में सदा खिलता रहे, सदा फूलता रहे, सदा फलता रहे, यह आवश्यक है कि बहुत से हाथ एक अनन्त प्रकृति के ढेर को एकत्र करते रहें। धर्म की रक्षा के लिए क्षत्रियों को सदा ही कमर बाँधे हुए सिपाही बने रहने का भी तो यही अर्थ है।

हिन्दुओं का सम्बन्ध यदि किसी प्राचीन असभ्य जाति के साथ रहा होता तो उनके वर्तमान वशं में अधिक बलवान श्रेणी के मनुष्य होते-तो उनमें भी ऋषि, पराक्रमी, जनरल और धीर-वीर पुरूष उत्पन्न होते, आजकल तो वे उपनिषदों के ऋषियों के पवित्रतामय प्रेम के जीवन को जीवन को देख-देखकर अंहकार में मग्न हो रहे हैं और दिन-पर-दिन अधोगति की ओर जा रहे हैं। यदि वे किसी जंगली जाति की संतान होते तो उनमें भी ऋषि और बलवान योद्धा होते ऋषियों को पैदा करने के योग्य पृथ्वी का बन जाना तो आसान है, परन्तु ऋषियों को अपनी उन्नति के लिए राख और पृथ्वी बनाना कठिन है, क्योंकि ऋषि तो केवल अंत:प्रकृति पर सजते हैं, हमारी जैसी पुष्प शय्या पर मुरझा जाते हैं।

हमारे ऋषियों के जीवन के फूल की शय्या पर आजकल असभ्यता का रंग चढ़ा हुआ है। सदा ऋषि पैदा करते रहना, अर्थात् अपनी ऊँची चोटी के ऊपर इन फूलों को सदा धारण करते रहना ही जीवन के नियमों का पालन करना है। धर्म के आचरण की प्राप्ति यदि ऊपरी आडम्बरों से होती तो आजकल भारत के निवासी सूर्य के समान शुद्ध आचरणवाले हो जाते। माला से तो जप नहीं होता। गंगा नहाने से तो तप नहीं होता। पहाड़ों पर चढ़ने से प्राणायाम हुआ करता है, समुद्र में तैरने से नेती धुलती है। आँधी, पानी और साधारण जीवन के

ऊँच-नीच गर्मी, सर्दी, गरीबी-अमीरी को झेलने से तप हुआ करता है। आध्यात्मिक धर्म के स्वप्नों की शोभा तभी भली लगती है जब आदमी अपने जीवन में का धर्म पालन करे।

भूखे को तो चन्द्र और सूर्य भी केवल आटे की बड़ी-बड़ी दो रोटियों से प्रतीत होते है। कुटिया में ही बैठकर धूप, आँधी और बर्फ की दिव्य शोभा का आनंद आ सकता है। प्राकृतिक सभ्यता के आने पर ही मानसिक सभ्यता आती है और तभी वह स्थिर भी रह सकती है। मानसिक सभ्यता के होने पर ही आचरण सभ्यता की प्राप्ति सम्भव है और तभी वह स्थिर भी हो सकती है। आचरण ही सभ्यता का देश ही निराला है। उसमें न शारीरिक झगड़े हैं, न मानसिक, न आध्यात्मिक। न उसमें विद्रोह है, न जग ही का नामोंनिशान है और न वहाँ कोई ऊँचा है, न नीचा। न कोई वहाँ धनवान है और न कोई वहाँ निर्धन। वहाँ प्रकृति का नाम नहीं, वहाँ तो प्रेम और एकता का अखण्ड राज्य रहता है।

लेखक परिचय

जीवन परिचय – सरदार पूर्णसिंह का जन्म पश्चिम सीमाप्रांत (अब पाकिस्तान में) के हजारा जिले के मुख्य नगर एबटाबाद के समीप सलहद ग्राम में 17 फरवरी 1881 को हुआ। पिता सरदार करतार सिंह भागर सरकारी कर्मचारी थे। पूर्णसिंह अपने माता पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। पूर्णसिंह की प्रारम्भिक शिक्षा तहसील हवेलियाँ में हुई। 1900 को वे टोकियो विश्वविद्यालय (जापान) के फैकल्टी ऑफ मेडिसिन में औषधि निर्माण संबंधी रसायन का अध्ययन करने के लिये 'विशेष छात्र' के रूप में प्रविष्ट हुए और वहाँ उन्होंने पूरे तीन वर्ष तक अध्ययन किया। सितंबर, 1903 में भारत लौटने पर कलकत्ता में उस समय के ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भाषण देने के अपराध में वे बंदी बना लिए गए किंतु बाद में मुक्त कर दिए गए।

एबटाबाद में कुछ समय बिताने के बाद वे लाहौर चले गए। यहाँ उन्होंने विशेष प्रकार के तेलों का उत्पादन आरम्भ किया, किंतु साझा निभ नहीं सका। तब वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मायादेवी के साथ मसूरी चले गए और वहाँ से स्वामी रामतीर्थ से मिलने टिहरी गढ़वाल में वशिष्ठ आश्रम गए। प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल और डॉक्टर खुदादाद से मित्रता हुई जो उत्तरोत्तर घनिष्ठता में परिवर्तित होती गई तथा जीवनपर्यंत स्थायी रही।

स्वामी रामतीर्थ के साथ उनकी अंतिम भेंट जुलाई 1906 में हुई थी। नवंबर, 1930 में वे बीमार पड़े। रोग ने असाध्य तपेदिक का रूप धारण कर लिया और मार्च 31, 1931 को देहरादून में उनका शरीरांत हो गया।

कृतियाँ – सरदारपूर्णसिंह ने अपने प्रारम्भिक जीवन में ही उर्दू, पंजाबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनकी भाषा में सर्वत्र विशेष प्रकार का प्रवाह लक्षित होता है। उनकी सबसे अधिक रचनाएँ अंग्रेजी में हैं। हिंदी में लिखे पूर्णसिंह के केवल छह निबंध ही मिलते हैं। वे हैं: सच्ची वीरता, कन्यादान, पवित्रता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम और अमरीका का मस्ताना योगी वाल्ट व्हिटमैन। ये निबंध सरस्वती में प्रकाशित हुए थे और इनके कारण ही सरदार पूर्णसिंह ने हिंदी के निबंधकारों में अपना विशेष स्थान बना लिया था।

शब्दार्थ

आचरण = मनोवृत्ति, व्यवहार। सभ्यता = शिष्टता । ज्योतिष्मती = ज्योतिर्मयी, प्रकाश युक्त। निघण्टु = संस्कृत शब्दकोश। मानसोत्पन्न = मानस + उत्पन्न, मन से उत्पन्न। क्लेशातुर = दुःख से व्याकुल। नाद = ध्वनि। अर्थवती = अर्थवाली,सार्थक। अश्रुतपूर्व = जो पहले न सुना गया हो। अरण्य = जंगल। जन्मष्णु = उन्माद युक्त। राजा राममोहन राय के बाद ब्रह्म समाज का प्रभाव बढ़ाया। देवेन्द्रनाथ ठाकुर = अंजील = ईसाइयों का धर्मग्रन्थ। कारलायल = प्रसिद्ध अँग्रेजी ऐतिहासिक निबंधकार। रामरोला = व्यर्थ शोरगुल। रसूल = ईश्वर का दूत। सम्भूत = उत्पन्न। महाप्रभु चैतन्य = चैतन्य मत प्रवर्त्तक। रेडियम = एक प्रकाशमय धातु। नेती = हठयोग की एक विशेष क्रिया, जिसमें पेट में कपड़े की एक पतली पट्टी डालकर सफाई की जाती है। त्रिपिटक = बौद्ध धर्म ग्रन्थ जिसके विनय, सत्तु एवं अभिधम्म तीन भाग हैं। शास्त्रार्थ = शास्त्रों पर चर्चा, शास्त्र का अर्थ।

NOTES

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. धर्म के आचरण से क्या तात्पर्य है?
2. आचरण एवं व्यवहार से क्या अभिप्राय है?
3. ''आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है,'' इस कथन की व्याख्या कीजिए?
4. ''शब्द और वाणी तो साधारण जीवन के चोचले हैं'' स्पष्ट कीजिए?
5. आचरण का विकास जीवन का परमोद्देश्य है, इस कथन के बारे में विस्तार से लिखिए?
6. 'आचरण की सभ्यता' निबंध का सारांश लिखिए?
7. सभ्याचरण की भाषा के मौन व्याख्यान क्या हैं? विस्तार से बताइए?
8. मनुष्य का सच्चा अर्थ क्या है?
9. ''आचरण की सभ्यता का देश निराला है'' स्पष्ट कीजिए?
10. ''आचरण के नेत्र के एक अश्रु से जगत भर के नेत्र भीग जाते है,'' स्पष्ट कीजिए?
11. लेखक सरदार पूर्णसिंह का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आचरण की सभ्यता के लेखक कौन है।
   i. आचार्य द्विवेदी　　ii. महावीर द्विवेदी
   iii. सरदार पूर्णसिंह　　iv. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
2. आचरण की............. भाषा ही..............है।
   i. मौन, ईश्वरीय　　ii. मुखर, ईश्वरीय
   iii. मौन, सार्थक　　iv. सार्थक, मुखर
3. जीवन का तत्व..........से परे है।
   i. श्वास　　ii. वाद　　iii. शब्द　　iv. मौन
4. सच्चा साधु............को गौरव देता है।
   i. कर्म　　ii. धर्म　　iii. कार्य　　iv. सेवा
5. संसार की खाक छानकर आचरण का...........हाथ जाता है।
   i. हीरा　　ii. रत्न　　iii. मोती　　iv. स्वर्ण
6. प्राकृतिक सभ्यता आने पर ही...........सभ्यता आती है।
   i. मानसिक　　ii. सात्विक　　iii. कायिक　　iv. धार्मिक
7. आचरण की सभ्यता के मौन व्याख्यान है।
   i. दया व नम्रता　　ii. उदारता　　iii. प्रेम　　iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर= 1.(iii) 2.(i) 3.(iii) 4.(ii) 5.(iv) 6.(i) 7.(iv)

■ ■ ■

NOTES

2. जवानी (हिमकिरीटिनी से)

माखनलाल चतुर्वेदी

प्राण अंतर में लिए, पागल जवानी!
कौन कहता है कि तू विधवा हुई, खो आज पानी?
चल रही घड़ियाँ, चलें नभ के सितारें,
चल रही नदियाँ, चले हिमखण्ड प्यारें:
चल रही है साँस, फिर तू ठहर जाए?
दो सदी पीछे कि तेरी लहर आए?
पहन ले नर - मुंड - माला स्वमुंड सुमेरू कर ले:
भूमि - सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ है, उठ री जवानी।
द्वार बलि का खोल चल, भूडोल कर दे,
एक हिम -गिरि एक सिर का मोल कर दे,
मसल कर, अपने इरादों - सी उठाकर,
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दे?
रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी!
जाँचकर, तू सीस दे - देकर जवानी?
वह कली के गर्भ से, फल - रूप में, अरमान आया!
देख तो मीठा इरादा, किस तरह, सिर तान आया
डालियों ने भूमि रूख लटका दिए फल,
देख आली मस्तकों को दे रही संकेत कैसे,
वृक्ष - डाली!
फल दिए? या सिर दिए?
तरू की कहानी -
गूँथ कर युग में, बताती चल जवानी!

श्वान के सिर हो - चरण तो चाटता है।
भोंक ले - क्या सिंह को वह डाँटता है?
रोटियाँ खाई कि साहस खो चुका है,
प्राणि हो, पर प्राण से वह जा चुका है।
तुम न खेलो ग्राम - सिंहों में भवानी!
विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी।
ये न मग है, तब चरण की रेखियाँ है,

NOTES

बलि दिशा की अमर देखा - देखियाँ है।
विश्व पर, मद से लिखे कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थो की दिशा की मेख हैं ये।
प्राण - रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी।
विश्व है असि का? - नही संकल्प का है:
हर प्रलय का कोण काया - कल्प का है:
फूल गिरते, शूल सिर ऊँचा किए है:
रसों के अभिमान को नीरस किए है!
खून हो जाए न तेरा देख, पानी,
मरण का त्यौहार, जीवन की जवानी।

सारांश

यह कविता राष्ट्रीय कवि पं. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य - संग्रह 'हिकिरीटिनी' से ली गई है। कवि ने इस कवतिा के माध्यम से युवाओं में जोश एंव उत्साह के साथ ही उनमें जागृति लाने का प्रयास किया हैं। कवि देश की युवा पीढ़ी को 'जवानी' के सम्बोधन से सम्बोधित करते हुए कहता है कि - हे जवानी! तेरे अन्तस यानी हृदय में जीवन की लालसा है, जीने का उत्साह है। अत: कौन कहता है तू अपनी प्रतिष्ठा खोकर आज विधवा हो गई है अर्थात् अनाथ हो गई है। जब संसार गतिमान है, प्रकृति भी अपनी गति से चल रही है, समय चल रहा है, आकाश के सितारे चल रहे है, नदियाँ तथा हिमखण्ड चल रहे है, साँस चल रही है, तो फिर तू क्यों रूके, तू भी आगे बढ़। दो सदी पीछे अर्थात् दो सौ वर्ष पहले लहर में तू क्यों पीछे जाए? अर्थात तू भी आगे बढ़, नई सदी में प्रवेश कर और नये युग का निमार्ण कर।

कवि देश के युवा को कहता है कि राष्ट्र के निमित्त बलिदान के लिए तू तैयार हो जा। इसके लिए बलिदान की प्रतीक नरमुंडों की माला धारण करने तथा स्वंय के मुंड को भी उसमें सुमेरू की जगह पिरोने का कवि ने कहा है। हे युवा! तू आगे आ और अन्य बहुत से लोगो को भी अपने साथ लेकर, तू उनका नेतृत्व कर। जिस तरह धरती अपने हरे - पीले रंग के खेतों से धानी रंग की दिखती है अर्थात् हरी - भरी लगती है। उसी प्रकार तू भी धानी वेशभूषा धारण कर बता दे कि तु भी समृद्ध तथा सम्पन्न है। उठ, जीवन तेरे साथ है, तो तू क्यों निर्जीव सा बैठा है। हे जवानों (युवा)! तू बलि का द्वार खोल अर्थात् त्याग एवं बलिदान की राह दिखा। लेकिन तुझे ही यह भी बताना होगा कि एक - एक मस्तक का मूल्य एक - एक हिमालय के बराबर है। अत: याद रख यह बलिदान व्यर्थ न जाये। जिस प्रकार हिमालय कभी झुक नहीं सकता, वैसे ही यह मस्तक भी नहीं झुक सकते। अपनी इच्छा की तरह इस पृथ्वी को उठाकर, अपनी दोनो हथेलियों से मसलकर गोल कर दे। हे जवानी! तू इस बात को अच्छी तरह जाँच- परख ले कि तेरी नसों में खून बह रहा है या साधारण पानी, क्योंकि खून ही जीवन एवं सशक्तता का प्रतीक है: पानी तो कायरता को बतलाता है। तू अपने मस्तकों का बलिदान देकर इसे जाँच परख ले।

कवि, 'जवानी' को वृक्ष के रूपक द्वारा सम्बोधित करते हुए कहता है कि इस कहानी को तू वर्तमान में अपने में गूँथकर जमाने को बता दे। जिस तरह वृक्ष में पहले कली खिलती है, जिससे फलस्वरूपी इच्छा जाग्रत होती है। फिर वृक्ष पर जब फल आते है तो वह गर्व से तन जाता है, किन्तु अपनी डालियाँ झुकाकर वह वृक्ष फल को धरती की ओर लटका देता है। उसी तरह हे जवानी (युवा पीढ़ी)! तू भी अपने गौरवमय मस्तक को मातृभूमि की वन्दना में झुका दे तथा जरूरत पड़ने पर उसका बलिदान भी कर दे।

कवि यहाँ कुत्ते की चारित्रिक विशेषताएँ बताते हुए तथा उसे प्रतीक स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहता है कि जिस प्रकार कुत्ता भी मस्तक रखता है, पर उसे पैर चाटने अर्थात् चापलुसी करने की आदत होती है। वह भौंकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि वह शेर को डाँट सकता है। वह (कुत्ता) भी भोजन करता है, जीवधारी है, पर वह साहस खोकर निर्जीव - सा हो जाता है, कायर है। अत: कवि युवाओं से कहता

है कि – हे मस्तानी जवानी ! तुझ पर विश्व को अभिमान है, तू इन गाँव के शेरों (कुत्तों) से मत खेल। इसमें तो तेरा अपमान है। तू तो विश्व का गौरव है। अत: तुझे स्वाभिमानपूर्वक जीना चाहिए।

कवि, युवाओं का हौंसला बढ़ाते हुए उन्हें कहता है कि यह जो मार्ग है, यह मार्ग नहीं वरन् तेरे कदमों के निशानों से बनी पगडण्डी है, जो बताती है कि यह शक्तिशाली दिशाओं की अनुवृत्ति है, जो अमर है। आने वाला समय इसी पर चलेगा। कहने का आशय यही है कि युवाओं ने जो सशक्त मार्ग प्रशस्त किया है, वही भावी नागरिकों का मार्गदर्शन करेगा। ये पदचिन्ह तुम्हारे क्रियाकलापों के रूप में विश्व पर अंकित हो गए है। धरती पर जो पवित्र तीर्थस्थान है, उनके ये निशान हैं। जवानी ! उठ, सावधान हो जा और तत्परता से तू अपने प्राणों की रेखा खींचकर इस राह को जगमगाा दे, ताकि यह अन्य लोगों के लिए पथ – प्रदर्शक बन सके।

कवि आगे बदलते युग का जिक्र करते हुए कहता है – हे जवानी (यानी युवा) ! तू पहचान ले कि यह समय तलवार चलाने का नही, बल्कि दृढ़ संकल्प लेने का है। केवल बहादुरी या तलवार से काम नही चलेगा। अब तो दृढ़ इच्छाशक्ति से यह देख कि प्रत्येक बदलाव, पूर्ण रूप से तथा हर तरह का बदलाव चाहता है। जब – जब युग परिवर्तित होता है तो कहा जाता है कि प्रलय हुआ है तथा उसमें सभी पुरानी बातें डूब कर नष्ट हो जाती है, तथा फिर से नवयुग की शुरूआत होती है। आज का युवा भी संक्रान्तिकाल में खड़ा है। वह देख रहा है कि अच्छी वस्तुओं – सद्‌गुणों वाले फूल जैसे मानव तो गिर रहे है, लेकिन काँटों की तरह नुकसान पहुँचाने वाले लोगों का मस्तक उनके दुष्कर्मो के बाद भी ऊपर उठा हुआ है। अत: युवाओं के लिए आवश्यक है कि ऐसे लोग – जो काँटों के समान सिर उठाकर उत्पात मचा रहे है, उनका दमन कर दें और उन फूलों को गिरने से पहले ही सहारा दें, जो आने वाले समय में अपना यश फैलायेंगे। हे युवा ! तेरी नसों में जो रक्त प्रवाहित हो रहा है – वह वीरता तथा साहस का प्रतीक है। अत: तू समय रहते सचेत हो जा। तुझे आज मौत से भी भय नहीं खाना है।

लेखक परिचय

जीवन परिचय –माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल 1889–30 जनवरी 1968) भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक स्थान पर हुआ था। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के सम्पादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी को आव्हान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रमी थे और 1921–22 के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए वे जेल भी गए। आपकी कविताओं में देशप्रेम के साथ – साथ प्रकृति और प्रेम का भी सुंदर चित्रण हुआ है।

इनके महान कृतित्व के तीन आयाम हैं: –

1. पत्रकारिता– 'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' का सम्पादन।
2. माखनलालजी की कविताएँ, निबंध, नाटक और कहानी।
3. माखनलालजी के अभिभाषण/ व्याख्यान।

पुरस्कार व सम्मान – 1943 में उस समय का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। 1954 में साहित्य अकादमी पुरस्कारों की स्थापना होने पर हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम पुरस्कार दादा को 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता इस महाकवि के कृतित्व को सागर विश्वविद्यालय ने 1959 में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया। 1963 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। 10 सितंबर 1967 को राष्ट्रभाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलालजी ने यह अलंकरण लौटा दिया। भोपाल का माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है।

प्रकाशित कृतियाँ – हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पांव, अमीर इरादे: गरीब इरादे आदि आपकी प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ हैं।

NOTES

शब्दार्थ:

असि = तलवार, श्वान = कुत्ता, बाना = पहरावा, अभिमान = गर्व, तरू = वृक्ष, पेड़

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. 'विश्व है असि का' से क्या तात्पर्य है।
2. माखनलाल चतुर्वेदी की 5 रचनाओं के नाम लिखिए।
3. जवानी कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
4. माखनलाल चतुर्वेदी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
5. जवानी कविता की चार पंक्तियाँ लिखिए।
6. जवानी कविता के माध्यम से युवाओं को क्या प्रेरणा मिलती है।
7. कविता में 'श्वान तथा सिंह' का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

1. पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी सामान्यत: किस श्रेणी के कवि माने जाते है।

   i. देशभक्ति एवं ओजस्वी ii. सौन्दर्य प्रेमी

   iii. हास्य व्यंग्य iv. इनमें से कोई भी नही

2. 'विश्व है असि का? नही संकल्प का' में 'असि' शब्द से आशय है।

   i. मनुष्य ii. जवानी

   iii. तलवार iv. कुत्ता

3. ''जवानी'' कविता लिखी है।

   i. दिनकर ने ii. पन्त ने

   iii. निराला ने iv. माखनलाल चतुर्वेदी ने

4. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म हुआ।

   i. मध्यप्रदेश में ii. उत्तरप्रदेश में

   iii. आन्ध्रप्रदेश में iv. केरल में

5. प्रस्तुत कविता में 'श्वान' प्रतीक है।

   i. बहादुरी का ii. कायरता का

   iii. दोस्ती का iv. दुश्मनी का

6. 'जवानी' कविता में कवि जवानों से कौनसी माला पहनाने का आव्हान करता है।

   i. नरमुण्ड माला ii. पुष्प माला

   iii. हरिक माला iv. मोतियों की माला

7. 'जवानी' कविता है।

   i. शिशुओं के लिए ii. नभ के सितारों के लिए

   iii. युवाओं के लिए iv. उपर्युक्त सभी लिए

8. 'जवानी' कविता ली गई है।

i. हिमतरंगिनी ii. हिमकिरीटिनी से

iii. कृष्णार्जुन युद्ध से iv. अमीर इरादे से

9. युवाओं से कवि ने किस तरह का जीवन जीने को कहा है।

i. श्वान की तरह ii. सिंह की तरह

iii. मेमने की तरह iv. हाथी की तरह

उत्तर :- 1 (i), 2 (iii), 3 (iv), 4 (i), 5 (ii), 6 (i), 7 (iii), 8 (ii), 9 (ii)

■ ■ ■

NOTES

3. विज्ञानः परिभाषा, शाखाएँ, संक्षिप्त इतिहास

NOTES

आज हम अपने दैनिक जीवन में विज्ञान, वैज्ञानिकता तथा वैज्ञानिक युग जैसे शब्दों का प्रयोग बार - बार करते हैं, यद्यपि अधिकांश लोग इन शब्दों के वास्तविक अर्थ से बहुत कम परिचित है। इसमे कोई सन्देह नहीं है कि वर्तमान युग विज्ञान का युग है तथा हमारे जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नही है जो विज्ञान के प्रभाव से अछूता रह गया हो। इस दशा में यह समझना और अधिक आवश्यक हो जाता है कि विज्ञान क्या है?

विज्ञान की परिभाषा

अंग्रेजी भाषा का शब्द 'साइन्स' (Science) लैटिन भाषा के शब्द 'साइन्सिया' (Scientia)से बना है जिसका अर्थ 'ज्ञान' है। इसके बाद भी 'साइन्स' शब्द में कुछ विशेष अर्थो का समावेश है जिसे हम एक 'व्यवस्थित अथवा वर्गीकृत ज्ञान' कह सकते है। यदि हम विज्ञान शब्द का सन्धि विग्रह करें तो इसे 'वि + ज्ञान' के रूप में स्पष्ट किया जाएगा। 'वि' का अर्थ है, विशिष्ट। इस प्रकार विज्ञान वह ज्ञान है जिसे विशिष्ट तरीकें अथवा विधि से प्राप्त किया जाता है। इस आधार पर विज्ञान को परिभाषित करते हुए **चर्चमेन** एवं **एकॉफ** (Churchman & Ackoff)ने लिखा है, ''विज्ञान ज्ञान प्राप्त करने का व्यवस्थित तरीका है।'' **गुडे** तथा **हाट** ने इसे और संक्षिप्त रूप देते हुए कहा है कि ''विज्ञान का तात्पर्य व्यवस्थित ज्ञान के संचय से है।''

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसी तथ्य का सावधानीपूर्वक और क्रमबद्ध ढंग से किया जाने बाला प्रयोग तथा उसका विश्लेषण ही विज्ञान है। सामान्य रूप से ऐसा समझ लिया जाता है कि व्यवस्थित और वर्गीकृत ज्ञान ही विज्ञान है। कुछ सीमा तक ऐसी धारणा ठीक हो सकती है लेकिन केवल इसी के आधार पर विज्ञान की प्रकृति को नहीं समझा जा सकता। इसमें सन्देह नहीं है कि व्यवस्था और वर्गीकरण विज्ञान के लिए आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, जीव विज्ञान में प्राणियों को विभिन्न जातियों में वर्गीकृत किया जाता है जबकि राजनीतिशास्त्र में संविधान अथवा राज्य का एक वर्गीकरण प्रस्तुत करके उसे समझने का प्रयत्न किया जाता है। इसके बाद भी केवल व्यवस्था और वर्गीकरण से ही कोई विषय विज्ञान नहीं बन जाता। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय और टेलीफोन की सूचियों को हम वैज्ञानिक ग्रन्थ नहीं कह सकते। वास्तव में व्यवस्था तथा वर्गीकरण के अतिरिक्त विज्ञान में कुछ दूसरे लक्षणों का भी समावेश होता है। निम्नांकित विवेचन में इन लक्षणों की विवेचना से यह स्पष्ट हो जायेगाा कि विज्ञान अध्ययन की एक विशेष पद्धति है, यह कोई विशेष विषय नहीं है।

विज्ञान के लक्षण अथवा विशेषताएँ (Attributes or Characteristics of Science)

फ्रांसिस राय (Fransis Roy) ने विज्ञान की प्रकृति को इसके अनेक लक्षण अथवा विशेषताओं के द्वारा स्पष्ट किया है। यह लक्षण इस प्रकार है:-

1. **विज्ञान तथ्यों पर आधारित होता है** (Science is Factual) - विज्ञान में केवल यथार्थ तथ्यों का ही अध्ययन किया जाता है और इन्हीं के आधार पर सिद्धान्तों का निर्माण होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विज्ञान किसी तरह की कल्पना अथवा विश्वासों को महत्व नहीं देता। यह घटनाओं की सत्यता को तथ्यों के आधार पर ही प्रमाणित करता है।

2. **विज्ञान आनुभविक होता है** (Science is Empirical)- विज्ञान में जिन तथ्यों का अध्ययन किया जाता है वे अनुभव पर आाधारित होते हैं। मनुष्य अपने आस - पास की घटनाओं को देखकर अथवा किसी तथ्य को छूकर, स्वाद लेकर अथवा सूँघकर उसके बारे में विभिन्न अनुभव प्राप्त करता है। व्यक्ति को रसायन शास्त्र से सम्बन्धित तत्त्वों के गुणों की जानकारी इन्हीं आधारों पर प्राप्त होती है। इसीलिए रसायनशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान को हम 'विज्ञान' कहते है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विज्ञान अनुभवों पर आधारित प्रत्यक्ष और मूर्त घटनाओं से सम्बन्धित होता है।

3. **विज्ञान तार्किक है** (Science is Logical)-विज्ञान केवल अनूभव के आधार पर घटनाओं या तथ्यों का अवलोकन ही प्रस्तुत तहीं करता बल्कि वह तर्कसंगत आधारों पर एक विशेष घटना के घटित

होने के कारणों और उनके परिणामों की भी विवेचना करता है। उदाहरण के लिए, गैस से भरा गुब्बारा ऊपर उठता है, यह हमारा अनुभव है। इसका तर्क यह है कि चूँकि हाइड्रोजन गैस हवा से हल्की होती है,अत: गुब्बारा ऊपर उठता है। लकड़ी का टुकड़ा पानी पर तैरता है लेकिन उसी आकार के लोहे का टुकड़ा पानी में डूब जाता है। यह हमारा अनुभव है परन्तु विज्ञान तार्किक रूप से इसके कारणों को खोजकर यह बतलाता है कि लकड़ी का घनत्व पानी से कम होता है तथा लोहे का घनत्व पानी से अधिक है। यही कारण है कि पानी पर लकड़ी तैरती है जबकि लोहा पानी में डूब जाता है। इस तरह तार्किकता विज्ञान का एक आवश्यक लक्षण है।

4. **विज्ञान सार्वभौमिक है** (Science is Universal) – विज्ञान के सिद्धान्त विशेष व्यक्ति या स्थान के लिए नहीं होते बल्कि इनकी प्रकृति सार्वभौमिक होती है। उदाहरण के लिए, यदि पानी का निर्माण दो भाग हाइड्रोजन और एक भाग आक्सीजन से होता है तो संसार के किसी भी देश के पानी में यह दोनों तत्त्व इसी अनुपात से पाये जायेंगे। इसका तात्पर्य है कि विज्ञान का प्रत्येक सिद्धान्त सभी स्थानों पर समान रूप से लागू होता है

5. **विज्ञान प्रामाणिक होता है** (Science is Veredical) – विज्ञान के नियम इसलिए प्रामाणिक होते है कि इनकी सत्यता की कभी भी जाँच की जा सकती है। यदि किसी वैज्ञानिक को सन्देह हो कि उसके पहले किसी वैज्ञानिक द्वारा प्रस्तुत निष्कर्ष या सिद्धान्त सही नही है तो वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करके वह उस निष्कर्ष की परीक्षा अथवा जाँच पुन: कर सकता है। वैज्ञानिक सिद्धान्तों की जाँच चाहे कितनी भी बार की जाय, वह हमेशा सही निकलेगी। इस प्रकार प्रामाणिकता विज्ञान का विशेष गुण है।

6. **विज्ञान में भविष्यवाणी की क्षमता होती है** (Science has Predictibility) – विज्ञान तथ्यों के आधार पर भविष्यवाणी भी कर सकता है। इसका कारण विज्ञान में कार्य – कारण के सम्बन्ध को मिलने वाली प्रधानता है। जब एक वैज्ञानिक यह समझ लेता है कि कोई घटना किन कारणों से घटित हुई तब यह जानना भी सम्भव हो जाता है कि वह दशाएँ भविष्य में अपना क्या प्रभाव दिखाएँगी। कार्य – कारण का यही सम्बन्ध भविष्यवाणी का आधार होता है।

उपर्युक्त लक्षणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विज्ञान वह पद्धति है जिसमें अनुभव द्वारा प्राप्त तथ्यों की तार्किक व्याख्या करके ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है जो प्रामाणिक और सार्वभौमिक होने के साथ ही भविष्यवाणी करने के योग्य हों।

विज्ञान की शाखाएँ (विज्ञान का वर्गीकरण)

विज्ञान की दो शाखाएँ हैं –

1. सामाजिक विज्ञान तथा
2. प्राकृतिक विज्ञान।

1. **सामाजिक विज्ञान** – सामाजिक विज्ञानों का मूल 'समाज' होता है। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन की विषयवस्तु मनुष्य तथा समाज है। विज्ञान की वे शाखाएँ जो मानवीय व्यवहार, मानवीय क्रियाओं तथा मनुष्य के मस्तिष्क से संबंधित होती है, सामाजिक विज्ञान से संबंधित होती है। सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत भूगोल, राजनीति, इतिहास, समाजशस्त्र आदि सामाजिक विज्ञानों को सम्मिलित किया जाता है तथा इन्हें आधारभूत विज्ञान नहीं माना जाता है।

2. **प्राकृतिक विज्ञान** – प्राकृतिक विज्ञान को आधाभूत विज्ञान कहा जाता है अर्थात् वास्तविक अर्थों में प्राकृतिक विज्ञान को ही विज्ञान की श्रेणी के अन्तर्गत रखा जा सकता है। ये है – रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, गणित, जीवशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, अभियांत्रिकी, भूगर्भ विज्ञान तथा जन्तु विज्ञान आदि। प्राकृतिक विज्ञान के अन्तर्गत प्रकृति तथा पदार्थ का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञान की दो शाखाएँ है – जीव विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान। विज्ञान का वर्गीकरण निम्नांकित रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

NOTES

विज्ञान का वर्गीकरण तथा शाखाएँ

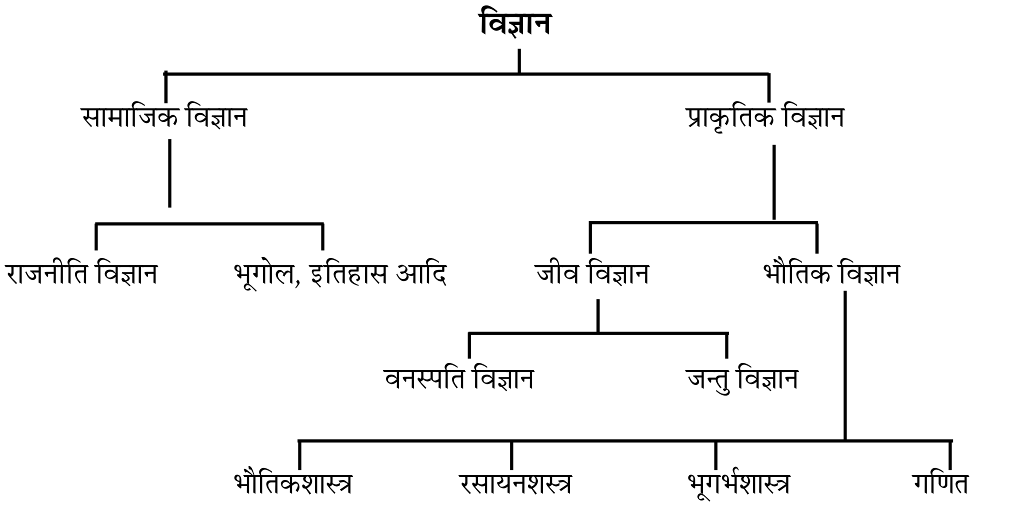

1. **जीव विज्ञान** – जीव विज्ञान को दो भागों में विभक्त किया गया है– जन्तु विज्ञान और वनस्पति विज्ञान।

(a) **जन्तु विज्ञान** –Zoology ग्रीक भाषा के दो शब्दों Zoo तथा Logos से मिलकर बना है। Zoo का अर्थ है Animal (प्राणी) तथा Logos का अर्थ है अध्ययन। अत: जन्तुओं का कमबद्ध ज्ञान विज्ञान कहलाता है।

(b) **वनस्पति विज्ञान** – Botany - Botane का अर्थ है 'प्लाण्ट्स'(पौधे) से संबंधित। अत: वनस्पतियों का क्रमबद्ध ज्ञान वनस्पति विज्ञान कहलाता है।

2. **भौतिक विज्ञान** – पदार्थ का अध्ययन करने वाले विज्ञान को भौतिक विज्ञान कहते हैं। इनमें गणित, रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान आते हैं।

(a) **गणित** - गणित की उत्पत्ति के संबंध में विश्व में अनेक मत है। एक मान्य तथ्य यह है कि वैदिक काल में भारत में ही गणित का उदय हुआ। वैदिक ऋषि मेद्यातिथि ने सर्वप्रथम अंको का उल्लेख किया, संख्या 10 उसके गणित फल, उनके अंकगणित के आधार थे, किन्तु अंकगणित के उपयोग के संबंध में प्रमाण कहीं भी नहीं मिलते। कालांतर में दशमलव प्रणाली का आविष्कार हुआ जो आधुनिक अंकगणित का आधार बना। दशमलव की खोज भारत में ही हुई, लगभग 150 ईसा पूर्व में।

(b) **भौतिक विज्ञान** – प्राकृतिक विज्ञान का मूल आधार भौतिकी है। भौतिक विज्ञान के अंतर्गत ब्रह्माण्ड में विद्यमान वस्तुओं, क्रियाओं और उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन होता है। जैसे अरस्तू के गति के संबंधित विचारों को गैलीलियो ने भ्रान्तिपूर्ण सिद्ध किया। न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण का सिद्धान्त एवं प्रकाश की संरचना को समझाया।

(c) **रसायन विज्ञान** – रसायन शास्त्र के अंतर्गत पदार्थ में होने वाले परिवर्तनों तथा एक पदार्थ पर प्रभाव होने पर विभिन्न प्रकार के नियमों का अध्ययन किया जाता है। 19वीं सदी के वैज्ञानिक ड़ाल्टन, मैण्डलीफ, व्हीलर और मेडम क्यूरी आदि के सतत् प्रयासों के परिणामस्वरूप रसायन विज्ञान अनेक शाखाओं में विभक्त हो गया, जिनमें भौतिक रसायन, अकार्बनिक एवं कार्बनिक रसायन, भूगर्भ रसायन, जीव रसायन, विघुत रसायन, विश्लेषणात्मक रसायन, रेडियो रसायन आदि प्रमुख हैं।

विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास

विज्ञान का इतिहास बहुत पुराना है, ज्ञान – विज्ञान का सर्वप्रथम शुभारम्भ भारत में ही हुआ। यहाँ वैदिक युग में ही ज्ञान – विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का शुभारम्भ हो गया था। वैदिक साहित्य में इसे सजीव प्रमाण हैं। बौद्धिक साहित्य में गणित, नक्षत्र विज्ञान, औषधि– विज्ञान एवं धातु विज्ञान के सूत्र विद्यमान हैं।

वैदिक साहित्य में धातु निर्मित शस्त्रों का वर्णन इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वैदिक – युगीन समाज को धातु – विज्ञान का पर्याप्त ज्ञान था। '*यजुर्वेद*' तो वनस्पति विज्ञान तथा औषधि विज्ञान का एक वृहद् ग्रंथ है। वैज्ञानिक **चरक** को विश्व का प्रथम शल्य चिकित्सक माना जाता है। उन्हें औषधि विज्ञान का पूर्ण ज्ञान था। **आर्यभट्ट** बीजगणित तथा नक्षत्र विज्ञान के प्रणेता थे। **बोधायन** ज्यामितिज्ञ तथा कणाद परमाणु विज्ञान के प्रथम प्रतिपादक थे।

प्राचीन मिस्त्र तथा मैसोपोटामिया की सभ्यता के लोगो को सोना – चाँदी तथा ताँबे के ज्ञान के साथ वास्तुशिल्प का भी ज्ञान था। वे रंगीन काँच निर्माण की कला से भी परिचित थे। मृत शरीर को जमीन के अन्दर सुरक्षित दबाने की कला का भी उन्हें ज्ञान था। सुमेरियन लोग कुशल बुनकर थे। सिंचाई हेतु नहरो के निर्माण का भी सुमेरियनों को ज्ञान था। इसके साथ ही वे सुमेरियन एवं मिश्र की लेखन कला से भी परिचित थे। उन्होने चित्रलिपि का विकास किया था। मिस्त्रवासियों ने चन्द्र पंचांग का प्रारम्भ किया, जिसमें वर्ष की गणना सूर्य की गति के आधार पर की जाती थी। मिस्त्रवासी स्वनिर्मित संख्याओं का प्रयोग करते थे।

ग्रीस में पायथागोरियन बन्धुओं ने प्राचीन विज्ञान के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने ज्यामिती से सम्बन्धित अनेक प्रमेयों का अध्ययन किया जो सामानान्तर रेखाओं, त्रिभुज, चतुर्भुज तथा बहुभुजों से सम्बन्धित थे। तीसरी सदी ई.पू. में **सुकरात, प्लेटो** तथा **अरस्तु** ने मानव ज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **अनेक्सोगोरेस** ने उल्काओं, इन्द्रधनुष तथा ग्रहण जैसी प्राकृतिक घटनाओं की व्याख्या की। उसने बताया कि सूर्य चमकती हुई धातुओं का विशाल पिण्ड है तथा चन्द्रमा सूर्य द्वारा प्राप्त प्रकाश को परावर्तित करता है।

प्लेटो (427–347 ई.पू.) ने गणित तथा खगोल विज्ञान का अध्ययन किया। **अरस्तु** ने यह विचार व्यक्त किया कि भारी पिण्डों की श्रेणी ठोस आकार में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाती है, जो पृथ्वी के बाद वायुमण्डल के सम्पर्क में रहती है। उसने करीब 540 जानवरों की प्रजातियों के जीवन तथा प्रजनन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। सेविली के **बिशप एजीड़ोर** (570 – 636) ने एक विश्वकोश का निर्माण किया, जिसे '*टायमोलाजी*' कहते है। इसमें सूर्य को केन्द्रबिन्दु माना गया।

नौवी सदी में अरब में अरस्तु, प्लिनी तथा मेलन आदि के कार्यों का अरबी भाषा में अनुवाद किया गया। गणित का वहाँ विकास हुआ अरबवासियों की खगोलिकी में अत्यधिक रूचि थी। **कीमियागिरी** का विश्वास था कि रासायनिक तत्व सल्फर (आग), पारा (द्रव्य) और लवण (ठोस) होते हैं। इनकी मान्यता थी कि मूल धातु सीसा (लेड) से उत्कृष्ट धातु सोना में ये सभी तत्व विभिन्न अनुपात में पाये जाते हैं। अतः इन तत्वों को मूल तत्व सीसा (लेड)में बदला जा सकता है।

मैमन (1135–1204) एक प्रसिद्ध ईसाई भौतिकविद, दार्शनिक, गणितज्ञ तथा खगोलविद था। उसने स्वच्छता तथा औषधियों पर अनेक लेख लिखे।

रोजज बेकन (1214–1294) मध्य युग का एक महान् वैज्ञानिक था। उसने अनेक प्रकाशीय घटनाओं की व्याख्या की तथा लैन्स के प्रकाशकीय गुणों का और इन्द्रधनुष की प्रकृति का वर्णन किया। उसने बारूद बनाने की विधि का विकास किया।

मध्य युग में कई हर्बल्स की रचना की गयी, जिनमें पौधों तथा उनके औषधीय उपयोगों का वर्णन किया गया था। मध्य युग में अनेक विश्वविद्यालयों में चिकित्सा विज्ञान पढ़ाया जाता था। इसी समय चिकित्सा विज्ञान में सर्जरी तथा मेडीसीन नामक दो शाखाओं का उदय हुआ।

गैलेलियो ने गुणों की अपेक्षा मात्रा को अधिक महत्व प्रदान किया। उसने अरस्तु के विचारों की कमजोरियों की आलोचना की। उसने ही सर्वप्रथम ग्रहों और स्थिर तारों की उपस्थिति के बीच अन्तर को स्पष्ट किया। उसने दूरबीन द्वारा तारों को धधकते हुए प्रकाश तथा ग्रहों को चमकते हुए गोल पिण्ड के रूप में देखा। उसने बृहस्पति ग्रह तथा उपग्रहों की खोज की। उपग्रह, ग्रह के चक्कर लगाते हैं। उसने ही शनि की विभिन्न परतों की खोज की तथा टेलिस्कोप का आविष्कार किया।

गैलीलियो का एक सहयोगी था। **केपलरा** वह गणक और संग्राहक था। उसने विधाता द्वारा रचे ग्रहों पर विजय प्राप्त कर ली। ग्रहों से सम्बन्धित नियमों को उसने 'केपलर के नियमों के रूप में प्रस्तुत किया।

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अमेरिका तथा फ्रांस की क्रान्ति के बाद अनेक वैज्ञातिक परिवर्तन हुए। रासायनिक तथा औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप अनेक वैज्ञानिकों की पीढ़ियों का पदार्पण हुआ। **बैंजमिन**

फ्रेंकलिन उनमें प्रमुख थे। इस दरमियान ऐतिहासिक औद्योगिक क्रान्ति का समाज पर विशेष प्रभाव पड़ा, जिसके फलस्वरूप नवीन आविष्कारों की श्रृंखला के माध्यम से कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का उत्पादन हुआ।

सन् 1733 में **जॉन** ने फ्लाइंग शटल का आविष्कार किया, जिसने बाद में **स्पीनिंग मशीन** का स्थान लिया। यह कम समय में अधिक बुनाई करती थी। **डॉ. एडमण्ड कार्टराइट** (1747–1823) ने बिजली से चलने वाले लूम का आविष्कार किया।

19वी सदी में विज्ञान ने विशेष प्रगति की। रसायन, भौतिकी, खगोलिकी आदि के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। रसायन विज्ञान के क्षेत्र में कार्बनिक रसायन, भौतिक रसायन, त्रिविम रसायन आदि शाखाओं का विकास हुआ।

प्राउस्ट (1754–1826) ने बताया कि प्रकृति में पाया जाने वाला प्रत्येक पदार्थ प्रयोगशाला में तैयार किया जा सकता है।

जान डाल्टन (1766–1844) ने परमाणु सिद्धान्त प्रस्तुत किया **वर्सीलियस** ने सिलीकान, सेलिनियम तथा अन्य तत्वों की खोज की। **वोइलर** (1800–1882) ने प्रयोगशाला में ही दो अकार्बनिक यौगिकों तथा अमोनिया के मिश्रण को गरम करके यूरिया का निर्माण किया। जर्मन रसायनशास्त्री **कैकुले** (1829–1896) ने बेंजीन अणु की खोज कर बताया कि बेंजीन में छह परमाणु चक्र में जुड़े रहते हैं और प्रत्येक कार्बन परमाणु पर एक – एक हाइड्रोजन पाया जाता है।

फ्रांसीसी विद्धान **पाश्चर** ने एल्कोहल बनाने की किण्वन तथा पाश्चुरीकरण विधियों की खोज कर बताया कि किण्वन का कारण बैक्टीरिया की उपस्थिति है। जर्मनी के रसायनशास्त्री **डॉ. रार्बट कोच** ने जीवाणुओं द्वारा फैलने वाली अनेक बीमारियों की खोज की। उन्होने ही तपेदिक के जीवाणु ट्यूबरकिल वेसिलस तथा हैजा के जीवाणु कोमा वेसिलस की खोज की। **रोनाल्ड़ रोस** ने 1900 में मलेरिया फैलाने वाले मच्छर की पहचान की।

19वी शताब्दी के महान् वैज्ञानिक थे – **फैराड़े, मैक्सवेल, हट्र्ज** आदि जिन्होंने प्रकाश विघुत, चुम्बकत्व आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने प्रकाश, ऊष्मा, रेडियो तरंगों आदि विघुत चुम्बकीय विकिरणों की खोज की, जिन्हें हम वर्तमान में रेडियो, टीवी तथा राडार आदि के रूप में जानते हैं। **हाइगन्स** ने प्रकाश की किरण के गमन के लिए एक माध्यम ईथर की खोज की।

बीसवीं शताब्दी के मध्य में मानव – जीवन को सुरक्षित रखने के लिए अनेक औषधियों का निर्माण हुआ है, जो लोगों को रोगों से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हुई हैं। विभिन्न तत्वों विटामिनों आदि की कमी से होने वाले विभिन्न रोगों, यथा – डायबिटीज, एनीमिया आदि बीमारियों के उपचार की विधियों का आविष्कार इसी सदी में हुआ। इसके साथ ही हमने यह भी सीखा कि एक व्यक्ति के शरीर से दूसरे व्यक्ति के शरीर में रक्त स्थानान्तरित किया जा सकता है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. विज्ञान क्या है? उसकी विविध शाखाओं पर प्रकाश डालिए।
2. वैज्ञानिक अध्ययन के इतिहास पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान के अध्ययन के मूल आधार क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।
4. पायथोगोरियास बंधुओं को किन विषयों का ज्ञान था?
5. प्राचीन मिश्र के निवासियों को किन बातों का ज्ञान था?
6. मानव विज्ञान को शिखर तक पहुँचाने का गौरव किन – किन विदेशी महापुरूषों को है?
7. अरस्तू ने क्या खगोलीय खोज की?
8. 'विज्ञान अंधविश्वासों से परे है?' कैसे? स्पष्ट कीजिए।
9. 'ज्ञान – विज्ञान की किरणें सर्वप्रथम भारत में ही विकीर्ण हुई थी।' इस कथन को सिद्ध कीजिए।
10. प्राकृतिक विज्ञान के अंतरगर्त किसका अध्ययन किया जाता है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'पाइथागोरस' बन्धुओं ने किसका अध्ययन किया –

   (i) भौतिक विज्ञान (ii) रसायन विज्ञान

   (iii) जन्तु विज्ञान (iv) ज्यामिति से सम्बन्धित प्रमेय

2. विज्ञान की विशेष उन्नति किस युग में हुई –

   (i) 16वीं सदी (ii) 11वीं सदी

   (iii) 18वीं सदी (iv)19वीं सदी

3. कणाद किस विज्ञान के प्रथम प्रतिपादक थे?

   (i) जीव विज्ञान (ii) खगोलशास्त्र

   (iii)परमाणु विज्ञान (iv) औषधि विज्ञान

4. इन्हें सिंचाई हेतु नहरों के निर्माण का ज्ञान था –

   (i) सुमेरियन (ii) चीनी

   (iii) अरेबियन (iv) फ्रांसीसी

5. बगदाद में प्रथम वेधशाला का निर्माता था।

   (i) हारून रशीद (ii) मामुन खलीफा

   (iii) अरस्तू (iv) गैलीलियो

6. चन्द्र पंचांग का प्रारम्भ किसने किया?

   (i) अरब के लोगों ने (ii) मिस्त्रवासियों ने

   (iii) मैसोपोटामियावासियों ने (iv) ग्रीसवासियों ने

7. मृत शरीर को ममी के रूप में सुरक्षित रखने की कला इन्हें ज्ञात थी?

   (i) यूरोपवासी (ii) मिस्त्रवासियों

   (iii) भारतीय (iv) चीन के निवासी

8. बारूद निर्माण की विधि की खोज करने वाला था –

   (i) जेम्सवॉट (ii) रोजेन बेकन

   (iii) बैंजामिन फ्रेंकलिन (iv) कैपलर

9. मलेरिया फैलाने वाले मच्छर की पहचान की –

   (i) प्लेटो ने (ii) लुई पाश्चर ने

   (iii) रोनाल्ड़ रोस ने (iv) न्यूटन ने

10. यूरोप के सामाजिक जीवन को कौनसी क्रान्ति ने सर्वाधिक प्रभावित किया?

    (i) रूसी क्रान्ति ने (ii) औद्योगिक क्रान्ति ने

    (iii) फ्रांस की क्रान्ति ने (iv) अमेरिकी क्रान्ति

उत्तर :– 1.(iv) 2.(iii) 3.(iii) 4.(i) 5.(ii) 6.(ii) 7.(ii) 8.(ii) 9.(iii) 10.(ii)

■ ■ ■

4. सपनों की उड़ान : ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

NOTES

सपनों की दुनिया अत्यन्त काल्पनिक व संवेदनशील होती है। स्वप्न व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है, वे स्वप्न ही है, जिन्हें पूरा करने के लिए व्यक्ति अपनी यथा सम्भव शक्ति का प्रयोग करता है। जो पूरे मन से, दृढ़ इच्छाशक्ति से, इसके लिए प्रयास करते है, उनके सपने पूरे भी होते है, वे सपनों की उड़ान भरते हुए आसमान को छूते है। कहते है ''जिसने सपनों के महल नहीं बनाये, वे हकीकत के महल नहीं बना सकता।'' अर्थात आपकी कोमल कल्पनाएँ, आपके लक्ष्य को निर्धारित करने में महती भूमिका का निवर्हन करती है, और सफल व्यक्ति इन्ही लक्ष्यों को पाने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है। इसी संदर्भ में प्रख्यात कवि हरिवंश राय बच्चन की निम्न पंक्तियाँ प्रासंगिक है–

''कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपनी उमर, अपने समय में,

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों को
ललकती उन्मुक्त छाती,

रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरतीं,
एक दुनिया डूब जाती,

आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले!''

(सतरंगिनी, पृ. 73–पथ की पहचान)

जो व्यक्ति अपनी क्षमताओं को ध्यान में रखकर स्वप्नों की दुनिया को सजाते है, वे स्वप्न दृष्टा ही बड़े कलाकार, साहित्यकार, राजनता, वैज्ञानिक, अथिकारी, खिलाड़ी, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे बन पाते है। हमारा भारत सदियों से विभूतियों की जन्म स्थली रहा है, जिन्होंने अपने कोमल मन की कल्पनाओं (सपनों) को सजो कर उन्हे प्राप्त भी किया और सम्पूर्ण विश्व में स्वयं को व भारत राष्ट्र को गौरवान्वित भी किया। भारत के महान 'स्वप्नदृष्टा, वैज्ञानिक, भू-पूर्व राष्ट्रपति, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम उन्ही सितारों में से एक नाम है, जो सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय होकर सफलता के आसमान पर सूर्य की भाँति सदैव दैदीप्यमान रहेंगे। ।

आपने अपनी अंतिम सांस तक अपने कार्य क्षेत्र को कभी विस्मृत नही किया। आपने पूरी लगन, ईमानदारी, समर्पण, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता जैसे भावों से सफलता के शिखर को प्राप्त किया ओर भारत ही नही अपितु संपूर्ण विश्व के जनमानस में अपने को सदैव के लिए स्थापित कर लिया।

जीवन परिचय –

अबुल पाकिर जैनुलाबदीन अब्दुल कलाम अथवा डॉक्टर ए. पी. जे. अब्दुल कलाम (15 अक्टूबर 1931 – 27 जुलाई 2015) जिन्हें मिसाइल मैन और जनता के राष्ट्रपति के नाम से जाना जाता है, भारतीय गणतंत्र के ग्यारहवें निर्वाचित राष्ट्रपति थे। वे भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जानेमाने वैज्ञानिक और अभियंता के रूप में विख्यात थे।

आपने मुख्य रूप से एक वैज्ञानिक और विज्ञान के व्यवस्थापक के रूप में चार दशकों तक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) सम्भाला व भारत के नागरिक अंतरिक्ष कार्यक्रम और सैन्य मिसाइल के विकास के प्रयासों में भी शामिल रहे। इन्हें बैलेस्टिक मिसाइल और प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी के विकास के कार्यों के लिए भारत में मिसाइल मैन के रूप में जाना जाने लगा। 1974 में भारत द्वारा पहले मूल परमाणु परीक्षण के बाद से दूसरी बार 1998 में भारत के पोखरान–द्वितीय परमाणु परीक्षण में एक निर्णायक, संगठनात्मक, तकनीकी और राजनैतिक भूमिका निभाई।

कलाम सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी व विपक्षी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दोनों के समर्थन के साथ 2002 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए। पांच वर्ष की अवधि की सेवा के बाद, वह शिक्षा, लेखन और सार्वजनिक सेवा के अपने नागरिक जीवन में लौट आए। इन्होंने भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किये। 27 जुलाई 2015 को आप कई क्षेत्रों में किवदंति बनकर दिव्य ज्योति में विलीन हो गये।

जीवन परिचय – अब्दुल कलाम का पूरा नाम 'डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम' है। इनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम तमिलनाडु में हुआ। द्वीप जैसा छोटा सा शहर प्राकृतिक छटा से भरपूर था। शायद इसीलिए अब्दुल कलाम जी का प्रकृति से बहुत जुड़ाव रहा है।

रामेश्वरम का प्राकृतिक सौन्दर्य समुद्र की निकटता के कारण सदैव बहुत दर्शनीय रहा है। इनके पिता 'जैनुलाब्दीन' न तो ज़्यादा पढ़े–लिखे थे, न ही पैसे वाले थे। वे नाविक थे, और नियम के बहुत पक्के थे। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। इनके संबंध रामेश्वरम के हिन्दू नेताओं तथा अध्यापकों के साथ काफी स्नेहपूर्ण थे। अब्दुल कलाम ने अपनी आरम्भिक शिक्षा जारी रखने के लिए अख़बार वितरित करने का कार्य भी किया था।

अब्दुल कलाम संयुक्त परिवार में रहते थे। परिवार की सदस्य संख्या का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि यह स्वयं पाँच भाई एवं पाँच बहन थे और घर में तीन परिवार रहा करते थे। इनका कहना था कि वह घर में तीन झूले (जिसमें बच्चों को रखा और सुलाया जाता है) देखने के अभ्यस्त थे। इनकी दादी माँ एवं माँ द्वारा ही पूरे परिवार की परवरिश की जाती थी।

जिस घर में अब्दुल कलाम का जन्म हुआ, वह आज भी रामेश्वरम में मस्जिद मार्ग पर स्थित है। इसके साथ ही इनके भाई की कलाकृतियों की दुकान भी संलग्न है। यहाँ पर्यटक इसी कारण खिंचे चले आते हैं, क्योंकि अब्दुल कलाम का आवास स्थित है। 1964 में 33 वर्ष की उम्र में डॉक्टर अब्दुल कलाम ने जल की भयानक विनाशलीला देखी और जल की शक्ति का वास्तविक अनुमान लगाया।

अब्दुल कलाम अपने भाइयों में छोटे थे, दूसरे घर के लिए थोड़ी कमाई भी कर लेता थे, इसलिए इनकी मां का प्यार इन पर कुछ ज़्यादा ही था। अब्दुल कलाम अख़बार वितरण का कार्य करके प्रतिदिन प्रात: 8 बजे घर लौट आते थे। इनकी माता अन्य बच्चों की तुलना में इन्हें अच्छा नाश्ता देती थीं, क्योंकि यह पढ़ाई और धनार्जन दोनों कार्य कर रहे थे। शाम को स्कूल से लौटने के बाद यह पुन: रामेश्वरम जाते थे ताकि ग्राहकों से बकाया पैसा प्राप्त कर सकें। इस प्रकार वह एक किशोर के रूप में भाग–दौड़ करते हुए पढ़ाई और धनार्जन कर रहे थे।

उच्च शिक्षा – एक दिन अध्यापक 'सुब्रहमण्यम अय्यर' से आपने पूछा कि '' श्रीमान! मुझे यह बताएं कि मेरी आगे की उन्नति उड़ान से संबंधित रहते हुए कैसे हो सकती है? तब उन्होंने धैर्यपूर्वक जवाब दिया कि मैं पहले आठवीं कक्षा उत्तीर्ण करूँ, फिर हाई स्कूल। तत्पश्चात कॉलेज में मुझे उड़ान से संबंधित शिक्षा का अवसर प्राप्त हो सकता है। यदि मैं ऐसा करता हूँ तो उड़ान विज्ञान के साथ जुड़ सकता हूँ। इन सब बातों ने मुझे जीवन के लिए एक मंज़िल और उद्देश्य भी प्रदान किया। जब मैं कॉलेज गया तो मैंने भौतिक विज्ञान विषय लिया। जब मैं अभियांत्रिकी की शिक्षा के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी' में गया तो मैंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चुनाव किया। इस प्रकार मेरी ज़िन्दगी एक 'रॉकेट इंजीनियर', 'एयरोस्पेस इंजीनियर' और 'तकनीकी कर्मी' की ओर उन्मुख हुई। वह एक घटना जिसके बारे में मेरे अध्यापक ने मुझे प्रत्यक्ष उदाहरण से समझाया था, मेरे जीवन का महत्वपूर्ण बिन्दु बन गई और अंतत: मैंने अपने व्यवसाय का चुनाव भी कर लिया।''

कार्यक्षेत्र – 1962 में वे 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' में आये। डॉक्टर अब्दुल कलाम को प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एस.एल.वी. तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल है। जुलाई 1980 में इन्होंने रोहिणी उपग्रह कोपृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया था। इस प्रकार भारत भी 'अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब' का सदस्य बन गया। 'इसरो लॉन्च व्हीकल प्रोग्राम' को परवान चढ़ाने

का श्रेय भी इन्हें प्रदान किया जाता है। डॉक्टर कलाम ने स्वदेशी लक्ष्य भेदी (गाइडेड मिसाइल्स) को डिज़ाइन किया। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसी मिसाइल्स को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। डॉक्टर कलाम जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के 'विज्ञान सलाहकार' तथा 'सुरक्षा शोध और विकास विभाग' के सचिव थे। उन्होंने स्ट्रेटेजिक मिसाइल्स सिस्टम का उपयोग आग्नेयास्त्रों के रूप में किया। इसी प्रकार पोखरण में दूसरी बार न्यूक्लियर विस्फोट भी परमाणु ऊर्जा के साथ मिलाकर किया। इस तरह भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की क्षमता प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। डॉक्टर कलाम ने भारत के विकास स्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। यह भारत सरकार के 'मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार' भी रहे।

व्यावसायिक परिचय – डॉ. अब्दुल कलाम जब एच.ए.एल. से एक वैमानिकी इंजीनियर बनकर निकले तो इनके पास नौकरी के दो बड़े अवसर थे। ये दोनों ही उनके बरसों पुराने उड़ान के सपने को पूरा करने वाले थे। एक अवसर भारतीय वायुसेना का था और दूसरा रक्षा मंत्रालय के अधीन तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय, का था। उन्होंने दोनों जगहों पर साक्षात्कार दिया। वे रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पादन निदेशालय में चुन लिए गए। सन् 1958 में इन्होंने 250 रूपए के मूल वेतन पर निदेशालय के तकनीकी केंद्र (उड्डयन) में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर काम सम्भाल लिया। निदेशालय में नौकरी के पहले साल के दौरान इन्होंने आफिसर-इंचार्ज आर. वरदराजन की मदद से एक अल्ट्रासोनिक लक्ष्यभेदी विमान का डिजाइन तैयार करने में सफलता हासिल कर ली। विमानों के रख-रखाव का अनुभव हासिल करने के लिए इन्हें एयरक्रॉफ्ट एण्ड आर्मामेंट टेस्टिंग यूनिट, कानपुर भेजा गया। उस समय वहाँ एम.के.-1 विमान के परीक्षण का काम चल रहा था। इसकी कार्यप्रणालियों के मूल्यांकन को पूरा करने के काम में इन्होंने भी हिस्सा लिया। वापस आने पर इन्हें बंगलौर में स्थापित वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान में भेज दिया गया। यहाँ ग्राउंड इक्विपमेंट मशीन के रूप में स्वदेशी होवरक्रॉफ्ट का डिजाइन तथा विकास करने के लिए एक टीम बनाई गई। वैज्ञानिक सहायक के स्तर पर इसमें चार लोग शामिल थे, जिसका नेतृत्व करने का कार्यभार निदेशक डॉ. ओ. पी. मेदीरत्ता ने डॉ. कलाम पर सौंपा। उड़ान में इंजीनियरिंग मॉडल शुरू करने के लिए इन्हें तीन साल का वक्त दिया गया। भगवान् शिव के वाहन के प्रतीक रूप में इस होवरक्राफ्ट को 'नंदी' नाम दिया गया।

विशेष योगदान-मिसाइल कार्यक्रम के जनक – फरवरी 1982 में डॉ. अब्दुल कलाम को डी.आर.डी.एल का निदेशक नियुक्त किया गया। उसी समय अन्ना विश्वविद्यालय, मद्रास ने इन्हें 'डॉक्टर आफ साइंस' की मानक उपाधि से सम्मानित किया। एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में डिग्री हासिल करने के क़रीब बीस साल बाद यह मानद उपाधि डॉ. अब्दुल कलाम को प्राप्त हुई। डॉ. अब्दुल कलाम ने रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वी. एस. अरूणाचलम के मार्गदर्शन में इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम (आई.जी.एम.डी.पी.) का प्रस्ताव तैयार किया। स्वदेशी मिसाइलों के विकास के लिए एक स्पष्ट और सुपरिभाषित मिसाइल कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से डॉ. अब्दुल कलाम की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई।

प्रथम चरण में एक नीची ऊँचाई पर तुरंत मार करने वाली टैक्टिकल कोर वेहिकल मिसाइल और जमीन से जमीन पर मध्यम दूरी तक मार सकने वाली मिसाइल के विकास एवं उत्पादन पर जोर था। दूसरे चरण में जमीन से हवा में मार सकने वाली मिसाइल, तीसरी पीढ़ी की टैंकभेदी गाइडेड मिसाइल और डॉ. अब्दुल कलाम के सपने रि-एंट्री एक्सपेरिमेंट लान्च वेहिकल (रेक्स) का प्रस्ताव रखा गया था। जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल प्रणाली को 'पृथ्वी' और टैक्टिकल कोर वेहिकल मिसाइल को 'त्रिशूल' नाम दिया गया। जमीन से हवा में मार करने वाली रक्षा प्रणाली को 'आकाश' और टैंकरोधी मिसाइल परियोजना को 'नाग' नाम दिया गया। डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने मन में सँजोए रेक्स के बहुप्रतीक्षित सपने को 'अग्नि' नाम दिया। 27 जुलाई, 1983 को आई.जी.एम.डी.पी. की औपचारिक रूप से शुरूआत की गई। मिसाइल कार्यक्रम के अंतर्गत पहली मिसाइल का प्रक्षेपण 16 सितंबर, 1985 को किया गया। इस दिन श्रीहरिकोटा स्थित परीक्षण रेंज से 'त्रिशूल' को छोड़ा गया। यह एक तेज प्रतिक्रिया प्रणाली है जिसे नीची उड़ान भरने वाले विमानों, हेलीकॉप्टरों तथा विमानभेदी मिसाइलों के खिलाफ इस्तेमाल किया जा सकता है। 25 फरवरी, 1988 को दिन में 11बजकर 23 मिनट पर 'पृथ्वी' को छोड़ा गया। यह देश में रॉकेट विज्ञान के इतिहास में एक युगांतरकारी घटना थी। यह 150 किलोमीटर तक 1000 किलोग्राम पारम्परिक विस्फोटक सामग्री ले जाने की क्षमता वाली जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल है। 22 मई,1989 को 'अग्नि' का प्रक्षेपण किया गया। यह लंबी दूरी के फ्लाइट वेहिकल के लिए एक तकनीकी प्रदर्शक था। साथ ही 'आकाश' पचास किलोमीटर की अधिकतम अंतर्रोधी रेंजवाली वायु-रक्षा प्रणाली है। उसी प्रकार 'नाग' टैंक भेदी मिसाइल

है, जिसमें 'दागो और भूल जाओ' तथा ऊपर से आक्रमण करने की क्षमताएँ हैं। डॉ. अब्दुल कलाम की पहल पर भारत द्वारा एक रूसी कंपनी के सहयोग से सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल बनाने पर काम शुरू किया गया। फरवरी 1998 में भारत और रूस के बीच समझौते के अनुसार भारत में ब्रह्मोस प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की गई। 'ब्रह्मोस' एक सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल है जो धरती, समुद्र, तथा हवा, कहीं भी दागी जा सकती है। यह पूरी दुनिया में अपने तरह की एक ख़ास मिसाइल है जिसमें अनेक खूबियां हैं। वर्ष 1990 के गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्र ने अपने मिसाइल कार्यक्रम की सफलता पर खुशी मनाई। डॉ. अब्दुल कलाम और डॉ. अरूणाचलम को भारत सरकार द्वारा 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया गया।

राजनीतिक जीवन – डॉक्टर अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं हैं लेकिन राष्ट्रवादी सोच और राष्ट्रपति बनने के बाद भारत की कल्याण संबंधी नीतियों के कारण इन्हें कुछ हद तक राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न माना जा सकता है। इन्होंने अपनी पुस्तक 'इण्डिया 2020' में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया है। यह भारत को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर राष्ट्र बनते देखना चाहते हैं और इसके लिए इनके पास एक कार्य योजना भी है। परमाणु हथियारों के क्षेत्र में यह भारत को सुपर पॉवर बनाने की बात सोचते रहे हैं। वह विज्ञान के अन्य क्षेत्रों में भी तकनीकी विकास चाहते हैं। डॉक्टर कलाम का कहना है कि 'सॉफ्टवेयर' का क्षेत्र सभी वर्जनाओं से मुक्त होना चाहिए ताकि अधिकाधिक लोग इसकी उपयोगिता से लाभांवित हो सकें। ऐसे में सूचना तकनीक का तीव्र गति से विकास हो सकेगा। वैसे इनके विचार शांति और हथियारों को लेकर विवादास्पद हैं। इस संबंध में इन्होंने कहा है– ''2000 वर्षों के इतिहास में भारत पर 600 वर्षों तक अन्य लोगों ने शासन किया है। यदि आप विकास चाहते हैं तो देश में शांति की स्थिति होना आवश्यक है और शांति की स्थापना शक्ति से होती है। इसी कारण मिसाइलों को विकसित किया गया ताकि देश शक्ति सम्पन्न हो।''

राष्ट्रपति पद पर – डॉक्टर अब्दुल कलाम भारत के ग्यारवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एन.डी.ए. घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया। 18 जुलाई, 2002 को डॉक्टर कलाम को नब्बे प्रतिशत बहुमत द्वारा 'भारत का राष्ट्रपति' चुना गया था और इन्हें 25 जुलाई 2002 को संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ दिलाई गई। इस संक्षिप्त समारोह में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके मंत्रिमंडल के सदस्य तथा अधिकारीगण उपस्थित थे। इनका कार्यकाल 25 जुलाई 2007 को समाप्त हुआ। भारतीय जनता पार्टी में इनके नाम के प्रति सहमति न हो पाने के कारण यह दोबारा राष्ट्रपति नहीं बनाए जा सके।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व – इतने महत्वपूर्ण व्यक्ति के बारे में कुछ भी कहना सरल नहीं है। वेशभूषा, बोलचाल के लहजे, अच्छे–खासे सरकारी आवास को छोड़कर हॉस्टल का सादगीपूर्ण जीवन, ये बातें उनके सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर एक सम्मोहक प्रभाव छोड़ती हैं। डॉ. कलाम एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, देश के विकास और युवा मस्तिष्कों को प्रज्ज्वलित करने में अपनी तल्लीनता के साथ–साथ वे पर्यावरण की चिंता भी खूब करते हैं, साहित्य में रुचि रखते हैं, कविता लिखते हैं, वीणा बजाते हैं, तथा अध्यात्म से बहुत गहरे जुड़े हुए हैं। डॉ. कलाम में अपने काम के प्रति जबर्दस्त दीवानगी है। उनके लिए कोई भी समय काम का समय होता है। वह अपना अधिकांश समय कार्यालय में बिताते हैं। देर शाम तक विभिन्न कार्यक्रमों में डॉ. कलाम की सक्रियता तथा स्फूर्ति काबिले तारीफ है। ऊर्जा का ऐसा प्रवाह केवल गहरी प्रतिबद्धता तथा समर्पण से ही आ सकता है। डॉ. कलाम खानपान में पूर्णत: शाकाहारी व्यक्ति हैं। वे मदिरापान से बिलकुल परहेज करते हैं। उनका निजी जीवन अनुकरणीय है। डॉ. कलाम की याददाश्त बहुत तेज है। वे घटनाओं तथा बातों को याद रखते हैं।

समाज सेवा – उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तकें बहुत लोकप्रिय रही हैं। वे अपनी किताबों की रॉयल्टी का अधिकांश हिस्सा स्वयंसेवी संस्थाओं को मदद में दे देते हैं। मदर टेरेसा द्वारा स्थापित 'सिस्टर्स ऑफ़ चैरिटी' उनमें से एक है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले हैं। इनमें से कुछ पुरस्कारों के साथ नकद राशियां भी थीं। वह इन पुरस्कार राशियों को परोपकार के कार्यों के लिए अलग रखते हैं। जब–जब देश में प्राकृतिक आपदाएँ आई हैं, तब–तब डॉ. कलाम की मानवीयता एवं करुणा निखरकर सामने आई है। वह अन्य मनुष्यों के कष्ट तथा पीड़ा के विचार मात्र से दु:खी हो जाते हैं। वह प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने के लिए डी.आर.डी.ओ. के नियंत्रण में मौजूद सभी संसाधनों को एकत्रित करते। जब वे रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन में कार्यरत थे तो उन्होंने हर राष्ट्रीय आपदा में विभाग की ओर से बढ़–चढ़कर राहत कोष में मदद की।

सम्मान और पुरस्कार – डॉ. कलाम को अनेक सम्मान और पुरस्कार मिले हैं जिनमें शामिल हैं–

- इंस्टीट्यूशन ऑफ़ इंजीनियर्स का नेशनल डिजाइन अवार्ड

NOTES

- एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया का डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवार्ड
- एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया का आर्यभट्ट पुरस्कार
- विज्ञान के लिए जी.एम. मोदी पुरस्कार
- राष्ट्रीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार।
- ये भारत के एक विशिष्ट वैज्ञानिक हैं, जिन्हें 30 विश्वविद्यालयों और संस्थानों से डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्राप्त हो चुकी है।
- इन्हें भारत के नागरिक सम्मान के रूप में 1981 में पद्म भूषण, 1990 में पद्म विभूषण, 1997 में भारत रत्न सम्मान प्राप्त हो चुके है।

पुस्तकें – डॉक्टर कलाम ने साहित्यिक रूप से भी अपने शोध को चार उत्कृष्ट पुस्तकों में समाहित किया है, जो इस प्रकार हैं–

1. 'विंग्स ऑफ़ फायर'
2. 'इण्डिया 2020– ए विज़न फ़ॉर द न्यू मिलेनियम'
3. 'माई जर्नी'
4. 'इग्नाटिड माइंड्स– अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया'।
5. महाशक्ति भारत
6. हमारे पथ प्रदर्शक
7. हम होंगे कामयाब
8. अदम्य साहस
9. छुआ आसमान
10. भारत की आवाज़
11. टर्निंग प्वॉइंट्स

इन पुस्तकों का कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इन्होंने अपनी जीवनी 'विंग्स ऑफ़ फायर' भारतीय युवाओं को मार्गदर्शन प्रदान करने वाले अंदाज़ में लिखी है। इनकी दूसरी पुस्तक 'गाइडिंग सोल्स– डायलॉग्स ऑफ़ द पर्पज़ ऑफ़ लाइफ' आत्मिक विचारों को उद्घाटित करती है इन्होंने तमिल भाषा में कविताऐं भी लिखी हैं। दक्षिणी कोरिया में इनकी पुस्तकों की काफी माँग है और वहाँ इन्हें बहुत अधिक पसंद किया जाता है।

अंतिम समय – अंतिम समय में डॉ. कलाम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, भारतीय प्रबंधन संस्थान अहमदाबाद तथा भारतीय प्रबंधन संस्थान इंदौर में आगंतुक प्रोफेसर रहे। साथ ही भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान तिरूवंतपुरम् में कुलाधिपति तथा अन्ना विश्वविद्यालय चेन्नई में एयरो इंजीनियरिंग के प्रध्यापक के पद में नियुक्त रहे। 27 जुलाई, 2015 सोमवार को 83 वर्ष की अवस्था में आपका निधन हो गया। डॉ. कलाम आईआईएम शिलांग में भाषण दे रहे थे। इसी वक्त उनकी तबीयत बिगड़ गई। कलाम का निधन अस्पताल ले जाते समय रास्ते में हुआ। कलाम के निधन का समाचार पाकर पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई और एक अतुलनीय महान विभूति कई क्षेत्रों में मील का पत्थर स्थापित कर दिव्य ज्योति में विलीन हो गई।

डॉ. कलाम ने ''सादा जीवन–उच्च विचार'' की भावना को सदैव अपने अंदर जीवित रखा और स्वर्णिम सफलताओं का इतिहास रचा, अपने सपनों को ऊँची उड़ान दी साथ ही देश की उन्नति, तरक्की के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनका कोमल हृदय सदैव परोपकार से जुड़ा रहा। सफलताओं को कभी अपने मानस पर हावी नहीं होने दिया। आप सदैव भारवासियों के हृदय में बसे रहेंगे और आने वाली पीढ़ियो को प्रेरणा देते रहेंगे।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. 'मनुष्य स्वभावत: स्वप्नदर्शी है', कैसे? स्पष्ट कीजिए।
2. विश्व ने किस प्रकार के लोगों को सराहा है? उदाहरण देकर समझाइए।
3. अब्दुल कलाम के जीवन की विकास यात्रा का वर्णन कीजिए।

4. डॉ. कलाम अपने अवकाश के क्षण कैसे बिताते है।
5. 'व्यक्तित्व के विकास में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है?' इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
6. डॉ. कलाम की 5 पुस्तकों के नाम लिखिए।
7. डॉ. कलाम को प्राप्त पुरस्कारों को लिखिए।
8. मिसाइल मेन के रूप में डॉ. कलाम को लिखिए ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. कलाम का जन्म कब हुआ।

   i. 15 अक्टूबर 1931 ii.15 अगस्त 1931

   iii. 2 अक्टूबर 1930 iv. 26 जनवरी 1926

2. डॉ. कलाम का निधन कब हुआ।

   i. 15 अक्टूबर 2014 ii. 27 जुलाई 2015

   iii. 27 मई 2015 iv. 5 जुलाई 2015

3. डॉ. कलाम को भारत रत्न कब प्राप्त हुआ।

   i. 1989 ii. 1990

   iii. 1997 iv. 2002

4. डॉ. कलाम राष्ट्रपति कब बने।

   i. 1997 ii. 2002

   iii. 2007 iv. 2005

5. 'सपनों की उड़ान' में किस कवि की रचना ली गई है।

   i. मैथिलीशरण गुप्त ii. कबीर

   iii. हरिवंश राय बच्चन iv. उपर्युक्त में से कोई नही

6. डॉ. कलाम को अपने पिता से विरासत में गुण मिला।

   i. संगीत प्रेम, खेलकूद में लगन ii. भ्रमणशीलता

   iii. ईमानदारी, अनुशासन, श्रमशीलता iv. स्वप्न देखना

7. डॉ. कलाम को अपनी माँ से प्रेरणा मिली।

   i. योग शिक्षा की ii. वैज्ञानिक बनने की

   iii. पूजा - पाठ की iv. ईश्वर अस्तित्व में आस्था तथा दीन - दुखियों के प्रति करूणा

8. डॉ. कलाम ने किस पुस्तक में अपनी दुविधापूर्ण स्थिति का चित्रण किया है।

   i. माई कण्ट्री ii. माई जर्नी

   iii. माई आटोबायोग्राफी iv. हमारे सपनों का भारत

उत्तर :- 1 (i), 2 (ii), 3 (iii), 4 (ii), 5 (iii), 6 (iv), 7 (ii), 8 (ii)

■ ■ ■

5. प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कार और हमारा जीवन

NOTES

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के नये – नये आविष्कारों ने मानव जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है। विज्ञान का मानव के दैनिक जीवन में इस प्रकार समावेश हो गया है कि वह उनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है।

विज्ञान की बदौलत मानव की सोचने – समझने की शक्ति बदल गई है। विज्ञान ने मानव की सोच को सकारात्मक बना दिया है। इसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है कि पहले डायबिटीज, ब्लड–प्रेशर, टी.बी जैसी बीमारियों की चिकित्सा सम्भव नहीं थी, किन्तु विज्ञान ने इसे न केवल सम्भव बनाया, अपितु इनसे भी खतरनाक कही जाने वाली हृदयाघात जैसी तकलीफों की चिकित्सा की जाने लगी। फलत: मानव–मस्तिष्क में यह विचार आया कि अब कोई भी बीमारी लाइलाज नहीं है, उसकी कोई औषधि निकाली जा सकती है।

पहिये के आविष्कार के बाद प्रचलन में आने वाली बैलगाड़ी के बाद सायकल, मोटर–सायकल, कार, बस–रेल आदि ही नही, अपितु इनसे कहीं तीव्र गति से चलने वाले हवाई जहाज तथा रॉकेट के आविष्कारों ने मनुष्य को इससे भी आगे जाने को प्रोत्साहित किया। कभी कुएँ का मेंढ़क समझा जाने वाला व्यक्ति अब अन्तरिक्ष तथा चन्द्रमा पर जाकर, अन्य ग्रहों पर जाने की कल्पना करने लगा है। अपने कामों में कैलकुलेटर के बाद कम्प्यूटर, फिर सुपर कम्प्यूटर के बाद आगे की परिकल्पना कर रहा है। कहने का आशय यही है कि विज्ञान ने हमारे विचारों को, हमारे सोचने की शक्ति को ही सीधे प्रभावित किया है, जिसके दम पर व्यक्ति 'अब और आगे.......' की दौड़ में शामिल होता जा रहा है।

आदिम अवस्था में अपनी क्षुधापूर्ति हेतु मनुष्य ने फलों और कन्द – मूलों को खोजा होगा। वह जंगली जानवरों के कच्चे मांस का ही भक्षण करता रहा होगा। परन्तु कई बार जंगलों में लगी आग से उसे पका हुआ मांस प्राप्त हुआ होगा, जो उसे अधिक स्वादिष्ट लगा। फलस्वरूप स्वंय ही पत्थर आदि को रगड़कर आग पैदा की होगी। इस प्रकार सर्वप्रथम आग का अविष्कार हुआ।

शून्य एवं दशमलव पद्धति के आविष्कार का श्रेय भारत को है। एक **जर्मन कार्ल फ्रीडरिख क्रिश्चियन लुडविग फ्रीडर ड्रेसनान सोयरेबोन** ने दो पहियों को जोड़कर एक वाहन बनाया। सन् 1839 में इग्लैंण्ड के **कार्कपैट्रिक मैकमिलन** ने इसमें अनुसंधान कर दो पहिये वाली सायकल का आविष्कार किया।

मनुष्य ने अपने बुद्धिबल का प्रयोग कर वाष्पशक्ति से चलने वाले इंजन का आविष्कार किया, जिसका श्रेय जेम्स वॉट को जाता है। जिसकी सहायता से रेलगाड़ी चलाने का प्रयोग किया गया। वास्तव में रेलगाड़ी का अविष्कारक इंग्लैण्ड में जन्मा **जार्ज स्टीफेंसन** था। उसके अविष्कार को बाद में परिष्कृत कर आज की रेलगाड़ी पटरी पर दौड़ने लगी।

मुद्रण कला का प्रारम्भिक विकास चीन में हुआ। इस कला का आविष्कार कब व किसके द्वारा हुआ, इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन यूरोप के अनेक देश इस सम्बन्ध में अपना दावा करते हैं। वैसे इस कला के प्रचार – प्रसार का श्रेय समाचार – पत्रों को जाता है।

बादलों में चमकने वाली बिजली का अध्ययन कर बैंजामिन फ्रेंकलिन ने विद्युत का आविष्कार किया, जो आज हमारी दैनिक आवश्यकता बन गई है।

जर्मनी के **निकोलस आटो** ने पेट्रोल के जल्दी ही गैस बन जाने के गुण का उपयोग कर सन् 1876 में चार – आघातीय इंजन का आविष्कार किया। जिसके आधार पर मोटरगाड़ियाँ आवागमन का साधन बनीं।

पक्षियों को आकाश में उड़ता देख मानव के मन में भी आकाश में विचरण करने की जिज्ञासा जाग्रत हुई। फलस्वरूप **राइट बन्धुओं** ने वायुयान का अविष्कार किया।

फ्रांस के एक रसायनशास्त्री **नाइसेपोर नियेप्स** तथा उसके पश्चात **लुई डेगुरे** के प्रयासों से फोटो चित्रण का अविष्कार हुआ। इंग्लैण्ड के **विलियम फ्रीजग्रीने** ने सन् 1889 में सेल्यूलाइड की पट्टिका पर खींचे गए चित्रों की एक श्रृंखला तैयार की। एक अन्य ब्रिटिश वैज्ञानिक **राबर्ट डब्ल्यू. पाल** ने गतिशील वस्तुओं का चित्र लेने के लिए एक कैमरा तैयार किया। सन् 1928 में अमेरिका के वार्नर बंधुओं ने सवाक् चलचित्रों के निर्माण में सफलता अर्जित की।

अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया। रेडियों के आविष्कार ने मानव जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिये। इसके बाद 1925 में ब्रिटिश वैज्ञानिक **जॉन बेयर्ड** ने पहला टेलीविजन बनाया।

आधुनिक युग कम्प्यूटर का युग है, जहाँ हर कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है। वैज्ञानिक प्रगति का सर्वश्रेष्ठ आविष्कार आज कम्प्यूटर को कहा जा सकता है। यह आधुनिक युग का नवीनतम चमत्कार है। जिसमे मनुष्य द्वारा बार – बार गणितीय गणनाएँ करने तथा उन्हें क्रमवार जमाने की आवश्यकता नहीं रही। एकसाथ अनेक जानकारियों को वह अपनी स्मृति (मेमोरी) में रख सकता है। आज जिन कम्प्यूटरों का प्रयोग मानव करता है, उसमें अंसख्य गणनाएँ करने की क्षमता है। विभिन्न जानकारियों को एकसाथ अपने भीतर रखने की क्षमता भी वह रखता है।

1887 में **हर्मन होलरिथ** नाम के अमेरिकी ने पहला विद्युत यान्त्रिक कार्ड पंच सारणी यंत्र बनाया। यह बैटरी से चलता था और इसमें कई स्विच व गियर थे। 1924 में कम्प्यूटर कम्पनी इण्टरनेशनल बिजनेस मशीन कॉर्पोरेशन (IBM) नाम से प्रारम्भ हुई। सात दशकों के अथक प्रयास, शोध और अनुसंधान के फलस्वरूप **प्रोफेसर हावर्ड एफीन** ने 1943 में मार्क – 1 नाम के वैद्युत यान्त्रिकीय कम्प्यूटर का निर्माण किया। यह कम्प्यूटर 5 सेकण्ड में दस अंकीय दो संख्याओं का गुणा कर सकता था। संयुक्त राज्य अमेरिका के आयोग कॉलेज के **जॉन एट्नासाफ** ने सन् 1939 में इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का प्रथम मॉडल बनाया। 1946 में **पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय** के इंजीनियरों ने प्रथम इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर बनाने का कार्य पूरा किया। 1950 में **वान न्यूमैन** की योजनानुसार इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का निर्माण किया गया। इस कम्प्यूटर में वाल्व तथा पंच किये हुए कार्डो का उपयोग होता था। इसके पश्चात ट्रांजिस्टर तथा चुम्बकीय टेप काम में लाया जाने लगा। अब यह स्थान माइक्रोप्रोफेसर चिप ने ले लिया है। आज जो कम्प्यूटर उपलब्ध है, उनमें लाखों गुना गुणा करने की क्षमता होती है।

धीरे – धीरे आवागमन के साधनों, कल – कारखानों, पावरलूम मशीनों तथा उनके विद्युत से संचालित यंत्रों का आविष्कार किया गया। समय की बचत व सुविधाओं को देखते हुए मनुष्य ने अपने जीवन में इनकी आवश्यकता को महसूस किया। विश्वस्तर पर समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए अनेक आविष्कार अग्रणी रहे, जिन्होंने समाज में आमूलचूल परिवर्तन किया।

1. **आग का अविष्कार :**– आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है, परन्तु कभी – कभी अनजाने में ही मनुष्य कई महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार कर बैठता है। यह माना जाता है कि आग का आविष्कार भी शायद अनजाने में हुआ होगा। क्योंकि आदिम मानव क्षुधापूर्ति के लिए फल – फूल एवं जंगली जानवरों के कच्चे मांस का ही भक्षण करता रहा, परन्तु कई बार जंगलों में लगी आग से उसे पका हुआ मांस तथा भोजन भक्षण के लिए प्राप्त हुआ होगा, जो निश्चित ही कच्चे मांस की अपेक्षा स्वादिष्ट रहा होगा। अत: उसे आग की उपयोगिता का अनुभव हुआ होगा। भले ही वह शुरूआत में आग से भयभीत हुआ होगा, परन्तु बाद में वह स्वंय ही पत्थरों को रगड़कर आग उत्पन्न करने लगा तथा उसका उपयोग भोज्य पदार्थो को पकाने, प्रकाश उत्पन्न करने एवं गर्मी प्राप्त करने के लिए करने लगा। आग से उसने जंगली जानवरों से भी सुरक्षा प्राप्त करने की कोशिश की। फिर धीरे – धीरे जैसे – जैसे वह सभ्य होता गया, आग का उपयोग मिट्टी के बर्तन पकाने, धातु और काँच को पकाने, कच्ची धातुओं को शुद्ध करने एवं धातु कर्म विकसित करने में किया गया। इस आविष्कार का मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस आविष्कार का उपयोग वह अपने आधुनिक प्रयोगों में भी करता है।

2. **शून्य का आविष्कार :**– शून्य के अविष्कार का श्रेय भारत को जाता है, क्योंकि विशुद्ध अंकगणित की दृष्टि से शून्य का सर्वप्रथम प्रयोग 200 ई. पू. आचार्य पिंगल ने 'छन्द शास्त्रम्' में किया गया था। ईसा से कई सदियों पूर्व भी भारतीय विद्वानों को शून्य से सम्बन्धित विभिन्न संक्रियाओं का कार्यशील ज्ञान था। किसी भी संख्या की शून्य द्वारा भाग देने की स्पष्ट संकल्पना का अविष्कार बारहवीं सदी के विश्वप्रसिद्ध महानतम् गणितज्ञ **भास्कराचार्य** ने किया था। दशमलव अंक पद्धति का विकास भी शून्य की अवधारणा पर आधारित है। इस अंक पद्धति ने मानव सभ्यता के विकास में महान् योगदान दिया है।

3. **दशमलव अंक पद्धति :**– दशमलव अंक पद्धति ने मानव सभ्यता के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संख्याशास्त्र की दृष्टि से इसका आधारभूत महत्व है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न प्रकार के नापतौल एंव वैज्ञानिक अध्ययन में दशमलव प्रणाली का व्यापक प्रयोग होता है। हमारे लिए सर्वाधिक गौरव की बात यह है कि इस प्रणाली के आविष्कार का श्रेय भारत को है। इस आविष्कार ने मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य तथा दशमलव पद्धति ने विश्व स्तर के विज्ञान की उन्नति को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

NOTES

4. **साइकिल का आविष्कार :-** 'साइकिल' परिवहन का सबसे सस्ता तथा सर्वसुलभ साधन है। यह केवल भारत में अपितु विश्वभर में लोकप्रिय है। सबसे पहली साइकिल के निर्माण का श्रेय 1813 में एक जर्मन व्यक्ति **ड्रेस** को जाता है। उसने सायकल को ड्रेसीन (Draisine) नाम दिया। इंग्लैण्ड में इस वाहन को हॉबी हार्स (Hobby Horse) या डंडीहार्स (Dandy Horse) नाम दिया गया।

1839 में **मैकलियन** नामक एक लुहार ने वर्तमान के समान इसे चेन से चलने वाला रूप प्रदान किया। 1861 में **पीयर** (Pier)एंव उसके पुत्र **अर्नेस्ट** (Earnest) ने एक पैडल से चलने वाले वाहन का निर्माण किया एवं पैडल अगले पहिये से जोड़ दिया। इसे उसने वेलोसिपेडी (Velocipede) नाम दिया। सायकाल के अन्य मॉडल इसके पश्चात विकसित हुए।

1869 में पहली बार इसे बायसिकल (Bicycle) नाम दिया गया। 1871 में ऊँचे - पहियो वाली साइकिल का निर्माण हुआ, जिसमे अगले पहिये का व्यास 1 - 1.2 मीटर था, जबकि पिछला पहिया 4 मीटर व्यास का था। आधुनिक बायासिकल का स्वरूप 1879 में विकसित हुआ, जिसका डिजाइनर **हैरी लासन** (Herry Lawson) नामक व्यक्ति था। उसने अपने वाहन का नाम सेफ्टी बायसिकल (Safety Bicycle) दिया। बीसवीं शताब्दीं में बड़े व्यक्तियों को सायकिल के पहियों का स्टेण्डर्ड व्यास 26 इंच रखा जाने लगा एवं बच्चों की सायकल के पहियों का व्यास 16 इंच रखा जाने लगा। कुछ सायकिलों में गीयर भी लगे होते है।

सायकिल की रचना में एक महत्वपूर्ण सुधार एक पशुओं के डॉक्टर डनलप ने किया। उसने साइकिल की गति बढ़ाने के एवं उसके चलाने को सरल बनाने के लिए टायर एवं हवा भरी हुई ट्यूब का प्रयोग किया। उसने अपनी तकनीक को 1888 में पेटेन्ट करवाया तथा एक धनी व्यक्ति के साथ रबर टायर एवं ट्यूब बनाने का कारखाना डाला। डनलप का नाम आज भी टायर-ट्यूब के क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

5. **रेलगाड़ी का अविष्कार :-** मानव सभ्यता के विकास में रेलगाड़ी का अविष्कार एक युगान्तकारी घटना सिद्ध हुई। भाप के इंजन के आविष्कार का श्रेय **जेम्स वाट** को है, जो इंग्लैण्ड का यांत्रिक था। भाप के इंजन द्वारा गाड़ी चलाने का प्रथम प्रयोग फ्रांस की सेना के इंजीनियर **निकोलस जोजफ कगनाट** ने सन् 1769 में किया। दूसरा प्रयोग वोल्टन वाट के कारखाने के एक इंजीनियर विलियम मर्डक ने किया, परन्तु वह कोई प्रगति नहीं कर सका। इस कार्य को **रिचर्ड ट्रेविथिक** ने अपनी पूर्ण क्षमता के साथ आगे बढ़ाया। उसने 1808 में भाप की शक्ति द्वारा चलने वाली विश्व की पहली रेलगाड़ी का सफल प्रयोग किया।

वास्तव में रेलगाड़ी का आविष्कारक इंग्लैण्ड में जन्मा **जार्ज स्टीफेंसन** था। उसने 1814 में एक रेलगाड़ी का निर्माण किया, जो कोयला लादकर 6.5 किलोमीटर प्रति घंटे की चाल से चल सकती थी।

जार्ज ने भाप के इंजन में अनेक सुधार किये, जिसके फलस्वरूप उसकी शक्ति काफी बढ़ गयी। जार्ज ने अपनी प्रथम रेलगाड़ी का प्रदर्शन 27 सितम्बर 1825 को किया। इस रेलगाड़ी की गति उस समय की सबसे तेज चलने वाली घोड़ागाड़ी से भी अधिक थी। यह प्रयोग अत्यन्त सफल रहा, विरोधियों ने इसका जमकर विरोध भी किया, किन्तु कालान्तर में परिस्थितियाँ अनुकूल होती चली गयी।

कुछ समय बाद जार्ज स्टीफेंसन तथा उनके पुत्र राबर्ट ने एक नये शक्तिशाली इंजन 'राकेट' का निर्माण किया। इसका प्रदर्शन 18 अक्टूबर 1829 को हुआ। वह 35 मील प्रति घण्टे की गति से दौड़ा। इस प्रकार 15 सितम्बर 1830 को मैनचेस्टर से लिवरपूल के बीच चलने वाली रेलगाड़ी का विधिवत् उद्घाटन हुआ। यह संसार की प्रथम रेलगाड़ी थी।

6. विद्युत ऊर्जा :- विद्युत ऊर्जा या विद्युत शक्ति का ज्ञान मनुष्य के लिए विज्ञान का एक अनुपम वरदान है। आज के युग में विद्युत शक्ति हमारे दैनिक जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। घर, ऑफिस, दुकान, कारखानें, मार्ग आदि सभी विद्युत ऊर्जा की मदद से ही रोशन होते हैं। रेडियो, टी.वी. कम्प्यूटर आदि यान्त्रिक उपकरणों का संचालन भी विद्युत शक्ति की सहायता से ही होता है।

अब यदि इस विद्युत शक्ति या ऊर्जा की शुरूआत की बात करें तो इस शक्ति के वास्तविक ज्ञान का विकास यूरोप व अमेरिका में हुआ। बादलों में चमकने वाली विद्युत का व्यापक अध्ययन अमेरिकी वैज्ञानिक **बेंजामिन फेंकलिन** ने सन् 1852 में प्रस्तुत किया। उसने रेशम के पतले कपड़े की पतंग बनाई और डोर के निचले भाग में लोहे की चाबी बाँध दी। इस पतंग को विद्युतमय बादलों की ओर उड़ाया। बर्षा होने पर विद्युत आवेश भीगी हुई डोर में होता हुआ चाबी तक पहुँचने लगा, जिसे फेंकलिन ने लीडन जार नामक यंत्र में एकत्र किया एवं सिद्ध किया कि वायुमण्डलीय विद्युत और घर्षण द्वारा उपलब्ध विद्युत में कोई भी अन्तर नहीं होता।

विद्युत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आविष्कारों के लिए लन्दन निवासी **माइकल फैराडे** का नाम सम्पूर्ण जगत में प्रख्यात है। उसने अपने प्रयोगो द्वारा यह मालूम किया कि यदि चुम्बकीय क्षेत्र में विद्युत के तार को घुमाया जाए तो तार में विद्युत धारा प्रवाहित होने लगती है। चुम्बक की शक्ति द्वारा विद्युत धारा प्राप्त करने की प्रक्रिया का आविष्कार माइकल फैराडे के जीवन की महान सफलता थी। आधुनिक युग के बिजलीघरों में इसी विधि द्वारा विद्युत उत्पादन किया जाता है। आयताकार ताँबे के तार के फ्रेम को ऊँचाई पर गिरती हुई जल की धारा से घुमाने पर जो विद्युत उत्पादित होती है, उसे जल-विद्युत कहते हैं।

7. **मुद्रण यन्त्र :-** प्रामाणिक रूप से आज कहा जा सकता है कि छापने की कला का प्रारम्भिक विकास चीन में हुआ था। सन् 1908 में एक अंग्रेज यात्री को चीन के एक बौद्ध मठ में चीनी भाषा में छपा एक पृष्ठ मिला था। इसके आधार पर यह निष्कर्ष लगाया कि चीनियों को लकड़ी पर खुदे हुए ठप्पों के द्वारा मुद्रण का ज्ञान था।

वैसे यूरोप के अनेक देश मुद्रण कला के अविष्कारक होने का दावा करते हैं । इंग्लैण्ड के लोगो का दावा है। कि लारेंस कास्टर ने सर्वप्रथम पन्द्रहवीं सदी में मुद्रण हेतु धातु के ठप्पे तैयार किए थे, किन्तु संसार यह मानता है कि जर्मन वैज्ञानिक **जाँन गुटनवर्ग** इस कला का आविष्कारक था। उसने सबसे पहले जर्मन भाषा की एक धार्मिक पुस्तक को छापा था। तत्पश्चात 'सन्त जान की कला' और 50 पृष्ठों की व्याकरण की पुस्तक छापकर उसने मुद्रण की नई विधि खोज निकाली। उसने अलग-अलग पृष्ठों के ठप्पे बनाने के बदले सभी अक्षरों के धातु के ठप्पे तैयार कर उन अक्षरों को जोड़कर छापना प्रारम्भ किया। यह अत्यन्त लोकप्रिय सिद्ध हुआ और **जॉन गुटनवर्ग** द्वारा आविष्कृत मुद्रण कला का प्रचार सम्पूर्ण यूरोप में हो गया। जर्मनी, इटली, फ्रांस एवं इंग्लैण्ड में अनेक छापाखानें खुल गए। अब नई डिजाइन की स्वचलित मशीनों के कारण 'टाइम्स' समाचार-पत्र की बिक्री कई गुनी बढ़ गई। आज के युग में मुद्रण कार्य काफी उन्नति पर है। भाप के इंजन का स्थान अब विद्युत ऊर्जा ने ले लिया है। फलतः प्रकाशित पुस्तकों एवं समाचार-पत्रों के अम्बार लगने लगे हैं।

8. **मोटरगाड़ी :-** पेट्रोलियम पदार्थ भूमि के अन्दर से निकाला जाता है। इसका कुछ अंश वाष्पशील होता है, जिसे ठंडा करने पर पेट्रोल उपलब्ध होता है। पेट्रोल से कुछ भारी द्रव को मिट्टी का तेल तथा उससे भी भारी द्रव को डीजल कहा जाता है। पेट्रोलियम से प्राप्त पेट्रोल एवं डीजल आज औधोगीकरण हेतु ऊर्जा के सर्वप्रमुख स्त्रोत हैं।

पेट्रोल में जल्दी ही गैस बन जाने की क्षमता होती है। जर्मनी की **निकोलस आटो** ने इस गुण का उपयोग कर 1876 में चार आघातीय इंजन का आविष्कार किया। इस इंजन के द्वारा जर्मनी के एक अन्य यांत्रिक कार्ल बैंज ने मोटरगाड़ी चलाने में सफलता प्राप्त की। कालान्तर में अमेरिका के डेट्राइट नगर के यांत्रिक **हेनरी फोर्ड** ने बड़े पैमाने पर मोटरगाडियाँ बनाना शुरू कर दिया। उनकी ये मोटरगाड़ियाँ शीघ्र ही संसार भर में लोकप्रिय हो गई। पेट्रोल से चलने वाले इंजन में **रूडोल्फ डीजल** ने व्यापक सुधार किए और उसके डिजाइन में परिवर्तन किया। उसके द्वारा आविष्कृत इस इंजन का नाम डीजल इंजन रखा गया। कुछ समय बाद ही पेट्रोल के इंजनो का स्थान डीजल इंजनों ने ग्रहण कर लिया। आजकल बड़े-बड़े ट्रक, बसें, रेलगाड़ियाँ, जल जहाज इत्यादि में डीजल इंजनों का ही प्रयोग होता है। मोटरगाड़ियाँ चलाने के लिए सौर ऊर्जा या किसी अन्य वैकल्पिक ऊर्जा के उपयोग पर वैज्ञानिक शोध करने के लिए जुट गए है।

9. **टेलीफोन या दूरभाष :-** टेलीफोन का अविष्कार **अलेक्जेंडर ग्राहम बेल** ने किया। उसने कान की झिल्ली का सूक्ष्म निरीक्षण किया। उसने कान के नमूने के आधार पर इस्पात की दो झिल्लियाँ बनाई तथा उन्हें बिजली के तार से जोड़ दिया। इस यंत्र के एक सिरे से बोलने पर दूसरे सिरे पर ध्वनि सुनायी पड़ती थी। इस विधि द्वारा थोड़ी दूर तक ही ध्वनि को प्रेषित किया जा सकता था। बाद में उसने प्रेषित (Transmeter) एवं संग्राही (Receiver)का मॉडल बनाने में सफलता प्राप्त कर ली। उसने प्रेषित के निकट एक विद्युत चुम्बक को लगाया तथा विद्युत धारा के तार को दूसरे सिरे पर रिसीवर के विद्युत चुम्बक से जोड़ दिया। प्रेषित की झिल्ली के निकट ध्वनि उत्पन्न करने पर उसके सामने की कमान में कम्पन पैदा होने लगता था, जिससे प्रेषित के निकट उत्पन्न हुई ध्वनि पुनः रिसीवर के सिरे पर उत्पन्न हो जाती थी।

सन् 1876 में एक दिन यन्त्र के परीक्षण के समय बेल ने भवन की ऊपरी मंजिल से प्रेषित में कहा, 'वाटसन, कृपया इधर आओ, हमें तुमसे काम है।' रिसीवर के सिरे पर वाटसन को बेल की आवाज सुनायी पड़ गयी। वह तुरन्त दौड़कर ऊपर पहुँचा। बेल आश्चर्यचकित रह गया। उसका प्रयोग अब एक आविष्कार बन चुका था।

सन् 1915 में अमेरिका के पूर्वी तट से पश्चिमी समुद्र तट पर टेलीफोन के तार फैलाये गये ! बेल ने प्रेषित में पुन: वही वाक्य कहा, ''वार्टसन, कृपया इधर आओ, हमें तुमसे काम है।'' वॉटसन अब उससे लगभग 5700 किलोमीटर दूर था, उसने बेल कर आवाज को सुन लिया तथा उत्तर दिया कि वह एक सप्ताह में उसके पास पहुँच जायेगा। यह विश्व की प्रथम टेलीफोन वार्ता थी। अब तो ऐसी तकलीफ (वीडियो - फोन) का विकास भी कर लिया गया है, जिससे कि वार्तालाप करने वाले एक - दूसरे को स्क्रीन पर भी देख सकें।

उपयोगिता :- टेलीफोन के विकास ने हमारे जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है।

(i) दूरदर्शन के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों से सीधा सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

(ii) टेलीफोन के विकास ने संचार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये है।

(iii) टेलीफोन के माध्यम से वैदेशिक सम्बन्धों की स्थापना में सहयोग प्राप्त हुआ है।

(iv) दूरभाष के इलेक्ट्रॉनिक तकनीक से जुड़ जाने के कारण समस्त नगरों तथा अधिकांश गाँवों को भी दूरभाष की सुविधा प्राप्त हो गयी है।

10. **चलचित्र :-** इंग्लैण्ड वैज्ञानिक **विलियम फ्रीजग्रीने** ने 1889 में सेल्यूलाइड की पट्टिका पर खीचें गये चित्रों की एक श्रृंखला तैयार की। इस श्रृंखला के चित्रों को क्रमानुसार गतिमान करके उन्हें प्रकाश प्रक्षेपक के द्वारा परदे पर प्रदर्शित किया, जिसे देखकर लोग आश्चर्यचकित हो गये।

एक अन्य ब्रिटिश वैज्ञानिक **राबर्ट डब्ल्यू. पाल** ने गतिशील वस्तुओं का चित्र लेने के लिए एक कैमरा बनाया। उसने इससे 1896 में डर्बी की घुड़दौड़ की फोटो चित्रावली तैयार की तथा प्रक्षेपण यन्त्र द्वारा उसे प्रदर्शित किया।

जर्मनी में स्केलेडेनोवस्की बन्धुओं ने भी चलचित्र के क्षेत्र में अच्छी सफलता अर्जित की तथापि इस कार्य में वास्तविक सफलता फ्रांस के **लुइ** तथा **आगस्ट लुमियर** बन्धुओं को प्राप्त हुई। इन्होंने 1895 ई. में पेरिस में विश्व का प्रथम सिनेमा हाल खोला। उनका 'रेलगाड़ी का आगमन' नामक चलचित्र बहुत प्रसिद्ध हुआ। उनकी दूसरी उल्लेखनीय फिल्म थी 'समुद्र तट पर स्नान'।

कालान्तर में फोटो चित्रण एवं प्रकाश प्रक्षेपण की प्रक्रिया में अनेक परिवर्तन हुए, जिससे उसका स्वरूप निखरता चला गया। सन् 1928 में अमेरिका के वार्नर बन्धुओं ने सवाक् चलचित्रों के निर्माण में सफलता अर्जित की। वर्तमान में हम लोग सवाक् चलचित्रों का आनन्द लेते है। वर्तमान में भारत सिनेमा उद्योग के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी देश है।

चलचित्रों की उपयोगिता- चलचित्र अथवा सिनेमा मनोंरजन का सबसे सस्ता साधन है। सिनेमा से आँख और कान दोनों इन्द्रियों की तृप्ति होती है। संगीत प्रेमियों को मधुर गीत सुनने को मिलते है। हारा - थका हुआ मनुष्य सिनेमा हाल में पहुँचकर आनन्दित हो जाता है। शारीरिक और मानसिक थकावट दूर हो जाती है।

शिक्षा और सामजिक सुधार की दृष्टि से सिनेमा का महत्वपूर्ण स्थान है। सिनेमा से आँख द्वारा इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य और विज्ञान की प्रत्यक्ष जानकारी दी जा सकती है। पुस्तकों और भाषणों की तुलना में सिनेमा शिक्षा का अधिक कारगर साधन है। सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियाँ दूर करने में सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

महापुरूषों की जीवनगाथा प्रस्तुत करने वाले सिनेमा दर्शकों में उदात्त भावनाओं - दया, वीरता, देशप्रेम, त्याग आदि को दृढ़ करता है। जनता में राष्ट्रीय भावना की जागृति सिनेमा द्वारा बड़ी आसानी से आ सकती है। सिनेमा संकटकाल में नागरिकों को देश के लिए स्वार्थ एवं त्याग की प्रेरणा देता है। किसानों को चित्रपट के द्वारा खेती के नये तरीकों और औजारों से परिचित करवाया जाता है। बीमारी के फैलने के कारणों और उनसे रक्षा के उपायों को भी चित्रपट पर दिखाया जाता है। राष्ट्रीय जागृति की दृष्टि से सिनेमा की उपयोगिता बहुत अधिक है। वृत्तचित्रों के द्वारा देश की प्रगति की जानकारी भी दी जाती है।

सिनेमा से प्रचार कार्य और विज्ञापन में भी सहायता मिलती है। 'सिनेमा' तो अब स्वतन्त्र व्यवसाय या उद्योग बन चुका है। हजारों व्यक्ति और सैकड़ों कलाकार इससे अपनी आजीविका चला रहे है। मनोंरजन कर के माध्यम से सरकार को भी राजस्व प्राप्त होता है।

11. **दूरदर्शन एवं रेडियो :-** रेडियो के आविष्कार ने मानव जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिये। रेडियो द्वारा मनोंरजन के साथ - साथ अनेक सूचनाएँ और समाचार भी प्रसारित किये जाने लगे। किन्तु मनुष्य की उत्कंठा कभी शान्त नहीं होती। अब उसके मन में इस ध्वनि प्रसारण के बाद उसके स्त्रोत को देखने की लालसा जागी। जर्मन वैज्ञानिक **पाल निपकाड** ने इस बारे में अध्ययन किया, किन्तु व्यावाहारिक रूप में टेलीविजन के आविष्कार का श्रेय ब्रिटिश वैज्ञानिक **जॉन बियर्ड** को प्राप्त हुआ और 1925 में उन्होंने पहला टेलीविजन बनाया।

टेलीविजन द्वारा संसार के सभी देशों में मनोरंजन कार्यक्रम, शिक्षा कार्यक्रम, समाचार आदि का प्रसारण होता है। पिछले कुछ वर्षो से भारत में टेलीविजन का व्यापक प्रसार हुआ है। अब तो सेटेलाइट्स की मदद से प्रसार कार्य में अभूतपूर्व सुविधाएँ प्राप्त हो गयी है।

12. **कम्प्यूटर :-** कम्प्यूटर आधुनिक युग का नवीनतम चमत्कार है। कम्प्यूटर की संकल्पना और विकास का कार्य क्रमश: हुआ है। मनुष्य के विभिन्न क्रिया - कलापों में गणनाओं हिसाब - किताब, जोड़ - घटाव, जानकारी का संग्रहण, उसका प्रबन्धन आदि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। बार - बार गणनाएँ करना, सही गणितीय सारणी बनाना, जानकारियों को संकलित कर क्रमवार जमाना तथा उपयोग में लाना अत्यन्त दुष्कर एवं नीरस कार्य है। मनुष्य प्रतिदिन की कठिनाइयों से मुक्ति पाने के लिए एक ऐसे यन्त्र की कल्पना करने लगा जो बगैर त्रुटि किए सही और सुस्पष्ट जानकारी पलभर में उपलब्ध करा दे।

इस प्रकार कम्प्यूटर जैसी मशीन की संकल्पना ने धीरे - धीरे आकार लेना प्रारम्भ किया। बीजगणित, त्रिकोणमिति, कैलक्युलेशन, अंकन, गणना जैसी पद्धतियों में अनेकानेक परिवर्तन होते - होते कम्प्यूटर की संकल्पना को बल मिला। सन् 1821 में इस संकल्पना ने आकार लेना प्रारम्भ किया। **चार्ल्स बैबेज** इसके जनक बताए जाते है। उन्होंने 1833 में वैश्लेषित यंत्र का निर्माण किया, जिसे आज के कम्प्यूटर का पूर्वज कहा जा सकता है। यह गणित के सभी चार आयामों, अर्थात जोड़, बाकी, गुणा और भाग को कर सकता था। 1887 में **हर्मन होलरिथ** नाम के अमेरिकन ने पहला विद्युत यांत्रिक कार्ड पंच सारणी यंत्र बनाया। यह बैटरी से चलता था और इसमें कई स्विच एवं गियर थे। 1924 में कम्प्यूटर कम्पनी इण्टरनेशनल बिजनेस मशीन कार्पोरेशन (IBM) नाम से प्रारम्भ हुई। सात दशकों के अथक प्रयास, शोध और अनुसंधान के फलस्वरूप प्रोफेसर हावर्ड एफीन ने 1943 में मार्क-1 के वैद्युत यांत्रिकीय कम्प्यूटर का निर्माण किया। यह कम्प्यूटर 5 सेंकण्ड मे दो 10 अंकीय संख्याओं को गुणा कर सकता था। अमेरिका के जान वी. एट्नासॉफ ने 1939 में इलेक्ट्रॉनिक डिजिटल कम्प्यूटर का पहला मॉडल तैयार किया। पेसिलवेलिया विश्वविद्यालय के मुरे स्कूल में पचास वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की एक टीम ने 1946 में पहला इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर बनाने का कार्य पूरा किया। इसके एक वर्ष पूर्व अंतरिक्ष वैज्ञानिक जान वान न्यूमैन ने पहली बार इलेक्ट्रॉनिक डिस्किट वेरियेवल आटोमैटिक कम्प्यूटर नामक बहुपयोगी इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर की योजना प्रस्तुत की। अंत में 1950 में यह कम्प्यूटर बना। इन कम्प्यूटरों में वाल्व और पंच किए हुए कार्डो का उपयोग होता था। इसके बाद ट्रांजिस्टर एवं चुम्बकीय टेप काम में लाए गए। अब यह स्थान माइक्रोप्रोसेसर चिप ने ले लिया है। चिप एक रूपए के सिक्के के लगभग बराबर और आयताकार होता है। सैकड़ो स्वचों, गियरों और वाल्वों द्वारा किया जाने वाला कार्य अब मात्र एक चिप से हो जाता है। कम्प्यूटर में प्रोसेसिंग और कम्प्यूटिंग का कार्य इस चिप द्वारा ही होता है। इसलिए इसे माक्रोप्रोसेसर कहा जाता है। आज जो कम्प्यूटर उपलब्ध है। उनमें लाखों गुनी गणनाएँ करने की क्षमता होती है।

द्वितीय महायुद्ध के बाद विज्ञान के क्षेत्र मे जो अभूतपूर्व प्रगति हुई है, उसका श्रेय देने के लिये किसी प्रतिनिधि वस्तु का चयन किया जावे तो कम्प्यूटर को निश्चित रूप से लिया जा सकता है। वास्तव में कम्प्यूटर ने विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति कर ली है। इस क्रान्ति के साथ स्वंय कम्प्यूटर को भी अपने विकास के कई चरण इन वर्षो में तय करने पड़े हैं। कम्प्यूटर के क्षेत्र में प्रतिवर्ष इतने अधिक परिवर्तन और परिवर्द्धन हो रहे हैं कि सामान्य मनुष्य आश्चर्यचकित रह जाता है। यह कहना बिल्कुल अतिशयोक्ति नहीं है कि मनुष्य के चन्द्र आरोहण एवं मंगल, शुक्र, बृहस्पति आदि ग्रहों पर अन्तरिक्ष यानों की यात्रा की सफलता में कम्प्यूटर का योग सर्वोपरि है। अन्तर्महाद्वीपीय युद्धक शस्त्र जो विश्व राजनीति को वर्तमान में नियन्त्रित करते है, कम्प्यूटर के बिना सम्भव नहीं थे।

13. **वायुयान :-** पक्षियों को आकाश में उड़ता देख मनुष्य के मन में भी आकाश में विचरण करने की इच्छा जाग्रत होने लगी। पौराणिक कथाओं में गगनचारी विमानों का वर्णन मिलता है। रामायण में भगवान राम का पुष्पक विमान में दल - बल सहित लंका से अयोध्या आगमन का उल्लेख मिलता है।

मनुष्य ने अपनी इस उत्कंठा को शांत करने के लिए अनेक प्रयोग किए। फ्रांस के रोजियर ने गुब्बारों में गैस भरकर उड़ने का प्रयत्न किए। वह संसार का पहला व्यक्ति था जिसने गुब्बारे में बैठकर आकाश की सैर की। इसके पश्चात अमेरिका के दो भाइयों विल्बर राइट और ओरबिल राइट ने एक पंखयुक्त वायुयान का नमूना तैयार किया। इसे गति प्रदान करने हेतु उसमें मोटर साइकिल का इंजन लगाया। कुछ प्रारम्भिक विफलताओं के बाद राइट बन्धुओं ने 1908 में अपने वायुयान का प्रदर्शन किया। उनका यह वायुयान लगभग एक घण्टें तक उड़ता रहा। इस अपूर्व सफलता को देखकर अनेक वैज्ञानिकों को प्रेरणा मिली।

जर्मन निवासी कांउट जेपलिन ने अनेक प्रयोग किए और सफलता प्राप्त की। सन् 1918 में उसने जेपलिन नामक वायुयान निर्मित किया जो 800 फुट लम्बा और 75 फुट व्यास का था। उसने 112 घंटे आकाश में उड़कर अटंलाटिक महासागर को पार कर अमेरिका की यात्रा पूर्ण की। इग्लैंण्ड, इटली, अमेरिका में निरन्तर शोध कार्य चलते रहे। उनमें अनेक तकनीकी सुधार किए गए। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात सन् 1919 के अगस्त महीने में पेरिस और लंदन के बीच नियमित उड़ान प्रारम्भ हुई। आज प्रायः देश – विदेश की वायुयान द्वारा यात्रा सुगम और सुरक्षित रूप से संचालित हो रही है। वायुयान को उड़ने से पूर्व एक पक्की सड़क जैसी पट्टी पर दौड़ लगानी पड़ती है, जिसे रनवे (Runway) कहा जाता है। एक रूसी वैज्ञानिक सिकोस्वी ने एक नया प्रयोग किया। उसने वायुयान के ऊपरी भाग में तेज गति से घूमनेवाले विशाल पंख लगाए जिससे वह थोड़ी ही दूर तेज दौड़कर उड़ने लगा। इस छोटे वायुचक्रीय वायुयान को हेलीकाप्टर कहा जाता है। यह यान भूमि पर कहीं भी उतर सकता है। आजकल ऐसे हेलीकाप्टर भी बनने लगे है जो पानी पर भी उतर सकते है।

14. **फोटोचित्रण :–** किसी चौकोर डिब्बे की एक दीवार में छोटा – सा छिद्र दिया जाए जिसमें से प्रकाश किरणें जा सकें तो छिद्र के सामने रखी हुई वस्तु का उल्टा प्रतिबिम्ब सामने की दीवार पर बन जाता है। इस यंत्र को सूची छिद्र कैमरा कहा जाता है। उन्नीसवीं सदी में फ्रांस के एक रसायनज्ञ, नाइसेपोर नियेप्य ने प्रतिबिम्बित चित्र का स्थायी बनाने हेतु प्रयोग कर यह मालूम कर लिया कि सिल्वर आयोडाइड से पुते हुए तल पर वस्तु का प्रतिबिम्ब चित्रित्र हो सकता है। लुई डेगुरे ने नियेप्य के अनुभवों का लाभ उठाया उसने अनेक प्रयोगों द्वारा यह जान लिया कि पारे की भाप के द्वारा उपर्युक्त प्रतिबिम्ब सुस्पष्ट आकार ग्रहण कर लेता है। यह एक महत्वपूर्ण आविष्कार था।

डेगुरे ने अनुसंधान कार्य जारी रखा। उसने फोटोग्राफ पट्टिका को सोडियमथियो सल्फेट (हाइपो) में डुबाकर चित्र को स्थिर बनाने की विधि को खोज निकाला, किन्तु प्रक्रिया द्वारा एक ही चित्र प्राप्त किया जा सकता था, दूसरा चित्र बनाने हेतु सम्पूर्ण प्रक्रिया को फिर दोहराना पड़ता था।

सन् 1841 में इग्लैंण्ड के विलियम हेनरी फाक्स टालबेट ने धातु पट्टिका के चित्र की अनेक प्रतियाँ बनाने में सफलता प्राप्त कर ली। इस खोज ने फोटो चित्रण में क्रान्तिकारी परिवर्तन भी प्रस्तुत कर दिए।

सन् 1887 में गुडविल और ईस्टमैन नामक दो अमेरिकन वैज्ञानिकों ने फोटो पट्टिका के स्थान पर सेल्युलाइड फिल्म का प्रयोग खोज निकाला, जिससे फोटो चित्रण और सुगम हो गया।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. वैदिक युग के वैज्ञानिकों का महत्व प्रदर्शित कीजिए।
2. पायथेगोरियस बन्धुओं के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
3. शून्य के आविष्कार का श्रेय किसे जाता है और क्यों।
4. साइकिल के आविष्कार की कहानी लिखिए।
5. विज्ञान ने हमारे विचारों को किस प्रकार प्रभावित किया है।
6. विद्युत ऊर्जा पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
7. आग का आविष्कार कैसे हुआ? इसका मानव जीवन – शैली पर प्रभाव कैसे हुआ।
8. प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
9. आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों का हमारे जीवन में क्या प्रभाव पड़ा है? उदाहरण देकर बताइए।
10. विश्व के प्राचीन वैज्ञानिक इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

NOTES

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

1. बीजगणित एवं नक्षत्र विज्ञान के प्रणेता थे।

   i. आर्यभट्ट ii. चरक iii. बोधायन iv. कणाद

2. संख्या को शून्य द्वारा भाग देने की संकल्पना के आविष्कारक कौन थे।

   i. न्यूटन ii. ग्राहम बैल iii. भास्काराचार्य iv. नार्लीकर

3. यन्त्रों के आविष्कारों ने कौनसे युग का आरम्भ किया।

   i. औधोगिक युग ii. कृषि युग iii. साइकिल युग iv. आदिम युग

4. संसार में प्रथम रेलगाड़ी कहाँ से कहाँ तक चली।

   i. मुम्बई से थाने ii. लन्दन से शेफिल्ड

   iii. दिल्ली से लिवरपूल iv. मेनचेस्टर से लिवरपूल

5. प्रो. हावर्ड एफीन ने किस यन्त्र का निर्माण किया।

   i. टेलीविजन ii. मोटर गाड़ी

   iii. विद्युत यान्त्रिकीय कम्प्यूटर iv. दूरदर्शी

6. वायुयान उड़ने से पहले किस पर दौड़ता है।

   i. नहर पर ii. रन – वे पर

   iii. कच्ची सड़क पर iv. खेल के मैदान पर

7. मुद्रण कला का पूर्ण विकास करने वाला कौनसा वैज्ञानिक था।

   i. बायड डनलप ii.जार्ज स्टीफेंसन

   iii. जोइन गटनवर्ग iv. लुडविंग फ्रीडर

8. भाप के इंजन का आविष्कारक कौन था।

   i. कर्कपैट्रिक ii. फिलिप हीनरिच

   iii. जेम्स वाट iv. सी. वी. रमन

9. विज्ञान का व्यावहारिक समान्तरण है।

   i. भौतिकी ii. भौगोलिकी

   iii. प्रौद्योगिकी iv. मानविकी

10. किसने सिद्ध किया था कि वायुमण्डलीय विद्युत तथा घर्षण से प्राप्त विद्युत में अन्तर नहीं होता।

   i. बेजामिन फेकलिनन ii. नार्लीकर

   iii. हेनरीफोर्ड iv. विल्बर राइट

उत्तर :- 1. (i),2. (iii), 3. (i), 4. (iv), 5.(iii), 6. (ii), 7. (iii), 8. (iii), 9. (iii), 10. (i)

■ ■ ■

6. त्रुटि संशोधन

NOTES

भाषा के माध्यम से मनुष्य अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है किन्त इसके साथ वह यह भी आवश्यक है कि जो कुछ अभिव्यक्त किया जा रहा है उसमें किसी भी प्रकार की त्रुटि नहीं होनी चाहिए। भाषा के संदर्भ में जब हम त्रुटियों का विश्लेषण करते है तब यह पाते हैं कि से त्रुटियाँ अनेक स्तर पर हो सकती है। कुछ त्रुटियाँ उच्चारण और वर्तनी से संबंधित होती हैं, तो कुछ का सम्बन्ध शब्द और अर्थ से होता है। इसी प्रकार कुछ त्रुटियाँ या अशुद्धियाँ वाक्य के स्तर पर होती हैं।

भाषा में होने वाली अशुद्धियों का कारण – भाषा में होने वाली अशुद्धियों का प्रमुख कारण व्याकरण सम्बन्धी अज्ञानता, उच्चारण एवं वर्तनी के प्रयोग में असावधानी तथा भाषा की शुद्धता के प्रति सचेत न होना है।

अशुद्धियों या त्रुटियों के प्रकार

हिन्दी में अशुद्धियाँ चार प्रकार की होती हैं – 1. उच्चारणगत तथा वर्तनीगत अशुद्धियाँ। 2. शब्दगत अशुद्धियाँ। 3. शब्दार्थगत अशुद्धियाँ। 4. वाक्यगत अशुद्धियाँ।

1. **उच्चारणगत तथा वर्तनीगत अशुद्धियाँ** – हिन्दी में स्वरों एवं व्यंजनों के दोषपूर्ण उच्चारण से होने वाल अशुद्धियों को उच्चारणगत अशुद्धियाँ कहते हैं।

जैसे – कवि – कवी। नमस्कार – नमश्कार।

उच्चारणगत ध्वनि को लिखित रूप प्रदान करने को वर्तनी कहते हैं। लिखने में जो अशुद्धियाँ कहलाती हैं।

जैसे – प्राण – प्रान। निपुण – निपुन।

2. **शब्दगत अशुद्धियाँ** – भाषा में शब्द सम्बन्धी भी बहुत – सी भूलें देखी जाती हैं। अनावश्यक प्रत्यय या उपसर्ग के सह – प्रयोग के कारण होती हैं।

जैसे – पूजनीय – पूज्यनीय।

3. **शब्दार्थगत अशुद्धियाँ** – शब्दों का सही अर्थ न मालूम होने की स्थिति में प्राय: उनका गलत प्रयोग हो जाता है, जिससे भाषा दोषपूर्ण हो जाती है।

जैसे – भोजन करना – भोजन खाना। प्रतीक्षा करना – प्रतीक्षा देखना।

4. **वाक्यगत अशुद्धियाँ** – वाक्य निर्माण में व्याकरण का समुचित ध्यान न रखे जाने के कारण, भाषा में होने वाली अशुद्धियाँ वाक्यगत अशुद्धियाँ कहलाती हैं।

व्याकरणगत अशुद्धियाँ – संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, लिंग, वचन आदि के दोष के कारण होती है।

जैसे – राम को मृत्युदण्ड की सजा मिली – राम को मृत्युदण्ड मिला।

उच्चारणगत अशुद्धियाँ

हिन्दी में स्वरों और व्यंजनों के दोषपूर्ण उच्चारण से होने वाली अशुद्धियों को उच्चारणगत अशुद्धियाँ कहते हैं। ये दो प्रकार की होती हैं। जो निम्नानुसार हैं – (i) स्वर सम्बंधी उच्चारणगत अशुद्धियाँ और (ii) व्यंजन सम्बन्धी उच्चारणगत अशुद्धियाँ।

(i) **स्वर सम्बन्धी उच्चारणगत अशुद्धियाँ**

स्वरों के उच्चारण से होने वाली अशुद्धियाँ स्वर सम्बन्धी उच्चारण अशुद्धियाँ कहलाती हैं।

1. **स्वर को ह्रस्व या दीर्घ करने विषयक अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
कवि	कवी	वाल्मीकि	वाल्मीकी
स्थिति	स्थिती	आयु	आयू
उषा	ऊषा	कालिदास	कालीदास
पति	पती	प्रेयसी्	प्रेयसि

2. **स्वरागम** – उच्चारण करते समय व्यंजन के पहले स्वर का आ जाना स्वरागम कहलाता हैं। इस प्रकार की अशुद्धयों को स्वरागम अशुद्धियाँ कहते है। जैसे –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
स्कूल	इस्कूल	स्नान	अस्नान
स्तुति	अस्तुति	स्टेशन	इस्टेशन

3. **स्वर लोप** – उच्चारण में मुख सुख के कारण कई बार स्वर अनुच्चारित रह जाते है, उन्हें स्वर लोप सम्बन्धी अशुद्धियाँ कहते हैं – जैसे –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
उलटी	उल्टी	जनता	जन्ता
खोलता	खोल्ता	त्यौहार	तिवहार

(ii) **व्यंजन सम्बन्धी उच्चारणत अशुद्धियाँ** – व्यंजन स, श, ष, ब, व, छ, झ, उ, ह, क, ख, ज्ञ, श्र, र आदि की अशुद्धियाँ मिलते – जुलते उच्चारण के कारण हो जाती हैं। इसका मुख्य कारण अज्ञान, असावधानी एवं स्थान विशेष की बोली का प्रभाव है। व्यंजन सम्बंधी अशुद्धियाँ इस प्रकार हैं–

1. **स, श, ष सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
शाम	साम	नमस्कार	नमश्कार
शक	सक	शत	सत

'श' और 'ष' का उच्चारण

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
भाषा	भाशा	मनुष्य	मनुस्य
विष	विश	कृषि	कृसि

2. **'ब' और 'व' का उच्चारण** – कई बार 'ब' के स्थान पर 'व' अथवा 'व' के स्थान 'ब' का प्रयोग करने से भी उच्चारणगत अशुद्धियाँ होती है।

शुद्ध	**अशद्ध**	**शुद्ध**	**अशद्ध**
कविता	कबिता	वाद	बाद
वार	बार	विज्ञान	बिज्ञान

3. **'क्ष' तथा 'छ' समबन्धी अशुद्धयाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
छात्र	क्षात्र	क्षत्रिय	छत्रिय
छलनी	क्षलनी	क्षोभ	छोभ

NOTES

4. **'झ' और 'ज' तथा 'ट' और 'ठ' सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशद्ध**
खीझना	खीजना	समझदार	समजदार
झूठा	झूटा	छठा	छटा

5. **'ह' सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
बारह	बारा	तेरह	तेरा
चूल्हा	चूला	अठारह	अट्ठारा

6. **'ख' के स्थान पर 'क' का उच्चारण करना –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
भिखारी	भिकारी	भूखा	भूका

7. **'ज्ञ', 'श्र' और 'र' सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
ज्ञान	ग्यान	शाप	श्राप
अनुगृहीत	अनुग्रहित	आशीर्वाद	आर्शीवाद

8. **'न' तथा 'ण' सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
वीण	वीना	भूषण	भूषन
प्रदूषण	प्रदूसन	दर्पण	दर्पन

वर्तनीगत अशुद्धियाँ

उच्चारण द्वारा निस्सारित होने वाली ध्वनि को लिखित रूप प्रदान करना ही वर्तनी कहलाता है। अतः लेखन में होने वाली अशुद्धिया वर्तनीगत अशुद्धिया कहलाती है।

हिन्दी की वर्तनीगत अशुद्धियाँ निम्नांकित बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. **अहिन्दभाषियों से होने वाली अशुद्धियाँ** – अहिन्दीभाषी मराठी दीर्घ (ई) को ह्रस्व (इ) लिखता है, जबकि गुजराती ह्रस्व (इ)को दीर्घ (ई) लिखता है।

मराठी भाषा की अशुद्धियाँ :– शीघ्र निकल जाओ, नहिं तो गाड़ी छूट जाएगी। (शीघ्र निकल जाओ, नही तो गाड़ी छूट जाएगी।)

गुजराती भाषी की अशुद्धियाँ का उदाहरण – शिक्षक उसे गणित में नीपुण बनाता है। (शिक्षक उसे गणित में निपुण बनाता है।)

2. **'ण', और 'न' की अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	**अशद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
प्राण	प्रान	अरूण	अरून
वीणा	वीना	निपुण	निपुन

3. **'ष', 'श' से सम्बन्धी अशुद्धियाँ** –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
विशेष	विसेस	शूल	सूल
श्वसुर	ससुर	कौशल्या	कौसल्या

4. **अनुस्वार तथा चन्दबिन्दु सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – अनुस्वार के स्थान पर चन्द्रबिन्दु का प्रयोग।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
हंस	हँस	बंगाल	बँगाल
हँसी	हंसी	दाँत	दांत

5. **विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – हिन्दी के तत्सम शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है। विसर्ग (:) का उच्चारण 'ह' होने के कारण अज्ञान या नियमों की जानकारी के अभाव में विसर्ग सम्बन्धी अशुद्धिया होती है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
पुनः	पुनह	फलतः	फलतह
प्रातः	प्रातह	अन्तःकरण	अन्तहकरण

6. **स्वर सम्बन्धी वर्तनीगत अशुद्धिया** – प्रान्तीयता बोलियों और भाषाओं की भिन्नता के कारण स्वर सम्बन्धी वर्तनीगत अशुद्धियाँ होती है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
ईमानदार	इमानदार	अभीष्ट	अभिष्ट
अग्नि	अग्नी	ईसाई	इसाई

7. **व्यंजन सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – स्वर के समान व्यंजन की भी वर्तनीगत अशुद्धियाँ होती है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
धंधा	धंदा	विभीषण	बिभीषण
निष्ठा	निष्टा	टिप्पणी	टिप्पड़ी

8. **आदरसूचक 'श्री' और 'जी' का लेखन** – प्राय: श्री और जी का प्रयोग करते समय शब्द के साथ इन्हें जोड़ दिया जाता है, वहाँ इस प्रकार की अशुद्धियाँ होती है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
श्री कृष्ण	श्रीकृष्ण	श्री राम	श्रीराम
श्री श्रीकान्त वर्मा	श्रीश्रीकान्त वर्मा	श्री मृगेन्द्र	श्रीमृगेन्द्र

9. **योजक चिन्ह का प्रयोग** –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
देश – रत्न	देशरतन	गलत – सलत	गलतसलत
पाप – पुण्य	पापपुण्य	कर्तव्य – कर्तव्य	कर्तव्यकर्तव्य

10. **ए और ई का क्रिया में प्रयोग** –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
लीजिए	लीजिये	जायें	जाएँ
लाए	लाये	आयी	आई

NOTES

शब्दगत अशुद्धियाँ – वर्तनी के गलत प्रयोग के कारण तथा अनावश्यक प्रत्यय या उपसर्ग लगाने के कारण शब्दगत अशुद्धिया होती है। सन्धि एवं समास आदि के उचित प्रयोग की जानकारी के अभाव में भी शब्दगत अशुद्धियाँ हो जाती है।

जैसे – अधिक्यता – अधिकता   सावधानता – सावधानी

शब्दार्थगत अशुद्धियाँ – शब्दों का सही अर्थ मालूम न होने की स्थिति में प्राय: उनका गलत प्रयोग हो जाता है, जिससे भाषा दोषपूर्ण हो जाती है।

जैसे – **अशुद्ध वाक्य** – राम आटा पिसवाने गया।

शुद्ध वाक्य – राम गेहूँ (अनाज) पिसवाने गया।

शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धियाँ के प्रकार

शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धियाँ रचनागत अशुद्धियाँ है। अशुद्धियाँ स्वर एवं व्यंजन के अशुद्ध उच्चारण के कारण होती है। शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धियाँ उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और सहप्रयोग से सम्बन्ध रखती है। इसे प्रयोग और रचना के आधार पर दो वर्गो में बाँटा जा सकता है।

1. **उपसर्ग सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – 'उपसर्ग' शब्द के आगे जुड़ते है। प्राय: यह नियम है कि देशी भाषा के शब्दों में देशी और विदेशी भाषा के शब्दों में विदेशी जोड़े जाने चाहिए। लेकिन इसके विपरीत, नियमों का पालन नहीं करने व नया शब्द बनाकर चमत्कार प्रदर्शित करने की भाावना से इस प्रकार की अशुद्धियाँ होती है।

जैसे – खूबसूरत = खूब (फारसी) + सूरत (फारसी) खूब फारसी उपसर्ग के स्थान पर हिन्दी 'बहु' उपसर्ग का प्रयोग – बहु (हिन्दी) + सूरत (फारसी) = बहुसूरत का यह अशुद्ध प्रयोग है।

2. **संधि के नियमों की जानकारी का अभाव** –

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
निरपराध	निरापराध	उपर्युक्त	उपरोक्त

3. **भाववाचक को पुन: भाववाचक बनाना** – भाववाचक को पुन: भाववाचक नहीं बनाया जाता है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
ऐक्य	ऐक्यता	कौशल	कौशलता
माधुर्य	माधुर्यता	सौन्दर्य	सौन्दर्यता

4. **क्षेत्र, बोली या परम्परा सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – शब्द एवं शब्दार्थगत अशुद्धियों में क्षेत्र, बोलियाँ और परम्परा का भी योगदान है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
मंदिर	मंदर (पंजाब)	पंडित	पंडत (हरियाणा)

5. **प्रत्यय सम्बन्धी शब्दार्थगत अशुद्धियाँ** – प्रत्यय शब्द के बाद जुड़ते है। कई बार गलत प्रत्यय जोड़ने पर इस प्रकार की अशुद्धि हो जाती है।

शुद्ध	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**
गुनहगार	गनाहगार	बुद्धिमान	बुद्धीमान
चुनना	चुनिन्दा	व्यक्तिगत	वैयक्तिक

6. **संख्यावाचक शब्दों की अशुद्धियाँ** – अज्ञान एवं क्षेत्रीयता के कारण संख्यावाचक शब्दों के लेखन में बहुत अशुद्धियाँ होती है।

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
सत्रह	सतरह	उन्नीस	गुन्नीस
अठारह	अठ्ठारह	उन्तालीस	गुनतालीस

7. **क्रिया के प्रयोग की अशुद्धता –**

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
प्रश्न किया गया	प्रश्न पूछा गया	प्रतीक्षा करना	प्रतीक्षा देखना
शराब पीना	शराब लेना	पानी खोलना	पानी उबालना

8. **समास सम्बन्धी अशुद्धियाँ –**

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
गरीब निवास	गरीब नवाज	विद्यार्थीगण	विद्यार्थिगण
मंत्रिवर	मंत्रीवर	रामदीन	रामदहिन

वाक्यगत अथवा व्याकरणगत अशुद्धियाँ –

वाक्यगत अशुद्धियाँ ही सही मायने में व्याकरणगत अशुद्धियाँ होती है। कारण कि वाक्य में अशुद्धि तभी आती है, जब वाक्य रचना में व्याकरण का ध्यान न रखा जाये। व्याकरण के जितने भी पक्ष होते है, उनके प्रयोग में बरती गई असावधानी वाक्य को अशुद्ध बना देती है।

व्याकरणगत अशुद्धियाँ अथवा वाक्यगत अशुद्धियाँ निम्न प्रकार हो सकती है ।

1. **विभक्ति सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – संज्ञा या सर्वनाम के साथ गलत विभक्ति का प्रयोग करने पर इस तरह को अशुद्धियाँ हो सकती है। जैसे – उसने, किसने, हमको, आपको, उससे आदि।

कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग – संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का ज्ञान होता है, उसे कर्ता कहते है। जैसे – राम ने रावण को मारा। यहाँ मारने की क्रिया राम ने की, अत: 'राम' कर्ता है। कर्ता कारक की विभक्ति 'ने' है। इस 'ने' विभक्ति का प्रयोग सकर्मक एंव अकर्मक क्रिया के रूप में दो प्रकार से होता है।

सकर्मक क्रिया – (i) मैनें खाना खाया। (ii) मैंने खाना खाया था।

अकर्मक क्रिया – (जिसमें कर्म न हो) के साथ 'ने 'विभक्ति का प्रयोग कभी भी नहीं होता। जैसे– (i) मैं घर जाऊँगा। (ii) मै दौड़ा।

कर्मकारक की विभक्ति 'की' का प्रयोग – जिस शब्द पर कर्ता के व्यवहार का फल पड़ता है, उसे कर्मकारक कहते हैं। जैसे – ''राम ने रावण को मारा'' इस वाक्य में ''राम'' कर्ता के व्यापार अर्थात् मारने का फल रावण पर पड़ा। अत: '''रावण''' इस वाक्य में कर्मकारक है। अत: कहा जा सकता है कर्म की विभक्ति 'को' हुई। कर्म की विभक्ति 'को' का प्रयोग इस प्रकार से किया जा सकता है।

अशुद्ध प्रयोग	शुद्ध प्रयोग
भिखारियों को अन्न लाओ।	भिखारियों के लिए अन्न लाओ।
उनको रोटी खाने की इच्छा नहीं है।	उनकी रोटी खाने की इच्छा नही है।

2. **लिंग सम्बन्धी अशुद्धिया** – लिंग का अर्थ है 'चिन्ह' या निशान। संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते है।

जैसे –'घोड़ा' शब्द से पुरूष जाति और 'घोड़ी' शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है। लिंग तीन प्रकार के होते है – 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. उभयलिंग

पुरूषों के लिए पुल्लिग, स्त्रियों के लिए स्त्रीलिंग तथा जो शब्द आवश्यकता के अनुसार पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों के लिए प्रयुक्त होते है, उन्हें उभयलिंग कहते है। जैसे– कमीज, दही, अखबार आदि।

NOTES

उदाहरण –	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**
	सम्पादक	सम्पादिका
	कवि	कवयित्री
	छात्र	छात्रा
	युवक	युवती

3. **वचन सम्बन्धी अशुद्धिया** – एकवचन को बहुवचन बनाने में छात्र प्राय: अशुद्धि करते हैं। उसमें निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखना चाहिए।

संज्ञा के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते है – (i) एकवचन, एवं (ii) बहुवचन

जिससे एक वस्तु का पता चले वह ''एकवचन'' तथा जिससे एक से अधिक वस्तुओं का पता चले वह ''बहुवचन'' होता है।

कभी – कभी छात्र ''वचन'' सम्बन्धी अशुद्धियाँ कर देते है। एकवचन से बहुवचन बनाते समय यह गलती विशेष रूप से दिखाई पड़ती है।

(i) अकारान्त शब्दों के अन्त में (एँ) का प्रयोग आवश्यक है।

जैसे – सस्थाएँ, कन्याएँ, दिशाएँ आदि।

(ii) ईकारान्त शब्दों के अन्त में 'याँ' का प्रयोग आवश्यक है। दीर्घ 'ई' बहुवचन में ह्रस्व 'इ' में बदल जाता है।

(iii) उकारान्त शब्द बहू, झगड़ालू का बहुवचन बहुओं, झगड़ालुओं होगा।

(iv) ''और'', ''एवं'', ''तथा'' से जुड़े हुए शब्दों में से अधिक कर्ता हो और एक ही लिंग के हो तो क्रिया ''बहुवचन'' में होती है और उसका लिंग कर्ताओं के अनुसार होता है।

जैसे – हरि और श्याम घूम रहे है।

(v) जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो, लिंग भेद हो साथ ही वह 'और' से जुड़ा हो तो क्रिया अन्तिम कर्ता के लिंग के अनुसार लगती है।

जैसे – लड़कियाँ और लड़के खेलने गये।

(vi) जिस वाक्य में कर्ता 'ने' रहित हो तथा 'या' से जुड़े हो तो उनकी क्रिया अन्तिम कर्ता के अनुसार लिंग और वचन में प्रयुक्त होगी, जैसी –

- बालक या बलिकाएँ लड़ रही है
- हरि या मोहन रो रहा है।

(vii) आसमान क्रिया होने पर वचन सम्बन्धी दोष प्राय: आ जाती है।

अशुद्ध	**शुद्ध**
● हम खाना खाती है।	● हम खाना खाते हैं।

(viii) यदि कर्ता ने 'ने' रहित हो तथा समान लिंग हो तथा 'और' से जुड़ा हो तथा समुदाय का बोध हो तो क्रिया एकवचन में होती है और लिंग कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे – घर और गृहस्थी सुख देती है।

(ix) शब्दों का सही ज्ञान न होने पर भी वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती है। **जैसे** – ईश्वर के अनेको रूप है। **(अशुद्ध)** ईश्वर के अनेक रूप है। **(शुद्ध)**

(x) यदि वाक्य में एक से अधिक 'और' से जुड़े हुए 'ने' रहित कर्ता हों और उसके अन्त में समुदायवाचक शब्द हो तो क्रिया ''बहुवचन'' में होगी और उसका लिंग कर्ताओं के समान होगा।

जैसे – ● मोहन और रीता दोनों तैर रहे है। ● मोहन, सोहन और रमेश तीनों घूम रहे है।

(xi). एक पुरूष का अनेक पुरूषों के रूप में प्रयोग करने पर भी वाक्यों में अशुद्धियाँ आ जाती है। **जैसे** - मैं खाने बैठा हूँ। हमारे लिए खाना लाओ। (अशुद्ध), मैं खाने बैठा हूँ। मेरे लिए खाना लाओ। (शुद्ध)

4. **विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – संज्ञा के समान ही विशेषण के प्रयोग में भी अनुकूलता, आवश्यकता आदि की उपेक्षा होती है, जिसके कारण वाक्य – विन्यास में अशुद्धियाँ हो जाती हैं। **जैसे** – कोयल की कंठ सबसे मधुरतम है। **(अशुद्ध वाक्य)** कोयल का कंठ मधुरतम है। **(शुद्ध वाक्य)** यह घी की शुद्ध दुकान है। **(अशुद्ध वाक्य)** यह शुद्ध घी की दुकान है। **(शुद्ध वाक्य)**

5. **विपरीत शब्दों के प्रयोग सम्बन्धी अशुद्धियाँ** – एक ही वाक्य में एक – दूसरे के विपरीत शब्दों का प्रयोग करने से भी वाक्य का अर्थ गलत हो जाता है। जैसे –

(अशुद्ध वाक्य) वह शायद अवश्य आएगा। **(शुद्ध वाक्य)** वह अवश्य आएगा

सम्भवतः वह निश्चित उत्तीर्ण हो जाएगा। **(अशुद्ध वाक्य)**

वह निश्चित उत्तीर्ण हो जाएगा। **(शुद्ध वाक्य)**

अशुद्ध शब्दों के कुछ उदाहरण व उनके शुद्ध रूप :-

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
देनिक	दैनिक	कवी	कवि
रिचा	ऋचा	शुन्य	शून्य
औसर	अवसर	गीलहरी	गिलहरी
चोकन्ना	चौकन्ना	दवाइयाँ	दवाई
सचैत	सचेत	अभिनेत्रि	अभिनेत्री
करम	कर्म	निरमाण	निर्माण
शूली	सूली	फण	फन
आंधी	आँधी	हंसी	हँसी
चांदनी	चाँदनी	दांत	दाँत
अभिष्ठ	अभीष्ठ	हँस	हंस
इन्दीरा	इन्दिरा	अन्तरगत	अन्तर्गत
पिंजड़ा	पिंजरा	आर्शीवाद	आशीर्वाद
प्रतिक्षा	प्रतीक्षा	एतिहासिक	ऐतिहासिक
उल्टा	उलटा	परिक्षा	परीक्षा
संग्रहित	संग्रहित	धरम	धर्म
सूचिपत्र	सूची–पत्र	सोला	सोलह
अध्यन	अध्ययन	अहिल्या	अहल्या
उपलक्ष्य	उपलक्ष्य	अद्वितिय	अद्वितीय
यथेष्ट	यथेष्ठ	ईर्षा	ईर्ष्या
निरापराध	निरपराध	कालीदास	कालिदास
नैपुण्यता	नैपुण्य	तदोपरान्त	तदुपरान्त
पुरूस्कार	पुरस्कार	चातुर्यता	चातुर्य
तत्कालिक	तात्कालिक	अनुसंगिक	आनुंषागिक

NOTES

प्रफुल्लित	प्रफुल्ल	उत्तरदाई	उत्तरदायी
प्रमाणिक	प्रमाणिक	पूज्यनीय	पूजनीय/पूज्य
व्यवहारिक	व्यावहारिक	कोमलांगिनी	कोमलांगी
सौजन्यता	सौजन्य	नेतिक	नैतिक
सर्जन	सृजन	नीरोग	नि:रोग
महत्व	महत्व	उज्वल	उज्जवल
षष्टम्	षष्ठम्	त्रिवार्षिक	त्रैवार्षिक
बैभव	वैभव	ग्रहणी	गृहिणी
वाल्मीकि	वाल्मीकि	भासा	भाषा
प्रभू	प्रभु	चाँद	चन्द्रमा
छुवे	छुए	घबड़ाना	घबराना
दवाईयों	दवाइयों	सिंदुर	सिन्दूर
चिह्‌न	चिन्ह	छमा	क्षमा
क्रपन	कृपाण	सौन्दर्यता	सौन्दर्य

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. वर्तनी सम्बंधी अशुद्धियों के पाँच उदाहरण दीजिए।
2. शब्दगत अशुद्धियों के पाँच उदाहरण दीजिए और उनसे सम्बंधित वाक्य बनाइए।
3. वाक्यगत अशुद्धि से आप क्या समझते है। स्पष्ट कीजिए।
4. त्रुटि संशोधन करते हुए दस वाक्यों का निर्माण कीजिए।
5. अशुद्धियाँ अथवा त्रुटियाँ कितने प्रकार की होती है? विस्तार से लिखिए।
6. विशेषण सम्बंधी अशुद्धि को उदाहरण सहित समझाइये।
7. वचन सम्बंधी अशुद्धि के 5 उदाहरण दीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:

1. निम्न में से शुद्ध क्या है।

   i. श्रीमति ii. श्रीमती iii. श्रीमत iv. सभी

2. निम्न में से क्या उच्चारणगत अशुद्धि का प्रकार है

   i. कवी ii. आयू iii. पती iv. सभी

उत्तर – 1. (i); 2. (iv)

■ ■ ■

NOTES

7. शिरीष के फूल

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध निबन्धकार डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखा गया निबन्ध 'शिरीष के फूल' भाव-प्रधान शैली पर आधारित एक निबन्ध है। आपका शिरीष के फूल के सम्बन्ध में कहना है कि- भीषण गर्मी यानी जेठ की निर्मम धूप में, जब कि धरती आग-सी तपती रहती है - शिरीष का वृक्ष नीचे से ऊपर तक फूलों से लदा रहता है। यह अमलतास या पलाश की भाँति पन्द्रह-बीस दिन के लिए ही नहीं फूलता है। शिरीष के फूल की विशेषता है कि वह बसंत ऋतु के आगमन के साथ लहक एवं चहक उठता हैं। यह पुष्प आषाढ़ तक मस्त बना रहता है। जब प्रकृति में ऊमस से प्राण उबलते रहते हैं, तब शिरीष अवधुत की भाँति जीवन में अजेयता का मंत्र फूँकता रहता है। शिरीष के वृक्ष छायादार होते हैं।

लेखक का कहना है कि संस्कृत साहित्य में भी शिरीष के वृक्ष का उल्लेख मिलता है, जहाँ इसे कोमल माना गया है। लेखक ने शिरीष के फूल की तुलना नेताओं से की है, जो समाज में अपने पैर जमाते हुए अपनी कुर्सी पर अडिग रहते है।

द्विवेदीजी शिरीष के पुष्प को अवधूत मानते हैं। वह अपना अस्तित्व बरकरार रखकर सुख-दुख में अजेय होकर खड़ा रहता है। वे कबीर के व्यक्तित्व की तुलना शिरीष के पुष्प से करते है। शिरीष का पुष्प लेखक को प्रेरणा देने का कार्य करता है। इससे प्रेरणा प्राप्त कर वे देश के नौजवानों को तटस्थता के साथ अपने पैर जमाने के लिए तथा इस फूल के समान ही अडिग रह, जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियों से जूझने का आव्हान कर रहे हैं। इस प्रकार लेखक के अनुसार शिरीष का फूल इस प्रकार हमारे जीवन का आदर्श बन सकता है।

सारांश - जहाँ बैठकर मैं यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे-पीछे, दायें-बायें, शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्री निर्धूम अग्निकुण्ड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गर्मी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आसपास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पन्द्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसन्त ऋतु के पलाश की भाँति।

कबीरदास को इस तरह पन्द्रह दिन के लिए लहक उठना पसन्द नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़, 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास'! ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। वसन्त के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक तो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मन्त्रप्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितान्त ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोर जरूर पैदा करते हैं।

शिरीष के वृक्ष बड़े और छायादार होते हैं। पुराने भारत का रईस, जिन मंगल-जनक वृक्षों को अपनी वृक्ष-वाटिका की चहारदीवारी के पास लगाया करता था, उनमें एक शिरीष भी है (वृहत्संहिता,5513) अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग और शिरीष के छायादार और घनमसृण हरीतिमा से परिवेष्टित वृक्ष-वाटिका जरूर बड़ी मनोहर दिखती होगी। वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में बताया है कि वाटिका के सघन छायादार वृक्षों की छाया में ही झूला (प्रेंखा दोला) लगाया जाना चाहिए। यद्यपि पुराने कवि बकुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे, पर शिरीष भी क्या बुरा है! डाल इसकी अपेक्षाकृत कमजोर जरूर होती है, पर उसमें झूलनेवालियों का वजन भी तो बहुत ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वजन का एकदम खयाल नहीं करते। मैं तुन्दिल नरपतियों की बात नहीं कह रहा हूँ, वे चाहें तो लोहे का पेड़ बनवा लें !

शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचारित की होगी। उनका इस पुष्प पर .कुछ पक्षपात था (मेरा भी है)। कह गये हैं, शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिल्कुल नहीं- 'पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीष पुष्पं न पुन: पतत्रिणाम' अब मैं इतने बड़े कवि की बात का विरोध कैसे करूँ? सिर्फ विरोध करने की हिम्मत न होती तो भी कुछ कम बुरा नहीं था, यहाँ तो इच्छा भी नहीं है। खैर, मैं दूसरी बात कह रहा था। शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब-कुछ कोमल है !

यह भूल है। इसके फल इतने मजबूत होते हैं कि नये फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नये फल-पत्ते मिलकर उन्हें धकियाकर बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं। वसन्त के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पत्रसे मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की बात याद आती है, जो किसी प्रकार जमाने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नयी पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं।

मैं सोचता हूँ कि पुरानो की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत् के अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगायी थी- 'धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!' मैं शिरीष के फलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं। दुरन्त प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरन्तर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जायेंगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किये रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे!

एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्‌भुत अवधूत है। दु:ख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हिजरत न-जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमण्डल से अपना रस खींचता है। जरूर खींचता होगा। नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तन्तुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था? अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं। कबीर बहुत-कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवा, पर सरस और मादक।

कालिदास भी जरूर अनासक्त योगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त हृदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किये-कराये का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है? कहते हैं कर्णाट-राजा की प्रिया विज्जिका देवी ने गर्वपूर्वक कहा था कि एक कवि ब्रह्मा थे, दूसरे वाल्मीकि और तीसरे व्यास। एक ने वेदों को दिया, दूसरे ने रामायण को और तीसरे ने महाभारत को। इनके अतिरिक्त और कोई यदि कवि होने का दावा करें तो मैं कर्णाट-राजा की प्यारी रानी उनके सिर पर अपना बायाँ चरण रखती हूँ- तेषां मूर्ध्नि ददामि वामचरणं कर्णाट-राजप्रिया! मैं जानता हूँ कि इस उपालम्भ से दुनिया का कोई कवि हारा नहीं है, पर इसका मतलब यह नहीं कि कोई लजाये नहीं तो उसे डाँटा भी न जाय। मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तो, तो फक्कड़ बनो। शिरीष की मस्ती की ओर देखो। लेकिन अनुभव ने मुझे बताया है कि कोई किसी की सुनता नहीं। मरने दो!

कालिदास वजन ठीक रख सकते थे, क्योंकि वे अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध-प्रेमी का हृदय पा चुके थे। कवि होने से क्या होता है? मैं भी छन्द बना लेता हूँ, तुक जोड़ लेता हूँ और कालिदास भी छन्द बना लेते थे- तुक भी जोड़ ही सकते होंगे- इसलिए हम दोनों एक श्रेणी के नहीं हो जाते। पुराने सहृदय ने किसी ऐसे ही दसवेदार को फटकारते हुए कहा था-'वयमपि कवय: कवय: कवयस्ते कालिदससाद्या!' मैं तो मुग्ध और विस्मय-विमूढ़ होकर कालिदास के एक-एक श्लोक को देखकर हैरान हो जाता हूँ। अब इस शिरीष के फूल का ही एक उदाहरण लीजिए। शकुन्तला बहुत सुन्दर थी। सुन्दर क्या होने से कोई हो जाता है? देखना चाहिए कि कितने सुन्दर हृदय से वह सौन्दर्य डुबकी लगाकर निकला है। शकुन्तला कालिदास के हृदय से निकली थी। विधाता की ओर से कोई कार्पण्य नहीं था, कवि की ओर से भी नहीं। राजा दुष्यन्त भी अच्छे-भले प्रेमी थे। उन्होंने शकुन्तला का एक चित्र बनाया था, लेकिन रह-रहकर उनका मन खीझ उठता था। उहूँ, कहीं-न-कहीं कुछ छूट गया है। बड़ी देर के बाद उन्हें समझ में आया कि शकुन्तला के कानों में वे उस शिरीष पुष्प को देना भूल गये हैं, जिसके केसर गण्डस्थल तक लटके हुए थे, और रह गया है शरच्चन्द्र की किरणों के समान कोमल और शुभ्र मृणाल का हार।

कृतं न कर्णार्पितबन्धनं सखे, शिरीषमागण्डविलम्बिकेसरम।
न वा शरच्चन्द्रमरीचिकोमलं, मृणालसूत्रं रचितं स्तनान्तरे।।

कालिदास ने यह श्लोक न लिख दिया होता तो मैं समझता कि वे भी बस और कवियों की भाँति कवि थे, सौन्दर्य पर मुग्ध, दुख से अभिभूत, सुख से गद्‌गद! पर कालिदास सौन्दर्य के बाह्य आवरण को भेदकर उसके भीतर तक पहुँच सकते थे, दुख हो कि सुख, वे अपना भाव-रस उस अनासक्त कृषीवल की भाँति खींच

लेते थे जो निर्दलित ईक्षुदण्ड से रस निकाल लेता है। कालिदास महान् थे, क्योंकि वे अनासक्त रह सके थे। कुछ इसी श्रेणी की अनासक्ति आधुनिक हिन्दी कवि सुमित्रानन्दन पन्त में है। कविवर रवीन्द्रनाथ में यह अनासक्ति थी। एक जगह उन्होंने लिखा है- 'राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही अभ्रभेदी क्यों न हो, उसकी शिल्पकला कितनी ही सुन्दर क्यों न हो, वह चाह नहीं कहता कि हममें आकर ही सारा रास्ता समाप्त हो गया। असल गन्तव्य स्थान उसे अतिक्रम करने के बाद ही है, यही बताना उसका कर्तव्य है।' फूल हो या पेड़, वह अपने-आपमें समाप्त नहीं हैं। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अँगुली है। वह इशारा है।

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन- धूप, वर्षा, आँधी, लू- अपने-आपमें सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवण्डर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों सम्भव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है। शिरीष वायुमण्डल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गाँधी भी वायुमण्डल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब तब हूक उठती- हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!

जीवन परिचय - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त, 1907 ई. (श्रावण, शुक्ल पक्ष, एकादशी, संवत् 1964) में बलिया ज़िले के 'आरत दुबे का छपरा' गाँव के एक प्रतिष्ठित सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में हुआ था। द्विवेदी जी के प्रपितामह ने काशी में कई वर्षों तक रहकर ज्योतिष का गम्भीर अध्ययन किया था। द्विवेदी जी की माता भी प्रसिद्ध पण्डित कुल की कन्या थीं। इस तरह बालक द्विवेदी को संस्कृत के अध्ययन का संस्कार विरासत में ही मिल गया था।

शिक्षा एवं जीवन-दर्शन - द्विवेदी जी ने अपनी पारिवारिक परम्परा के अनुसार संस्कृत पढ़ना आरम्भ किया और सन् 1930 ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य तथा इण्टर की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

सन 1930 में इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने बाद द्विवेदी जी प्राध्यापक होकर शान्ति निकेतन चले गये। शान्ति निकेतन में द्विवेदी जी को अध्ययन-चिन्तन का निर्बाध अवकाश मिला। वास्तव में वहाँ के शान्त और अध्ययनपूर्ण वातावरण में ही द्विवेदी जी के आस्था-विश्वास, जीवन-दर्शन आदि का निर्माण हुआ, जो उनके साहित्य में सर्वत्र प्रतिफलित हुआ है।

सन 1950 ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति के अनुरोध और आमंत्रण पर द्विवेदी जी 'हिन्दी विभाग' के अध्यक्ष और प्रोफ़ेसर होकर वहाँ चले गए। द्विवेदी जी कई वर्षों तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा के उपसभापति, 'खोज विभाग' के निर्देशक तथा 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के सम्पादक रहे। सन् 1960 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय के कुलपति के आमंत्रण पर वे वहाँ के 'हिन्दी विभाग' के अध्यक्ष और प्रोफ़ेसर होकर चण्डीगढ़ चले गये। सन् 1968 ई. में वे फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पुन: बुला लिये गए और वहाँ डाइरेक्टर नियुक्त हुए और फिर वहीं हिन्दी के ऐतिहासिक व्याकरण विभाग के निर्देशक नियुक्त हुए। वह काम समाप्त होने पर उत्तर प्रदेश, 'हिन्दी ग्रन्थ अकादमी' के अध्यक्ष हुए।

द्विवेदी जी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की परम्परा के आलोचक हैं, फिर भी साहित्य को एक अविच्छिन्न विकास-परम्परा देखने पर बल देकर द्विवेदी जी ने हिन्दी समीक्षा को नयी दिशा दी। साहित्य के इस नैरन्तर्य का विशेष ध्यान रखते हुए भी वे लोक-चेतना को कभी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने देते।

कृतियाँ- हिन्दी साहित्य की भूमिका, कबीर, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, नाथ सम्प्रदाय, सूर-साहित्य

निबन्ध- द्विवेदी जी जहाँ विद्वत्तापरक अनुसन्धानात्मक निबन्ध लिख सकते हैं, वहीं श्रेष्ठ निबन्ध निबन्धों की सृष्टि भी कर सकते हैं। उनके निर्बन्ध निबन्ध हिन्दी निबन्ध साहित्य की मूल्यवान् उपलब्धि है। द्विवेदी जी के व्यक्तित्व में विद्वत्ता और सरसता का, पाण्डित्य और विदग्धता का, गम्भीरता और विनोदमयता का, प्राचीनता और नवीनता का जो अद्‌भुत संयोग मिलता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। अपने निबन्धों में वे बहुत ही सहज ढंग से, अनौपचारिक रूप में, 'नाखून क्यों बढ़ते हैं', 'आम फिर बौरा गए', 'अशोक के फूल', 'एक कुत्ता और एक मैना', 'कुटज' आदि की चर्चा करते हैं।

पुरस्कार - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी को भारत सरकार ने उनकी विद्वत्ता और साहित्यिक सेवाओं को ध्यान में रखते हुए साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1957 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

निधन - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी का निधन 19 मई, 1979 ई. को हुआ।

शब्दार्थ – अवधूत–संन्यासी, तुंदिल–तोंद वाला, बड़े पेट वाला, उपालंभ–शिकायत, निंदा, उलाहना, ऊर्ध्वमुखी–ऊपर की ओर मुख होना, अनाविल–निर्मल, स्वच्छ, अनासिक्त–निर्लिप्त, मोह से विरक्त,

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

NOTES

1. शिरीष के फूल किस ऋतु में लिजते हैं?
2. शिरीष के फूल की विशेषताएँ लिखिए।
3. शिरीष के फूल से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
4. 'शिरीष के फूल' शीर्षक पाठ से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?
5. अवधूत शिरीष की तुलना किस युग – पुरूष से की गई है और क्यों।
6. संस्कृत साहित्य में शिरीष का फूल कैसा माना जाता है?
7. शिरीष तरू किसकी भाँति मन में तरंग जमा देता है?
8. शिरीष जीवन की अपराजेयता का प्रसार किसकी भाँति करता है?
9. कवियों की कौन – सी बुरी आदत है?
10. शिरीष के पुराने फूल देखकर आज के युग की कौन – सी बात लेखक को याद आती है?
11. 'न ऊधों का लेना, न माधो का देना' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
12. शिरीष के फूल निबन्ध का सारांश लिखिए।
13. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जीवन परिचय लिखिए।

वस्तुनिष्ट प्रश्न :-

1. 'शिरीष के फूल' निबन्ध के रचनाकार हैं–

   i. स्वामी विवेकानन्द   ii. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

   iii. धर्मपाल   iv. सरदार पूर्णसिंह

2. 'अवधूत शिरीष' की तुलना किस युगपुरूष से की गई है–

   i. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी   ii. तुलसीदास   iii. कालिदास   iv. महात्मा गांधी

3. शिरीष के फूल किस ऋतु में खिलते हैं–

   i. बसन्त के आगमन पर   ii. वर्षा ऋतु के आगमन पर

   iii. शरद ऋतु के आगमन पर   iv. हर मौसम में

4. शिरीष की डाल होती है–

   i. मजबूत   ii. कमजोर   iii. घनी   iv. लम्बी

5. शिरीष के फूल को संस्कृत साहित्य में कैसा माना गया है–

   i. कठोर   ii. कोमल   iii. उक्त दोनों   iv. उक्त दोनों नहीं

6. शिरीष के वृक्ष होते है–

   i. छायादार   ii. सूखें   iii. हरे – भरे   iv.पत्तेदार

7. 'शिरीष के फूल' कैसा निबन्ध है–

   i. वैचारिक   ii. भावात्मक   iii. ललित   iv. रहस्यात्मक

उत्तर – 1. (ii), 2. (iv), 3. (i), 4. (ii),5. (ii), 6. (i), 7. (iii)

■ ■ ■

8. विकास का भारतीय मॉडल

धर्मपाल

NOTES

निबंध सारांश –प्रसिद्ध साहित्यकार, इतिहासकार श्री धर्मपाल द्वारा लिखित आलेख **'विकास का भारतीय मॉडल'** विकास के स्वदेशी एवं पश्चिमी मॉडल के बीच अन्तर बतलाते हुए भारतीय मॉडल के एक आदर्श (मॉडल) होने के कारणों तथा उसके स्वरूप को प्रस्तुत करता है। इसमें लेखक ने विकास के स्वदेशी तथा पश्चिमी मॉडल के मध्य मुख्य अन्तर केन्द्रीकृत मॉडल या आदर्श को माना है। उसका मानना है कि भारतीय मॉडल सम्पत्ति जोड़ने का नहीं, बाँटने का है। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किये है। जैसे– केदारनाथ मन्दिर से होने वाली आय प्रतिवर्ष वहाँ आने वाले यात्रियों पर तथा शेष बची आय प्रति बारह वर्ष में होने वाले कुम्भ पर खर्च कर दी जाती है। कुछ बचाने का प्रावधान नहीं है सम्राट हर्षवर्धन अपनी समूची सालाना आय अपने राज्य तथा प्रजा पर खर्च कर देते थे। मुगल बादशाह भी अपनी कुल आय का मात्र 6 से 15 फीसदी भाग ही प्राप्त कर पाते थे, शेष सारी आय नीचे के स्तर पर ही खर्च हो जाती थी। कहने का आशय यहीं है कि भारत में आय को जोड़ने की बजाय बाँटने की परम्परा रही है।

'कुल' भारतीय समाज की मूल इकाई माने जाते रहे है। यह 'कुल' परिवारों के समूह होते है, जो परस्पर रक्त सम्बन्धी होते है या फिर कर्मकाण्डों के प्रतीकों से जुड़े होते हैं। अंग्रेजों ने सम्भवतया कुलों की गणना जाति के रूप में की थी। प्रारम्भ में दो लाख के आसपास कुल रहे होंगे जो बाद में 5–7 लाख तक पहुँचे होंगे।

यह 'कुल' सात पीढ़ी तक ही स्थिर रहता है। श्राद्ध में तो तीन पीढ़ियों तक ही नाम स्मरण चलता है। फिर बाकी के लिए अनाम श्रद्धांजलि दे दी जाती है। राजा रघु के कुल की बात करें तो रघु दिग्विजय के लिए निकले होंगे तो कोई विशेष लड़ाई नही हुई होगी। जैसे तुफान के आगे पौधें झुक जाते है, फिर खड़े हो जाते हें, वैसे ही होता होगा। दिग्विजयी कोई अपने गवर्नर–कलेक्टर तय नहीं करता। केवल अधिपत्य जम जाने और साल में कुछ भेंट वगैरह आने की बात थी। यही भारतीय मॉडल की विशेषता है। भारतीय मॉडल में किसी को मिटाने की बात नहीं हैं। उसे चूसकर कोष भरने की भी बात नहीं है। कुल और इलाका जुड़े हैं। एक गाँव में एक ही कुल के लोग हो सकते हैं और कई कुलों के लोग भी। बसावट अक्सर स्वपूरक समूह के रूप में होती थी। कभी–कभी किसी इलाके में जो प्रभावी कुल रहा, दूसरे भी उसी कुल के कहलाने लगे।

लोगों में नया राजनीतिक–सामाजिक उभार आया है, लोगों में आत्मविश्वास जागा है– या तो वह आत्मविश्वास, या फिर युवा वर्ग का ज्योहार आदि पर मन्दिरों की ओर आकर्षण– देश को अपनेपन की ओर ले जायेगा। इसकी जाँच होना चाहिए। यदि युवा वर्ग को लगता है कि हमारे बुजुर्ग जो कर रहे थे, वह ठीक नहीं है, और जो कुछ नया हो रहा है वह ठीक है तो वह वही करेगा। द्विज मानसिकता वाले लोगों की प्राथमिकता स्वदेशी हो सकती है, लेकिन नई पीढ़ी पश्चिमी मॉडल का अनुकरण करना चाहती है तो उनकी बात भी सुनी जानी चाहिए। रही बात बढ़ती धार्मिकता की, तो यूरोप में भी विज्ञान के साथ जन्मकुण्डली चल रही है। नवरात्रि जागरण तथा फैक्स मशीन बनाने के गणित में शायद वे कोई मेल बिठाया जा रहा है। यानी विज्ञान व आध्यात्मिकता दोनों को अपना रहे हैं। अभी यह दोनों तरह की सोच चल सकती है। यह आत्मविश्वास पश्चिमीकरण की गति को तीव्र भी कर सकता है। अतः अभी फैसले की घड़ी है कि हमें विकास का कौन सा मॉडल अपनाना चाहिए– अपना स्वदेशी अथवा पश्चिमी, इस सम्बन्ध में जनमत जान लिया जाये तो ज्यादा उचित होगा।

कुछ लोगों का मानना है कि पिछले यानी स्वदेशी रूप में जाने की बजाय पश्चिमी मॉडल को ही अपनाना चाहिए, तो दूसरों को उन्हें रोकना नहीं चाहिए। समाज आगे बढ़कर उसमें से भी कोई रास्ता निकाल हि लेगा। पश्चिम में भी कोई मॉडल बनाकर विकास प्रक्रिया शुरू नहीं हुई थी। शुरूआत तो वहाँ भी कहीं न कहीं मूल से ही हुई होगी।

जीवन परिचय

धरमपाल (1922–2006) भारत के एक गांधीवादी विचारक, इतिहासकार एवं दार्शनिक थे। आपका जन्म 1922 में उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर में हुआ था। भारत से लेकर ब्रिटेन तक लगभग 30 साल उन्होंने

NOTES

इस बात की खोज में लगाये कि अंग्रेजों से पहले भारत कैसा था। इसी कड़ी में उनके द्वारा जुटाये गये तथ्यों, दस्तावेजों से भारत के बारे में जो पता चलता है वह हमारे मन पर अंकित तस्वीर के उलट है। वे एक गांधीवादी थे, एक विचारक, इतिहासकार और लेखक थे और उन्होंने हिन्दुस्तान में विज्ञान के इतिहास, पुराने समाज और लोगों के बारे में काफी लिखा।

1942 से 1966 तक धर्मपाल ने मीराबेन के प्रभाव में गांधी के रास्ते रचनात्मक कार्य करते रहे। इस तरह के गांधीवादी कार्यों के सिद्धांतकार पारम्परिक रूप से विनोबा भावे माने जाते है, लेकिन धर्मपाल विनोबा साहित्य से कितना परिचित और कितना प्रभावित थे अधिकारिक रूप से नहीं कहा जा सकता।

1966 से 1986 तक उनका अधिकांश समय शोध एवं लेखन में लगा। इस दौरान मूल रूप से उन्होंने यूरोपीय आंखों से भारत की परम्परागत ज्ञान निधि और संरचनाओं को समझने एवं समझाने का कार्य किया। इसकी कड़ी के रूप में 1971 में 'सिविल डिसओबीडियेन्स इन इंडियन ट्रेडिशन विद् सम अर्ली नाईन्टीन्थ सेन्चुरी डाक्युमेंट्स' का प्रकाशन हुआ। 1971 में ही उनकी दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तक 'इंडियन साइंस एण्ड टेक्नालॉजी इन दि एटीन्थ सेन्चुरी: सम कन्टेम्परोरी एकाउन्ट्स' प्रकाशित हुई। 1972 में उनकी तीसरी पुस्तक आई 'दि मद्रास पंचायत सिस्टम: ए जनरल ऐसेसमेंट'। आगामी वर्षों में उनकी कई और किताबें आईं, जिनमें 'दि ब्यूटीफुल ट्री' नामक पुस्तक का विशेष महत्व है। इन किताबों की संरचना एवं इनके संकलन की शैली पश्चिमी मानक पर पश्चिमी स्त्रोतों के आधार पर भी खरी उतरती है । आपकी मृत्यु 24 अक्टूबर, 2006 को हुई।

प्रमुख कृतियाँ – उनके द्वारा रचित प्रमुख पुस्तकें हैं–

1 साइंस एण्ड टेक्नालॉजी इन एट्टींथ सेंचुरी

2 द ब्यूटीफुल ट्री

3 भारतीय चित्त मानस और काल

4 भारत का स्वधर्म

5 सिविल डिसआबिडिएन्स एण्ड इंडियन ट्रेडिशन

6 डिस्पाइलेशन एण्ड डिफेमिंग ऑफ इंडिया.

शब्दार्थ

ऐडवेंचर = साहस, इर्द-गिर्द = आस-पास, फजीहत = परेशानी।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. स्वदेशी मॉडल क्यों महत्वपूर्ण है।
2. पश्चिमी मॉडल की विशेषताएँ लिखिए।
3. भारतीय समाज में 'कुल' की स्थिति की व्याख्या कीजिए।
4. लेखक ने प्रस्तुत आलेख में किन बदलती सामजिक स्थितियों का उल्लेख किया है।
5. सम्राट हर्षवर्धन की क्या विशेषता थी।
6. मुगल बादशाहों के यहाँ आय – व्यय की क्या स्थिति थी? संक्षेप में लिखिए।
7. विकास के स्वदेशी और पश्चिमी मॉडल के बीच असली फर्क क्या है। विस्तार से लिखिए।
8. विकास का भारतीय मॉडल निबंध का सारांश लिखिए।
9. धरमपाल का जीवन परिचय संक्षेप में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

1. यूरोप में स्थाई सेना कब बनी।

   i. सन् 1500 ii. 1600 में

   iii. सन् 1700 में iv. सन् 1800 में

2. 1891 की जनगणना में प्रारम्भ में कितनी जातियाँ बताई गई।

   i. 50 हजार ii. 40 हजार

   iii. 70 हजार iv. 60 हजार

3. केदारनाथ मन्दिर के कागजात कहाँ रखे है।

   i. पेरिस में ii. लंदन में

   iii. न्यूयार्क में iv. बर्मिघन में

4. हर्षवर्धन की कुल पूँजी प्रतिवर्ष रह जाती थी।

   i. बहन का दिया वस्त्र ii.जनता द्वारा दिया गया कर

   iii. राजकोष की सारी राशि iv. इनमें से कोई नहीं

5. विकास का भारतीय मॉडल निबंध के लेखक है।

   i. द्विवेदी ii. निराला

   iii. धर्मपाल iv. महादेवी वर्मा

6. जहाँगीर के समय कितनी आय हुई।

   i. 70 लाख ii. 40 लाख

   iii. 80 लाख iv. 60 लाख

7. धर्मपाल की मृत्यु किस सन में हुई।

   i. 1922 ii. 1947

   iii. 1991 iv. 2006

उत्तर – 1. (iii); 2. (i); 3. (ii); 4. (i); 5. (iii); 6. (iv); 7. (iv).

■ ■ ■

9. निबंध लेखन की कला

NOTES

निबन्ध (Essay) गद्य लेखन की महत्वपूर्ण विधा है। वर्तमान युग में सभी भाषाओं में निबंध लेखन का कार्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति और विषय को सहजता व तार्किकता से प्रस्तुत करने में होने लगा है।

निबंध के पर्याय रूप में सन्दर्भ, रचना और प्रस्ताव का भी उल्लेख किया जाता है। लेकिन साहित्यिक आलोचना में सर्वाधिक प्रचलित शब्द निबंध ही है। निबंध शब्द का प्रयोग किसी विषय की तार्किक और बौद्धिक विवेचना करने वाले लेखों के लिए भी किया जाता है। इसे अंग्रेजी के कम्पोज़ीशन (Composition) और एसे (Essay) के अर्थ में ग्रहण किया जाता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार संस्कृत में भी निबंध का साहित्य है। प्राचीन संस्कृत साहित्य के उन निबंधों में धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक व्याख्या की जाती थी। उनमें व्यक्तित्व की विशेषता नहीं होती थी। किन्तु वर्तमान काल के निबंध संस्कृत के निबंधों से ठीक उलटे हैं। उनमें व्यक्तित्व या वैयक्तिकता का गुण सर्वप्रधान है।

निबंध की परिभाषा-निबंध, लेखक के व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाली ललित गद्य-रचना है।

निबंध की विशेषताएँ - सारी दुनिया की भाषाओं में निबंध को साहित्य की सृजनात्मक विधा के रूप में मान्यता आधुनिक युग में ही मिली है। आधुनिक युग में ही मध्ययुगीन धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों से मुक्ति का द्वार दिखाई पड़ा है। इस मुक्ति से निबंध का गहरा संबंध है।

हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार - नए युग में जिन नवीन ढंग के निबंधों का प्रचलन हुआ है वे व्यक्ति की स्वाधीन चिन्ता की उपज है। इस प्रकार निबंध में निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्व है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है: - निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्ति के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर-उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता चलता है। यही उसकी अर्थ सम्बन्धी व्यक्तिगत विशेषता है। अर्थ-संबंध-सूत्रों की टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ ही भिन्न-भिन्न लेखकों के दृष्टि-पथ को निर्दिष्ट करती हैं। एक ही बात को लेकर किसी का मन किसी सम्बन्ध-सूत्र पर दौड़ता है, किसी का किसी पर। इसी का नाम है एक ही बात को भिन्न दृष्टियों से देखना। व्यक्तिगत विशेषता का मूल आधार यही है।

इसका तात्पर्य यह है कि निबंध में किन्हीं ऐसे ठोस रचना-नियमों और तत्वों का निर्देश नहीं दिया जा सकता जिनका पालन करना निबंधकार के लिए आवश्यक है। ऐसा कहा जाता है कि निबंध एक ऐसी कलाकृति है जिसके नियम लेखक द्वारा ही आविष्कृत होते हैं। निबंध में सहज, सरल और आडम्बरहीन ढंग से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार:- लेखक बिना किसी संकोच के अपने पाठकों को अपने जीवन-अनुभव सुनाता है और उन्हें आत्मीयता के साथ उनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है। उसकी यह घनिष्ठता जितनी सच्ची और सघन होगी, उसका निबंध पाठकों पर उतना ही सीधा और तीव्र असर करेगा। इसी आत्मीयता के फलस्वरूप निबंध-लेखक पाठकों को अपने पांडित्य से अभिभूत नहीं करना चाहता।

इस प्रकार निबंध के दो विशेष गुण हैं-

1. व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति

2. सहभागिता का आत्मीय या अनौपचारिक स्तर

निबंध का आरम्भ कैसे हो, बीच में क्या हो और अंत किस प्रकार किया जाए, ऐसे किसी निर्देश और नियम को मानने के लिए निबंधकार बाध्य नहीं है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि निबंध एक उच्छृंखल रचना है और निबंधकार एक उच्छृंखल व्यक्ति। निबंधकार अपनी प्रेरणा और विषय वस्तु की सम्भावनाओं के अनुसार अपने व्यक्तित्व का प्रकाशन और रचना का संगठन करता है। इसी कारण निबंध में शैली का विशेष महत्व है।

हिन्दी साहित्य में निबन्ध - हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में भारतेन्दु और उनके सहयोगियों से निबंध लिखने की परम्परा का आरम्भ होता है। निबंध ही नहीं, गद्य की कई विधाओं का प्रचलन भारतेन्दु

से होता है। यह इस बात का प्रमाण है कि गद्य और उसकी विधाएँ आधुनिक मनुष्य के स्वाधीन व्यक्तित्व के अधिक अनुकूल हैं। मोटे रूप में स्वाधीनता आधुनिक मनुष्य का केन्द्रीय भाव है। इस भाव के कारण परम्परा की रूढ़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। सामयिक परिस्थितियों का दबाव अनुभव होता है। भविष्य की सम्भावनाएँ खुलती जान पड़ती हैं। इसी को इतिहास-बोध कहा जाता है। भारतेन्दु युग का साहित्य इस इतिहास-बोध के कारण आधुनिक माना जाता है।

वस्तुत: निबंध शब्द 'नि+बंध' से बना है, जिसका अर्थ है सम्यक रूप से बँधा हुआ। इस दृष्टि से निबंध किसी विषय पर आकर्षक सरस, तथा सुव्यवस्थित गद्य शैली में अपने भावों या विचारों को क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करना निबंध है। इसमें नपे-तुले शब्दों में अधिक-से-अधिक बात कही जाती है। इसीलिए लेखक इसमें 'गागर में सागर' भर देता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का यह कथन सत्य है कि यदि पद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। निबंध की भाषा और शैली उसकी श्रेष्ठता की सूचक होती है। भाषा के उत्तम प्रयोग से ही भावों, विचारों और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

निबंध के लिए अपेक्षित गुण :-

1. **विस्तृत विषय-सामग्री :-** निबंध लेखन के लिए सुयोजित रूप में विषय-सामग्री का संकलन करना चाहिए। अपेक्षित पुस्तकों, सामायिक पत्र-पत्रिकाओं और विशेषांको के लेखों, विद्वानों के व्याख्यानों और गोष्ठियों से पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो सकती है। सामग्री संकलन के लिए एक दिन का अध्ययन पर्याप्त नहीं होता, इसके लिए सतत् अध्ययन, मनन और चयन की प्रक्रिया जारी रखनी पड़ती है। वर्षो का संचित ज्ञान अच्छे निबंध-लेखन में सहयोगी बनता है।

2. **विषय-वस्तु का संयोजन :-** निबंध लिखते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उसमें विचार या भाव श्रृंखलाबद्ध रूप में व्यक्त किए गए हों। ये विचार या भाव एक निश्चित क्रम में हों और आपस में जुड़े हुए हो। अपने विचार तर्कपूर्ण ढंग से लिखे जाने चाहिए, जिससे पाठक को किसी निष्कर्ष पर पहुँचने मे सुविधा हो।

3. **अनुकूल भाषा :-** निबंध की भाषा, विषय तथा विचारों के अनुरूप होनी चाहिए। गम्भीर और साहित्यिक निबंध में तत्सम शब्दावली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। भाषा में तत्सम और आंचलिक शब्दों का पुट निबंध को लालित्यपूर्ण बना देता है।

4. **प्रभावी क्षमता :-** निबंध की प्रभावशीलता शब्द और वाक्य के उत्कृष्ट संयोजन पर निर्भर होती है। अच्छे निबंध में शब्द, वाक्य तथा अनुच्छेद एक विशेष क्रम में संगुम्फित होते हैं। उनका क्रम और परस्पर सम्बन्ध इस प्रकार होता है कि इसमें उलटफेर करने से अस्वाभाविकता आ जाती है। निबंध लिखते समय यथा आवश्यक उद्धरणों, लोकोक्तियों और काव्य-पंक्तियों का प्रयोग होता है जिससे वह रोचक तथा प्रभावशाली बन जाता है।

निबंध के मुख्य भाग :- प्रभावी निबंध लेखन के लिए उसके अंगों का भी ज्ञान अपेक्षित होता है चूँकि निबंध का आकार सीमित होता है इसलिए इस पर विचार करना वांछनीय रहता है। निबंध में बात कहाँ से शुरू करें, क्या-क्या लिखें और अंत कैसे करें, इसके लिए आवश्यक है कि निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना ली जाए। रूपरेखा में चार बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

1. प्रस्तावना या भूमिका या परिचय

2. विषय-वस्तु

3. विषय विस्तार

4. उपसंहार

1. **प्रस्तावना :-** निबंध के प्रथम अनुच्छेद (पैरा) को भूमिका या प्रस्तावना के रूप में लिखा जाता है। प्रस्तावना रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए। इसके द्वारा पाठक के मन में निबंध को विस्तारपूर्वक पढ़ने की उत्सुकता जाग उठती है। प्रस्तावना संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली होनी चाहिए। इसके द्वारा निबंध के मुख्य अंश या विषय-वस्तु के सम्बन्ध में संकेत दिया जाता है। प्रस्तावना को विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है, यथा -

1. निबंध के विषय का स्वरूप या परिभाषा देकर

2. किसी कवि की उक्ति या कवितांश लिखकर

3. कोई समस्या उपस्थित करते हुए

4. लोकोक्ति या उद्धरण देकर

5. विषय का महत्व बताकर

NOTES

6. प्राकृतिक परिवेश का चित्रांकन कर।

2. **विषय-वस्तु :-** यह निबंध का महत्वपूर्ण भाग है। यहाँ विषय-वस्तु का विस्तुत विवेचन किया जाता है। निबंध से सम्बंधित सामग्री को कई अनुच्छेदों में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि मुख्य विषय के सभी क्षेत्र उद्‌घटित हो सकें। विषय की पुष्टि के लिए जो भी उद्धरण, दृष्टांत या प्रमाण चुने जाएँ वे सरल, आकर्षक और प्रभावकारी हों। यदि मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाए तो उनसे निबंध और अधिक प्रभावनिष्ठ बनता है।

3. **विषय-विस्तार :-** निबंध लेखन में आकर्षक प्रस्तुतीकरण के लिए क्रमबद्धता और बिन्दुवार विषय विस्तार आवश्यक होता है। सामान्यत। निबंध के विषय को पाँच-छह अनुच्छेदों में अभिव्यक्त किया जाना चाहिए। प्रस्तावना और उपसंहार इनके अतिरिक्त दो स्वतंत्र अनुच्छेद होते है। मुख्य अंश के पाँच-छह अनुच्छेदों में विषयवस्तु की विविधता, विस्तृतता, तुलना आदि का समायोजन होता है। कभी-कभी विषय की व्यापकता के कारण अनुच्छेदों की संख्या बढ़ जाती है, परन्तु निबंध की कसावट और सघनता बनी रहनी चाहिए।

4. **उपसंहार :-** निबंध का अंतिम अनुच्छेद उपसंहार कहलाता है, यहाँ विषय-वस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। निबंध लेखक अपना विचार या प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता हैं। निबंध का समापन या अंत ऐसा होना चाहिए कि उसका स्थायी प्रभाव पाठक के मन-मस्तिष्क पर पड़ सके। संक्षिप्त होने पर भी निबंध के इस भाग में पाठक को प्रभावित करने की पूरी क्षमता होती है।

निबंध के प्रकार :- निबंध कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, मनोविश्लेषणात्मक, साहित्यिक आदि। लेकिन विषय-वस्तु को दृष्टि में रखकर देखा जाए तो एक निबंध में वर्णन की प्रधानता हो सकती है तो दूसरे में भावना या विचार की। किसी निबंध में कल्पना की उड़ान होती है, तो अन्य किसी में पूर्णत: साहित्यिक रूझान दिखाई देता है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से निबंध के निम्नलिखित प्रकार हो सकते है -

1. **वर्णनात्मक निबंध :-** वर्णनात्मक निबंध ऐसे निबंधों को कहा जाता है, जो किसी वस्तु, घटना, दृश्य या पर्व आदि से सम्बन्धित हों। ऐसे निबंधों में वर्णन की प्रधानता होती है। विषय की रूपरेखा बनाते समय प्रस्तावना, मुख्य अंश, विस्तार तथा उपसंहार लिखे जाते हैं। इस प्रकार के निबंधों की भाषा सरल, स्पष्ट तथा सूचनापरक होती है, जैसे- वर्षा ऋतु, दीपावली, ईद, गणतंत्र दिवस की परेड, ताजमहल, महाविद्यालय आदि।

2. **विचारात्मक निबंध :-** ऐसे निबंधों में चिंतन की प्रधानता होती है। ऐसे निबंधों में किसी स्थिति या समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है। विषय के सभी पक्षों पर चिंतन-मनन करते हुए उनके गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है और निष्कर्ष निकाला जाता है। विचारात्मकता के कारण इन निबंधों की भाषा गूढ़ तथा गम्भीर होती है। तर्क और बौद्धिकता इन निबंधों की प्राण सत्ता होती है। जैसे- दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, राष्ट्रीय एकता, श्रद्धा और भक्ति, जनसंख्या वृद्धि, आतंकवाद आदि।

3. **विवणात्मक निबंध :-** इस प्रकार के निबंध में बीती हुई घटनाओं, युद्ध - कथाओं, जीवनियों, पौराणिक वृत्तांतों, चलित खेल स्पर्द्धाओं आदि को प्रमुखता के साथ उल्लिखित किया जाता है। ऐसे निबंधों में क्रमबद्धता की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। विवरणात्मक निबंधों में पाठकीय रूचिता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जैसे - स्वतंत्रता समर 150 वर्ष, डॉ. अब्दुल कलाम, बीजिंग ओलम्पिक आदि।

4. **भावात्मक निबंध :-** ऐसे निबंधों में चिंतन की अपेक्षा भावना की प्रधानता होती है। भावात्मक निबंध पढ़ते समय पाठक को कविता पढ़ने जैसा आनंद आता है। इन निबंधों की भाषा कोमल शब्दों से मुक्त, सरस तथा काव्यात्मक होती है; जैसे मेरे समनों का भारत, बसंतोत्सव आदि।

5. **साहित्यिक निबंध :**– किसी साहित्यि प्रवृत्ति, साहित्यिक विधा या किसी साहित्यकार पर लिखे गए निबंध को साहित्यिक निबंध कहते है। ऐसे निबंधों के लेखन के लिए विषय का गम्भीर और विस्तृत अध्ययन अपेक्षित होता है। साहित्यिक निबंध के लेखन में विषय के अनुरूप भाषा शैली का होना आवश्यक है; जैसे आधुनिक हिन्दी कविता, हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग, महाकवि निराला आदि।

इसी क्रम में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा समसामयिक आदि विषयों पर भी निबंध लिखे जाते है।

NOTES

निबंध लेखन में ध्यान रखने वाली बातें :-

1. निबंध के विषय को भली–भाँति समझकर ही निबंध लिखना चाहिए।
2. विषय के अनुसार पहले रूपरेखा बना लें और उसी के अनुसार निर्धारित बिन्दुओं का विस्तार करते जाएँ।
3. प्रत्येक बिन्दु को एक – एक अनुच्छेद में विस्तारित करना चाहिए।
4. सभी अनुच्छेदों का एक दूसरे से सामंजस्य बना रहना चाहिए।
5. निर्धारित शब्द सीमा और समय सीमा में निबंध लिखना वांछनीय होता है।
6. निबंध की भाषा विषय तथा विचाारों के अनुरूप होनी चाहिए।
7. निबंध की भाषा, शैली को प्रभावी बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का समचित प्रयोग करना चाहिए।
8. निबंध के विषय के अनुसार यथा स्थान उद्धरणों, सूक्तियों, प्रसंगों तथा काव्यपंक्तियों को भी प्रस्तुत करना चाहिए।
9. निबंध आदि से अंत तक कथ्य और शिल्प की सुमन माला में संयोजित होना चाए।
10. शैली प्रवाहपूर्ण, रोचक एवं सरस हो। वह भावानुगामिनी हो।
11. निबन्धों में बुद्धि, कल्पना और रागात्मक तत्वों का समन्वय होना आवश्यक है।
12. अपने विषय का प्रतिपादन करते समय जोश में आकर बीच में ही भटक जाना या विषय से हट जाना उचित नहीं है।
13. शब्दौचित्य का विशेष ध्यान रखा जाये।
14. एक ही शब्द को बार – बार न दोहराया जाये।
15. यथास्थान विरामादि चिन्हों का समुचित प्रयोग किया जाए।
16. संयोजक शब्दों के प्रक्षेप में पूर्ण सावधानी रखी जाए, अन्यथा अनर्थ की सम्भावना रहती है।
17. लेखन सुवाच्य एवं सधा हुआ होना चाहिए।
18. निबंध – लेखन के लिए अनवरत् साधना की जाए और ज्ञानार्जन के प्रति सदैव विशेष अभिरूचि रहे।

निबन्ध शैली :– निबन्ध की भाषा सरल, सुबोध, व्याकरणसम्मत, स्पष्ट, शिष्ट एवं स्तरीय होनी चाहिए। इसी कारण विचारों में स्पष्टता एवं क्रमबद्धता आती है। निबन्ध की शैली प्रवाहपूर्ण, रोचक एवं सरस होनी चाहिए। साथ ही इसमें मुहावरों, लोकोक्तियों एवं अलंकारों का यथास्थान प्रयोग करना चाहिए।

1. साहित्य और समाज

रूपरेखा :– 1. साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा, 2. समाज और साहित्य का सम्बन्ध, 3. साहित्य समाज का दर्पण या प्रतिबिम्ब, 4. साहित्यकार का सामाजिक दायित्व, 5. साहित्य की समाजिक महत्ता, 6. उपसंहार।

1. **साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा :**– साहित्य किसी भी राष्ट्र या जीवन की चिरस्थायी निधि है। साहित्य का आधार जीवन है। 'साहित्य' शब्द 'सहित' शब्द से व्युत्पन्न हुआ है। इसमें साथ चलने की भावना निहित है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था– ''सहित शब्द से साहित्य के मिलने का एक भाव देखा जाता

है। वह केवल भाव–भाव का, भाषा–भाषा का, ग्रन्थ–ग्रन्थ का मिलन नहीं है, बल्कि मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का अन्तरंग मिलन भी है, जो कि साहित्य के अतिरिक्त अन्य से सम्भव नहीं है।'' आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में, ''ज्ञान–राशि के संचित कोष का नाम ही साहित्य है।'' हेनरी हडसन के अनुसार, ''साहित्य मूलत: भाषा के माध्यम से, जीवन की अभिव्यक्ति है।'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विचारों में, ''प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है।'' एक अंग्रेजी विद्वान के शब्दों में, ''साहित्य मानव समाज का मस्तिष्क है।'' साहित्य की मुख्य विशेषताएँ हैं– समाज का कल्याण करना, मानवीय मनोवृत्तियों को तृप्त करना एवं उनको उन्नत या आदर्श बनाना।

2. **समाज और साहित्य का सम्बन्ध :**– यह निर्विवाद है कि साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है। कोई भी सफल साहित्यकार समाज के कल्याण के सम्बन्ध में लिखता है। उसकी सामाजिक एवं व्यक्तिगत अनुभूति ही साहित्य के निर्माण में सहायक होती है। डॉ. श्यामसुन्दरदास ने लिखा है, ''सामाजिक मस्तिष्क अपने पोषण के लिए जो भाव–सामग्री निकालकर समाज को सौंपता है, उसी के संचित कोष का नाम साहित्य हैं।'' इस प्रकार समाज और साहित्य एक–दूसरे के पूरक एवं प्रेरक हैं।

3. **सहित्य समाज का दर्पण या प्रतिबिम्ब** – साहित्यकार समाज में जो कुछ देखता एवं अनुभव करता है, उसे भी वह अपनी प्रतिक्रियास्वरूप साहित्य में प्रकट कर देता है। इस प्रकार साहित्य समाज का सच्चा प्रतिबिम्ब है। किसी भी समाज की उन्नति – अवनति का सच्चा चित्रण उसके साहित्य में सहज रूप में देखा जा सकता है। वास्तव में, जीवन की घटनाओं, कार्यकलापों, दृश्यों तथा व्यापारों की आधारशिला पर ही साहित्य का भव्य भवन खड़ा होता है। समाज की हलचल, उसकी सभ्यता एवं संस्कृति, उसकी जाति और धर्म सम्बन्धी विभिन्नता के कारण जो परिवर्तन आता है, उसका गहरा प्रभाव साहित्य पर भी पड़ता है। इसलिए साहित्य को 'मानव समाज का मास्तिष्क' भी कहा जाता गया है। वह भावी समाज का आदर्श निर्माता है। **डॉ. गुलाबराय** ने कहा है, ''कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है। उसको जैसा मानसिक खाद मिल जाता है, वैसी ही उसकी कृति होती है। वह अपने समय के वायुमंडल में घूमते हुए विचारों को मुखरित कर देता है।''

4. **साहित्यकार का सामाजिक दायित्व** – श्रेष्ठ साहित्यकार वास्तव में समाज का भाग्य – निर्माता है। साहित्यकार सच्चे मार्गदर्शक होते हैं, लोकनायक होते हैं। उनकी लेखनी में वर्तमान की धड़कन और भविष्य की नाड़ी परीक्षा होती है। राष्ट्ररूपी नौका का सच्चा कर्णधार, नाविक या अद्धारकर्ता साहित्यकार ही होता है। एक महान् साहित्यकार समाज का यथार्थ चित्रण कर उसे आदर्श की ओर सहज उन्मुख कर सकता है। गोस्वामी तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मुन्शी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद आदि ऐसे ही महान् व्यक्ति साहित्यकारों में से हुए है,जिन्होने अपने से विश्व – मानव को आदर्श सामाजिक जीवन की कला सिखाई है। महान् साहित्यकार एक दीपक के समान है, जो स्वयं जलकर दूसरों को ही प्रकाश प्रदान करता है।

5. **साहित्य की सामाजिक महत्ता** – किसी महान कवि ने कहा है–

''अन्धकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है। मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।''

साहित्य किसी भी समाज और राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन को सुरक्षित ही नहीं रखता, अपितु उसे उन्नत भी बनाता है। वह मानव समाज में उदात्त वृत्तियों का बीजारापण कर, उन्हें पल्लवित एवं पुष्पित करता है। साहित्य की उपयोगिता के बारे में एक विद्वान ने लिखा है, ''साहित्य का कार्य हमारी संवेदनाओं एवं कल्पनाओं को शुद्ध बनाना, भावनाओं को शुद्ध करना और नैतिक दृष्टि को विकसित करना है।'' यह निश्चित है कि जो शक्ति साहित्य में निहित है, वह न तो तोप में न तलवार में और न अन्य किसी आधुनिक शस्त्रास्त्र में ही है। साहित्य व्यक्ति के सामाजिक जीवन में आमूल परिवर्तन करने की महती शक्ति रखता है। विश्व में आज जो भी देश एवं राष्ट्र प्रगति के चरम शिखर पर है, वे सब वहाँ के उत्तम साहित्य के कारण हैं।

समाज नष्ट हो सकता है, किन्तु साहित्य कायम रहता है। किसी राष्ट्र के साहित्य का पतन होना उस राष्ट्र के पतन का द्योतक है। आज जापान के उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँचने का प्रमुख कारण वहाँ का उत्तम साहित्य ही है। प्रेम, दया, सहानुभूति, सेवा आदि भावों का प्रादुर्भाव विज्ञान के द्वारा कभी भी सम्भव नहीं है। **कार्लाइल** ने एक बार कहा था, ''मै ब्रिटिश साम्राज्य छोड़ दूँगा, पर शेक्सपीयर की रचना को नहीं छोड़ सकता।'' यह है साहित्य का महत्व।

6. **उपसंहार** – विज्ञान की उत्तरोत्तर प्रगति के कारण आज का मानवीय जीवन भौतिकवादी हो चला है, फलस्वरूप सुख – शांति का स्रोत सूखता जा रहा है। ऐसी स्थिति में उत्तम साहित्य हमें संजीवनी प्रदान कर सकता है। आज उत्तम साहित्य की परम आवश्यकता है, जो नवीन समाज की रचना कर सके, विश्व में करूणा एवं अहिंसा का साम्राज्य स्थापित कर सके और मानसिक समस्याओं की बेड़ियों को सदैव के लिए तोड़कर मानव को उन्मुक्त कर सके। अन्त में, **मुंशी प्रेमचंद** के शब्दों में इतना ही कहना उचित होगा, ''जिस साहित्य से हमारी रूचि न जागे आध्यामित्क और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शांति पैदा न हो, हमारा सौंदर्य प्रेम जाग्रत न हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

2. भारतीय नारी

रूपरेखा – 1. प्रस्तावना, 2. प्राचीन भारतीय नारी, 3. मध्यकाल में नारी, 4. ब्रिटिशकाल में नारी, 5. स्वतंत्र भारत में नारी, 6. वर्तमान में नारी के रूप,
7. वर्तमान में नारी की समस्याएँ और समाधान, 8. वर्तमान में नारी के कर्तव्य, 9. उपसंहार।

1. **प्रस्तावना** – समाज के रचना – विधान में नारी के माँ, प्रेयसी, पुत्री, पत्नी, आदि अनेक रूप हैं। वह सम परिस्थितियों में देवी है, तो विषय परिस्थतियों में दुर्गा – भवानी है। उसकी उपेक्षा करके मानव पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। वह समरूप गाड़ी का एक पहिया है, जिसके बिना समग्र जीवन ही पंगु है। **श्रीमती महादेवी वर्मा** के अनुसार, ''नारी'' केवल मांस – पिंड की संज्ञा नहीं है। आदिमकाल से आज तक विकास पथ पर पुरूष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर, मानव ने जिस व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास किया है, उसी का पर्याय नारी है।'' **महर्षि रमण** के शब्दों में, ''पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया तथा जीवमात्र के लिए करूणा सँजोने वाली महाप्रकृति का नाम ही नारी है।''

2. **प्राचीन भारतीय नारी** – वैदिककाल में नारी पुरूष की सहधर्मिणी थी। श्रद्धा, लोपामुद्रा, कामयानी, वैवस्वती, शची आदि अनेक नारियों ने ऋग्वेद के सूत्रों की रचना की थी। सूर्या, गार्मी, मैत्रेयी, सुलभा, ममता आदि नारियाँ ब्रह्मवादिनी थीं। इस युग में सीता, अनुसुइया, सुलोचना, मंदोदरी आदि नारियाँ पतियों की सत्य परामर्शदात्री एवं सन्मार्ग में लगाने वाली रहीं। महाभारतकाल में द्रौपदी, गांधारी और कुंती उस युग की शक्ति थीं। उपनिषद् पुराण, स्मृति तथा सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय – साहित्य में नारी की महत्ता अक्षुण्ण रही है। **मनु** ने '' *यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:''(*जहाँ नारी की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।*)*कथन के द्वारा भारतीय नारी के आदर्श एवं महान् रूप की व्यंजना की है।

3. **मध्यकाल में नारी** – मध्य युग तक आते – आते नारी की सामाजिक स्थिति दयनीय बन गयी। भारत मुसलमानों के आक्रमण से एवं पृथ्वीराज चौहान की पराजय के साथ नारी – जीवन की करूण गाथा प्रारम्भ हो गई। परिणामस्वरूप उनका अस्तित्व घर की चहारदीवारी तक ही सिमट कर रह गया। वह कन्या रूप में पिता पर, पत्नी रूप में पति पर और माता के रूप में पुत्र पर आश्रित होती चली गई। भक्तिकाल में नारी तिरस्कृत, क्षुद्र और उपेक्षित बन गई। उसे वासना – तृप्ति का साधन मात्र समझा गया। रीतिकाल में तो उसके पतन की चरमसीमा ही हो गई। मध्य युग में भोग – विलास का साधन समझे जाने के बावजूद पद्मिनी, तार, कलावती, दुर्गावती, करूणावती, नीलदेवी, अहिल्याबाई आदि अनेक वीररांगनाओं ने भारतीय संस्कृति की परम्परा को जीवित रखने के लिए प्राणपण प्रयास किये।

4. **ब्रिटिशकाल में नारी** – ब्रिटिश शासनकाल में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का अन्त तथा दयानन्द सरस्वती ने स्त्री – शिक्षा का प्रचार कर उन्हें समान अधिकार दिलाने की दिशा में प्रयास किये। महात्मा गांधी ने नारी को विशेष महत्व प्रदान कर, उनमें राष्ट्रीय चेतना जगाकर, स्वतंत्रता आन्दोलन में नारियों को आगे आने हेतु प्रेरित किया। परिणामस्वरूप नारी ने अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त किया।

5. **स्वतंत्र भारत में नारी** – आधुनिक युग में चेतना आई। उसे विलासिनी और अनुचरी के स्थान पर देवी, माँ और प्रयसी के गौरवपूर्ण पद प्राप्त हुए। नारियों ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक सभी क्षेत्रों में आगे बढ़कर कार्य किया। विजयलक्ष्मी पण्डित, कमल नेहरू, सूचेता कृपालानी, सराजिनी नायडू, इंदिरा गांधी, महादेवी वर्मा आदि के नाम आज विशेष समान एवं गौरव के प्रतीक हैं। देश के सर्वोच्च प्रशासकीय

पद अर्थात् महामहिम राष्ट्रपति के रूप में श्रीमती प्रतिभा पाटिल पदस्थ रह चुकी हैं। इसी प्रकार लोकसभा अध्यक्ष के रूप में श्रीमती मीरा कुमार सफलतापूर्वक कार्य कर रही हैं। यह नारी जाति और भारत के लिये गौरव की बात है। अब वह अबला नहीं, सबला है। उपेक्षित नहीं, सम्मानिता है; परावलम्बी नहीं, स्वावलम्बी है।

NOTES

6. **वर्तमान में नारी के रूप** - **(i) समानता का भाव** - भारतीय संविधान ने पुरूष और नारी को समान अधिकार, देकर विधिक दृष्टि से नर - नारी के भेद को भी समाप्त कर दिया। **(ii) यौन आकर्षण का विलासमय केन्द्र** - आज भारत की नारी में पश्चिमी सभ्यता के प्रति अधिकाधिक आकर्षण बढ़ता जा रहा है। वह पाश्चात्य रंग में रँगी एक गुड़िया बन गई है। फूल - फूल पर मँडराने वाली तितली बनती जा रही है। यौन आकर्षण उसका ध्येय बनता जा रहा है। **(iii) खोखलापन** - वह बाहर से सजी - धजी किन्तु भीतर से खोखली होती जा रही है।

7. **वर्तमान नारी की समस्याएँ और समाधान** - आज स्त्रियों के समक्ष अनेक समस्याएँ हैं- आर्थिक, अशिक्षा, पर्दा प्रथा, अस्वच्छता, आभूषणप्रियता, बाल - विवाह, विधवा - विवाह, बहुविवाह, तलाक आदि। इन समस्याओं के समाधान के लिए वर्तमान में देश में स्त्रियों की स्थिति में सुधार हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे हैं।

8. **वर्तमान नारी के कर्तव्य** - स्त्री व पुरूष एक - दूसरे के पूरक हैं। नारी को समाजसेवा के साथ - साथ घर एवं राष्ट्र निर्माण में भी योगदान देना चाहिए। संतति का निर्माण करना चाहिए। स्त्री घर के द्वार की देहली पर रखे एक ऐसे दीपक के समान है, जो बाहर भी उजाला देता है, और घर में भी। **लावेल** ने नारी के मानवीय गुणों की प्रशंसा करते हुए लिखा है - ''मै नारी का महत्व इसलिए नहीं मानता कि विधाता ने उसे सुन्दर बनाया है, न इसलिए प्रेम करता हूँ कि वह प्रेम के लिए उत्पन्न की गई है। मै तो उसे पूज्य मानता हूँ और वह भी इस कारण कि मनुष्यत्व केवल उसी में जीवित है।''

9. **उपसंहार** - आधुनिक नारी को पाश्चात्य संस्कृति के व्यामोह में न पड़कर भोगवाद से दूर रहकर उसे आदर्श भारतीय नारी के रूप में अपने प्राचीन गौरव, उज्जवल चरित्र की गरिमा, उदात्त आदर्शों की प्रतिष्ठा करके अपने गृहस्थ, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन मे अमृत की धारा बहाकर जीवन - उपवन को सुन्दर, रमणीय, पुष्पित, सुरभित बनाकर अपने जीवन को धन्य बनाना चाहिए।

3. एड्स

रूपरेखा - 1. प्रस्तावना, 2. एड्स का प्रभाव, 3. एड्स की खोज, 4. एड्स का फैलाव, 5. भारत में एड्स रोग, 6. उपचार के प्रयास, 7. एड्स के उपचार की नई खोजें, 8. उपसंहार।

1. प्रस्तावना :- एड्स एक असाध्य, जान लेवा और खतरनाक बीमारी है। पिछले वर्षों में 30 हजार से अधिक एड्स रोगियों में से आधे से अधिक मौत के मुँह में जा चुके हैं। शेष रोगी भी मरणोन्मुख हैं। यह रोग इतना भयंकर है कि इसका पता लगने के दो वर्ष के भीतर ही 80 प्रतिशत रोगी मर जाते हैं।

2. एड्स का प्रभाव :- एड्स के विषाणु एच. टी. एस. बी. टी रक्त में लिम्फोसाइट्स कणिकाओं पर आक्रमण करते है और उन्हें नष्ट कर देते है। परिणामस्वरूप लिम्फोसाइट्स कोशिकाएँ असंतुलित हो जाती हैं और रोगी आसानी से रोग की चपेट में आ जाते है।

3. एड्स की खोज :- एड्स रोग का पता लगाने का श्रेय अमेरिका के डॉ. **माइकेल गाटलीव** को जाता है। सन् 1981 में लॉस एंजिल्स के निकट एक अस्पताल में काम करते हुए उसके पास तीने महीने की अवधि में चार रोगी ऐसे आये, जो न्यूयोमोसिस्टम निमोनिया से पीड़ित थे। यह फेफड़ो का एक घातक किस्म का संक्रामक रोग है और कैंसर के वृद्ध रोगियों में या ऐसे रोगियों में पाया जाता है, जिन्हें कोई अंग प्रत्यारोपित किया गया हो। उपर्युक्त चारों रोगी लगभग 30 वर्ष की आयु के थे और बीमार पड़ने से पहले उनका स्वास्थ अच्छा था। ये चारों ही समलैगिक थे। परीक्षण करने पर पाया गया कि इन चारों में शारीरिक क्षमता लगभग नष्ट हो चुकी थी।

बाद में यह देखा गया कि एड्स रोगी से यौन संबंध रखने वाले भी इसके शिकार हो सकते हैं। स्त्री या पुरूष में से कोई भी एड्स का रोगी हो, इसके अतिरिक्त ऐसे नशेड़ी जो इंजेक्शन की नशीली दवाइयाँ लेते हैं, भी एड्स के रोगी पाये गये है। वास्तव में एड्स से प्रभावित माँ की संतान में गर्भावस्था के दौरान, जन्म के समय या उसके बाद भी एड्स के विषाणु चले जाते हैं।

4. एड्स का फैलाव :- एड्स रोगी को छूने, उसके साथ बैठकर खाने – पीने या हवा द्वारा यह रोग नहीं फैलता है, बल्कि एड्स के रोगी से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने से, उसके खून से, उसके विषाणुओं से संक्रमित सुइयों से दूसरों को इंजेक्शन देने से फैलता है। एड्स के विषाणु रक्त, वीर्य, थूक, पेशाब, माँ के दूध में पाये जाते हैं। के. वी. गोपालकृष्ण जो कि अमेरिका के क्लोलालैंड स्थित केयर न्यू जनरल अस्पताल में इन्टरनल मेडिकल विभाग के अध्यक्ष हैं उन्होने एड्स पर शोध करते समय यह पाया कि अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों से भी एड्स फैलता है।

5. भारत में एड्स रोग :- अभी तक भारत इस रोग से अछूता था, परन्तु पिछले दिनों मद्रास में महिलाओं में एड्स के जीवाणु पाये गये। ताजा जानकारी के अनुसार भारत के विभिन्न -क्षेत्रों में एड्स पीडित रोगियों के होने के तथ्य सामने आये हैं। यह देखकर भारत शासन ने गम्भीरता से सोच – विचार कर तत्परता से कदम उठाये।

6. उपचार के प्रयास :- एड्स के रागियों को मुख्यत: तीन दवाइयाँ दी जाती हैं- सुरामिन, एच. पी. ए. 85 और राइबो वाइरीन। यह रोग जड़ से नहीं जाता है। ये दवाइयाँ देने पर एड्स रोग उभर आता है। वर्तमान में एड्स निरोधक टीके बनाने के प्रयास जारी है। देश के प्रमुख शहरों में एड्स निगरानी केन्द्र खोले गए है। दूरदर्शन पर इसकी सूचनाएँ दी जाती है। तमिलनाडु सरकार ने अक्टूबर 1985 में मद्रास मेडिकल कॉलेज में इस्टीट्यूट ऑफ माइक्रोबायोलॉजी के निदेशक डॉ. सी. पी. लक्ष्मीनारायण के नेतृत्व में पाँच विशेषज्ञों की समिति का गठन भी किया।

7. एड्स के उपचार की नई खोजें :- एड्स पर अनुसंधान प्रारम्भ करने और इसके विषाणुओं को पहचानने का श्रेय **राबर्ट गैली** के नेतृत्व में कार्यरत् दस वैज्ञानिकों के एक दल को है, जिससे तीन भारतीय भी हैं- सारंगधरन, प्रेम सरीन और जैकी सलाउद्दीन। **प्रेम सरीन** ने बताया कि एड्स एक प्रतिविषाणु या वैट्रा वायरस है, जो शरीर के प्रतिरोधी तंत्र की विशेष कोशिकाओं पर आक्रमण करता है। एड्स की जाँच के लिए खून का परीक्षण एलीसा तकनीक से किया जाता है। इस तकनीक को विकसित करने का श्रेय सारंगधरन को जाता है। वैज्ञानिक, ए. श्रीनिवासन, पुरूदु सेन, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बेसिक एण्ड क्लीनिकल इम्यूनोलाजी विभाग के अध्यक्ष सुधीर गुप्ता और न्यूयार्क के क्वीन्स हास्पीटल सेन्टर में फेफड़ों के विशेषज्ञ डॉ. फारूख खान इस क्षेत्र में कार्यरत् हैं।

8. उपसंहार :- एड्स की रोकथाम के लिए आम जनता को शिक्षित किया जाना चाहिये। लोगो को समलैंगिक व्यक्ति या अपरिचित से शारीरिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। लोगों को स्वास्थ्य विज्ञान की शिक्षा अनिवार्यत: दी जानी चाहिये, तभी एड्स जैसे भयंकर एवं घातक रोग पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

4. प्रदूषण और मानव समाज

रूपरेखा – 1. प्रस्तावना 2. प्रदूषण क्या है? 3. प्रदूषण के कारण। 4. प्रदूषण के विभिन्न रूप – वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, रासायनिक प्रदूषण, वैचारिक प्रदूषण 5. प्रदूषण निवारण के उपाय। 6. उपसंहार।

1. **प्रस्तावना** – द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त प्रदूषण की एक नई समस्या का जन्म हुआ। जनसंख्या में वृद्धि, औद्योगीकरण, मिलावट की बढ़ती प्रवृत्ति, प्राकृतिक दोहन आदि के कारण पर्यावरण में प्रदूषक तत्वों में वृद्धि हुई है। हम अपनी प्रत्येक श्वॉस के साथ विषैले तत्व अपने शरीर को प्रदान करते हैं। परिणामस्वरूप प्रदूषण मानव समाज के लिए, विशेषकर वैज्ञानिकों के लिए आज एक बहुत बड़ी समस्या बन गया है।

2. **प्रदूषण क्या है**- अमेरिका की राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी ने प्रदूषण के बारे में कहा है, ''प्रदूषण जल, वायु या भूमि के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों से होने वाला कोई भी अवांछनीय परिवर्तन है, जिससे मनुष्य, औद्योगिक प्रक्रियाओ या सांस्कृतिक तत्वों तथा प्राकृतिक संसाधनों को कोई हानि या होने की सम्भावना हो। प्रदूषण में वृद्धि का कारण मनुष्य द्वारा वस्तुओं के प्रयोग करने के बाद फेंक देने की प्रवृत्ति और मनुष्य की बढ़ती जनसंख्या के कारण आवश्यकताओं में वृद्धि है।''

3. **प्रदूषण के प्रमुख कारण** -प्रदूषण का प्रमुख कारण औद्योगिकीकरण है। यद्यपि औद्योगिकरण से अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति हुई है, तथापि यह अभिशाप भी है। उत्पादन करने वाले कारखाने, दिन – रात चलने वाली रेलों, मोटरों आदि के धुएँ से प्रदूषण में अत्यधिक वूद्धि हुई है। अब हम पूर्णत: शुद्ध वायु में श्वॉस ले पाने में असमर्थ हैं।

NOTES

4. **प्रदूषण के विभिन्न रूप** – वर्तमान में हमारे जीवन का प्रत्येक पल प्रदूषणयुक्त बन गया है। इस प्रदूषण के कतिपय प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं –

i. **वायु प्रदूषण** – विभिन्न कल – कारखानों की चिमनियाँ, विविध, हलवाइयों की भट्टियाँ, घरों में सुलगने वाली अँगीठियाँ आदि दिन – रात धुआँ फेंकती रहती हैं। यह दूषित वायु हमारे फेफड़ों को दुर्बल बनाती रहती है। इस कारण अनेक पशु – पक्षी और वृक्ष धीरे – धीरे समाप्त होते जा रहे है। ताजमहल को मथुरा के तेलशोधक कारखाने से खतरा उत्पन्न हो गया है।

इसका एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है– परमाणु शक्ति बमों के विस्फोट परीक्षणों के कारण विश्व के वायुमण्डल में काफी मात्रा में रेडियोधर्मिता फैलती जा रही है। इससे प्राणियों और वनस्पतियों का जीवन विकलांग और अपाहिज बनता जा रहा है।

विमानों के वायुमंडल में हाइड्रोकार्बन्स और एयरो सोल्ज गैस छोड़ने के फलस्वरूप असमय एवं अनियमित वर्षा होने से बाढ़, सूखा बवण्डर और समुद्री तूफान की विनाशलीला के दृश्य देखने में आते हैं। इसी प्रकार अन्तरिक्ष अभियानों से वायुमण्डल में उपलब्ध ओजोन परत के लिए संकट हो गया है।

ii. **जल – प्रदूषण** – जल – प्रदूण के परम्परागत मुख्य कारणों में नगरों के गंदे पानी का नदी, तालाबों में मिलना, कपड़े धोना, स्नान करना, सफाई करना आदि है। इससे हैजा, पथरी, पीलिया, पोलियों आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। कल – कारखानों में प्रयुक्त दूषित जल खेती के अनाज के पौष्टिक तत्वों को नष्ट कर देता है। उनमें कई रोगों के कीटाणु प्रविष्ट हो जाने के कारण अनाज के पौष्टिक तत्वों को नष्ट कर देता है। उनसे कई रोगों के कीटाणु प्रविष्ट हो जाने के कारण अनाज एवं फल आदि स्वास्थ्य के लिए क्षतिप्रद सिद्ध होते है।

iii. **ध्वनि प्रदूषण** – औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण के कारण मशीनों का शोर इतना अधिक बढ़ गया है कि हम अपने ही निकट बैठे व्यक्ति की बात सुन – समझ नहीं सकते हैं। वायुमण्डल का संतुलन बिगड़ जाता है। इसका हमारी ज्ञानेद्रियों पर विपरीत प्रभाव पड़ने से तनाव बढ़ता है, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। महानगरों के निवासियों को नींद की गोलियों का सेवन करने की आदत पड़ जाती है।

iv. **रासायनिक प्रदूषण** – कृषि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लोभ में अनेक प्रकार के रासायनिक पदार्थों का बहुतायत से प्रयोग होने लगा है। इन रासायनिक पदार्थो, जिनमें कीटनाशक प्रमुख हैं, के कारण भी वातावरण के प्रदूषण में बड़ी वृद्धि हुई हैं।

v. **वैचारिक प्रदूषण** – विभिन्न प्रदूषणों के परिणामस्वरूप मानवमन भी प्रदूषित होने से नहीं बच पा रहा है और उसमें ईर्ष्या, द्वेष, अविश्वास , असंतोष, प्रतिस्पर्द्धा, संत्रास, षड्यंत्र, हिंसा आदि की दूषित भावनाओं का जन्म एवं विकास होता जा रहा है। इस प्रकार वैचारिक या मानसिक प्रदूषण बढ़ने से उदात्त भावनाओं का हनन होता जा रहा है।

5. **प्रदूषण निवारण के उपाय** – वायु प्रदूषण रोकने के लिए कारखानों पर फिल्टर लगाया जाए जो प्रदूषणकारी तत्वों को वायुमंडल में मिलने नहीं देवे।

i. **जल प्रदूषण** – जल – प्रदूषण रोकने के लिए जल स्रोतों के स्थान पर गंदे पदार्थों को न डाला जाए तथा भूमिगत पानी बहाव वाटर ट्रीटमेन्ट प्लान्ट् और इलेक्ट्रोस्टेटिक फिल्टर्स आदि का उपयोग किया जाए।

ii. **ध्वनि प्रदूषण** – ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए ध्वनि साइलेन्सर का प्रयोग किया जाए। अनावश्यक ध्वनिवर्द्धक यंत्रों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया जाए।

iii. **रेडियोधर्मी प्रदूषण** – रेडियोधर्मी प्रदूषण रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा संघ द्वारा निर्मित सुरक्षा सम्बन्धी नियमों का कठोरतापूर्वक पालन होना चाहिए।

iv. **रासायनिक प्रदूषण** – रासायनिक प्रदूषण रोकने के लिए इस प्रकार के पदार्थो की यथासम्भव भूमिगत रखा जाए एवं किसी स्थान पर उन्हें एकत्र न होने दिया जाए।

v. **वैचारिक प्रदूषण** – वैचारिक प्रदूषण रोकने के लिए उत्तम साहित्य का प्रचार एवं प्रसार किया जाए, आरोग्य उपवन लगाये जाएँ, वनों का सम्पूर्ण संरक्षण किया जाए, नये पेड़–पौधे काफी मात्रा में लगाये जाएँ, जनता में प्रदूषण व शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जाए तथा स्वच्छता का मानव–जीवन में महत्व को समझाया जाए।

6. **उपसंहार** – प्रकृति मानव को कभी क्षमा नहीं करती है। वह भूलों के लिए दण्ड देती है ऐसी स्थिति में जीवन को सुरक्षित रखने के लिए राजनीतिज्ञों, प्रशासकों, उधोगपतियों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, चिंतको, नागरिकों आदि सबका उत्तरदायित्व है। इस संदर्भ में एक दार्शनिक ने गंभीर चेतावनी देते हुए कहा है – ''प्रदुषण एक गंभीर पहेली है और इसके साथ हमारे जीवन–मरण का प्रश्न जुड़ा हुआ है। वैज्ञानिकों ने यदि समय रहते चुनौती मानकर, इसके परिहार के लिए आवश्यक कदम नहीं उठाये, तो आने वाले कुछ वर्षो में जहरीले एवं विषाक्त दमघोंटू वातावरण में मनुपुत्र सदा के लिये काल के गाल में समा जाएगा।''

5. बेरोजगारी : कारण, समस्या एवं निदान

रूपरेखा – 1. प्रस्तावना, 2. बेरोजगारी की स्थिति एवं प्रवृत्ति, 3. बेरोजगारी के कारण, 4. बेरोजगारी निराकरण के उपाय, 5. उपसंहार।

1. **प्रस्तावना** – भारत के सामने आज मौजूदा अनेक समस्याओं में बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या है। बेरोजगारी का आशय है प्रत्येक युवा व्यक्ति को आवश्यकतानुसार कार्य नहीं मिलना। अत: उनका जीवन अभावों, गरीबी, कष्टों से पूर्ण हो जाता है। राजनीतिक स्वतंत्रता मिलने के बाद भी गरीबी एवं बेकारी की समस्या आज भी दूर नहीं हो पायी है।

2. **बेरोजगारी की स्थिति एवं प्रवृत्ति** – आज देश में लगभग आठ करोड़ व्यक्ति बेरोजगार हैं। देश में लगभग 6 करोड़ ग्रामीणों को प्रतिदिन एक घंटा ही कार्य मिलता है। इसी प्रकार लगभग 60 करोड़ लोगों को 2–4 घंटे ही प्रतिदिन कार्य मिल पाता है। कृषि मजदूरों को वर्ष भर में 3–4 माह के लिए ही कार्य मिल पाता है। रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत संख्या के अनुसार लगभग 5 करोड़ से अधिक शिक्षित लोग भारत में वर्तमान में बेरोजगारी के शिकार हैं। कोई पूर्णत: बेरोजगार है, तो कोई अशत: बेरोजगार। आज से पच्चीस वर्ष पूर्व हमारे देश में कुशल कारीगरों, डॉक्टरों, वकीलों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, प्रशिक्षित शिक्षकों आदि की बड़ी माँग थी। बेरोजगारी की समस्या का उचित समाधान खोजे बिना देश को ऊँचा उठाने की कल्पना मिथ्या ही सिद्ध होगी। दस पंचवर्षीय योजनाओं के उपरान्त आज भी बेरोजगारी अजगर वृत्ति धारण किये हुए है।

3. **बेरोजगारी के कारण** – बेरोजगारी का प्रधान कारण है यहाँ की बढ़ती हुई जनसंख्या। बेरोजगारी का दूसरा कारण दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है, जो व्यावहारिक एवं व्यावसायिक नहीं है। इसके अनेक कारण हैं *जैसे*– लघु उघोगों की अपेक्षा बड़े पैमाने के स्वचलित उधोगों का विकास, मशीनीकरण, औधोगीकरण व श्रम परियोजनाओं का अभाव, श्रम की गतिशीलता का अभाव, कृषि का पिछड़ापन, कृषि की प्रकृति पर निर्भरता, शारीरिक श्रम के प्रति अरूचि, आर्थिक साधनों का अभाव, आय का असमान वितरण, शरणार्थियों का भारी संख्या में प्रवेश, शासन की उदासीनता, हड़तालें, राजनीतिक वातावरण, भौगोलिक परिस्थितियाँ, संयुक्त परिवार–प्रथा, स्थानीय प्रशासन की लापरवाही, शारीरिक कार्यक्षमता की कमी आदि।

4. **बेरोजगारी निराकरण के उपाय** – बेरोजगारी के कारण देश में गरीबी, भुखमरी, अशांति, न्यूनतम जीवन स्तर, युवा आक्रोश, अनुशासनहीनता, हत्या, आत्महत्या, चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार,अत्याचार, अनाचार आदि उत्तरोत्तर बढ़ने का भय सदैव व्याप्त रहेगा। अत: इससे मुक्ति के निम्नलिखित उपाय हैं –

i) **शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन** – बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति को व्यावहारिक एवं औधोगिक बनाना होगा, ताकि विधार्थी स्व–रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें।

ii) **जनसंख्या नियंत्रण** – जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए परिवार नियोजन की योजना को अधिक प्रभावशाली ढंग से लागू किया जाना चाहिये।

iii) **लघु एवं कुटीर उद्योग** – लघु एवं कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन से जीवनोपयोगी वस्तुओं की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं। एक अनुमान के अनुसार एक करोड़ रूपये की पूँजी लागत पर बड़े उद्योगों में 53 व्यक्तियों को रोजगार मिलता है, जबकि लघु उद्योगों में 300 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो सकता है।

iv) **कृषि विकास** – आधुनिक उन्नत कृषि पद्धतियों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि अनाज की समस्या का पूर्णत: समाधान किया जा सके।

v) **युवाओं में श्रम के प्रति रूझान** – श्रम, कृषि एवं उत्पादन के प्रति युवा पीढ़ी में रूचि एवं आकर्षण उत्पन्न करना चाहिये।

vi) **शासन का सहयोग** – भारत को नये-नये निर्माण कार्य, जैसे – मरम्मत, सड़कें बनाना, यातायात, निर्माण आदि से रोजगार के अवसर सुलभ कराना चाहिये।

vii) **बैंकों से आर्थिक सहायता** – शासन की ओर से कम ब्याज दर पर आर्थिक सहायता मिलनी चाहिये, ताकि बेकार युवक निजी व्यापार-व्यवसाय चलाने में सक्षम हो सकें।

NOTES

viii) **रोजगार के स्पष्ट अवसर** – अयोग्य, अवांछित एवं अक्षम व्यक्तियो को पक्षपातपूर्ण तरीकों से रोजगार नहीं मिलना चाहिये।

ix) **प्रशिक्षण सुविधाएँ** – विविध प्रशिक्षणों, शिविरों एवं परियोजनाओं के द्वारा जनता को लाभकारी रोजगार प्रदान करने की व्यवस्था शासन की ओर से की जानी चाहिये।

x) **परम्परागत व्यवसाय एवं उद्योग-धंधों का विकास** – जनता को स्वयं अपने परम्परागत व्यवसाय एवं उद्योग-धंधों को विकसित कर नये क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का उपयोग करना चाहिये।

5. **उपसंहार** – देश में करोड़ों युवक बेरोजगार हैं, अत: सरकार को इसका व्यापक, स्थायी एवं शीघ्र प्रभावशाली समाधान खोजना चाहिये। पूर्व प्रधानमंत्री **स्व. मोरारजी देसाई**ने कहा था – ''आज भारत के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण चुनौती रोजगार बढ़ाने की है। इस सम्बन्ध में विशेष प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों में खेतिहर श्रमिकों के लिए करना होगा। दूसरे, हमारी शिक्षा पद्धति भी रोजगारमुखी होना चाहिये।'' भारत सरकार बेरोजगारी के समाधान हेतु पंचवर्षीय योजना, परियोजना, विकास योजना, ऋण प्रदाय योजना, उद्योग विकास योजना, बहुमुखी विकास, ग्राम विकास योजना तथा अन्य अनेक योजनाओं द्वारा अधिकाधिक रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है।

कुछ अन्य निबंधों की रूपरेखाएँ :-

1. आतंकवाद

1. आतंकवाद एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या
2. आतंकवाद का अर्थ और स्वरूप
3. आतंकवाद फैलने के कारण
4. भारत में आतंकवाद का स्वरूप और विस्तार
5. आतंकवाद का जन-जीवन पर प्रभाव
6. आतंकवादरोधी शासकीय प्रयास
7. सामाजिक संगठनों के प्रयास
8. उपसंहार

2. मध्यप्रदेश का सांस्कृतिक वैभव

1. मध्यप्रदेश – भारत का हदय
2. मध्यप्रदेश – प्रगति के छह दशक
3. मध्यप्रदेश का राजनैतिक और सामाजिक प्रदेय
4. मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक ऊँचाइयाँ
5. संस्कृति के वाहक – पर्यटन-स्थल, तीर्थ और किले, पुरातत्व संग्रहालय और राष्ट्रीय उद्यान
6. सांस्कृतिक प्रभाव – अकादमियाँ, महोत्सव, समारोह
7. उपसंहार

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. निबन्ध का अर्थ लिखिए।
2. निबन्ध के मुख्य अंग कौन-कौन से हैं?
3. विषय-वस्तु की दृष्टि से निबन्ध कितने प्रकार के हो सकते हैं?
4. निबन्ध के अंगों में प्रस्तावना पर विचार कीजिए।
5. वर्णनात्मक निबन्ध के बारे में लिखिए।
6. निबन्ध की शैली पर प्रकाश डालिए।
7. निबन्ध-लेखन बिषयक बातों का उल्लेख कीजिए।
8. निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए-

भारतीय नारी, प्रदुषण, विज्ञान एवं प्रौधोगिकी, साहित्य और समाज, मेरा मध्यप्रदेश, सहिष्णुता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. निंबध को अंग्रेजी में क्या कहते है।

   i. Article ii. Story

   iii. Essay iv. Report

2. एक अच्छे और सुव्यवस्थित निबंध के लिए कितने गुण अपेक्षित माने गए हैं।

   i. 2 ii. 3

   iii. 4 iv. 6

3. निंबध के मुख्यत: कितने अंग है।

   i. 3 ii. 4

   iii. 6 iv. 8

4. 'विषय विस्तार' निबंध का कौन - सा रूप है।

   i. शैली ii. अंग

   iii. प्रकार iv. इनमें से कोई नहीं

5. निम्नलिखित में से निबंध शैली का एक रूप नहीं है।

   i. समास शैली ii. व्यास शैली

   iii. अर्थ शैली iv. व्यंग्य विनोद शैली

6. निम्न में से कौन साहित्यकार निबंध शैली से जुड़े है?

   i. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ii. हजारी प्रसाद द्विवेदी

   iii. भारतेन्दु iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर :- 1(iii), 2(iii), 3(ii), 4(ii), 5(iii), 6(iv)

■ ■ ■

10. सन्धि-समास : सरंचना और प्रकार

NOTES

सन्धि :- दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते है। सन्धि और संयोग में (दे. 18वाँ अंक) यह अंतर है कि संयोग में अक्षर जैसे के तैसे रहते है, परन्तु सन्धि में उच्चारण के नियमानुसार दो अक्षरों के मूल में उनकी जगह कोई भिन्न अक्षर हो जाता है।

(सू.-सन्धि का विषय संस्कृत व्याकरण से सम्बन्ध रखता है। संस्कृत भाषा में पदसिद्धि, समास और वाक्यों में सन्धि का प्रयोजन पड़ता है, परन्तु हिन्दी में सन्धि के नियमों से मिले हुए सस्कृत के जो सामाजिक शब्द आते है, केवल उन्हीं के सम्बन्ध से इस विषय के निरूपण की आवश्यकता होती है।)

सन्धि तीन प्रकार की है- 1. स्वर सन्धि, 2. व्यंजन सन्धि और, 3. विसर्ग सन्धि।

1. दो स्वरों के पास आने से जो सन्धि होती है उसे स्वर सन्धि कहते हैं,

जैसे - राम+अवतार = राम्+अ+अवतार = राम्+अ+वतार = रामावतार ।

2. जिन दो वर्णों में सन्धि होती है उनमें से पहला वर्ण व्यंजन हो और दूसरा वर्ण चाहे स्वर हो चाहे व्यंजन, तो उनकी सन्धि को व्यंजन सन्धि कहते हैं,

जैसे - जगत्+ईश = जगदीश, जगत्+नाथ = जगन्नाथ।

3. विसर्ग के साथ या व्यंजन की सन्धि को विसर्ग सन्धि कहते हैं,

जैसे - तप:+वन = तपोवन, नि:+अतंर = निरंतर।

स्वर सन्धि

यदि दो सवर्ण (सजातीय) स्वर पास-पास आवें तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर होता है, जैसे-

1. अ और आ की सन्धि-

अ+अ = आ-कल्प+अंत	=	कल्पांत।	परम+ अर्थ	=	परमार्थ।
अ+आ = आ-रत्न +आकर	=	रत्नाकर।	कुश+आसन	=	कुशासन।
आ+अ = आ-रेखा+अंश	=	रेखाशं।	विद्या+अभ्यास	=	विद्याभ्यास।
आ+आ = आ-महा+आशय	=	महाशय।	वार्ता+अलाप	=	वार्तालाप।

2. इ और ई की सन्धि

इ+इ = ई-गिरि+ईंद्र	=	गिरींद्र।	अभि+इष्ट	=	अभीष्ट
इ+ई = ई-कवि+ईश्वर	=	कवीश्वर।	कपि+ईश	=	कपीश
ई+ई = ई-सती+ईश	=	सतीश।	जानकी+ईश	=	जानकीश
ई+इ = ई-मही+इंद्र	=	महींद्र।	देवी+इच्छा	=	देवीच्छा।

3. उ, ऊ की सन्धि।

उ+उ = ऊ-भानु+उदय	=	भानूदय।	विधु+उदय	=	विधूदय।
उ+ऊ = ऊ-सिन्धु+उर्मि	=	सिंधूर्मि।	लघु+ऊर्मि	=	लघूर्मि।
ऊ+ऊ = ऊ-भू+ऊर्द्ध	=	भूर्द्ध।	भू+ऊर्जित	=	भूर्जित।
ऊ+उ = ऊ-वधू+उत्सव	=	वधूत्सव।	भू+उद्धार	=	भूद्धार।

4. ऋ, ॠ की सन्धि – ॠ के सम्बन्ध में संस्कृत व्याकरण में बहुधा मातृ+ऋण=मातृण, यह उदाहरण दिया जाता है, पर इस उदाहरण में विकल्प से 'मातृण'रूप होता है। इससे प्रकट है कि दीर्घ ॠ की आवश्यकता नहीं है।

यदि अ वा आ के आगे इ, ई वा ई रहे तो दोनों मिलकर ए: उ वा ऊ रहे तो दोनों मिलकर ओ, और ऋ रहे तो अर् हो जाता है। इस विकार को गुण कहते है।

उदाहरण

अ+इ	=	ए–देव+इंद्र	=	देवेन्द्र।
अ+ई	=	ए–सुर+ईश	=	सुरेश।
आ+ई	=	ए–महा+इंद्र	=	महेंद्र।
आ+ई	=	ए–रमा+ईश	=	रमेश।
अ+उ	=	ओ–चंद्र+उदय	=	चंद्रोदय।
अ+ऊ	=	ओ–समुद्र+ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि।
आ+उ	=	ओ–महा+उत्सव	=	महोत्सव।
आ+ऊ	=	ओ–महा+ऊरू	=	महोरू।
अ+ऋ	=	अर्–सप्त+ऋषि	=	सप्तर्षि।
आ+ऋ	=	अर्–महा+ऋषि	=	महर्षि

अपवाद= स्व+ईर = स्वैर, अक्ष+ऊहिनी = अक्षौहिणी, प्र+रूढ़ = प्रौढ़, सुख+ऋत = सुखार्त, दश+ऋण = दशार्ण इत्यादि।

प्रकार वा आकार के आगे ए वा ऐ हो तो दोनों मिलकर ऐ और ओ या औ रहे तो दोनों मिलकर औ होता है। इस विकार को वृद्धि कहते है। यथा–

अ+ए	=	ऐ–एक+एक	=	एकैक।
अ+ऐ	=	ऐ–मत+ऐक्य	=	मतैक्य।
आ+ए	=	ऐ–सदा+एव	=	सदैव।
आ+ऐ	=	ऐ–महा+ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य।
अ+ओ	=	औ–जल+ओध	=	जलौध
आ+ओ	=	औ–महा+ओज	=	महौज।
अ+औ	=	औ–परम+औषध	=	परमौषध।
आ+औ	=	औ–महा+औदार्य	=	महौदर्य।

अपवाद– अ अथवा आ के आगे ओष्ठ शब्द आवे तो विकल्प से ओ अथवा औ होता है, जैसे बिंब+ओष्ठ=बिंबौष्ठ, अधर+ओष्ठ=अधरोष्ठ वा अधरौष्ठ।

ह्रस्व वा दीर्घ इकार, उकार वा ऋकार के आगे कोई असवर्ण (विजातीय) स्वर आवे तो इ ई के बदले य्, उ ऊ के बदले व् और ऋ के बदले र् होता है। इस विकार को यण् कहते है। जैसे,

1.	इ+अ	=	य–यदि+अपि	=	यद्यपि।
	इ+आ	=	या–इति+आदि	=	इत्यादि।
	इ+उ	=	यु–प्रति+उपकार	=	प्रत्युपकार।
	इ+ऊ	=	यू–नि+ऊन	=	न्यून।
	इ+ए	=	ये–प्रति+एक	=	प्रत्येक।

NOTES

	ई+अ	=	य–नदी+अर्पण	=	नद्यर्पण।
	ई+आ	=	या–देवी+आगम	=	देव्यागम।
	ई+उ	=	यु–सखी+उचित	=	सख्युचित।
	ई+ऊ	=	यू–नदी+उर्मि	=	नद्यूर्मि।
	ई+ऐ	=	यै–देवी+ऐश्वर्य	=	दैव्यैश्वर्य।
2.	उ+अ	=	व–मनु+अंतर	=	मन्वंतर।
	उ+आ	=	वा–सु+आगत	=	स्वागत।
	ऊ+इ	=	वि–अनू+इत	=	अन्वित।
	ऊ+ए	=	वे–अनु+एषण	=	अन्वेषण।
3.	ऋ+अ	=	र–पितृ+अनुमति	=	पित्रनुमति।
	ऋ+आ	=	रा–मातृ+आंनद	=	मात्रानंद।

ए, ऐ, ओ वा औ के आगे कोई भिन्न स्वर हो तो इनके स्थान में क्रमश: अय् आय् अव् आव होता है, जैसे–

ने+अन =	न्+ए+अ+न	=	न्+अय्+अन	=	नयन।
गै+अन =	ग्+ऐ+अ+न	=	ग्+आय्+अ+न्	=	गायन।
गो+ईश =	ग्+ओ+ईश	=	ग्+अव्+ई+श	=	गवीश।
नौ+इक =	न्+औ	=	न्+आव्+इ+क	=	नाविक।

ए वा ओ के आगे अ आवे तो अ का लोप हो जाता है और उसके स्थान में लुप्त आकार (ऽ) चिन्ह कर देते है, जैसे–

ते+अपि+तेऽपि (राम.)

सो+अनुमान = सोऽनुमान (हिं ग्रंथ),

यो+असि = योऽसि (राम.)

(सू.–हिन्दी में इस सन्धि का प्रचार नही है।)

व्यंजन सन्धि

क्, च्, ट्, प् के आगे अनुनासिक को छोड़कर कोई घोष वर्ण हो तो उसके स्थान में क्रम से वर्ण का तीसरा अक्षर हो जाता है, जैसे–

दिक्+गज	=	दिग्गज,	वाक्+ईश	=	वागीश।
षट्+रिपु	=	षड्रिपु,	षट्+आनन	=	षडानन।
अप्+ज	=	अब्ज,	अच्+अंत	=	अंजत।

किसी वर्ण के प्रथम अक्षर से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है, जैसे–

वाक्+मय	=	वाङ्.मय,	षट्+मास	=	षण्मास।
अप्+मय	=	अम्मय,	जगत्+नाथ	=	जगन्नाथ।

त के आगे कोई स्वर ग, घ, द, ध, ब, भ अथवा य, र, व रहे तो त् के स्थान में द् होगा, जैसे–

सत्+आनंद	=	सदानंद,	जगत्+ईश	=	जगदीश।
उत्+गम	=	उद्गम,	सत्+धर्म	=	सद्धर्म

त् वा द् के आगे च वा छ हो तो त् वा द् के स्थान में च होता है, ज झ हो तो ज्, ट वा ठ हो तो ट्, ड वा ढ हो तो ड्, और ल हो तो ल् हो जाता है।

उत्+चारण	=	उच्चारण,	शरत्+चंद्र	=	शरच्चंद्र।
महत+छत्र	=	मच्छत्र,	सत+जन	=	सज्जन।
विपद्+जाल	=	विपज्जाल,	तत्+लीन	=	तल्लीन।

त् वा द् के आगे श हो तो त् वा द् के बदले च् और श के बदले छ होता है और त् वा द् आगे ह हो तो त् क द् के स्थान में द् और ह के स्थान ध होता है, जैसे–

सत्+शास्त्र	=	सच्छास्त्र,	उत्+हार	=	उद्धार।

छ के पूर्व स्वर हो तो छ के बदले च्छ होता है, जैसे–

आ+छादन	=	आच्छादन,	परि +छेद	=	परिच्छेद।

म् के आगे स्पर्श वर्ण हो तो म बदले विकल्प के अनुस्वार अथवा उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण आता है, जैसे–

सम्+कल्प	=	संकल्प वा सडकंल्प।
किम्+चित्	=	किंचित् वा किञ्चित्।
सम्+तोष	=	संतोष वा सन्तोष।
सम्+पूर्ण	=	सम्पूर्ण वा संपूर्ण।

म् के आगे अंतस्थ वा ऊष्म वर्ण हो तो म् अनुस्वार मे बदल जाता है, जैसे

किम्+वा	=	किंवा,	सम्+हार	=	संहार।
सम्+योग	=	संयोग,	सम्+वाद	=	संवाद।

अपवाद- सम्+राज=सम्राज (ट्)।

ऋ, र वा ष के आगे न हो और इसके बीच में चाहे स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य व, ह आवे तो न का ण हो जाता है, जैसे–

भर्+अन	=	भरण,	भूष्+अन	=	भूषण।
प्र+मान	=	प्रमाण,	राम+आयन	=	रामायाण।
तृष्+ना	=	तृष्णा,	ऋ+न	=	ऋण।

यदि किसी शब्द के आद्य स के पूर्व अ, आ को छोड़कर कोई स्वर आवे तो स के स्थान पर ष होता है, जैसे

अभि+सेक	=	अभिषेक,	नि+सिद्ध	=	निषिद्ध।
वि+सम	=	विषम,	सुत्रृ+सुप्ति	=	सुषुप्ति।

1. जिस संस्कृत धातु में पहले स हो और उसके पश्चात् ऋ वा र् उससे बने हुए शब्द का स पूर्वोक्त वर्णों के पीछे ओन पर ष नहीं होता, जैसे–

वि+स्मरण(स्मृ–धातु)	=	विस्मरण।
अनु+सरण(सृ–धातु)	=	अनुसरण।
वि+सर्ज(सृज–धातु)	=	विसर्ग।

यौगिक शब्दों में यदि प्रथम शब्द के अंत में न् हो तो उसका लोप होता है, जैसे–

राजन्+आज्ञा	=	राजाज्ञा,	हस्तिन्+दंत	=	हस्तिदंत।
प्राणिन्+मात्र	=	प्राणि मात्र,	धनिन्+त्व	=	धनित्व।

1. अहन् शब्द के आगे कोई भी वर्ण आवे तो अंत्य न् के बदले र् होता है: पर रात्र, रूप शब्द के आने से न का उ होता है और सन्धि के नियमानुसार अ+उ मिल कर ओ हो जाता है, जैसे–

आहन् +गण	=	अहर्गण,	अहन्+मुख	=	अहर्मुख।
अहन्+रात्र	=	होरात्र,	अहन्+रूप	=	अहोरूप।

NOTES

विसर्ग सन्धि

यदि विसर्ग के आगे ष वा छ हो तो विसर्ग का श् हो जाता है, ट वा ठ हो तो ष्, और त वा थ हो तो स् होता है, जैसे–

नि:+चल	=	निश्चिल,	धनु:+टंकार	=	धनुष्टंकार।
नि:+छिद्र	=	निश्छिद्र,	मन:+ताप	=	मनस्ताप।

विसर्ग के पश्चात् श, ष, वा स आवे विसर्ग जैसा का तैसा रहता है, अथवा उसके स्थान में आगे का वर्ण हो जाता है , जैसे–

दु:+शासन = दु:शासन वा दुश्शासन।

नि:+संदेह = नि:संदेह वा निस्संदेह।

विसर्ग के आगे क, ख, वा प, फ, आवे तो विसर्ग का कोई विकार नही होता, जैसे–

रज:+कण = रज:कण, पय:+पान = पय:पान(हिं.–पयपान)।

1. यदि विसर्ग के पूर्व इ वा उ हो तो क, ख वा फ, के पहले विसर्ग के बदले ष् होता है, जैसे–

नि:+कपट	=	निष्कपट,	दु:+कर्म	=	दुष्कर्म।
नि:+फल	=	निष्फल,	दु:+प्रकृति	=	दुष्प्रकृति।

अपवाद:– दु:+ख = दु:ख, नि:+पक्ष या निष्पक्ष।

(2) कुछ शब्दों में विसर्ग के बदले स आता है, जैसे–

नम:+कार	=	नमस्कार,	पुर:+कार	=	पुरस्कार।
भा:+कर	=	भास्कर,	भा:+पति	=	भास्पति

यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और आगे घोष व्यंजन हो तो अ और विसर्ग (अ:) के बदले आ हो जाता है, जैसे–

अध:+गति	=	अधोगति,	मन:+योग	=	मनोयोग।
तेज:+राशि	=	तेजोराशि,	वय:+वृद्ध	=	वयोवृद्ध।

(सू.–वनोवास और मनोकामना शब्द अशुद्ध हैं।)

1. यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और आगे भी अ हो तो ओ के पश्चात् दूसरे अ का लोप हो जाता है, और उसके बदले लुप्त आकार का चिन्ह ऽ कर देते है (दे.65वाँ अंक), जैसे

प्रथम+अध्याय = प्रथमोऽध्याय।

मन:+अनुसार = मनोऽनुसार।

यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर और कोई स्वर हो और आगे कोई घोष वर्ण हो, तो विसर्ग के स्थान में र् होता है, जैसे–

नि:+आशा	=	निराशा:,	दु:उपयोग	=	दुरूपयोग।
नि:+गुण	=	निगुर्ण,	बहि+मुख	=	बहिर्मुख।

यदि र् के आगे र हो तो र् का लोप हो जाता है और उसके पूर्व का ह्रस्व स्वर दीर्घ कर दिया जात है, जैसे

पुनर्+रचना = पुनारचना(हि.पुनर्रचना)

आदि अकार के आगे विसर्ग हो और उसके आगे अ को छोड़कर कोई और स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और पास आए हुए स्वरों की फिर सन्धि नहीं होती है, जैसे–

अत:+एव = अतएव

अंत्य स् के बदले विसर्ग हो जाता है, इसलिये विसर्ग सम्बंधी पूर्वोक्त नियम स् के विषय में भी लगता है। ऊपर दिए हुए विसर्ग के उदाहरणों में कहीं–कहीं मूल स् है, जैसे–

अधस्+गति = अध:+गति = अधोगति।

निस्+गुण = नि:+गुण = निर्गुण।

तेजस्+पुंज = तेज:+पुंज = तेजोपुंज।

यशस्+दा = यश:+दा = यशोदा।

अत्यं र् के बदले भी बिसर्ग होता है। यदि र् के आगे अघोष वर्ण आवे तो विसर्ग का कोई विकार नही होता (दे.82वाँ अंक), जैसे–

प्रातर+काल = प्रात:काल।

अंतर+करण = अंत:करण।

अंतर+पुर = अंत:पुर।

पुनर+उक्ति = पुनरूक्ति

सन्धि के उदाहरण

शब्द	**सन्धि विच्छेद**	**संन्धि का नाम**
महेश	महा+ईश	गुण स्वर सन्धि
वनौषधि	वन+औषधि	वृद्धि स्वर सन्धि
अन्त:करण	अन्त:+करण	विसर्ग सन्धि
अतएव	अत:+एव	विसर्ग सन्धि
विस्तार	वि:+तार	विसर्ग सन्धि
वयोवृद्धि	वय:+वृद्धि	विसर्ग सन्धि
निराशा	नि:+आशा	विसर्ग सन्धि
उल्लास	उत्+लास	व्यंजन सन्धि
निश्चय	नि:+आशा	विसर्ग सन्धि
अधोपतन	अध:+पतन	विसर्ग सन्धि
सूर्योदय	सूर्य+उदय	गुण स्वर सन्धि
नयन	ने+अन	अयादि स्वर सन्धि
स्वागत	सु+आगत	यण सन्धि
निराश	नि:+आशा	विसर्ग सन्धि
परिच्छेद	परि+छेद	व्यंजन सन्धि

NOTES

समास का अर्थ एंव परिभाषा – दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते है। पण्डित कामताप्रसाद गुरू के अनुसार – ("जब दो या दो से अधिक शब्दों का संयोग होता है, तब 'समास' बनता है।")

समास के प्रकार या भेद –

समास के छः भेद होते हैं– 1. अव्ययीभ समास, 2. तत्पुरूष समास, 3. द्वंद्व समास, 4. कर्मधारय समास, 5. द्विगु समास, 6. बहुव्रीहि समास।

1. अव्ययीभाव समासः– जिस समास में पहला पद प्रधान होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

जैसे – अनुरूप, प्रतिदिन, यथाशक्ति, अतिकाल, आजीवन, प्रत्यक्ष, अकारण आदि। अव्ययीभाव समास विग्रह–

i. अनु+रूप = अनुरूप।

ii. प्रति+दिन = प्रतिदिन।

iii. यथा+शक्ति= यथाशक्ति।

इनमें 'अनु', 'प्रति' यथा प्रथम पद है और प्रधान है, अतः यहाँ अव्ययीभाव समास है।

2. तत्पुरूष समास :– जिस समास में प्रथम पद गौण और अन्तिम पद प्रधान होता है , उसे तत्पुरूष समास कहते है।

जैसे– शरणगत, तुलसीकृत, देशभक्ति, जन्मान्ध, राजकुमार, कविराज आदि। तत्पुरूष समास विग्रह–

i. शरण को आगत=शरणागत।

ii. तुलसी द्वारा कृत=तुलसीकृत।

तत्पुरूष समास के भेद –

i. **कर्म तत्पुरूषः**– जिसमें कर्मकार की विभक्ति का लोप होता है। जैसे–'स्वर्ग को गया हुआ' विभक्ति का लोप हो जाने पर

'स्वर्गगत'। माखन को चुराने वाला 'माखनचोर'। स्वर्ग को प्राप्त–स्वर्गप्राप्त।

ii. **करण तत्पुरूषः**– वह तत्पुरूष जिसमें करण कारक की विभक्ति का लोप हो।

जैसे– नीति से युक्त = नीतियुक्त।

शोक से आकुल = शोकाकुल।

iii. **सम्प्रदान तत्पुरूषः**– जिसमें सम्प्रदान कारक के चिन्ह का लोप हो।

जैसे– हाथ के लिए कड़ी = हथकड़ी।

राह के लिए खर्च = राहखर्च।

iv. **अपादान तत्पुरूषः**– जिसमें अपादान कारक का चिन्ह या विभक्ति का लोप हो। जैसे–

ऋण से मुक्त = ऋणमुक्त।

रण से विमुख = रणविमुख।

धर्म से भ्रष्ट = धर्मभ्रष्ट।

v. **सम्बन्ध तत्पुरुषः**– सम्बन्ध कारक के लुप्त होने पर सम्बन्ध तत्पुरूष समास बनता है। जैसे–

राष्ट्र का पति = राष्ट्रपति।

सेना का पति = सेनापति।

vi. **अधिकरण समासः**– जहाँ सामासिक पदों से अधिकरण कारक का लोप हो, वहाँ अधिकार तत्पुरूष समास होता है। जैसे–

ग्राम में बसने वाला = ग्रामवासी।

3. द्वंद्व समासः– जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते है।

जैसे– राम और कृष्ण = रामकृष्ण

माता और पिता = माता–पिता

दाल और रोटी = दाल–रोटी।

द्वंद्व समास के भेद – इसके तीन भेद होते है– (i) इतरेतर द्वंद्व, (ii) समाहार द्वंद्व, और (iii) वैकल्पिक द्वंद्व।

(i) **इतरेतर द्वंद्व** – जहाँ पर सब पद समुच्चयबोधक 'और', 'या', 'अथवा' आदि शब्दो से जुड़े हों, वहाँ इतरेतर द्वंद्व समास होता है। जैसे–

राधा और कृष्णा = राधाकृष्ण,

सीता और राम = सीताराम।

खान और पान = खान–पान।

भाई और बहन = भाई–बहन।

(ii) **समाहार द्वंद्व**–जहाँ कुछ समानार्थक शब्दों का समास कर उनसे सम्बद्ध अन्य शब्दों के अर्थ का भी समाहार कर लिया जाता है,उसे समाहार द्वंद्व समास कहते है। यथा–'सेठ और साहूकार' के अतिरिक्त अन्य सभी धनी लोगों का समाहार भी इस पद में है।

कपड़े और लत्ते = कपड़े–लत्ते,

घर और द्वार = घर–द्वार,

रहन और सहन = रहन– सहन,

अड़ौसी और पड़ौसी = अड़ौसी–पड़ौसी,

खान और पान = खान–पान

(iii) **वैकल्पिक द्वंद्व**– इस समास में दोनों पद एक दूसरे के विलोम शब्द होते है और 'या अथवा' जैसे समुच्चबोधक से जुड़े रहते है, किन्तु समास में इसका लोप हो जाता है।

जैसे– पाप अथवा पुण्य = पाप–पुण्य,

सुख या दुःख = सुख–दुःख।

4. कर्मधारय समास :– जिस समास में प्रथम पद विशेषण हो, उसे कर्मधारय समास कहते है। जैसे–

महाराजा, नीलकमल, अंधविश्वास आदि।

महा(विशेषण)+ राजा (विशेष्य) = महराजा।

नीला(विशेषण)+कमल (विशेष्य) = नीलकमल।

अंध(विशेषण)+विश्वास (विशेष्य) = अंधविश्वास।

5. द्विगु समासः– जिस समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे–त्रिभुवन, चौमासा, पंचवटी, नवरत्न आदि।

समास–विग्रह– त्रि+भुवन = त्रिभवुन (तीन भुवनों का समूह)

चौ+मास = चौमासा(चार माहों का समूह)

पंच+वटी = पंचवटी(पाँच वटों का समूह)

NOTES

द्विगु समास दो प्रकार के होते है।

(i) समाहर द्विगु (ii) उत्तर-पद प्रधान द्विगु।

(i) **समाहार द्विगु**- इसका अर्थ है। एकत्र अथवा समेटना। जैसे-तीनों लोकों का समाहार-त्रिलोक नौ रसों का समूह-नवरस

(ii) **उत्तर-प्रधान द्विगु**- इसमें उत्तर-पद का अर्थ महत्वपूर्ण होता है। जैसे- पंचशील, यहाँ 'शील' महत्वपूर्ण है।

6. बहुब्रीहि समासः- बहुब्रीहि का अर्थ है विशेष अर्थ बताना। जिस समास में प्रयुक्त पदों को छोड़कर किसी अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं।

जैसेः- चार है भुजाएँ जिसकी	=	चतुर्भुज (विष्णुजी)
पाँच हैं आनन जिसके	=	पंचानन (शिवजी)
चन्द्र है जिसके शिखर पर	=	चन्द्रशेखर (शंकरजी)

समास के उदाहरण

1.	नवयुवक	नया है जो युवक	(कर्मधारय समास)
2.	रसोई घर	रसोई का घर	(तत्पुरूष समास)
3.	गुरू-सेवा	गुरू की सेवा	(तत्पुरूष समास)
4.	मालगोदाम	माल का गोदाम	(तत्पुरूष समास)
5.	प्रेमसागर	प्रेमरूपी सागर	(कर्मधारय समास)
6.	आजन्म	जन्म से लेकर	(अव्ययीभाव समास)
7.	व्यर्थ	अर्थ रहित	(अव्ययीभाव समास)
8.	दही-बड़ा	दही और बड़ा	(अव्ययीभाव समास)
9.	सतखण्डा	सात खण्डों वाला	(कर्मधार समास)
10.	नमक- मिर्च	नमक और मिर्च	(द्वंद्व समास)
11.	हस्तलिखित	हस्त द्वारा लिखित	(तत्पुरूष समास)
12.	नित्यप्रति	नित्य प्रति	(अव्ययीभाव समास)
13.	प्रतिदिन	दिन दिन	(अव्ययीभाव समास)
14.	पंचवटी	पाँच वटों का समूह	(द्विगु समास)
15.	भवसागर	भवरूपी सागर	(कर्मधारय समास)
16.	नवरात्र	नौ+रात्रि	(द्विगु समास)
17.	त्रिलोक	त्रि+लोक	(द्विगु समास)
18.	देशभक्ति	देश की भक्ति	(तत्पुरूष समास)
19.	यथाशक्ति	यथा+शक्ति	(अव्ययीभाव समास)

संधि एवं समास में अन्तर

सन्धि और समास में निम्नानुसार अन्तर दृष्टव्य हैं -

1. सन्धि में दो या दो से अधिक वर्णो का मेल होता है, जबकि समास में दो या दो से अधिक शब्दों या पदों का मेल होता है।

2. सन्धिगत वर्णो में विकार उत्पन्न होता है, रूप परिवर्तन हो जाता है, निजी सत्ता समाप्त हो जाती है, जबकि समासगत शब्दों में न कोई विकार उत्पन्न होता है, और न उनकी निजी सत्ता ही समाप्त होती है।

3. सन्धि द्वारा निर्मित वर्ण को 'सन्धितवर्ण' कहते है, जबकि समास द्वारा व्युत्पन्न शब्दों को 'सामाजिक शब्द' या 'समासगत पद' कहते है।

4. सन्धि में ध्वनि से सम्बन्धित विकार, जैसे – ह्रस्वीकरण, दीर्घीकरण, घोषीकरण, आगम, लोप आदि होते है, जबकि समास में शब्दों एवं प्रत्ययों, अक्षरो, संयोजक शब्दों आदि का लोप होता है और कहीं-कहीं आगम भी होता है

5. हिन्दी में सन्धि केवल तत्सम शब्दों के वर्णो में होती है, जबकि समास तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी और अनुकरणात्मक सभी प्रकार के शब्दों अथवा पदों में होता है।

6. सन्धित वर्णो से सम्बन्धित पदों या शब्दों में सामसिकता हो सकती है, जबकि सन्धितुल्य शब्दों को छोड़कर शेष समासगत शब्दों में सान्ध्यता नहीं हो सकती है।

7. सन्धि के वर्ण स्वंतत्र नहीं होते है, जबकि समास में आने वाले शब्द स्वतंत्र होते है।

8. सन्धि को तोड़ने को 'विच्छेद' कहते है। जबकि समास को तोड़ने को विग्रह कहते है।

जैसे – 'पीताम्बर' में दो पद हैं – 'पीत' और 'अम्बर' इसका सन्धि – विच्छेद होगा पीत + अम्बर, जबकि समास विग्रह होगा पीत है जो अम्बर या पीत है जिसका अम्बर।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. सन्धि किसे कहते हैं? सन्धि के भेद सोदाहरण लिखिए।
2. गुण स्वर सन्धि को उदाहरण देकर समझाइए।
3. अयादि स्वर सन्धि के क्या नियम है? उदाहरण स्वरूप किसी एक शब्द का सन्धि विच्छेद करते हुए इस सन्धि को समझाइए।
4. समास की परिभाषा दीजिए। समास के भेद उदाहरण सहित लिखिए।
5. सन्धि और समास में क्या अंतर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
6. तत्पुरूष समास की परिभाषा लिखिए और उसके भेद उदाहरण सहित लिखिए।
7. बहुब्रीहि समास क्या है? उदाहरण सहित समझाइये।

वस्तुनिष्ट प्रश्नः

सही उत्तर चुनकर लिखें।

1. 'सूक्ति' का सही सन्धि – विच्छेद होगा।

   i. स + उक्ति　　ii. सु + उक्ति

   iii. सू + अक्ति　　iv. सू + उक्ति

2. अन्तर्गत का सही संधि विच्छेद होगा।

   i. अन्तः + गत　　ii. अन्तर + गत

   iii. अन्त + र्गत　　iv. अन्त + गत

3. 'सूर्योदय' का सही संधि विच्छेद है।

   i. सूर्यो + दय　　ii. सूर्य + उदय

   iii. सूर्य + उदय　　iv. सूर्ये + उदय

NOTES

4. साष्टांग का सही संधि विच्छेद है।

i. सास + टाँग　　ii. सा + अष्टांग

iii. स: + अष्ट + अंग　　iv. स + अष्ट + अंग

5. स्थान + अभाव = स्थानाभाव, किस सन्धि का उदाहरण है।

i. गुण सन्धि　　ii. दीर्घ स्वर

iii. यण सन्धि　　iv. अयादि स्वर

6. निराशा का सही सन्धि विच्छेद है।

i. नि: + आशा　　ii. निर् + आशा

iii. निरा + शा　　iv. निराश + आ

7. स्वर सन्धि के भेद होते है।

i. तीन　　ii. पाँच

iii. चार　　iv. छ:

8. मुख्य रूप से समास के प्रकार है।

i. 4　　ii. 5

iii. 6　　iv. 8

9. मुख्यत: सन्धि के भेद है।

i. 3　　ii. 5

iii. 6　　iv. 12

उत्तर :– 1. (ii), 2. (i), 3. (ii), 4. (iv) 5. (ii), 6. (i), 7. (ii), 8. (iii), 9. (i),

■ ■ ■

11. निराला (संस्मरण)

महादेवी वर्मा

NOTES

हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर महादेवी वर्मा ने काव्य के साथ ही गद्य में भी उल्लेखनीय रचनाएँ दी हैं। उन्होंने सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के साथ अपने अनुभवों को संस्मरण के रूप में लेखबद्ध किया है। जिसे पाठ्यक्रमानुसार इस अध्याय में शामिल किया गया है।

एक युग बीत जाने पर भी मेरी स्मृति से एक घटा भरी अश्रु – मुखी सावनी पूर्णिमी की रेखाएँ नही मिट सकी है उन रेखाओ के उजले रंग न जाने किस व्यथा से गीले हैँ कि अब तक सूख भी नही पाये उड़ना तो दूर की बात है।

उस दिन मे बिना कुछ सोचे हुए ही भाई निराला जी से पूछ बैठी थी ,' आपको किसी ने राखी बाँधी? ' अवश्य ही उस समय मेरे सामने बन्धन शून्य कलाई और पीले कच्चे सूत की ढेरो राखियाँ लेकर घूमने वाले यजमान –खोजियों का चित्र था पर अपने प्रश्न के उत्तर ने मुझे क्षण भर के लिए चौंका दिया ।' कौन बहिन हम ऐसे भुक्खड़ को भाई बनावेगी ।' मैं उत्तर देने वाले के एकाकी जीवन की व्यथा थी या चुनौती. यह कठिन है। पर जान पड़ता है। किसी अव्यक्त चुनौती के आभास ने ही मुझे उस हाथ के अभिषेक की प्रेरणा दी जिसने दिव्य वर्ण – गंध –मधु वाले गीत सुमनों से भारती की अर्चना भी की है और बर्तन मांजने, पानी भरने जैसी कठिन श्रम –साधना से उत्पन्न स्वेद –बिन्दुओ से मिटटी का श्रृंगार भी किया है। मेरा प्रयास किसी भी जीवन्त बवण्डर को कच्चे सूत मे बाँधने जैसा था या किसी उच्छल महानद को मोम की तटो मे सीमित करने के समान यह सोचने विचारने का तब अवकाश नही था पर आने वाले वर्ष निराला जी के संघर्ष के ही नही मेरी परीक्षा के भी रहे हैं। मैं किस सीमा तक सफल हो सकी हूँ यह मुझे ज्ञात नही पर लौकिक दृष्टि से नि:स्व निराला हृदय की निधियों मे सबसे समृद्ध भाई है यह स्वीकार करने मे मुझे दुविधा नही । उन्होने अपने सहज विश्वास से मेरे कच्चे सूत के बन्धन को जो दृढता और दीप्ति दी है। वह अन्यत्र दुर्लभ रहेगी । दिन– रात के पगों से वर्षा की सीमा पार करने वाले अतीत ने आग के अक्षरो मे आँसू के रंग भर –भर कर ऐसी अनेक चित्र – कथाएँ आँक डाली है। जिनमे इस महान कवि और असाधारण मानव के जीवन की मार्मिक झाँकी मिल सकती है । पर उन सबको सम्भाल सके ऐसा चित्राधार पा लेना सहज नही । उनके अस्त – व्यस्त जीवन को व्यवस्थित करने के असफल प्रयासो का स्मरण कर मुझे आज भी हँसी आ जाती है। एक बार अपनी निर्बन्ध उदारता की तीव्र आलोचना सुनने के बाद उन्होने व्यवस्थित रहने का वचन दिया । संयोग से तभी उन्हें कही से तीन सौ रूपये मिल गये । वही पूँजी मेरे पास जमा करके उन्होने मुझे अपने खर्च का बजट बना देने का आदेश दिया । जिन्हे मेरा व्यक्तिगत हिसाब रखना पड़ता है । वे जानते है। कि यह कार्य मेरे लिए कितना दुष्कर है? न वे मेरी चादर लम्बी कर पाते है । न मुझे पैर सिकोड़ने पर बाध्य कर सकते है। और इस प्रकार एक विचित्र रस्साकशी मे तीस दिन बीतते रहते है। पर यदि अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियो की प्रतियोगिता हो तो सौ मे दस अंक पाने वाला भी अपने शून्य पाने वाले से श्रेष्ठ मानेगा । अस्तु , नमक से लेकर नापित तक और चप्पल से लेकर मकान के किराये तक का जो अनुमान – पत्र मैने बनाया वह जब निराला जी को पसन्द आ गया , तब पहली बार मुझे अपने अर्थशास्त्र के ज्ञान पर गर्व हुआ । पर दूसरे ही दिन से भरे गर्व की व्यर्थता सिद्ध होने लगी। वे सवेरे ही पहुँचे । पचास रूपये चाहिए ....किसी विद्यार्थी का परीक्षा – शुल्क जमा करना है।,अन्यथा वह परीक्षा मे नही बैठ सकेगा। सन्ध्या होते – होते किसी साहित्यिक मित्र को साठ देने की आवश्यकता पड़ गई । दूसरे दिन लखनऊ के किसी ताँगेवाले की माँ को चालीस का मनीआर्डर करना पड़ा। दोपहर को किसी दिवंगत मित्र की भतीजी के विवाह के लिए सौ देना अनिवार्य हो गया । सारांश यह कि तीसरे दिन उनका जमा किया हुआ रूपया समाप्त हो गया और तब उनके व्यवस्थापक के नाते यह दान– खाता मेरे हिस्से आ पड़ा ।

एक सप्ताह में मैंने समझ लिया कि यदि ऐसे औघडदानी को न रोका जाय तो यह मुझे भी अपनी स्थिति में पहुँचाकर दम लेगा। तब से फिर कभी उनका बजट बनाने का दु:स्साहस मैंने नहीं किया। पर उनकी अस्त– व्यस्तता में बाधा पहुँचाने का अपना स्वभाव मैं अब तक नही बदल सकी हूँ।

बड़े प्रयत्न से बनवाई रजाई, कोट जैसी नित्य व्यवहार की वस्तुएँ भी जब दूसरे दिन किसी अन्य का कष्ट दूर करने के लिए अन्तर्धान हो गई, तब अर्थ के सम्बन्ध में क्या कहा जाय, जो साधन – मात्र है।

बगल में गुप्त जी के बिछौने का बंडल दबाये, दियासलाई के क्षण प्रकाश क्षण अन्धकार में तंग सीढ़ियाँ का मार्ग दिखाते हुए निराला जी हमें उस कक्ष में ले गये जो उनकी कठोर साहित्य – साधना का मूक साक्षी रहा है।

आले पर कपड़े की आधी जली बत्ती से भरा, पर तेल से खाली मिट्टी का दिया मानो अपने नाम की सार्थकता के लिए जल उठने का प्रयास कर रहा था। यदि उसके प्रयास को स्वर मिल सकता तो वह निश्चय ही हमें, मिट्टी के तेल की दुकान पर लगी भीड़ में सबसे पीछे खड़े, पर सबसे बालिश्त भर ऊँचे गृहस्वामी की दीर्घ, पर निष्फल प्रतीक्षा की कहानी सुना सकता। रसोईघर में दो – तीन अधजली लकड़ियाँ, आँधी पड़ी बटलोई और खूँटी से लटकती हुई आटे की छोटी – सी गठरी आदि मानों उपवास – चिकित्सा के लाभों की व्याख्या कर रहे थे।

वह आलोक रहित, सुख – सुविधा – शून्य घर, गृहस्थी के विशाल आकार और उससे भी विशालतर आत्मीयता से भरा हुआ था। अपने सम्बंध में बेसुध निराला जी अपने अतिथि की सुविधा का विचार कर नया घड़ा खरीद कर गंगाजल ले आये और धोती – चादर जो कुछ घर में मिल सका सब तख्त पर बिछाकर उन्हें प्रतिष्ठित किया।

तारों की छाया में उन दोनों मर्यादावादी और विद्रोही महाकवियों ने क्या कहा – सुना, यह मुझे ज्ञात नही, पर सवेरे गुप्त जी को ट्रेन में बैठाकर वे मुझे उनके सुखशयन का समाचार देना न भूले।

ऐसे अवसरों की कमी नहीं जब वे अकस्मात् पहुँच कर कहने लगे........मेरे इक्के पर कुछ लकड़ियाँ, थोड़ा घी आदि रखवा दो। अतिथि आए हैं, घर में सामान नहीं हैं।

उनके अतिथि यहाँ भोजन करने आ जाएँ, सुनकर उनकी दृष्टि में बालकों जैसा विस्मय छलक आता है। जो अपना घर समझकर आये हैं, उनसे यह कैसे कहा जाय कि उन्हें भोजन के लिए दूसरे घर जाना होगा।

भोजन बनाने से लेकर जूठे बर्तन माँजने तक का काम वे अपने अतिथि देवता के लिए सहर्ष करते हैं। तैंतीस कोटि देवताओं के देश में इस वर्ग के देवताओं की संख्या कम नहीं, पर आधुनिक युग ने उनकी पूजा विधि में बहुत कुछ सुधार कर लिया है। अब अतिथि – पूजा के वैसे कम ही आते हैं और यदि आ भी पड़ें तो देवता के क्षौर, अभिषेक, श्रृंगार आदि संस्कार बेयरा, नौकर आदि ही सम्पन्न करा देते हैं। पुजारी गृहपति को तो भोग लगाने की मेज पर उपस्थित रहने भर का कर्त्तव्य सम्भालना पड़ता है। कुछ देवता इस कर्त्तव्य से भी उसे मुक्ति दे देते है।

ऐसे युग में आतिभ्य की दृष्टि से निराला जी में वहीं पुरातन संस्कार है जो इस देश के ग्रामीण किसान में मिलता है। उनके भाव की अतल गहराई और अबाध वेग भी आधुनिक सभ्यता के छिछले और बँधे भाव– व्यापार से भिन्न है।

उनकी व्यथा की सघनता जानने का मुझे एक अवसर मिला है। श्री सुमित्रानन्दन जी दिल्ली में टाइफाइड ज्वर से पीड़ित थे। इसी बीच घटित को साधारण और आघटित को समाचार मानने वाले किस समाचार – पत्र ने उनके स्वर्गवास की झूठी खबर छाप डाली।

निरालाजी कुछ ऐसी आकस्मिता के साथ आ पहुँचे थे कि मैं उनसे यह समाचार छिपाने का भी अवकाश न पा सकी। समाचार के सत्य में मुझे विश्वास नहीं था, पर निरालाजी तो ऐसे अवसर पर तर्क की शक्ति ही खो बैठते है। वे लड़खड़ा कर सोफे पर बैठ गए और किसी अव्यक्त वेदना की तरंग के स्पर्श से मानो पाषाण में परिवर्तित होने लगे। उनकी झुकी पलकों से घुटनों पर चूने वाली आँसू की बूंदे बीच – बीच में ऐसे चमक जाती थी मानो प्रतिमा से झड़े जूही के फूल हो।

स्वयं अस्थिर होने पर भी मुझे निराला जी को सान्त्वना देने के लिए स्थिर होना पड़ा। यह सुनकर कि मैंने ठीक समाचार जानने के लिए तार दिया है, वे व्यथित प्रतीक्षा की मुद्रा में तब तक बैठे रहे जब तक रात में मेरा फाटक बंद होने का समय न आ गया।

सबेरे चार बजे ही फाटक खट्खटा कर जब उन्होंने तार के उत्तर के सम्बन्ध में पूछा तब मुझे ज्ञात हुआ कि वे रात भर पार्क में खुले आकाश के नीचे ओस से भीगी दूब पर बैठे सवेरे की प्रतीक्षा करते रहे हैं। उनकी निस्तब्ध पीड़ा जब कुछ मुखर हो सकी, तब वे इतना ही कह सके, 'अब हम भी गिरते है। पन्त के साथ तो रास्ता कम अखरता था, पर अब सोचकर ही थकावट होती है।

प्राय: एक स्पर्धा का तार हमारे सौहार्द के फूलों को भेदकर उन्हें एकत्र रखता है। फूल के झड़ते या खिसकते ही काला तार मात्र रह जाता है इसी से हमें किसी सहयोगी का बिछोह अकेलेपन की तीव्र अनुभूति नहीं देता। निराला जी के सौहार्द्र और विरोध दोनों एक आत्मीयता के वृन्त पर खिले दो फूल हैं। वे खिलकर वृन्त का श्रृंगार करते है और झड़कर उसे अकेला और सुना कर देते है। मित्र का तो प्रश्न ही क्या, ऐसा कोई विरोधी भी नही जिसका अभाव उन्हें विकल न कर देगा।

गत मई मास की, लपटों में साँस लेने वाली दोपहरों भी मेरी स्मृति पर एक जलती रेखा खींच गई है। शरीर से शिथिल और मन से क्लान्त निराला जी मलिन फटे अधोवस्त्र को लपेटे और वैसा ही जीर्ण – शीर्ण उत्तरीय ओढ़े धूल – धूसरित पैरों के साथ मेरे द्वार पर उपस्थित हुए। 'अपरा' पर इक्कीस सौ पुरस्कार की सूचना मिलने पर उन्होंने मुझे लिखा था कि मैं अपनी सांस्थिक मर्यादा से वह रूपया मँगवा लूँ। अब वे कहने आए थे कि स्वर्गीय मुंशी नवजादिक लाल की विधवा को पचास प्रति मास के हिसाब से भेजने का प्रबन्ध कर दिया जावे।

'उक्त धन का कुछ अंश भी क्या वे अपने उपयोग में नहीं ला सकते' के उत्तर में उन्होंने उसी सरल विश्वास के साथ कहा, 'वह तो संकल्पित अर्थ है। अपने लिए उसका उपयोग करना अनुचित होगा।'

उन्हें व्यवस्थित करने के सभी प्रयास निष्फल रहें है, पर आज मुझे उसका खेद नहीं है। यदि वे हमारे कल्पित साँचे में समा जाएँ तो उनकी विशेषता ही क्या रहे।

इन बिखरे पृष्ठों में एक पर अनायास ही दृष्टि रूक जाती है। उसे मानों स्मृति ने विषाद की आर्द्रता में हँसी का कुमकुम घोलकर अंकित किया है।

साहित्यकार – संसद में सब सुविधाएँ सुलभ होने पर भी उन्होंने स्वंयपाकी बनकर और एक बार भोजन करके जो अनुष्ठान आरम्भ किया था उसकी तो मैं अभ्यस्त हो चुकी थी। पर अचानक एक दिन जब उन्होंने पाव भर गेरू मँगवाने का आदेश दिया तब मैंने समझा कि उनके पित्ती निकल गई, क्योंकि उसी रोग में गेरू मिले हुए आटे के पुए खाये जाते है और गेरू के चूर्ण का अंग – राग लगाया जाता है।

प्रश्नों के प्रति निराला जी कम सहिष्णु है और कुतुहल की दृष्टि से मैं कम जिज्ञासु हूँ। फिर भी उनकी सुविधा – असुविधा की चिन्ता के कारण में अनेक प्रश्न कर बैठती हूँ और मेरी सद्भावना में विश्वास के कारण वे उत्तरों का कष्ट सहन करते हैं।

मेरे मौन में मुखर चिन्ता के कारण ही उन्होंने अपना मन्तव्य स्पष्ट किया, 'अब हम सन्यास लेंगे।' मेरी उमड़ती हँसी के व्यथा के बाँध ने जहाँ – का – तहाँ ठहरा दिया। इस निर्मम युग ने इस महान कलाकार के पास ऐसा क्या छोड़ा है जिसे स्वयं छोड़कर यह त्योग हमारी पूर्णता का परिणाम है। इन दोनों छोरों में से एक मनुष्य के भौतिक विकास का माप है और दूसरा मानसिक विस्तार की थाह। त्याग कभी भाव की अस्वीकृति है और कभी अभाव की स्वीकृति, पर तत्वत: दोनों कितने भिन्न है।

मैं सोच ही रही थी चि. वसन्त ने परिहास की मुद्रा में कहा, 'तब तो आपको मधुकरी खाने की आवश्यकता पड़ेगी।'

खेद, अनुताप या पश्चाताप की एक भी लहर से रहित विनोद की एक प्रशान्त धारा पर तैरता हुआ निराला जी का उत्तर आया, 'मधुकरी तो अब भी खाते है।' जिसकी निधियों से साहित्य का कोश समृद्ध है उसने मधुकरी माँग कर जीवन – निर्वाह किया है, इस कटु सत्य पर, आने वाले युग विश्वास कर सकेंगे, यह कहना कठिन है।

गेरू में दोनो मलिन अधोवस्त्र और उत्तरीय कब रंग डाले गए इसका मुझे पता नहीं, पर एकादशी के सवेरे स्नान, हवन आदि कर जब वे निकले तब गैरिक परिधान पहन चुके थे। अँगोछे के अभाव और वस्त्रों में रंग की अधिकता के कारण उनके मुँह – हाथ आदि ही नहीं, विशाल शरीर भी गैरिक हो गया था, मानों सुनहली धूप में धुला गेरू के पर्वत का कोई शिखर हो।

बोले – 'अब ठीक है। जहाँ पहुँचे किसी नीम, पीपल के नीचे बैठ गए। दो रोटियाँ माँग कर खा ली और गीत लिखने लगे।'

इस सर्वथा नवीन परिच्छेद का उपसंहार कहाँ और कैसे होगा। यह सोचते – सोचते मैंने उत्तर दिया, 'आपके सन्यास से मुझे तो इतना ही लाभ हुआ कि साबुन के कुछ पैसे बचेंगे। गेरूए वस्त्र तो मैले नहीं दिखेंगे,

पर हानि यही है कि न जाने कहाँ – कहाँ छप्पर डलवाना पड़ेगा, क्योंकि धूप और वर्षा से पूर्णतया रक्षा करने वाले नीम ओर पीपल कम ही है।

मन में एक प्रश्न बार – बार उठता है क्या इस देश की सरस्वती अपने वैरागी...........पुत्रों की परम्परा अक्षुण्ण रखना चाहती है और क्या इस पथ पर पहले पग रखने की शक्ति उसने निराला जी में ही पाई है?

NOTES

निराला जी अपने शरीर, जीवन और साहित्य सभी में असाधारण हैं। उनमें विरोधी तत्वों की भी सामंजस्यपूर्ण संधि है। उनका विशाल डीलडौल, देखने वालें के हृदय में जो आंतक उत्पन्न कर देता है उसे मुख की सरल आत्मीयता दूर करती चलती है।

उनकी दृष्टि में दर्प और विश्वास की धूपछाँही द्वाभा है। इस दर्प का सम्बन्ध किसी हल्की मनोवृत्ति से नहीं और न उसे अंह का सस्ता प्रदर्शन ही कहा जा सकता है। अविराम संघर्ष और निरन्तर विरोध का सामना करने से उनमें जो एक आत्मनिष्ठा उत्पन्न हो गई है उसी का परिचय हम उनकी दृप्त – दृष्टि में पाते है। कभी – कभी यह गर्व व्यक्ति की सीमा पार कर इतना सामान्य हो जाता है कि हम उसे अपना, प्रत्येक साहित्यकार का या साहित्य का मान सकते है। इसी से वह दुर्वह कभी नही होता जिस बड़प्पन में हमारा भी कुछ भाग है वह हममें छोटेपन की अनुभूति नहीं उत्पन्न करता और परिणामत: उससे हमारा कभी विरोध नहीं होता।

निराला जी की दृष्टि में सन्देह का वह पैनापन नहीं जो दूसरे मनुष्य के व्यक्त परिचय का अविश्वास कर उसके मर्म का बेधना चाहता है। उनका दृष्टिपात उनके सहज विश्वास की वर्णमाला है। वे व्यक्ति के उसी परिचय को सत्य मानकर चलते है जिसे वह देना चाहता है और अन्त में उस स्थिति तक पहुँच जाते हैं जहाँ वह सत्य के अतिरिक्त कुछ और नहीं देना चाहता।

जो कलाकार हृदय के गूढ़तम भावों के विश्लेषण में समर्थ है उसमें ऐसी सरलता लौकिक दृष्टि से चाहे विस्मय की वस्तु हो, पर कला – सृष्टि के लिए यह स्वाभाविक साधन है।

सत्य का मार्ग सरल है। तर्क और सन्देह की चक्करदार राह से उस तक पहुँचा नहीं जा सकता। इसी से जीवन के सत्य – दृष्टाओं को हम बालकों जैसा सरल विश्वासी पाते हैं। निराला जी भी इसी परिवार के सदस्य है।

किसी अन्याय के प्रतिकार के लिए उनका हाथ लेखनी से पहले उठ सकता है अथवा लेखनी हाथ से अधिक कठोर प्रहार कर सकती है, पर उनकी आँखों की स्वच्छता किसी मालिन द्वेष में तंरगायित नहीं होती।

ओठों की खिंची हुई – सी रेखाओं में निश्चय की छाप है, पर उनमें क्रूरता की भंगिमा या घृणा की सिकुड़न नहीं मिल सकती।

क्रूरता और कायरता में वैसा ही सम्बन्ध है जैसा वृक्ष की जड़ों में अव्यक्त रस और उसके फल स्वाद में। निराला किसी से भयभी नही, अत: किसी के प्रति क्रूर होना उनके लिए सम्भव नहीं। उनके तीखे व्यंग्य की विद्युत – रेखा के पीछे सद्भाव के जल से भरा बादल रहता है।

घृणा का भाव मनुष्य की असमर्थता का प्रमाण है। जिसे तोड़कर फेंक सकता है, उससे मदिरा हमारी घृणा का केंद्र बन जाती है। जो मदिरा के पात्र को तोड़कर फेंक सकता है, उसे मदिरा से घृणा की आवश्यकतस ही क्या है! पर जो उसे सामने रखने के लिए भी विवश है, और अपने मन में उससे बचने की शक्ति भी संचित करना चाहता है वह उसके दोषों की एक – एक ईट जोड़कर उस पर घृणा का काला रंग फेर कर एक दीवार खड़ी कर लेता है जिसकी ओट में स्वयं बच सके। हमारे नरक की कल्पना के मूल में भी यही अपने बचाव का विवश प्रयत्न है जहाँ संरक्षित दोष नही, वहाँ सुरक्षित घृणा भी असम्भव नहीं।

विकास – पथ की बाधाओं का ज्ञान ही महान विद्रोहियों को कर्म की प्रेरणा देता है। क्रोध को संचित कर द्वेष को स्थायी बनाकर घृणा में बदलने के लिए लम्बे क्रय तक वे ठहर नही सकते। और ठहरें भी तो घृणा की निष्क्रियता बनाकर पथ – भ्रष्ट कर देगी।

निराला जी विचार से क्रान्तदर्शी और आचरण से क्रान्तिकारी हैं। वे उस झंझा के समान हैं जो हल्की वस्तुओं को भी उड़ा ले जाती है। उस मन्द समीर जैसे नहीं जो सुगन्ध न मिले तो दुर्गन्ध का भार ही ढोता फिरता है। जिसे वे उपयोगी नहीं मानते उसके उसके प्रति उनका किंचित मात्र भी मोह नहीं, चाहें तोड़ने योग्य वस्तुओं के साथ रक्षा के योग्य वस्तुएँ भी नष्ट हो जावें।

उनका मार्ग चाहे ऐसे भग्नावशेषों से भर गया हो जिनके पुनर्निमाण में समय लगेगा, पर ऐसी अडिग शिलाएँ नहीं है, देख - देखकर उन्हें निष्फल क्रोध में दाँत पीसना पड़े या निराश पराजय में आह भरना पड़े।

मनुष्य की संचय - वृत्ति ऐसी ही है कि वह अपनी उपयोगहीनता वस्तुओं को भी संगृहीत रखना चाहता है। इसी स्वभाव के कारण बहुत - सी रूढ़ियाँ भी उसके जीवन के अभाव को भर देती है।

विद्रोह स्वभावगत होने के कारण निराला जी के लिए ऐसी रूढ़ियों पर प्रहार करना जितना प्रयासहीन होता है, उतना ही कौतुक का कारण।

दूसरों का बद्धमूल धारणाओं पर आघात कर उनकी खुजलाहट पर वे ऐसे ही प्रसन्न होते है। जैसे होली के दिन कोई नटखट लड़का, जिसने किसी की तीन पैर की कुर्सी के साथ किसी की सर्वांगपूर्ण चारपाई, किसी की टूटी तिपाई के साथ किसी की नई चौकी होलिका में स्वाहा कर डाली हो।

उनका विरोध द्वेषमूलक नही, चोट कठिन होती है। इसके अतिरिक्त उनके संकल्प और कार्य के बीच में ऐसी प्रत्यक्ष कड़ियाँ नहीं रखतीं, जो संकल्प के औचित्य और कर्म के सौन्दर्य की व्याख्या कर सकें। उन्हें समझने के लिए जिस मात्र में बौद्धिकता चाहिए उसी मात्र में हृदय की संवेदनशीलता अपेक्षित रहती है। ऐसा सन्तुलन सुलभ न होने के कारण उन्हें पूर्णता में समझने वाले विरले मिलते है। ऐसे दो व्यक्ति सब जगह मिल सकते हैं जिनमें एक उनकी नम्र उदारता की प्रशंसा करते नहीं थकता और दूसरा उनके उद्धत व्यवहार की निन्दा करते नहीं हारता। जो अपनी चोट के पार नहीं देखा पाते वे उनके निकट पहुँच ही नहीं सकते, अत: उनके विद्रोह की असफलता प्रमाणित करने के लिए उनके चरित्र की उजली रेखाओं पर काली तूली फेरकर प्रतिशोध लेते रहते हैं। निराला जी के सम्बन्ध में फैली हुई भ्रान्त किम्वदन्तियाँ इसी निम्रवृत्ति से सम्बन्ध रखती है।

मनुष्य जाति की नासमझी का इतिहास क्रूर और लम्बा है। प्राय: सभी युगों में मनुष्य ने अपने में श्रेष्ठतम, पर समझ में न आने वाले व्यक्ति को छाँटकर, कभी उसे विष देकर, कभी सूली पर चढ़ाकर और कभी गोली का लक्ष्य बनाकर अपनी बर्बर - मूर्खता के इतिहास में नये पृष्ठ जोड़ें है।

प्रकृति और चेतना न जाने कितने निष्फल प्रयोगों के उपरान्त ऐसे मनुष्य का सृजन कर पाती है, जो सृष्टाओं से श्रेष्ठ हो। पर उसके सजातीय, ऐसे अदभुत सृजन को नष्ट करने के लिए इससे बड़ा कारण खोजने की भी आवश्यकता नहीं समझते कि वह उनकी समझ के परे है अथवा सत्य इनकी भ्रान्तियों से मेल नहीं खाता।

निराला जी अपने युग की विशिष्ट प्रतिभा है, अत: उन्हें युग का अभिशाप झेलना पड़े तो आश्चर्य नहीं।

उनके जीवन के चारों ओर परिवार का वह लौहसार घेरा नहीं है जो व्यक्तिगत विशेषताओं पर चोट भी करता है और बाहर की चोटों के लिए ढाल भी बन जाता है। इनके निकट माता, बहन, भाई आदि के कोमल साहचर्य के अभाव का नाम भी शैशव रहा है। जीवन का वसन्त भी उनके लिए पत्नी - वियोग का पतझड़ बन गया है। आर्थिक कारणों ने उन्हें अपनी मातृहीन सन्तान के प्रति कर्त्तव्य - निर्वाह की सुविधा भी नहीं दी। पुत्री के अन्तिम क्षणों में वे निरूपाय दर्शक रहे और पुत्र को उचित शिक्षा से वंचित रखने के कारण उसकी उपेक्षा के पात्र बनें।

अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों से उन्होंने कभी ऐसी हार नहीं मानी जिसे, सह्य बनाने के लिए हम समझौता कहते है। स्वभाव से उन्हें वह नि:श्छल वीरता मिली है, जो अपने बचाव के प्रयत्न को भी कायरता की संज्ञा देती है। उनकी वीरता राजनीतिक कुशलता नहीं, वह तो साहित्य की एकनिष्ठता का पर्याय है। दल के व्यूह में छिपकर लक्ष्य तक पहुँचने को साहित्य लक्ष्य - प्राप्ति नहीं मानता। जो अपने पथ की सभी प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष बाधाओं को चुनौती देता हुआ सभी आघातों को हृदय पर झेलता हुआ लक्ष्य तक पहुँचता है उसी को युग - सृष्टा साहित्यकार कह सकते है। निराला जी ऐसे ही विद्रोही साहित्यकार है। जिन अनुभवों के दर्शन का विष साधारण मनुष्य की आत्मा को मूर्छित करके उसके सारे जीवन को विषाक्त बना देता है, उसी से उन्होंने सतत् जागरूकता और मानवता का अभूत प्राप्त किया है।

किसी की व्यथा इतनी हल्की नहीं जो उनके हृदय में गम्भीर प्रतिध्वनि जगाती, किसी की आवश्यकता इतनी छोटी नहीं जो उन्हें जो उन्हें सर्वस्व दान की प्रेरणा नहीं देती।

अर्थ की जिस शिला पर हमारे युग के न जाने कितने साधकों की साधना - तरियाँ चूर - चूर हो चुकी है, उसी को वे अपने अदम्य वेग में पार कर आए है। उनके जीवन पर उस संघर्ष के जो आघात हैं वे उनकी

NOTES

हार के नहीं, शक्ति के प्रमाण – पत्र हैं। उनकी कठोर श्रम, गम्भीर दर्शन और सजग कला की त्रिवेणी न अछोर मरू में सूखती है न अकूल समुद्र में अस्तित्व खोती है।

जीवन की दृष्टि से निराला जी किसी दुर्लभ सीप में ढले सुडौल मोती नहीं हैं, जिसे अपनी महार्घता का साथ देने के लिए स्वर्ण और सौन्दर्य – प्रतिष्ठा के लिए अंलकार रूप चाहिए। वे तो अनगढ़ पारस के भारी शिलाखण्ड हैं। न मुकुट में जड़ कर कोई उसकी गुरूता सम्भाल सकता है न पदत्राण बनकर कोई उसका भार उठा सकता है। वह जहाँ है, वहीं उसका स्पर्श सुलभ है। यदि स्पर्श करने वाले में मानवता के लौह परमाणु हैं तो किसी और से भी स्पर्श करने पर वह स्वर्ण बन जाएगा। पारस की अमूल्यता दूसरों का मूल्य बढ़ाने में है। उसके मूल्य में न कोई कुछ जोड़ सकता है न घटा सकता है।

आज हम दम्भ और स्पर्धा, अज्ञान और भ्रान्ति की ऐसी कुहेलिया में चल रहे हैं जिसमें स्वंय को पहचानना तक कठिन है, सहयात्रियों को यथार्थता में जानने का प्रश्न ही नही उठता। पर आने वाले युग इस कलाकार की एकाकी यात्रा का मूल्य आँक सकेंगे, जिसमें अपने पैरों की चाप तक आँधी में खो जाती है।

निराला जी के साहित्य की शास्त्रीय विवेचना तो आगामी युगों के लिए भी सुकर रहेगी, पर उस विवेचना के लिए जीवन की जिस पृष्ठभूमि की आवश्यकता होती है, उसे तो उनके समकालीन ही दे सकते है।

साहित्यकार के जीवन का विश्लेषण उसके साहित्य के मूल्यांकन से कठिन है। साहित्य की कसौटी सर्वमान्य होती है, पर उसकी उर्वर भूमि आलोचक के विशेष दृष्टि – बिन्दु के फूलने – फलने का अवकाश दे सकती है। एक कविता का विशेष भाव, एक चित्र का विशेष रंग और एक गीत की विशेष लय, किसी के लिए रहस्य के द्वार खोल सकती है और किसी से टकराकर व्यर्थ हो जाती हैं। पर जीवन का इतिवृत्त इतनी विविधता नहीं सँभाल सकता। एक व्यक्ति का कर्म समाज को हानि पहुँचा सकता है या लाभ, अत: व्यक्तिगत रूचि के कारण यदि कोई हानि पहुँचाने वाले को अच्छा कहे या लाभ पहुँचाने वाले को बुरा तो समाज उसे अपराधी मानेगा। ऐसी स्थिति में कर्म के मूल्यांकन में विशेष सतर्क रहने की आवश्यकता पड़ती है।

असाधारण प्रतिभावान और अपने युग से आगे देखने वाले कलाकारों के इतिवृत्त के चित्रण में एक और भी बाधा है। जब उनके समानधर्मी उनके जीवन का मूल्यांकन करते हैं तब कभी तो स्पर्धा तुला को ऊँचा–नीचा करती रहती है और कभी अपनी विशेषताओं का मोह उन्हें सहयोगियों में अपनी प्रतिकृति देखने के लिए विवश कर देता है। जब छोटे व्यक्तित्व वाले किसी असाधारण व्यक्तित्व की व्याख्या करने चलते है तब कभी तो उनकी लघुता उसे घेर नहीं पाती और कभी उसके तीव्र आलोक में अपने अंह को उद्भासित कर लेने की दुर्बलता उन्हें घेर लेती है।

इस प्रकार महान् कलाकारों के यथार्थ चित्र बहुल हों तो विस्मय की बात नहीं।।

साहित्य के नवीन युग – पथ पर निराला जी की अंक – संसुति गहरी और स्पष्ट उज्जवल और लक्ष्य–निष्ठा रहेगी। इस मार्ग के हर फूल पर उनके चरण का चिन्ह और हर शूल पर उनके रक्त का रंग है।

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को होली के दिन फरुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा मिशन स्कूल, इंदौर में हुई। महादेवी 1929 में बौद्ध दीक्षा लेकर भिक्षुणी बनना चाहतीं थीं, लेकिन महात्मा गांधी के संपर्क में आने के बाद आप समाज–सेवा में लग गईं। 1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए करने के पश्चात आपने नारी शिक्षा प्रसार के मंतव्य से प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की व उसकी प्रधानाचार्य के रुप में कार्यरत रही। मासिक पत्रिका चांद का अवैतनिक संपादन किया।

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भों 'जयशंकर प्रसाद', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और 'सुमित्रानंदन पंत' के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। उन्हें आधुनिक 'मीराबाई' भी कहा गया है। कवि निराला ने उन्हें ''हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती'' भी कहा है।

उन्होंने अध्यापन से अपने जीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल–विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन–यापन किया।

प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूज्यनीय बनी रहीं। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।

व्यक्तित्व – महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व में संवेदना दृढ़ता और आक्रोश का अद्भुत संतुलन मिलता है। वे अध्यापक, कवि, गद्यकार, कलाकार, समाजसेवी और विदुषी के बहुरंगे मिलन का जीता जागता उदाहरण थीं। वे इन सबके साथ-साथ एक प्रभावशाली व्याख्याता भी थीं। उनकी भाव चेतना गंभीर, मार्मिक और संवेदनशील थी। उनकी अभिव्यक्ति का प्रत्येक रूप नितान्त मौलिक और हृदयग्राही था। वे मंचीय सफलता के लिए नारे, आवेशों, और सस्ती उत्तेजना के प्रयासों का सहारा नहीं लेतीं। गंभीरता और धैर्य के साथ सुनने वालों के लिए विषय को संवेदनशील बना देती थीं, तथा शब्दों को अपनी संवेदना में मिला कर परम आत्मीय भाव प्रवाहित करती थीं।

कार्यक्षेत्र –महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1932 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियाँ हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं।

महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया।

प्रमुख कृतियाँ – नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942) सप्तपर्णा (अनूदित-1959), प्रथम आयाम (1974), अग्निरेखा (1990)

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य – अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएँ (1943),पथ के साथी (1956) और मेरा परिवार (1972 और संस्मरण (1983), चुने हुए भाषणों का संकलन: संभाषण (1974), ललित निबंध: क्षणदा (1956), ठाकुरजी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला।

पुरस्कार व सम्मान – महादेवी वर्मा को प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओं से पुरस्कार व सम्मान मिले। 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1979 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया।

इससे पूर्व महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं। 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फिल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फिल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे। 16 सितंबर 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपए का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

निधन – 11 सितंबर, 1987 को इलाहाबाद में महादेवी वर्मा का देहांत हो गया।

शब्दार्थः

दियासलाई = माचिस की तीली, सहिष्णु = सहनशील, रम्भ = अंहकार, पदत्राण = चप्पल, खड़ाऊँ, शिलाखण्ड = चट्टान, आलोक = प्रकाश

NOTES

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्नः

1. युग – सृष्टा साहित्यकार किसे कहते है।
2. मैथिलीशरण गुप्त का आतिथ्य सत्कार निराला जी ने किस रूप में किया।
3. ''कौन बहिन हम ऐसे भुक्खड़ को भाई बनावेगी'' का भाव अपने शब्दों में लिखिए।
4. महादेवी वर्मा ने निराला के स्वभाव का जो चित्रण किया, उसे 200 शब्दों में लिखिए।
5. ''जीवन की दृष्टि से निराला जी, किसी दुर्लभ सीप में ढले सुडौल मोती नहीं है'' वाक्य की विशद् व्याख्या कीजिए।
6. किस कारण से महादेवी निराला के जीवन को व्यवस्थित करने में असफल रही।
7. साहित्यकार के जीवन का विश्लेषण उनके साहित्य के मूल्यांकन से क्यों कठिन है।
8. श्री सुमित्रानन्दन पंत के स्वर्गवासी होने की झूठी खबर पर निराला जी की जो मनोदशा हुई, उसका वर्णन कीजिए।
9. महादेवी वर्मा का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।
10. घृणा के संबध में महादेवी वर्मा के विचारों को लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

1. 'निराला' संस्मरण लिखा है।

   i. निरालाजी ने　　ii. महादेवी वर्मा ने

   iii. हरिशंकर परसाई ने　　iv. प्रेमचंद ने

2. निरालाजी ने महादेवी वर्मा को क्या माना था।

   i. अपनी माँ　　ii. अपनी गुरू

   iii. अपनी बहन　　iv. अपनी शिष्या

3. महादेवी वर्मा को अपने कौनसे ज्ञान पर पहली बार गर्व हुआ था।

   i. साहित्य के ज्ञान पर　　ii. गणित के ज्ञान पर

   iii. अर्थशास्त्र के ज्ञान पर　　iv. ज्योतिष विद्या पर

4. निराला कैसे कवि थे।

   i. प्रकृति के सुकुमार कवि　　ii. विद्रोही कवि

   iii. प्रयोगवादी कवि　　iv. वीर रस के कवि

5. महादेवी जी ने निराला के कितने रूपयों का बजट बनाकर दिया था।

   i. 100　　ii. 200

   iii. 300　　iv. 500

6. सुमित्रानन्दन पंत दिल्ली में किस बीमारी से पीड़ित थे।

i. नजला से | ii. टाइफाइड से
iii. अंत्रशोध से | iv. तपेदिक से

7. 'अपरा' पर निरालाजी को कितने रूपये का पुरस्कार मिला था।

i. इक्कीस सौ | ii. ग्यारह सौ
iii. पाँच सौ | iv. एक सौ

8. संस्करण 'निराला' में निराला द्वारा किस कवि का आतिथ्य सत्कार करना बताया।

i. महादेवी वर्मा का | ii. सुमित्रानन्दन पंत का
iii. स्वंय निराला का | iv. मैथिलीशरण गुप्त का

9. 'अपरा' पर मिली पुरस्कार राशि निरालाजी ने किसको भेजने का प्रबन्ध किया।

i. महादेवी वर्मा को | ii. अपने खुद के घर
iii. मुंशी नवजादिकलाल की विधवा को | iv. ताँगे वाले को

10. निरालाजी ने गेरू का क्या किया।

i. अपने शरीर पर पोत लिया | ii. अपने घर की दीवारों की पुताई की
iii. अपने अधोवस्त्र एंव उत्तरीय को रंग डाला | iv. ऐसे ही छोड़ दिया

उत्तर :– 1. (ii), 2. (iii), 3. (iii), 4. (ii), 5. (iii),
6. (ii), 7. (i), 8. (iv), 9. (iii), 10. (iii)

■ ■ ■

12. माण्डव

पं. रामनारायण उपाध्याय

NOTES

पं. रामनारायण उपाध्याय कालमुखी खण्डवा (म.प्र) के साहित्यकार है, आपने विन्ध्याचल की पहाड़ी में बसे ऐतिहासिक नगर माण्डवगढ़ का सुन्दर चित्रण अपने लेख मांडव में किया है। प्रस्तुत लेख ललित निर्बाध शैली की प्रभावी रचना है।

समुद्र की सतह से 2079 फुट ऊँची विन्ध्य की पहाड़ी आपका स्वागत कर रही है। इसके दर्शन करते समय भूल जाइए कुछ क्षण के लिए बीसवीं शताब्दी को। हम लोग आज से पाँच शताब्दी पूर्व के उस स्थान में प्रवेश कर रहे हैं, जो हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य का प्रतीक रहा है। यह 'माण्डवगढ़' है। माण्डव कि जहाँ के खण्डहरों में, शाही प्रासादों में, मस्जिदों और मन्दिरों में, दरों-दीवारों में, नहीं-नहीं उसके जरै-जरै में शालीनता, स्वाधीनता, ऐश्वर्य और साम्प्रदायिक तथा सांस्कृतिक ऐक्य का संदेश गूँज रहा है। पाँच सौ वर्ष के लम्बे समय को लाँघने के बावजूद, जहाँ के भग्नावशेष आज हँसते से खड़े है - शान्त, अडिग। आज भी जिनमें प्रवेश करते समय भ्रम होता है कि कहीं से 'बाअदब बामुलाहिजा होशियार' की आवाज के साथ चलने वाले कोई विश्वविजयी सम्राट न निकल पड़ें। वहाँ की कब्रों में सोए किसी बादशाह की नींद में खलल न पड़ जाए अथवा किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या गद्दी से ऊपर उठकर बोलने एवं 'प्रेम' की महत्ता सिद्ध करने वाली, महारानी रूपमती की आत्मा झरोखों से झाँक न उठे या प्रेम और प्रणय के प्रतीक तख्तोताज की अमर कहानी लिए नूरजहाँ कहीं दिखाई न दे जाए।

यह माण्डवगढ़ है - शाही महलों का खण्डहर। सैकडों नहीं, हजारों वर्ष बीत जाएँ और उन वर्षो पर से भी कई दिन युग बनकर निकल जाएँ, लेकिन जब तक ये खण्डहर है, तब तक इनके निर्माताओं की महान महत्वाकांक्षाएँ यहाँ व्यक्त रहेंगी और उनके प्रभाव से कोई भी पथिक अपने आपको मुक्त नहीं रख सकेगा।

जरा सम्भलकर आइएगा इस ओर, यह किला काफी टूट-फूट चुका है। कल्पना कीजिए उस समय की, जब यह अपने वास्तविक स्वरूप में रहा होगा।

विन्ध्य की गोद में अनेक सुन्दर तालाबों और वृक्षों के प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच करीब साढ़े तीन मील लम्बी और साढ़े चार मील चौड़ी एक समतल पहाड़ी पर यह दुर्ग निर्मित है और अपने एक ओर 'कांकड़ा खोह' और 'अण्डा खोह' नामक भयानक गहरी खाइयों और चालीस मील के घेरे वाली ऊँची दीवार से रक्षित है, जिसके बाहर प्रवेश-द्वारों में से उत्तर के एक गाड़ी आने के मार्ग को छोड़कर शेष सब मार्ग इतने ढालू है कि जहाँ से एक-ब-एक दुश्मनों की सेना का प्रवेश असम्भव था। सौन्दर्य की दृष्टि से वर्षा के दिनों, छोटे-मोटे झरनों और जल-प्रपातों से युक्त हरे वृक्षों और लताकुंजो के बीच, रंग-बिरंगे फूलों की विचित्र आभा और मीठी-भीनी खुशबू तथा मयूरों का नृत्य, हिरनों की उछलकूद, पक्षियों का सुमधुर-कलरव एक अजीब समाँ बाँध देते है। इसी प्राकृतिक सौन्दर्य से मुग्ध होकर मुगल सम्राट जहाँगीर यहाँ कुछ समय रहे थे।

इठलाती, बलखाती, चक्करदार सड़क से किले के प्रथम प्रवेश-मार्ग आलमगीर-दरवाजे और उसके बाद क्रमश: कम्पनी-दरवाजे और गाड़ी-दरबाजे को पार करने के पश्चात माण्डव-बस्ती में प्रवेश करते ही वह जो बाएँ हाथ की और पहली इमारत दिख रही है, वह और कुछ नहीं, जन-जन के मन: प्राण 'श्रीराम' का मन्दिर है। वहीं पास ही एक-दूसरे की और मुखातिब, मौन संकेतों से बात करते-से 'अशरफी-महल' और 'जामा मस्जिद' खड़े हैं।

यह अशरफी-महल है, जिसका निर्माता महमूद खिलजी आज भी यहाँ शान्ति की नींद सोया है। यह वह सुल्तान है, जिसे इमारतों का अदभुत शौक था और जिसने माण्डव की सबसे बड़ी इमारत अधूरी जामा मस्जिद को पूरा करवाया था और उसके बाद इसी अशरफी-महल को, इसके अंग-अंग को, अपनी निगाह के सामने बनवाया था। यह सुल्तान अपनी वीरता और धार्मिकता के कारण प्रसिद्ध हो गया है। याद कीजिए उस समय की भी, जब इसी के पुत्र गयासुद्दीन की उसके बेटे नासिरूद्दीन ने तख्त के लिए जहर देकर हत्या कर दी थी। वे भी यहीं दफनाए गए।

उसके पूरे 107 वर्ष बाद, जब जहाँगीर नूरजहाँ के साथ माण्डव देखने आया, तो उसे इसी महल में नासिरूद्दीन की कब्र देखकर पितृ-हत्या जैसे निंद्य कर्म के प्रति बेहद नफरत हुई, इतनी नफरत हुई, इतना क्रोध आया कि उसकी आत्मा उसे बर्दाश्त नहीं कर सकी और उसने उसी समय उस कब्र को खुदवाकर नर्मदा

में फिकवा दिया। इस तरह, एक वंश के दो व्यक्तियों में से एक को अपने दुष्कर्मो के परिणामस्वरूप ठुकराकर और दूसरे के सत्कर्मो को शिरोधार्य करते हुए यह महल आज भी खड़ा है, अपनी उसी शान से, उसी आन से।

और यह है माण्डव की इमारतों में सबसे बड़ी पवित्र मानी जाने वाली 'जामा मस्जिद'। जमीन से करीब एक मंजिल की ऊँचाई पर, बेगमों और सुल्तानों के लिए शाही ढंग से प्रवेश – मार्गो से युक्त, यह इमारत पठानी शिल्पकला से श्रेष्ठ मानी जाती है। यह अपने हर चश्में और कमानी में एक – एक गुम्बज लिए हुए है, मानों इबादत के लिए सबका स्वागत करते हुए एक सुदृढ़ आस्था और विश्वास पर सदियों के कष्टों को झेलते हुए भी वह किसी शुभ दिन की प्रतीक्षा में खड़ी है। कुछ ही दूर आगे, वह जो सफेद संगमरमर की इमारत दिख रही है, होशंगशाह का मकबरा, जिसे 'चरवा – मस्जिद' भी कहते है। एक बार इसी होशंगशाह गोरी ने माण्डव को अपनी राजधानी बनवाकर इस किले की मरम्मत करवाई थी। अपनी मृत्यु पश्चात पूर्व उसने विशाल जामा मस्जिद बनवाना आरम्भ किया था, जो उसकी मृत्यु पश्चात पूरी हुई। इन्होंने अपने शासनकाल में माण्डव के पुन: निर्माण के लिए कोई बात उठा न रखी थी। मृत्यु के बाद वह यही दफनाया गया। सुनते है, उसकी कब्र के आसपास गुम्बज से लगातार पानी टपकने की व्यवस्था की गई थी, जो अब बन्द हो गई है।

यदि आप कलाकार है, तो एक क्षण और ठहरिए। पूँजी के बल पर बड़े – बड़े निर्माण कार्यो को अपने नाम से प्रसिद्ध करवाने वालों के नाम तो हमने अनेक बार इतिहास में पढ़े है और सुने भी है, लेकिन उनकी नींव में अपने रक्त की अन्तिम बूँद चढ़ा जाने वाले कलाकारों को शायद ही कभी किसी ने याद करने का प्रयत्न किया है। यहाँ मकबरे के दरवाजे पर उस महान् कलाकार 'हमीद' के हस्ताक्षर है, जो शाहजहाँ द्वारा निर्मित जगत् प्रसिद्ध 'ताजमहल' का निर्माता था। माण्डव किले की देशव्यापी प्रसिद्धि सुनकर वह भी अपने साथियों सहित यहाँ आया था और इन हस्ताक्षरों के रूप में अपनी याद छोड़ गया है। लेकिन याद रखिए, शरीर में प्राणों की तरह यह वह शक्ति है, जो खण्डहर – प्राय इमारतों को सजीव बनाए हुए है। किसी दिन इसर के जैसे अज्ञात कलाकारों द्वारा इन सबमें प्राण – प्रतिष्ठा की गई थी।

पास ही अहाते में खम्भों से निर्मित एक धर्मशाला है। धर्मशाला क्या है, इसे माण्डव का संग्रहालय समझिए। इसमें बड़े यत्न से वहाँ पाई गई मूर्तियाँ, शिलालेख, पत्थर की कारीगरी के कई सुन्दर नमूने आदि सब कुछ सँजोकर रखे गए है। कहा जा सकता है कि उसे देखे बिना सारा माण्डव – दर्शन अधूरा है।

यहाँ से आगे बढ़ने पर भोज और मुंज तालाब के बीच विशाल 'जहाज – महल' निर्मित है। इसमें ऊँची मंजिलों तक पानी पहुँचाने की व्यवस्था अपने ढंग की अनूठी थी। अब तो वह सब बन्द हो चुकी है, लेकिन तब की नालियाँ, फौव्वारे और हौज आज भी देखने की वस्तुएँ है। इस महल की प्रत्येक वस्तु की बनावट में सबसे बड़ी बात है कि यहाँ की एक भी वस्तु या स्थान ऐसा नही, जो कलात्मक और सुन्दर न हो। यदि कहीं पानी की नालियाँ भी बनी है, तो उनके बीच – बीच में इस तरह सुन्दर फूल बने हुए है, जिनमें से बहते समय पानी भी कई तरह के फूलों का आकार लेकर बहे। जहाँ कहीं भी पानी ऊपर से नीचे गिरता होगा, वहाँ इस तरह नक्काशीदार फर्शियाँ लगाई गई है, जिनमें वह सूर्य की किरणें पड़ने पर झिलमिलाता दिखाई दे। यह महल गयासुद्दीन नामक उस नमाज प्रिय सुल्तान द्वारा बनवाया गया है, जिसने अपने नौकरों को यह हुक्म दे रखा था कि यदि मैं नमाज के वक्त सोता होऊँ, तो गुलाब – जल छिड़ककर उठा दें और फिर भी न उठूँ तो बिस्तर खींचकर उठा दिया जाऊँ। यहीं वह महल है, जिसका जहाँगीर ने जीर्णोद्धार कराया था और नूरजहाँ जिसमें कुछ समय तक रही थी। कल्पना कीजिए उस महल की, जिसमें चारों तरफ पानी है, जिसकी छत पर आप बैठे है – तो सच, जहाज से भी कहीं अधिक सुख मिलता है वहाँ। आज तो यहाँ हम घण्टों बैठ सकते है, किन्तु ख्याल रखिए उस समय का, जब वह किसी मुगल सम्राट का निवास – स्थान रहा होगा।

इसके पास ही अपनी बनावट के ढंग से हिंडोला की तरह झूलता हुआ दिखाई देने वाला 'हिंडोला – महल' है। इसकी ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए हाथी सहित चले जाने योग्य चढाव बना हुआ है। इन महलों के सामने ही कुछ बड़े – बड़े तलघर है। यों देखने से सामने का मैदान समतल प्रतीत होता है, लेकिन उनमें ये जो कहीं – कहीं नीचे की ओर सीढ़ियाँ चली गई है, उनसे यदि अन्दर जाया जाए, तो हम पाएँगे पर यह कल्पना नहीं की जा सकती है कि इस जमीन से एक मंजिल नीचे विचर रहे है। न जाने इस तरह के कितने तलघर इस जमीन के अन्दर समा गए होंगे। जहाज महल से सटे तलघर में एक बड़ा – सा जलकुंड है। सहसा कोई यह विश्वास नहीं कर सकता कि यहाँ कुछ ही सीढ़ियाँ उतरने पर एक बड़ा – सा ठंडे स्वच्छ जल का कुंड मौजूद होगा।

यहाँ के पश्चिम में मांडव की प्रसिद्ध 'चम्पा – बावड़ी' है। बावड़ी क्या है, मानों एक तिमंजिले को पूरा – का – पूरा जमीन के अन्दर उतार लिया गया है। काफी गहराई पर पानी है। उसके आसपास चारों तरफ कमानीदार तीन मंजिल ऊँची इमारत बनी हुई है। ऊपर का पूरा हिस्सा हवा – प्रकाश के लिए खुला है। यह अपने ढंग का दर्शनीय स्थान है। पास ही एक स्नानगृह है, जिसमें गरम और ठंडे पानी का प्रबंध है। यहाँ आने पर कुछ ऐसा लगता है, मानों अभी – अभी नहाकर गया हो।

NOTES

यहाँ गयासुद्दीन द्वारा निर्मित 'स्त्री नगर' है। इसमें कई हजार युवा सुन्दरियों रहती थी। उनकी रक्षा के लिए तीर – तरकश और तंमचे लिए बहुतेरी स्त्रियाँ तैनात है। साथ ही मर्दानी पोशाक में स्त्रियों का एक दल अलग ही चक्कर लगा रहा है। खबरदार कहीं तनिक भी उधर कदम बढ़ाया, तो याद रखिए वहाँ का न्यायालय भी उन्हीं के सुपुर्द है और व्यवस्था भी। यहाँ का व्यापार भी उन्हीं के हाथों में है और कला – कौशल भी। कुछ स्त्रियाँ नक्काशी काढ़ने में निमग्न हैं और कुछ चरखे से सूत निकाल रही हैं। स्त्रियों का एक दल उधर कपड़े बनाने में संलग्न है और दूसरा उधर गहने तैयार कर रहा है। कुछ महिलाएँ सुनारी और लोहारी में भी दिलचस्पी ले रही है और कुछ इनसे भिन्न, इन सबके मनोंरजनार्थ नृत्य, गान, वाद्य, संगीत आदि में इस तरह डूबी है, मानो सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किए बिना न रहेंगी। उस शान की कुर्सी पर 'शासक' ही बैठा करते है। वह इस महल की अध्यक्षा महारानी की बैठक है। इन ऊँची दीवारों से रक्षित किले में महाराज को छोड़ पुरूष – मात्र का प्रवेश निषिद्ध है, लेकिन आप चौंकिए नही, अब तो यह खण्डहर – मात्र है और कोई भी इसमें आ – जा सकता है। सिर्फ इतना ही ख्याल रखिए कि किसी भव्य प्रासाद के दुमंजिले कमरे में घिर जाने पर कहीं वहाँ की कोई रक्षिका आपको अपना बन्दी न बना ले, वरना अन्य पुरूषों की परछाई से भी अछूते इस स्त्री – नगर में प्रवेश करने के आरोप के खिलाफ आप क्या जवाब देंगे।

यहाँ की मधुर स्मृतियों में कहीं उलझ न जाइएगा। हम माण्डव देखने आए हैं – सहज यात्री हैं, हमें वापस भी लौटना है। यहाँ की शीतल सुंगधित पवन की मन्द – मन्द थपकियों में तो आज भी वह असर हैं कि यदि आप एक बार वहाँ बैठ जाएँ, तो फिर कभी उठने का नाम न लें। आज भी यहाँ के किसी भी कमरे में पहुँचने पर कुछ ऐसा लगता है, मानो आपके आने की आवाज सुनकर अभी – अभी, एक ही क्षण पूर्व, तरूणियों का एक दल, पास के एक कमरे में गायब हो गया है। इनके हड़बड़ाकर उठने, अस्त – व्यस्त कपड़े सँभालने और एक – ब – एक उठकर चल देने का आभास यहाँ का जर्रा – जर्रा दे रहा है। केशों में गुँथे हुए फूलों और वस्त्रों में ओत – प्रोत इत्र की भीनी खूशबू अभी भी इस कमरे में व्याप्त है। यहाँ अंग – अंग से उनका सामीप्य टपक रहा है। यहाँ आप हरगिज देर तक न ठहरिए, अन्यथा परिणाम नियति के हाथों में होगा। आइए, उठिए चल दीजिए आगे की ओर।

हम काफी दूर निकल आए। अब हमें लौटना है। लौटने के पूर्व एक नजर उस 'जल – महल' पर भी डाल दीजिए। इसमें एक रोज बेगम मुमताज महल की रोशनआरा का जन्म हुआ था, जिसकी खुशी में सारा मांडव खुशी से जगमगा उठा था। लेकिन आज? आज तो यहाँ प्रकाश की क्षीण रेखा भी दृष्टिगोचर नहीं हो रही है। हाँ, आशा की एक अमिट झलक हम अवश्य महसूस करते है। वह है मांडव के व्यापारी गदाशाह की दुकान, निमाड़ के उस श्वेताम्बरी ओसवाल महाजन की दुकान का खंडहर, जिसकी अटूट सम्पत्ति के किस्से आज भी वहाँ गूँजते रहते है।

आधुनिक नियमानुसार अपने बाएँ हाथ से माडंव देखना शुरू करके अब हम पुन: उस स्थान पर आ गए है, जहाँ से हमने चलना शुरू किया था। यह वही श्रीराम मंदिर का शिखर है और अब इसके सामने की सड़क से कुछ दूर आगे बढ़कर दाहिने हाथ की सड़क से हमें 'नीलकंठ' चलना है। जी हाँ, एक बार दक्षिण जीतकर लौटते समय महान मुगल सम्राट अकबर यहीं ठहरे थे और यहाँ ठहरकर उन्होंने देखा खिलजी सुल्तानों के पुराने सूने पड़े हुए महलों को। एक क्षण में सृष्टि के आरम्भ से आज के व्यक्ति के जीवन से मृत्यु तक का, (और) विश्व के पतन एवं उत्थान का इतिहास उनकी आँखों में घूम गया। एक क्षण तक वे कुछ भी न समझ पाए कि उस युग के एक महान सम्राट आज भी अभी – अभी इस युग में विचरण कर रहे है। सारी सृष्टि अपनी कील पर एक पूरा चक्कर लगा गई और अखिल ब्रम्हाण्ड उनकी आँखों के सामने ही कई बार अपनी पूरी शक्ति से औंधा होकर सीधा हो गया। तब उन्हें एक क्षण को सिर्फ एक क्षणभर को, इस नाशवान मानवीय जगत का स्मरण और संसार की असारता का ख्याल हो आया था और तभी इस विषय पर उन्होंने कविता लिखी जो आज भी इस मंदिर के 'शिलाखंड' पर ज्यों – की – त्यों अंकित है। यह सब एक निमिष भर में हो गया और फिर तो सम्राट, सम्राट थे और संसार, संसार। लेकिन मानवीय इतिहास का यह वह महान क्षण था, जिससे संसार के इतिहास में अनेक आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए हैं। एक जमाने के राजकुमार सिद्धार्थ

को युग – युगांतर का महात्मा बुद्ध बना दिया और इसी नाते जो मानव – हृदय के इतिहास में स्मरणीय रहेगा। हाँ तो आजकल यहाँ शिवालय है। यह पहाड़ी के एक ऐसे भाग में बना है, जिसके एक ओर ऊँचा शिखर और दूसरी तरफ भयानक गड्डा है। इस मंदिर के बीच से होकर एक सुंदर प्राकृतिक झरना है, जिसका पानी निंरतर शिवलिंग का अभिषेक करता रहता है और गड्डा से बहता रहता है।

सागर तालाब के सामने वे जो दो इमारतें दिख रही हैं, वे शहजादों को दूध पिलाने वाली दाइयों के महल 'दाई – महल' हैं। यही वह स्थान है, जहाँ सागर तालाब की पाल पर खड़े होकर पुकारने पर दो बार प्रतिध्वनि होती है। जिस तरह आइने में हमारा सच्चा स्वरूप दर्शन होता है, वैसे ही यहाँ खड़े होकर पुकारने से, हम अपना वास्तविक विचार देख सकते है। आप कुछ भी बोलिए, बदलें में आपकों अक्षरशः वही जवाब मिलेगा, जो आपका प्रश्न है। मानो प्रश्न और उत्तर का यहाँ कोई भेद नहीं रह गया है। जो प्रश्न है, वही उत्तर है, इस नग्न सत्य का प्रथम आभास यही होता है। वहाँ प्रश्न अनंत में जाकर विलीन नहीं हो जाता, वरन् बार-बार लौटकर अपने आपसे ही समाधान चाहता है। इसके आगे बढ़ने पर मांडव के इतिहास में अपना प्रमुख हाथ रखने वाले बादशाह बाजबहादुर का महल दिखाई देता है। सन् 1510 ई. में ये तख्तशीन होकर अपनी रानी रूपमती सहित यहीं रहते थे।

इस महल के उत्तर में वह जो झरोखा है, वहीं बाद में जहाँगीर ने अपनी सालगिरह का दरबार लगवाया था, जिसमें इंग्लैड से आए हुए सर टामस रो भी उपस्थित थे। जब जहाँगीर का सोने, चाँदी, अशर्फी और अन्य पदार्थो से तुलवाकर सब गरीबों में बाँट दिया गया, तब अंत में रूपयों का एक ढेर भी लुटवाया गया था, लेकिन सर टामस रो को, अन्य दर्शकों के साथ उसे लूटने में, कुछ शर्म और हिचकिचाहट मालूम हुई थी। सुनते हैं, उसे देखकर स्वयं जहाँगीर ने हुक्म देकर उनके पैंट की दोनों जेबें रूपयों से भरवा दी थी और उसके बाद? उसके बाद तो ये जेबें इस तरह भरती गई कि आज तक भी खाली नहीं हो पाई हैं। इस तरह यह जलसा समाप्त हुआ। यह शाही ढंग से बना हुआ महल सचमुच यहाँ की भव्य, दिव्य इमारतों में से एक है।

इससे भी आगे मांडव की एक सबसे अधिक ऊँची पहाड़ी पर रानी 'रूपमती' का महल स्थित है। आपको यह याद होगा, अपने नृत्य, गायन और रूप में अद्वितीय रानी 'रूप' ने प्रतिदिन नर्मदा-दर्शन और नर्मदा-स्नान की शर्त पर ही महान बलशाली राजा बाजबहादुर से शादी की थी और 'रूप' के चरणों में समर्पित 'बाज' ने उसे पूरा कर दिखाया। सुनते हैं, इस महल की तलहटी में स्थित रेवाकुंड में नर्मदा का जल आता था और इसी ऊँची-सी पहाड़ी पर स्थित इसी महल से नर्मदा-दर्शन तो आज भी कोई यात्री आसानी से कर सकता है। यह इतनी ऊँचाई पर है कि यहाँ से सामने का मैदान ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वायुयान लिया गया चित्र हो। चटाईनुमा खेत,सिलेट पर खींची लकीरों की तरह नदियाँ और बच्चों के खेलने के मिट्टी के घरों- से ग्राम, यह सब देखने की वस्तुएँ होती हैं। एक ओर पीछे विशाल प्राकृतिक दृश्य और दूसरी और मांडव के भग्नावशेष। सब, इन्हीं दो स्थानों के साथ विन्ध्य की सबसे ऊँची चोटी पर ऐतिहासिक रूपमती के किले और मानव-हृदय के इतिहास की दृष्टि से प्रेम की महत्ता सिद्ध करने वाली 'रूप' की कथा के बीच सबसे अलग, सबसे ऊँचे और सबसे सुंदर स्थान पर, मैं आपसे विदा लेता हूँ।

जीवन परिचय

रामनारायण उपाध्याय हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपका जन्म 2 मई 1918 को कालमुखी, मध्य प्रदेश के खण्डवा में हुआ और शिक्षा गाँव में हुई। आपने गाँधी-जीवन से लेखन की प्रेरणा लेकर लेखन आरम्भ किया।

भाषा शैली – सहज, सरल प्रभावशाली गद्य। इनके व्यंग्यों के बारे में अज्ञेय जी ने लिखा है- मधुर व्यंग्य जो जाड़ों के घाम जैसा स्निग्ध, अपने मन से भर जाए और सधा हुआ सूक्ष्म स्पर्श जो भाव को जगाए पर चौंकने न दे।

प्रकाशित कृतियाँ – व्यंग्य, ललित निबन्ध, रूपक, रिपोर्ताज, लघु कथाएँ, संस्मरण आदि विधाओं में 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। हम तो बाबुल तेरे बाग की चिड़िया (लोक साहित्य) निमाड़ का सांस्कृतिक अध्ययन (लोक साहित्य) बक्शीशनामा, धुँधले काँच की दीवार, नाक का सवाल, मुस्कराती फाइलें, गँवई मन और गाँव की याद, दूसरा सूरज आदि व्यंग्य संकलन हैं। जनम-जनम के फेरे (ललित निबन्ध) मृग के छौने (गद्य रूपक) जिनकी छाया भी सुखकर है तथा जिन्हें भूल न सका (संस्मरण) कथाओं की अंतर्कथा, चिट्ठी, मामूली आदमी आदि प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।

NOTES

शब्दार्थ :-

भग्नावशेष	= खण्डहर, टूटे-फूटे भवन,	तरूणियों	= युवतियों,
तख्तनशीन	= सत्तारूढ, पदारूढ,	मर्दानी	= पुरूष की तरह,
तख्त	= सिंहासन		

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मांडव कहाँ स्थित है? उसे किसने बनवाया था?
2. चम्पा-बावड़ी की क्या विशेषता है?
3. जहाज-महल के दोनों ओर कौन-से तालाब हैं?
4. मांडव की इमारतों में सबसे बड़ी इमारत कौन-सी है? उसे किसने बनवाया था?
5. सम्राट अकबर को मांडव में क्या अनुभव हुए थे?
6. 'मांडव हिन्दु-मुस्लिम एकता का प्रतीक है।' कैसे?
7. कौन-सी भावना ने राजकुमार सिद्धार्थ को बुद्ध बना दिया था?
8. मांडव में 'सर टामस रो' की जेबें किसने भरी थीं? उसके बाद तो ये जेबें भरती गई- इसका क्या आशय है?
9. 'मांडव' निबन्ध के लेखक कौन है और वे किसलिए चर्चित हैं?
10. मांडव निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए?
11. पं. रामनारायण उपाध्याय का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. 'माण्डव' पाठ के लेखक हैं-

   i. सरदार पूर्ण सिंह ii. डॉ. देवेन्द्र दीपक iii. रामनारायण उपाध्याय iv. धर्मपाल

2. विन्ध्य की पहाड़ी की सतह से कितनी ऊँची है-

   i. 1979 फुट ii. 2079 फुट iii. 2179 फुट iv. 2279 फुट

3. माण्डव की इमारतों में सबसे बड़ी इमारत कौन सी है -

   i. जहाजमहल ii. हिंडोला महल iii.रूपमती महल iv. जामा मस्जिद

4. 'सर थामस रो' कौन था-

   i. एक अंग्रेज ii. एक जर्मन iii. एक भारतीय iv. एक अमेरिकी

5. प्रतिदिन नर्मदा दर्शन और नर्मदा स्नान की शर्त किसने रखी थी-

   i. रानी पद्मिनी ने ii. रानी रूपिणी ने iii. रानी रूपमती ने iv. रानी नागमती ने

6. 'माण्डव' निबन्ध है -

   i. ऐतिहासिक ii. सांस्कृतिक iii. वैज्ञानिक iv. वैचारिक

7. 'माण्डव' में भोज और पुंज तालाब के बीच में स्थित है -

   i. हिंडोला महल ii. जहाज महल iii. अशरफी महल iv. जल महल

उत्तर :- 1(iii), 2(ii), 3(iv), 4(i), 5(iii), 6(ii), 7(ii)

■ ■ ■

13. हिन्दी भाषा का मानकीकरण

NOTES

हिन्दी हमारी राजभाषा, राष्ट्र होकर एक समर्थ भाषा है। आज हिन्दी विश्वभाषा के रूप में ग्राह्य हो रही है। इसके प्रयोगकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज हिन्दी का साहित्य और भी सम्पन्न होता जा रहा है, किन्तु अभी तक हिन्दी भाषा का मानक स्वरूप स्थिर नहीं हो पाया है। यही कारण है कि उच्चारण, वर्तनी, लेखन, रूपरचना, वाक्यगठन और अर्थ आदि सभी क्षेत्रों में पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, भाषणों एवं बातचीत में अनामक प्रयोग प्राय: मिल जाया करते हैं परन्तु हिन्दी की इन विविधताओं को खत्म करने के उद्देश्य से ही हिन्दी भाषा के मानकीकरण का कार्य प्रारम्भ हुआ।

'मानक भाषा' किसी भाषा के उस रूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्राय: सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा के माध्यम के रूप में यथासाध्य उसी का प्रयोग करने का प्रयत्न करता है।

मानक हिंदी भाषा

'मानक हिन्दी', हिन्दी भाषा का वह रूप है, जो सर्वमान्य, सर्वस्वीकृत और सर्वत्र प्रतिष्ठित हो। मानक हिन्दी भाषा में हिन्दी का रूप स्थिर है। वह रूप समस्त स्थानों पर एक जैसा होता है। शिक्षा, अध्ययन, प्रौद्योगिकी, ज्ञान – विज्ञान उद्योग – व्यापार, व्यवसाय, शासन – प्रशासन साहित्य और संस्कृति में मानक हिन्दी का ही प्रयोग होता है।

हिन्दी में 'मानक' शब्द की रचना अंग्रेजी के 'स्टैण्डर्ड' शब्द का समानार्थी है। 'हिन्दी के अनेक रूपों में मानक हिन्दी भाषा' सर्वस्वीकृत और सर्वमान्य रूप है। मानक हिन्दी भाषा भारत की अधिकृत हिन्दी भाषा है। देश के संचार माध्यामों, वैज्ञानिको, शिक्षा शास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं, प्रतिष्ठित चिंतकों, व्यापारियों व्यवसायियों आदि द्वारा अपने – अपने क्षेत्रों में मानक हिन्दी भाषा का प्रयोग होता है। इसी रूप में अधिकृत अनुवाद तथा संविधान का सर्वमान्य रूप अनुपादित किया गया है।

मानक हिन्दी अथवा मानक भाषा की प्रमुख विशेषताएँ –

1. मानक भाषा के लिए एकरूपता आवश्यक है।
2. मानक भाषा का प्रयोग पठन – पाठन, ज्ञान – विज्ञान, साहित्य – संस्कृति में एक समान होता है। विश्वविद्यालय के विविध संकाय : कला, विधि, वाणिज्य और विज्ञान में इसका अध्यापन, परीक्षा एवं शोध कार्य सरलता, सहजता और गम्भिरता से किया जाता है।
3. मानक हिन्दी को प्रशासन की स्वीकृति प्राप्त है। प्रशासन का समस्त कार्य इसी में होता है।
4. मानक भाषा में मानक शब्दों का प्रयोग होता है।
5. मानक भाषा व्याकरण सम्मत होती है।
6. मानक भाषा का आवश्यकताओं के अनुसार रूप विकसित होता है।
7. मानक भाषा के अन्तर्गत अनेक बोलियाँ होती हैं।
8. सभ्य और सुसंस्कृत लोग इस भाषा का प्रयोग करते हैं।

मानक भाषा की आवश्यकता

मानक भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है और उसे सम्पूर्ण समाज मान्यता देता है। अत: उसे सामाजिक जीवन के अनुरूप बनना पड़ता है। साहित्य और समाज में मानक भाषा की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है।

NOTES

1. मानक भाषा का प्रयोग सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीत होता है। अत: सभी लोग मानक भाषा सीखने का प्रयास करते है।
2. मानक भाषा सारे क्षेत्र को एकता के सूत्र में बाँधती है।
3. मानक भाषा के कारण हम श्रेष्ठ और आधुनिक भाषा का लाभ उठा सकते हैं।
4. मानक भाषा के प्रयोग से देश का प्रशासन सुचारू रीति से चलता है।
5. मानक भाषा में श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों की रचना की जाती है।
6. मानक भाषा से विज्ञान और तकनीकी का लाभ सारे समाज को मिलता है।

आधुनिकीकारण के भाषा पर पड़ने वाले प्रभाव –

1. वैज्ञानिक चेतना के इस युग में दुनिया दिन – प्रतिदिन सिमटती जा रही है। इस कारण विश्व की भाषाएँ एक – दूसरे पर प्रभाव डाल रही है और अपने शब्द – सामर्थ्य, भाषा – सौंदर्य और साहित्यिक विधाओं से एक – दूसरे को आकर्षित कर रही हैं।

2. हिन्दी एक समृद्ध मानक भाषा है। इसमें ग्रहणशीलता अधिक होने के कारण यह अपने देश की अन्य प्रान्तीय भाषाओ के शब्द, वाक्य और बोलने तथा लिखने की शैलियों को तत्काल ग्रहण करती है। इस पर पंजाबी, बंगाली, मराठी और दक्षिण की भाषाओं का प्रभाव पड़ रहा है।

3. हिन्दी मानक भाषा का लचीलापन उसकी आधुनिकता की निशानी है। वह पंजाब में पंजाबी, महाराष्ट्र में मुम्बई और विदेशों में यथा – फिजी, मारीशस आदि में वहाँ के उच्चारण को सहर्ष ग्रहण कर लेती है।

4. वह कहावतों और मुहावरों की दृष्टि से भी आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को स्वीकारती हैं। उसमें अरबी, फारसी और आदि विदेशी भाषाओं की कहावतें – मुहावरे नये रूप में अथवा यथा रूप में पाये जाते हैं।

5. राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से भी हिन्दी में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। वह समय के अनुसार स्वयं को बदल रही है।

6. राजनीतिक और प्रशासनिक प्रक्रियाओं के कारण हिन्दी मानक भाषा समृद्ध हो रही है और नये – नये शब्दों को ग्रहण कर रही है।

7. नवीन वैज्ञानिक टेक्नालॉजी के कारण मानक भाषा हिन्दी में अनेक नये शब्द आ रहे है। दूरदर्शन, फिल्म, और आकाशवाणी के कारण नये – नये शब्द प्रयोग हो रहे है।

8. पत्र – पत्रिकाओं, पुस्तकों के कारण मानक भाषा हिन्दी आज देहातों तक फैल रही है। नवनिर्मित, आगत, नवीन, परिवर्तित, संकर शब्द हिन्दी को समृद्ध कर रहे है।

हिन्दी भाषा का मानकीकरण – परिवर्तनशीलता भाषा का प्रमुख लक्षण है। भाषा में जब परिर्वनशीलता समाप्त हो जाती है, तब वह भाषा भी समाप्त हो जाती है। भाषा के मानकीकरण से उस भाषा का एक 'स्थिर रूप' बनाने का प्रयास किया जाता है। यह 'स्थिर रूप' जड़ नहीं होता – परिस्थिति, परिवेश तथा आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन या परिवर्द्धन होता रहता है। इस विषय में सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल का कथन है– ''मानकीकरण भाषा की एक सहज सामाजिक प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के द्वारा भाषा के प्रचलित अनेक विकल्पों में से एक का चयन अथवा निर्धारण किया जाता है। विकल्प रहित होना ही किसी भाषा की वैज्ञानिकता भी है, किन्तु यह स्थिर प्रक्रिया नहीं है। जब कोई भाषा संक्रमण की प्रक्रिया में रहती है तो उसके स्वरूप का पूर्णत: मानक हो पाना सम्भव नहीं हो पाता। कारण कि उसके नित्य अधुनातन प्रयोगों से विकल्पों की एकाधिक स्थितियाँ निर्मित होती रहती है।'' अत: मानकीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है। जीवन्त भाषा का मानकीकरण कभी पूरा नहीं होता।

मानकीकरण की अनेक पद्धतियाँ एवं सोपान है। भाषा वैज्ञानिक हॉगेन के अनुसार 'चुनाव, संयोजन, प्रयोग और स्वीकृति' मानकीकरण के चार प्रमुख सोपान हैं। इनके मत से 'मानकीकरण' तब शुरू होता है, जब किसी भाषा के विभिन्न रूपों (बोलियों)' में से किसी एक रूप को 'मानक रूप' के लिए चयन कर लिया जाता है। इस चयन के शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक आदि अनेक कारण हो सकते है।

चयन के बाद संबंधित बोली में 'संरचनात्मक ससंजन' और 'प्रयोगात्मकता' का विस्तार प्रारम्भ हो जाता है। इसके कारण वह क्षेत्र विशेष की बोली न रहकर व्यापक क्षेत्र में विस्तार पाती है। ऐसी दशा में उसे सम्पूर्ण भाषा समुदाय की प्रतिष्ठा का मानक स्वीकार कर लिया जाता है। 'न्यू स्तेपनी' नामक भाषाविद् ने भी मानकीकरण के चार सोपान स्वीकार किए हैं– चयन, स्थायित्व, प्रयोग – प्रसार और विभेदीकरण।

भारतीय भाषा वैज्ञानिक डॉ. भोलानाथ तिवारी ने मानकीकरण के सात प्रमुख सोपान माने है – 1. चयन 2. स्वीकरण, 3. प्रयोगण, 4. समन्वयन, 5. आत्मसातन और 6. विस्तारण। 7. प्रयुक्ति मानकीकरण। उनकी मान्यता है कि इन सात सोपानों से भाषा विविधता से हटकर एकरूपता की ओर बढ़ती है। इन सात चरणों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार है :–

1. **चयन** – यह मानकीकरण का प्रथम सोपान है। इसके अन्तर्गत किसी बोली या 'भाषा' का चयन एवं उसकी संरचनात्मक एकरूपता का कार्य होता है। यह चयन प्रक्रिया सहज एवं स्वाभाविक होती है अथवा सायास भी होती है। मानक भाषा रूप के लिए 'खड़ी बोली' का चयन सहज है, क्योंकि यह भारत की राजधानी दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों के अतिरिक्त देश के अन्य क्षेत्रों में भी प्रचलित है। डॉ. भोलानाथ तिवारी का मत है कि 'संश्लेषित भाषा के मूल में प्राय: एक – दो बोलियों का ही प्रमुख आधार होता है।' कभी – कभी बोली या भाषा का चयन सायास भी होता है। इस विषय में इस्राइल देश का उदाहरण है। वहाँ मानक भाषा के रूप में प्राचीन काल की 'क्लासिकी हिब्रू' भाषा का सायास चयन किया गया। कहीं–कहीं एक बोली या भाषा के चयन के स्थान पर समस्त भाषा रूपों का संश्लेषित रूप सायास निर्माण किया जाता है। यूरोप के नार्वे – स्वीडन का उदाहरण प्रत्यक्ष है। वहाँ मानक भाषा के रूप में किसी एक बोली अथवा भाषा के स्थान पर प्रचलित समस्त बोलियों के संश्लेषण के आधार पर नई भाषा का विकास किया गया है।

भाषिक इकाइयों का चयन : भाषा में संरचनात्मक एकरूपता मानकीकरण का प्रथम लक्ष्य है। अत: मानकीकरण के लिए स्वीकृत 'बोली' या 'भाषा' में 'अक्षर' शब्द, 'रूप', 'वाक्य', 'अर्थ' एवं 'वर्तनी' की विविधताओं का निराकरण आवश्यक है। भाषिक इकाइयों के चयन का उद्देश्य भी यही है। उदाहरणार्थ मानक भाषा में 'खड़ी बोली' हिन्दी की स्वीकृति के बाद उसके 'अक्षर', 'शब्द', 'रूप', 'वाक्य', 'अर्थ' एवं वर्तनी की विभिन्नताओं में से एक का चयन कर उसे मानक माना गया। उदहरण के लिए –

(i.) **अक्षर - चयन :** हिन्दी की नागरी लिपि में अ – त्र, झ – भ, ल – ल, ण – रा आदि अक्षरों के दो – दो रूपों में से क्रमश: प्रथम रूप को मानक रूप माना गया है अर्थात् अ, झ, ल, ण आदि मानक रूप हैं।

(ii.) **शब्द – चयन :** एक ही अर्थ के विभिन्न शब्दों में से एक का चयन कर उसे मानक माना गया। जैसे – तोरी, तोरई, नेनुवां, धेवड़ा ये समस्त शब्द एक ही सब्जी के लिए है। इनमें से किसी एक का चयन मानक होगा। पारिभाषिक एवं व्यावसायिक शब्दावली में यह चयन व्यापक स्तर पर होता है।

(iii.) **रूप – चयन :** रूप चयन में लिंग, वचन, कारक आदि बोधक प्रत्यय, उपसर्ग और उससे निर्मित रूपों में विविधता होती है। इसके निराकरण हेतु एक रूप को मानक रूप माना जाता है, जैसे मुझे – मेरे को, तुझे – तेरे को, किया – करा, कीजिए – करिए आदि में प्रथम रूप मानक है।

(iv.) **वाक्य – चयन :** लोक व्यवहार में अनेक वाक्य शैलियों एवं वाक्य रचनाओं का प्रचलन होता है। कुछ में व्याकरण की अवहेलना होती है और कुछ में व्याकरण के अधूरे नियमों को ही अपनाया जाता है। इनमें से मानक वाक्य का चयन किया जाता है। जैसे – मै नहीं जाऊँगा, मैने नहीं जाना, मै नहीं जाने का, मै क्यों – जाने लगा आदि इनमें मानक वाक्य 'मै नहीं जाऊँगा' का चयन उचित है।

(v.) **अर्थ – चयन :** प्राय: एक ही शब्द का विभिन्न भाषा क्षेत्रों में भिन्न – भिन्न अर्थ होता है। जैसे 'कद्दू' शब्द के लिए कहीं 'पेठा', कहीं 'काशीफल' और कही कुम्हड़ा शब्द का प्रयोग होता है। पारिभाषिकता के लिए 'अर्थ – चयन' आवश्यक है।

(vi.) **लिपि – चिन्ह एवं चिन्ह का चयन :** भाषा के मानकीकरण के लिए लिपि चिन्हों के मानकीकरण की भी आवश्यकता होती है। सुप्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डॉ. हरदेव बाहरी का मत है कि भाषा के लिपिकरण और मानकीकरण में गहन संबंध है। लिपिकरण से भाषा में संरचनात्मक एकरूपता आती है। मानक 'खड़ीबोली' के लिए मानक लिपि के रूप में देवनागरी लिपि और विराम चिन्हों के चयन द्वारा निराकरण किया गया है।

वास्तविक रूप में 'चयन' का आधार बहुसंख्यक सामाजिक स्वीकृति, परम्परागत स्वीकृति, शिक्षित समाज की स्वीकृति, सुविधा, शासन – प्रशासन की स्वीकृति आदि स्वीकृतियाँ है। इनके अभाव में चयन की प्रक्रिया सम्भव नहीं है।

(vii.) **स्वीकरण :** 'स्वीकरण' मानकीकरण की प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। चयनित मानक भाषा इकाइयों को व्यापक सामाजिक स्वीकृति 'स्वीकरण' कहलाता है। 'स्वीकरण' का संबंध मानक भाषा के प्रयोजनमूलक रूपों और भाषिक इकाइयाँ से है। कार्यालयी, व्यवसायी, वैज्ञानिक प्रयुक्तियों शब्द – रूपों, आदि का चयन सायास होता है। इस चयन में प्रचलन, परम्परा आदि के विरूद्ध भी प्रयास किए जाते है। 'उच्चारण' एवं 'लेखन' की अपेक्षा प्रयुक्ति पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यहाँ 'स्वीकरण' धीमी गति से होता है। इस प्रक्रिया में प्रथमत: शिक्षित समाज एवं बाद में व्यापक सामाजिक स्वीकृति मिलती है। सामाजिक स्वीकृति के आभाव में भाषा विषमता अथवा बहुरूपता की ओर बढ़ने लगती है।

NOTES

3. **प्रयोगण :** 'स्वीकरण' एवं 'प्रयोगण' एक दूसरे की पूरक क्रियाएँ है। 'स्वीकरण' मानसिक संकल्पना' है, जबकि उसका मूर्त रूप 'प्रयोगण' में उद्‌घाटित होता है। समाज प्रयोग द्वारा ही मानक भाषिक इकाइयों को स्वीकृति प्रदान करता है मात्र सैद्धान्तिक स्वीकृति का भाषा – धरातल पर कोई अर्थ नहीं क्योंकि 'भाषा एक व्यवहार' है। मानक हिन्दी की कार्यालयी प्रयुक्तियों के लिए चयनित पारिभाषिक शब्दावली की सैद्धान्तिक रूप में मान्यता है, किन्तु उनमें से अधिकांश शब्दों को व्यापक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं है।

4. **समन्वय :** मानकीकृत भाषा इकाइयों और सामान्य भाषा में निरन्तर अलगाव बढ़ता रहता है। प्रारम्भ में मानकीकृत इकाइयाँ सहज दिखाई देती हैं। प्रयोगों में इन इकाइयों का परीक्षण होता है। विभिन्न – प्रकृति वाली और असंगत इकाइयाँ अप्रयुक्त होकर स्वत: प्रचलन से बाहर हो जाती है। इसके बाद 'मानक भाषा' का समन्वित एवं सम्यक रूप उभरता है। समन्वय की प्रक्रिया उस भाषा–भाषी समाज की मानसिकता से सम्बद्ध होती है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी के अनेक मानक शब्दों का निर्माण हुआ। प्रयोग की कसौटी पर उनमें से अनेक शब्द लुप्त हो गए। हिन्दी की प्रकृति मूलत: समन्वयवादी रही है। अत: भाषा व्यवहार के मानकीकरण में समन्वय की प्रक्रिया स्वयं प्रेरित रूप में होती है।

5. **आत्मसातन :** भाषा में समन्वय का आधार आत्मसातन की प्रक्रिया है। नवागत तत्त्वों के आत्मसातीकरण से भाषा के ही एक अंग का स्वरूप प्राप्त होता है। इस प्रक्रिया से भाषा की समरूपी प्रकृति में वृद्धि होती है। हिन्दी में तत्सम, देशज, विदेशी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का आत्मसातीकरण के आधार पर मानक रूप हिन्दी की प्रकृति के अनुसार प्राप्त होता है।

6. **विस्तारण :** भाषा मूलत: समरूपी होती है, किन्तु व्यवहार में वह बहुरूपी हो जाती है। मानक भाषा जब अपने क्षेत्र के बाहर विविध विषयों एवं प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होती है, तब उसमें तदनुरूप अनेक भाषा रूप उभरने लगते है। भाषा की सम्पन्नता उसके क्षेत्र एवं विषय के विस्तार पर निर्भर है। मानकभाषा का विस्तार मूलत: क्षेत्रजनित, प्रयुक्तिजनित और शैलीजनित होता है।

7. **प्रयुक्ति मानकीकरण :** मानक भाषा अपने क्षेत्र, प्रयुक्त और शैलीगत विस्तार से विषमरूपी एवं अव्यवस्थित होने लगती है, अत: विभिन्न प्रयुक्तियों के परिप्रेक्ष्य में उसका मानकीकरण आवश्यक हो जाता है। प्रयुक्ति मानकीकरण के पश्चात् ही भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

मानकीकरण के उपादान

भाषा के मानकीकरण के उपादान निम्न प्रकार से है –

1. **व्याकरण** – भाषा के मानकीकरण का प्रथम महत्वपूर्ण उपादान व्याकरण होता है, जिससे भाषा अपना मानक रूप धारण कर लेती हे।

2. **साहित्य** – मानक भाषा की पहचान के लिये उसका साहित्य होना आवश्यक है। साहित्य भाषा के मानक रूप को पुष्ट करता है।

3. **शब्दकोश** – मानक भाषा को समझने के लिए उसका शब्दकोश होना आवश्यक है। शब्दकोश में मानक भाषा का विवेचन एवं विभेद करने वाले शब्दों का संकलन होता है।

4. **भाषा सुधार सम्मेलन** – भाषा को मानकीकरण का रूप प्रदान करने के लिये समय – समय पर भाषा सुधार समिति का गठन किया जाता है और ये समितियाँ मानक भाषा के शब्द वर्ण, विरामचिन्ह आदि का निर्धारण करती हैं। हिन्दी में भाषा सुधार के लिये **कालेलकर समिति** गठित की गई थी।

5. **प्रकाशन** – समाचार – पत्र / पत्रिकाएँ, साहित्य और पाठ्य – पुस्तकें भी भाषा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मानक हिन्दी भाषा की शैलिया

भाषा विज्ञान की दृष्टि से हिन्दी एक मानक भाषा है। क्योंकि किसी भी मानक भाषा का प्रयोग व्याकरणसम्मत होता है तथा वह सर्वमान्य, एकरूप तथा परिनिष्ठित होती है, जो कि हिन्दी भी है। हिन्दी में तीन प्रकार की शैलियों का प्रचलन है।

[A] संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली – हिन्दी और संस्कृत का पारिवारिक रिश्ता है। संस्कृत से क्रमश: प्राकृत, पाली, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा का जन्म हुआ है। इस प्रकार संस्कृत भाषा हिन्दी की दादी या परदादी है। हिन्दी को संस्कृत से विरासत में असंख्य शब्द भण्डार और व्यवस्थित व्याकरण प्राप्त हुआ है। इसी कारण हिन्दी के शैली रूप में संस्कृतनिष्ठ शैली का महत्व है।

संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली की विशेषताएँ –

1. संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली में संस्कृत के तत्सम शब्दों का भरपूर प्रयोग होता है। जयशंकर प्रसाद का साहित्य संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जैसे – दासी (हाथी जोड़कर) – देवी, सायंकाल हो चुका है। वनस्पतियाँ शिथिल होने लगी है। देखिए न, व्योम – विहारी पक्षियों का झुण्ड भी अपने नीड़ो में प्रसन्न कोलाहल से लौट रहा है। क्या भीतर चलने की अभी इच्छा नहीं है?

–ध्रुवस्वामिनी

2. संस्कृतनिष्ठ शैली में हिन्दी का साहित्य लिखा जाता है।
3. इसकी वाक्य रचना जटिल होती है।
4. इसमें संस्कृत में प्रचलित समासों और संधियों को वरीयता दी जाती है।
5. यद्यपि इसमें तत्सम शब्दों के साथ तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों का प्रयोग होता है, लेकिन आग्रह संस्कृत के शब्दों पर अधिक रहता है।
6. संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है।
7. आकाशवाणी और दूरदर्शन में देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है।
8. विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा का माध्यम संस्कृतनिष्ठ हिन्दी शैली ही है।
9. सभा, उत्सव पर्व, अभिनन्दन और धार्मिक-विधान इसी शैली में सम्पन्न होते है।
10. शासकीय राजकाज इसी शैली में चलता है।
11. हिन्दी में नये शब्दों की आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत भाषा से शब्द लिये जाते हैं या नवनिर्मित शब्द बनाये जाते हैं।

[B] मानक हिन्दी की उर्दू शैली – 'उर्दू' तुर्की भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है डेरा या शिविर। सल्तनतकाल में दिल्ली और उसके आसपास क्षेत्रों में मुसलमानों के शिविर हुआ करते थे। वे भारतीयों के पास सामान खरीदने के लिए आते थे। अत: भारतीय दुकानदारों व विदेशी ग्राहकों की आपसी बोलचाल से एक नई भाषा का जन्म हुआ, जो 'जबान-ए-उर्दू' अर्थात् उर्दू की जबान कहलायी। अमीर खुसरो ने हिन्दी और उर्दू को मिलाकर एक नया शब्दकोश तैयार किया । इस प्रकार उर्दू भाषा हिन्दी की एक सरल बोली के रूप में जन्मी, लेकिन फारसी लिपि के प्रयोग के कारण वह दूभर हो गयी। उर्दू को हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलकर बनाया था, लेकिन वह सीमित रूप में स्वीकार की जाने लगी।

NOTES

मानक हिन्दी की उर्दू शैली की प्रमुख विशेषताएँ :-

1. उर्दू का जन्म हिन्दी की कोख से हुआ।

2. उर्दू का व्याकरण हिन्दी भाषा का ही व्याकरण है।

3. उर्दू, हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी सहयोग से बनी और विकसित हुई।

4. उर्दू को फारसी लिपि में लिखे जाने के कारण कालान्तर में यह दूभर हो गयी और उसमें अरबी-फारसी का बाहुल्य हो गया।

5. हिन्दी और उर्दू के महान् साहित्यकारों ने उर्दू में हिन्दी और संस्कृत के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है। अमीर खुसरो और मलिक मोहम्मद जायसी आदि सूफी साहित्यकारों ने तत्कालीन हिन्दी के तत्वों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। समकालीन कवियों में मीर, चकबस्त, फिराक आदि ने संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का नि:संकोच प्रयोग किया है। प्रेमचन्द्र का प्रारम्भ का कथा-साहित्य उर्दू में ही लिखा गया है।

6. अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति के अन्तर्गत यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया था कि हिन्दुओं की हिन्दी और मुसलमानों की उर्दू भाषा है, जिसे स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान अस्वीकृति मिली।

[C] मानक हिन्दी भाषा की 'हिन्दुस्तानी' शैली - हिन्दी और उर्दू के मिले-जुले शब्दों से निर्मित मानक हिन्दी भाषा 'हिन्दुस्तानी' भाषा के नाम से पुकारी जाती है। हिन्दुस्तानी भाषा का नामकरण महात्मा गाँधी ने किया है गाँधीजी भारत को हिन्दु-मुस्लिम संस्कृति से समन्वित राष्ट्र मानते थे। 'हिन्दु-मुस्लिम, भाई-भाई' की तर्ज पर गाँधीजी ने कहा था- 'हिन्दी-उर्दू पास-पास' उनका स्पष्ट मन्तव्य हिन्दुस्तानी से था।

हिन्दुस्तानी शैली की विशेषताएँ :-

1. महात्मा गांधी ने हिन्दी में अधिकांश उर्दू के शब्दों के मिश्रण के कारण मानक हिन्दी भाषा को हिन्दुस्तानी भाषा कहा है।

2. हिन्दुस्तानी का सम्बन्ध हिन्दू और मुसलमान दोनों के धार्मिक संस्कार से न होकर हिन्दुस्तान देश से है।

3. हिन्दुस्तानी शैली के कारण किसी भी देशी-विदेशी का भेदभाव न होकर हम सब इस राष्ट्र के है और हमारे दैनिक जीवन में शब्दों के प्रयोग की स्वतन्त्रता होगी।

4. आज हिन्दुस्तानी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। लेकिन यह प्रयास होना चाहिए, कि नागरी और फारसी लिपि के प्रयोग की स्वतन्त्रता हो।

5. शिक्षा में नागरी और फारसी लिपि को समान महत्व मिले।

6. हिन्दुस्तानी भाषा में लिखा जाने वाला साहित्य आम जनता का होता है, अत: वह सरल होगा और सब लोग उसे आसानी से समझ सकते हैं।

7. हिन्दुस्तानी में हिन्दी के उपन्यासकारों और कहानी-लेखकों ने अनेक रचनाएँ की हैं और उन्हें सफलता भी मिली है।

8. हिन्दुस्तानी में बनी अनेक फिल्में भी सफल रही हैं। गांधीजी द्वारा चलाया गया हिन्दुस्तानी आन्दोलन चाहे राजनीतिक रूप से अपेक्षाकृत सफल नहीं हुआ, लेकिन मानक शैली के रूप में इतिहास में स्थान बनाने में सफल रहा।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मानक भाषा की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. मानक हिन्दी के प्रमुख लक्षण समझाइए।
3. मानकीकरण पर कौन-कौन से प्रभाव होते है?
4. मानक शब्द का क्या अर्थ है? मानक भाषा के लक्षण लिखिए।

5. मानकीकरण के सोपानो को शीर्षकों में लिखिए।
6. मानक हिन्दी की शैलियों को लिखिए।
7. मानक–अमानक हिन्दी में अंतर लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

NOTES

1. निम्नलिखित अमानक शब्दों की वर्तनी में सुधार कीजिए –

   i. आर्शीवाद ii. उचारण iii. दुध iv. अन्तोगत्वा
   v. सौंदर्यता vi. सतकार vii. दुशासन viii. उज्जवल
   ix. निसंदेह x. निगुन

2. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए –

   i. धैर्यता ii. श्रीमति iii. पूज्यनीय iv. उपयोगता

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए –

   i. मेरे को महाविद्यालय जाना है।
   ii. हत्यारे को मृत्युदण्ड की सजा मिलनी चाहिए।
   iii. संभवतः यह निश्चय ही परीक्षा में उत्तीर्ण होगा ।
   iv. कोमल सबसे मधुरतम गाती है।

■ ■ ■

14. भारतीय कृषि

NOTES

कृषि– भूमि या उससे जुड़े स्त्रोतों का उचित प्रयोग मनुष्य द्वारा प्रारम्भिक उद्देश्यों जैसे भोजन, कपड़ा व ईंधन आदि की आपूर्ति के लिए जो क्रियाएँ की जाती हैं, वे कृषि कहलाती हैं, जैसे– अनाज, खाद्यान्न, दलहन–तिलहन, अन्य फसलें, फल फूल का उत्पादन, पशु पालन, मधु मक्खी पालन, रेशम पालन, लाख कीट पालन, मछली पालन आदि।

भारत में कृषि– भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ 70% आबादी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से कृषि जुड़ी है। इस क्षेत्र में लगातार बढ़ती हुई कृषि पैदावार द्वारा भारत कृषि प्रधान देश होने का दावा स्पष्ट करते हुए विश्व में कृषि विकास के क्षेत्र में प्रमुख स्थान बना चुका है, फिर भी राष्ट्रीय आय का लगभग 26 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त हो पता है, जो 1950 में 52 प्रतिशत था।

कृषि का महत्व

1. **रोजगार का प्रमुख स्त्रोत**– भारत जैसे अर्द्ध–विकसित देश में जहाँ पर कि पूँजी की कमी की वजह से कृषि–क्षेत्र का धीमा विकास होता है और जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होती है, वहाँ कृषि ही रोजगार का प्रमुख स्त्रोत होता है। भारतीय कृषि 52% कार्यशील जनसंख्या को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने का स्त्रोत है। इसके अतिरिक्त, अन्य बहुत–से लोग पदार्थों के व्यापार, परिवहन आदि में लगकर अपनी आजीविका चलाते है। इसलिए भारतीय कृषि देश के लोगों के लिए जीवन–निर्वाह का सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

2. **राष्ट्रीय आय में योगदान**– कृषि क्षेत्र भारत की राष्ट्रीय आय का आज भी एक प्रमुख स्त्रोत है।

3. **औद्योगीकरण का आधार**– भारत जैसे अर्द्ध–विकसित देश में आर्थिक विकास की प्रारम्भिक अवस्था में कृषि का औद्योगिक विकास में कई कारणों से महत्वपूर्ण योगदान होता है। कृषि से अनेक उद्योगो को **कच्चा माल**– कपास, जूट, गन्ना, तिलहन, रबड़, अनाज आदि प्राप्त होता है।

4. **आर्थिक विकास का आधार**– भारत की कृषि, देश के आर्थिक विकास का आधार है। इसका कारण यह है कि एक कृषि क्षेत्र के विकास से अन्य क्षेत्रों के आर्थिक के लिए पूँजी प्राप्त होती है।

5. **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्व**– भारत के विदेशी व्यापार का अधिकांश भाग कृषि से जुड़ा हुआ है।

6. **खाद्य सामग्री की पूर्ति**– कृषि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना है। भारत में इन खाद्यान्नों की आपूर्ति कृषि द्वारा ही होती है। यद्यपि अब भारत खाद्यान्नों की आपूर्ति में आत्म–निर्भर हो गया है।

7. **राजस्व में योगदान**– प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये का राजस्व कृषि से प्राप्त होता है। इसके अलावा कृषि आयकर तथा कृषि से निर्मित वस्तुओं के निर्यात पर 'निर्यात कर' से भी सरकार को आय प्राप्त होती है।

8. **पूँजी निर्माण**– हमारे देश की अधिकतर पूँजी कृषि में लगी हुई है। स्थायी पूँजी की दृष्टि से खेतों का स्थान देश में सबसे ऊँचा है। देश की करोड़ों रूपये की पूँजी सिंचाई के साधनों, पशुओं, खेती के औजारों, ट्रेक्टरों तथा अन्य प्रकार की कृषि मशीनों, गोदामों आदि में लगी हुई है। कृषि क्षेत्र का मानवीय पूँजी (Human Capital) के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान है। इस क्षेत्र के द्वारा श्रमिकों को उचित भोजन प्राप्त होता है।

9. **क्रान्तियों का इन्द्रधनुष**– भारतीय कृषि में क्रान्तियों का इन्द्रधनुष दृष्टिगोचर हो रहा है, जैसे– कृषि के खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि 'हरित क्रान्ति', तिलहन में 'पीली क्रान्ति', मत्स्य पालन में 'नीली क्रान्ति' उर्वरकों की 'भूरी क्रान्ति', तथा दूध में 'श्वेत क्रान्ति' प्राप्त हुई है।

10. सामाजिक तथा राजनीतिक महत्व (Social and Political singnificance) – कृषि के विकास में सामाजिक तथा राजनीतिक महत्व भी बहुत अधिक है। देश के लगभग तीन-चौथाई मतदाता गाँवों में रहते है। इसलिए विभिन्न राजनीतिक दल कृषि के विकास द्वारा उनकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते है।

भारत में कृषि विकास

प्रथम चरण (1950-68 तक) :- जिसे 'पूर्व-हरित क्रांति युग' (Pre-Greem Revolution Era) कहा गया, जिसकी विशेषताएँ – कम पूँजी निवेश एवं कम उत्पादकता तकनीक (Low input & low productivity) वाली थीं, जब संसार की जनसंख्या कम (1.7 बिलियन मानव – शताब्दी के पहले दशक में)एवं उसके लिए आवश्यक भोजन जुटाने के लिए पर्याप्त जमीन थी और उत्पादन में वृद्धि कोई लक्ष्य नहीं था। अत: आर्थिक टिकाऊपन (Economic sus-tainability) मुख्य उद्देश्य था, क्योकि कम बाजार, बाजार में अधिकतम उत्पादन एवं कम मूल्य थे और उस समय खेती करने के लिए किसान का मिलना मुश्किल था।

द्वितीय चरण (1968-88 तक)– इसे 'हरित क्रांति युग' (Green Revolution Era) बोला गया। वैसे देश की कृषि में 1965 से ही अच्छे आसार दिखाई देने लगे थे, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में 1940 के दशक में मक्का के अंतर्गत विकास शुरू हुआ और संसार में अन्य फसलों के साथ फैल गया। भारत में यह क्रांति गेहूँ व धान के अंतर्गत 1960 के दशक के मध्य-अंत में दिखाई दी। इसकी विशेषताएँ थीं – उच्च तकनीक, अधिक पूँजी निवेश एवं अधिक कृषि उत्पादकता। भूमि सीमित होती गई, लेकिन उत्पादकता बढ़ी और बढ़ती विश्व मानव जनसंख्या (जो लगभग 5 बिलियन पहुँच गई) को भोजन देना मुख्य मुद्दा बना।

तृतीय चरण (1988-99 तक) – इसे 'उत्तरार्द्ध हरित क्रांति' (Post Green Revolution) युग कहा गया। अधिक पूँजी निवेश एवं उच्च उत्पादकता का कृषि में टिकाऊ (Sustainability of high input & high productivity) होना, अब मुख्य मुद्दा है, लेकिन विकसित संसार में यह एक गम्भीर प्रश्न है जिसके मुख्य कारक रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से हैं जिसने पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ा है। दूसरे-प्राकृतिक स्रोत्र कब तक उत्पादकता स्तर को बढ़ाए रख सकते है और यह बढ़ी हुई उच्च उत्पादकता क्या स्थिर (टिकाऊ) बनी रह सकती है जबकि दूसरी ओर विकासशील देशों में अधिक जनसंख्या दबाव की स्थिति है अर्थात् सघन पद्धतियों ने भूमि की उर्वरा शक्ति को कमजोर कर दिया है और फसलों की प्रति हेक्टेयर उपज में ठहराव-सा आ गया है। फसलों की उपज के प्रति उर्वरकों का प्रभाव घटा है। इसके मुख्य कारण है – बढ़ती जनसंख्या, घटती जोत आदि।

भारतीय कृषि का वर्तमान परिदृश्य:- कृषि क्षेत्र में आज हमारी श्रमशक्ति का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा आजीविका प्राप्त कर रहा है। सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 26 प्रतिशत कृषि से प्राप्त होता है। देश के कुल निर्यात में इस क्षेत्र का योगदान 18 प्रतिशत है। अनाज की उपलब्धता प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 528.77 ग्राम अर्थात् 529 ग्राम तक पहुँच गई है (1996-97), जो आठ के दशक में मात्र 395 ग्राम थी। वर्ष 1949-50 से 1999 के बीच उत्पादन में 2.67 प्रतिशत वार्षिक की चक्रवृद्धि दर से बढ़ोत्तरी हुई है। फसल-चक्रों में सोयाबीन, ग्रीष्मकालीन मूँग व मूँगफली तथा सूरजमुखी आदि का महत्त्व धीरे-धीरे बढ़ रहा है, जिसमें मध्यप्रदेश मे सोयाबीन की खेती ने काफी लोकप्रियता प्राप्त की हैं। कृषि उत्पादन के सूचकांक में (1981-82=100के आधार वर्ष 1994-95 में बढ़ोत्तरी 4.9% तक पहुँच गई, लेकिन 1995-96 में मामूली गिरावट (0.4%)आई।

खाद्यान्न उत्पादन का अब तक का रिकॉर्ड 1996-97 में 199.3 मिलियन टन दर्ज किया गया, जो 1999-2000 में 209 मिलियन टन मिला, जो 2000-2001 में पुन: घटकर 199 मिलियन टन पर पहुँचा। तिलहनों में मूँगफली का प्रथम स्थान है। देश में जिसका उत्पादन 1998-99 में 9.0 मिलियन टन मिला। इस प्रकार 1950-51 से 1998-99 तक तिलहनों के उत्पादन में वार्षिक वृद्धि दर 3.50% रही। देश में दलहन उत्पादक प्रमुख राज्य चार है-म.प्र., उ.प्र., महाराष्ट्र एवं राजस्थान, जबकि पंजाब, हरियाणा, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल में मात्र 6% उत्पादन होता है। गन्ना उत्पादन में भारी प्रगति है। वर्ष 1998-99 में कुल उत्पादन 571 से 2887 लाख टन (वृद्धि दर=3.5% वार्षिक चक्रवृद्धि) हो गया। भारत में सर्वाधिक गन्ना उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है, लेकिन तमिलनाडु में गन्ने की प्रति हेक्टेयर उपज अधिकतम है। सन् 1998-99 में चीनी का उत्पादन 15.0 मिलियन टन था। फल एंव सब्जियों के उत्पादन में भी वृद्धि हो रही है। 1998-97 में फल उत्पादन 46.97 मिलियन टन (10.3% वार्षिक वृद्धि), सब्जी 80.80 मिलियन टन (9.58%) हुई।

भारतीय कृषि की विशेषताएँ

NOTES

भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. **आजीविका का प्रमुख साधन**- हमारे देश में कार्यशील जनसंख्या का लगभग 65% भाग कृषि से आजीविका प्राप्त करता है। और जनसख्याँ का 70% भाग गाँवों में रहता है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है।

2. **अदृश्य बेरोजगारी**- भारतीय कृषि से किसानों एवं कृषि श्रमिकों को वर्ष भर रोजगार नहीं मिल पाता। इसी कारण कृषि क्षेत्र में मौसमी या अदृश्य बेरोजगारी देखने को मिलती है।

3. **श्रम-प्रधान कृषि**- हमारे देश की कृषि पूँजी-प्रधान न होकर श्रम-प्राधन है। इसी कारण खेती में कृषि के आधुनिक तरीकों एवं कृषि औजारों का उपयोग कम होता है।

4. **कृषि की मानसून पर अत्यधिक निर्भरता**- भारतीय कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है। दस पंचवर्षीय योजनाओं के पूरा होने के बाद भी मानसून पर निर्भरता में कोई विशेष कमी नहीं आयी है। देश में सिंचाई के साधन पर्याप्त मात्रा में मौजूद नहीं है।

5. **जोतों का छोटा आकार**- भारतीय कृषि की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ जोतों का आकार बहुत छोटा है। यहाँ की 72% जोतें 2 हेक्टेयर या इससे छोटी हैं। जोतों का आकार अनार्थिक या छोटा होने से विकसित देशों की तुलना में हमारे यहाँ कृषि की उत्पादकता का स्तर भी काफी निम्न है।

6. **निम्न उत्पादकता**- भारतीय कृषि में प्रति एकड़ व प्रति व्यक्ति उत्पादन अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। एक अनुमान के अनुसार भारत में एक हेक्टेयर में 2,743 किलो गेहूँ पैदा होता है, जबकि ब्रिटेन में 5,653 किलो पैदा होता है।

7. **प्राचीन एवं दोषपूर्ण कृषि पद्धति**- इतने वर्षों में नियोजित विकास के बाद अभी भी देश में कृषि परम्परागत तरीकों से की जाती है जिसमें लकड़ी के हल व बक्खर की प्रमुखता है। परम्परागत तरीकों से खेती होने के कारण देश में प्रति एकड़ व प्रति व्यक्ति उत्पादन कम है।

8. **खाद्यान्न फसलों की प्रचुरता**- कृषि क्षेत्र में हमारे देश में मुख्यत: खाद्यान्नों का उत्पादन किया जाता है। जहाँ जितनी भूमि काम में लायी जाती है, उसका लगभग 81.5% भाग खाद्यान्न फसलों में व शेष 18.5% भाग व्यापारिक फसलों के काम में आता है।

भारतीय कृषि की कम उत्पादकता के कारण

कृषि की उत्पादकता के अन्तर्राष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि भारतीय कृषि की उत्पादन-शीलता बहुत कम है। इसके लिए उत्तरदायी कारणों को हम निम्न रूप में मुख्यत: विभाजित कर सकते है।

1. **वर्षा की अनिश्चितता**- भारतीय कृषि प्रकृति पर निर्भर है जिसमें विशेष रूप से वर्षा पर, परन्तु वर्षा निश्चित नहीं है। कभी न्यून और कभी अधिक होती है। इसी कारण भारतीय कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है।

2. **भूमि-क्षरण**- शताब्दियों से निरन्तर प्रयोग में आने के कारण भारतीय कृषि-भूमि का ह्रास हो गया है। निरन्तर क्षरण से उर्वरा-शक्ति का ह्रास हुआ है। तथा भारतीय भूमि की उत्पादकता बहुत कम हो गयी है।

3. **प्राकृतिक प्रकोप**- शीत ऋतु में कई बार शीत लहर हमारी फसलों को हानि पहुँचा देती है। इसके अतिरिक्त बाढ़, आँधी तथा कीड़े-मकोड़े आदि भी कृषि को नुकसान पहुँचाते हैं। इन सभी बाधाओं का कृषि की उत्पादकता एवं विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

4. **उत्पादन की पुरानी तकनीक** (Old Techniques of Produciton) - आज भी अधिकांश किसान उत्पादन की पुरानी तकनीक-लकड़ी के हल व खुरपी के हल व काम मे ला रहे हैं, जबकि बाजार में आधुनिक इस्पात के हल, ट्रैक्टर, थ्रेशिंग मशीन, पानी के लिए डीजल पम्प आदि उपलब्ध हैं।

5. **उत्तम बीज का अभाव**(Shortage of Improved seeds)- भारतीय किसान फसलों की बुआई के समय अच्छे बीज की ओर विशेष ध्यान नहीं देता है। प्रथम, वह अच्छा-बुरा सब प्रकार का बीज बो देता है। दूसरे, अच्छे लेकर बीज भी उपलब्ध नहीं होते। वह प्राय: महाजन से बीज खरीदता है जो उससे मूल्य अधिक लेकर भी खराब बीज देता है। तीसरे, भारत में अच्छे बीजों का अभाव है और किसान को उसका ज्ञान भी नहीं है। इस कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादकता का स्तर निम्न रहता है।

6. **अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ** (Inadequacy of Irrigation Facilites)- भारतीय कृषि अधिकांशत: मानसून पर ही निर्भर है और मानसून अक्सर अनियमित रहता है। अत: ऐसी स्थिति में सिंचाई के साधनों की अत्याधिक आवश्यकता पड़ती है किन्तु दुर्भाग्य है कि देश में आज भी सिंचाई के साधनों का घोर अभाव बना हुआ है। सिंचाई के साधनों के आधुनिक ढंग से कृषि कार्य करना अत्यधिक कठिन होता है। परिणामस्वरूप भारतीय कृषि की दशा सुधर नहीं सकी है।

7. **फसलों की असुरक्षा** (Insecurity of Crops) - भारत में निम्न उत्पादकता का एक कारण फसलों की कीड़े-मकोड़े व रोगों से सुरक्षा न कर पाना भी है। राष्ट्रीय व्यावहारिक आर्थिक शोध सस्थान के अनुसार, भारत में कुल खाद्यान्नों का 16 प्रतिशत भाग इन कीड़ों व रोगों से नष्ट हो जाता है।

8. **खाद की कमी**- खेती की उत्पादकता बढ़ाने के लिए खाद का बहुत अधिक महत्व है परन्तु भारत के किसान उचित मात्रा में खाद का उपयोग नहीं करते हैं। गोबर की खाद जो बहुत उपयोगी व सस्ती है, उसका 60 प्रतिशत भाग जला दिया जाता है। रासायनिक खाद मँहगी होती है और काफी मात्रा में विदेशों से मँगवानी पड़ती है। इसलिए रासायनिक खाद पूरी मात्रा में नही मिलती है।

9. **भारतीय कृषकों की ऋणग्रस्तता**- भारतीय कृषक ऋण के बोझ से लदे हैं। महाजनों की शोषण नीति के कारण ''भारतीय कृषक ऋण में जन्म लेता है, ऋण में जीवन व्यतीत करता है और ऋण में ही प्राण त्याग देता है।'' अत: भारतीय कृषकों के सामने वित्तीय कठिनाइयाँ हैं और वे भूमि सुधार आदि में पर्याप्त पूँजी लगाने में असमर्थ हैं। इसके कारण भी हमारी कृषि की उपज कम है।

10. **पूँजी का अभाव**(Shortage of Capital)- भारत अर्द्ध-विकसित देश है जहाँ प्रति व्यक्ति आय कम है तथा भारतीय कृषि में प्रति हेक्टेयर व प्रति व्यक्ति उत्पादन अपेक्षाकृत कम है जिसकी वजह से भारतीय कृषक के पास पर्याप्त मात्रा में बचत नहीं हो पाती। बचत कम होने पर कृषक, कृषि क्षेत्र में उत्तम साधनों का प्रयोग करने में असमर्थ रहता है। इसी कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता निम्न है तथा पिछड़ी हुई अवस्था में बनी हुई है।

कृषि उत्पादकता में वृद्धि के सुझाव

देश में आर्थिक विकास को गति प्रदान करने के लिए कृषि विकास अनिवार्य है। कृषि विकास के लिए कृषि उत्पादकता बढ़ाना आवश्यक है। इस हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते है-

1. **सिंचाई सुविधाओं का विकास एवं विस्तार**- चूँकि भारतीय कृषि अधिकांश रूप से मानसून पर आधारित है। अत: सिंचाई के साधनों को बढ़ाने का प्रयत्न करना आवश्यक है। उनमें सिंचाई की छोटी, बड़ी एवं मध्यम तीनों ही श्रेणियों के साधनों का विकास किया जाना चाहिए और इसका पूरे देश में आवश्यकतानुसार विस्तार एवं विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए।

2. **साख की सुविधाओं में सुधार**- कृषि क्षेत्र में नवीन तकनीक को प्रोत्साहन देने के लिए किसान को पर्याप्त साख-सुविधाएँ उचित शर्तों पर उपलब्ध होनी चाहिए जिससे वह आधुनिक औजार व रासायनिक खाद आदि क्रय कर सके।

3. **जनसंख्या का दबाव कम किया जाये**- कृषि पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना की जाए, ताकि ग्रामों में कृषि कार्य पर लगा हुआ जनसंख्या का कुछ हिस्सा इन उद्योगों में रोजगार प्राप्त कर सके। ग्रामों में उद्योगों में रोजगार प्राप्त कर सकें। ग्रामों में उद्योगों की स्थापना के लिए पर्याप्त विद्युत व्यवस्था करना भी होगा।

4. **कृषि विपणन-व्यवस्था का विकास**- कृषकों को उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उचित मूल्य प्राप्त होना आवश्यक है, तभी उनकी में सुधार हो सकता है और कृषि उत्पादन बढ़ाने में उन्हें प्रोत्साहन मिल सकता है। इसके लिए अधिकाधिक कृषि विपणन समितियाँ एवं मण्डियाँ स्थापित की जानी चाहिए।

NOTES

5. **श्रेष्ठकर तकनीकों और उन्नत औजारों को अपनाना**– उत्पादकता में वृद्धि के लिए श्रेष्ठतर तकनीकों और उन्नत औजारों को अपनाया जाना जरूरी है परन्तु भारत में किसानों का सकुंचित दृष्टिकोण, निर्धनता व अशिक्षा आदि के कारण उन्नत और आधुनिक फार्म मशीनरी का अधिक उपयोग नही हो रहा है फिर भी विगत वर्षो में कुछ उद्यमी कृषकों ने इस दिशा में प्रगति की है।

6. **उन्नत बीजों का उपयोग**– उन्नत बीजों के द्वारा उत्पादन को बहुत अधिक बढ़ाया जा सकता है। हर्ष की बात यह है कि भारत में कृषि विभाग, इण्डियन कौसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च, नेशनल सीड कॉर्पोरेशन आदि अनेक संस्थाओं ने उन्नत बीजों के विकास और उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत प्रयत्न किये है। राष्ट्रीय बीज नीति, 2002 के तहत उन्नत बीजों के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

7. **उर्वरक उपभोग–स्तर को बढ़ाना**– भूमि की उर्वरा–शक्ति को बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद का एक महत्वपूर्ण स्थान है। उर्वरक के उपभोग–स्तर के बढ़ जाने से कृषि उत्पादन और उत्पादकता की दर बढ़ेगी।

8. **भूमि सुधार**– कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए एक सुझाव दिया जाता है कि भूमि सुधार कानूनों को प्रभावकारी ढंग से लागू किया जाना चाहिए जिससे कि वास्तविक कृषक भूमि का मालिक बन सके तथा भूमि की जोत का आकार भी बहुत छोटा न हो सके।

9. **मिश्रित खेती**– भारत में मिश्रित खेती होनी चाहिए। फसलों का उगाना, पशुपालन, सब्जियाँ व फल उगाना साथ–साथ होना चाहिए। डेरी फार्मिंग के काम को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। इसमें एक तो पशुओं की दशा सुधरेगी। दूसरे, किसनों को अधिक पौष्टिक भोजन मिलेगा जिससे वे अधिक बलवान होंगे।

10. **कृषि विषणन में सुधार**– कृषि क्रय–विक्रय में सुधार किया जाना चाहिए जिससे किसानों को अपनी फसल का पूरा धन मिल सके। इसके लिए नियन्त्रित मण्डियाँ खोली जानी चाहिए। गोदाम बनाये जाने चाहिए। जिसमें किसान अपनी फसल रख सकें। यातायात के साधनों का विकास किया जाना चाहिए।

11. **पशुओं की स्थिति में सुधार**– पशु–धन कृषि की महत्वपूर्ण पूँजी है किन्तु हमारे देश में इसकी स्थिति बड़ी दयनीय है। अत: इसमें सुधार करने का प्रयत्न हमें इनके लिए चारा, चिकित्सा एवं नस्ल–सुधार की व्यवस्था करके करना चाहिए।

12. **किसानों के शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था**– कृषि की नई व आधुनिक प्रणालियों से हमारे किसान अनभिज्ञ हैं। कृषि की नई रीतियों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। योग्य एवं शिक्षित भारतीय कृषकों को विदेशों में प्रशिक्षण हेतु भेजा जाना चाहिए।

13. **कृषि–अनुसन्धान विस्तार**– भारतीय कृषि प्रणाली में अनेक प्रकार के अनुसन्धानों का पर्याप्त क्षेत्र है। अत: इसमें अनुसन्धान का विस्तार किया जाना चाहिए और किये गये अनुसन्धानों को व्यावहारिक रूप से उपयोगी बनाया जाना चाहिए। इससे कृषि में सर्वांगीण सुधार हो सकता है। इस दिशा में भी प्रयत्न तीव्र गति से किया जा रहा है। कई कृषि अनुसन्धान स्थापित किये जा चुके है।

नई राष्ट्रीय कृषि नीति, 2000

(New National Agricultural Policy,2000)

उद्देश्य(Object)– केन्द्र सरकार ने नई राष्ट्रीय कृषि नीति की घोषणा 28 जुलाई, 2000 को की है। नई राष्ट्रीय कृषि नीति के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1. कृषि क्षेत्र में प्रतिवर्ष 4% से अधिक वृद्धि दर प्राप्त करना।
2. वृद्धि, जो संसाधनों के कुशल उपयोग पर आधारित है तथा अपनी मृदा, जल और जैव विविधता का संरक्षण करना।
3. साम्य वृद्धि अर्थात् वृद्धि जो क्षेत्र–दर–क्षेत्र तथा किसान–दर–किसान व्याप्त है।
4. ऐसी वृद्धि जो माँग के अनुसार हो और स्वदेशी बाजारों की माँग को पूरा करे तथा आर्थिक उदारीकरण और विश्वव्यापीकरण से उत्पन्न चुनौतियों की स्थिति में कृषि उत्पादों के निर्यात से अधिकतम

लाभ मिले सके।

5. वृद्धि जो प्रोद्योगिकीय, पर्यावरणीय तथा वित्तीय रूप से दीर्घकालीन हो।

विशेषताएँ (Features) नई राष्ट्रीय कृषि नीति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है–

1. कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए नई तकनीक का उपयोग करना।
2. कृषि वस्तुओ को वायदा बाजारों (Future Markets) के क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से लाना।
3. देश की निर्यात आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कृषि उत्पादों का समर्थन मूल्य निश्चित करना, बन्धक वित्तीयन (Pledge Financing) को बढ़ावा देना।
4. जोखिम प्रबन्धन एवं विकास प्रक्रिया को तेज करने के लिए सूचना प्रौधोगिकी का उपयोग किया जाना।
5. कृषि क्षेत्र को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्द्धात्मक बनाने के लिए विज्ञान एवं प्रौधोगिकी संस्थान का उपयोग करना।
6. विश्व व्यापार संगठन (WTO) के दुष्प्रभाव से कृषकों के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक उपाय करना।
7. व्यापार सम्बद्ध बौद्धिक सम्पदा अधिकार (TRIPS) समझौतों के अन्तर्गत भारत की बाध्यता के अनुरूप एक कानून बनाकर शोध एवं नई प्रजातियों के प्रजनन द्वारा विशेष रूप से निजी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के पादपों का संरक्षण करना।
8. भूमि सुधार के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में ग्रामीण गरीबों को अधिकाधिक समृद्ध करना।
9. प्रौधोगिकी तथा संसाधनों का प्रभावी प्रयोग सुनिश्चित करना।
10. कृषकों को उनकी समग्र आवश्यकताओं के अनुरूप साख मुहैया कराना।
11. मौसमी तथा कीमतगत उच्चावचनों से कृषकों को संरक्षण प्रदान करना।

राष्ट्रीय कृषक नीति, 2007
(National Policy For Farmers, 2007)

भारत सरकार ने राष्ट्रीय कृषक आयोग की सिफारिशों को मानते हुए और राज्य सरकारों से परामर्श करने के बाद राष्ट्रीय कृषक नीति को मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय कृषक नीति में अन्य बातों के साथ-साथ फार्म क्षेत्र के विकास के लिए सम्पूर्ण पहुँच प्रदान कर दी है। इसकी कवरेज में व्यापक क्षेत्र शामिल हैं जैसे–

1. किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए उत्पादन व उत्पादकता में सुधार।
2. कृषक परिवारों की परिसम्पत्तियों (Assets) में सुधार।
3. जल का कुशलतापूर्वक उपयोग।
4. नई प्रौधोगिकियों का उपयोग।
5. राष्ट्रीय कृषि जैव सुरक्षा प्रणाली का समन्वय।
6. लघु कृषि को बढ़ावा।
7. महिलाएँ जो पूरे दिन खेतों और जंगलों में काम करती है, उनके लिए उचित सहायता सेवाएँ।
8. किसानों को उचित दर पर ऋण उपलब्ध कराना।
9. फार्म, स्कूल की स्थापना।
10. कृषकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना।
11. पूरे देश में न्यूनतम समर्थन मूल्य कार्य प्रणाली लागू करना।

12. भोजन सुरक्षा का विस्तार किया जाना।

नीति के कार्यन्वयन को सुचारू रूप से जारी रखने के लिए एक अन्तर-मंत्रालययी समिति का गठन किया है।

NOTES

राष्ट्रीय कृषक आयोग एवं नई कृषि नीति

(National Farmers Commission and New Agriculture Policy)

किसानों और कृषि क्षेत्र के लिए कार्य योजना का सुक्षाव देने के लिए वर्ष 2004 में डॉ. एम.एस.स्वामीनाथन की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय कृषक आयोग ने दिसम्बर 2004, अगस्त 2005, दिसम्बर 2005, अप्रैल 2006 तथा अक्टूबर 2006 में अपनी चार अंतरिम रिपोर्ट प्रस्तुत की है।

चौथी रिपोर्ट केन्द्रीय कृषि मन्त्री शरद पवार ने 13 अप्रैल, 2006 को प्रस्तुत की थी जिसमें किसानों के लिए एक विस्तुत नीति के निर्धारण की संस्तुति की गई है।

संक्षेप में नई कृषि नीति के लिए निम्न बातों पर जोर दिया गया है-

1. सभी कृषिगत उपजों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य।
2. मूल्यों में उतार-चढ़ाव से किसानों की सुरक्षा हेतु मार्केट रिस्क स्टेबलाइजेशन फण्ड का सुझाव।
3. सूखे एवं वर्षा सम्बन्धी जोखिमों से बचाव हेतु एग्रीकल्चर रिस्क फण्ड का सुझाव।
4. सभी राज्यों में राज्यस्तरीय किसान आयोग के गठन का सुझाव।
5. किसानों के लिए बीमा योजनाओं का विस्तार।
6. कृषि सम्बन्धी मामलों में स्थानीय पंचायतों के अधिकारों में वृद्धि।
7. राज्य सरकारों द्वारा कृषि हेतु अधिक संसाधनों के आवंटन की संस्तुति।
8. केन्द्र एवं राज्यों में कृषि मन्त्रालयों का नाम बदलकर कृषि एवं कृषक कल्याण मन्त्रालय करने का सुझाव।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. कृषि की परिभाषा लिखिए।
2. भारत को कृषि-प्रधान देश क्यों कहा जाता है?
3. देश की जनसंख्या कृषि को कैसे प्रभावित कर रही हैं?
4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए-

   (i) फसल चक्र, (ii) हरित क्रान्ति।
5. भारत में कृषि के विकास पर जानकारी प्रस्तुत कीजिए।
6. भारतीय कृषि की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालिए।
7. भारतीय कृषि के कम उत्पादकता के कारणों को लिखिए।
8. कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु सुझाव दीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. सभी सभ्यताओं की जननी कहा गया है–

i. उधोग को　　ii. कृषि को

iii. बागवानी को　　iv. जंगल को

2. 'फसल चक्र' से भूमि की उर्वरा शक्ति........

i. बढ़ती है　　ii. कम होती है

iii. बनी रहती है　　iv. बहुत अधिक होती है

3. देश को कृषि (शस्य)पारिस्थितिकी दशाओं के आधार पर कितने वर्गों में बाँटा गया है

i. 20 वर्ग　　ii. 30 वर्ग

iii. 24 वर्ग　　iv. 28 वर्ग

4. भारत में सर्वाधिक गन्ना उत्पादन होता है।

i. मध्यप्रदेश　　ii. बिहार

iii. पश्चिम बंगाल　　iv. उत्तरप्रदेश

5. भारत में कृषि उत्पादकता का स्तर निम्न है –

i. प्रति श्रमिक उत्पादकता के आधार पर

ii. प्रति हैक्टेयर उत्पादन की मात्रा के आधार पर

iii. उपर्युक्त दोनों ही आधारों पर

iv. उपर्युक्त में से कोई नही

6. भारत में कृषि के पिछड़ेपन का कारण है –

i. जोतों का अनार्थिक आकार　　ii. कृषक की ऋणग्रस्तता

iii. उचित कृषि मूल्य नीति का अभाव　　iv. उपर्युक्त सभी।

उत्तर :– 1(ii), 2(iii), 3(i), 4(iv), 5(iii), 6(iv)

■ ■ ■

15. जीवन : उद्‌भव और विकास

NOTES

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति अथवा सृष्टि की रचना आज भी अनबूझ पहेली है। उपलब्ध साहित्य, वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर मनुष्य ने इसे जानने का प्रयास भी किया और कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त की। वैज्ञानिकों ने कई शोध के माध्यम से इस तथ्य को प्रमाणित किया कि पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ लगभग 15 से 20 लाख वर्ष पूर्व हुआ था किन्तु अब भी इस विषय में एकमतता दिखाई नही देती। यही कारण है कि आज भी शोधकर्ता इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने में लगे हुए है कि पृथ्वी पर जीवन का उद्‌भव कब और कैसे हुआ तथा यह जैव विविधता कैसे निर्मित हुई, जनमानस के लिए यह प्रश्न सदैव जिज्ञासा का विषय रहा है। विभिन्न दार्शनिकों तथा वैज्ञानिकों ने मानव की इस जिज्ञासा को शान्त करने के लिए कई प्रयत्न किये है।

भारतीय वेदों और पुराणों के अनुसार ब्रह्मा को सृष्टि का रचयिता माना जाता है। प्राचीन यूनानी धारणा के अनुसार जीवन बाह्य अन्तरिक्ष से दृढ़ बीजाणुओं के रूप में पृथ्वी पर आया। ताप और नमी की अनुकूल परिस्थितियों में इन बीजाणुओं ने प्रथम जीवन को जन्म दिया। यह एक प्राचीन मान्यता यह है कि जीवन रूपों में ईश्वरीय आदेश से एकाएक उत्पन्न हो गया। एक साथ विभिन्न रूपों में ही प्रकट हुआ तथा बिना परिवर्तन के निरंतर उस काल तक चलता रहेगा, जब तक यह संसार समाप्त नहीं हो जाता।

प्राचीन मिस्त्र में यह धारणा प्रचलित थी कि जीवन जड़ पदार्थो से स्वत: उत्पन्न हो गया। **वान हेल्मांट** का मानना था कि पसीने से भीगी कमीज तथा गेहूँ के भूसे को एक साथ रखने से इक्कीस दिन में चूहे उत्पन्न हो जाते हैं। इटली के **फ्रेंसिको रेडी** ने 1668 में अपने प्रयोगों से वान हेल्मांट के स्वत: जननवाद को असत्य सिद्ध कर दिया। फ्रांसीसी वैज्ञानिक लुई पाश्चर ने प्रयोग द्वारा प्रतिपादित किया कि जीवन से ही जीवन का उद्‌भव होता हैं।

ब्रिटिश जीव रसायनविद् **जे.बी.एस.हैल्डेन** ने सर्वप्रथम 1929 में यह बताया कि जीवन की उत्पत्ति के समय पृथ्वी के वातावरण में ऑक्सीजन गैस नहीं थी। इसलिए ओजोन की परत भी नहीं थी जो आज सूर्य से आने वाली घातक विकिरणों से हमारी रक्षा करती है। रूसी जैव रसायनविद् **ए.आई.ओपेरिन** ने भी हैल्डेन से मिलती-जुलती परिकल्पना प्रस्तुत की। दोनों ने बताया कि जीवन जड़ पदार्थो के कार्बनिक अणुओं से उत्पन्न हुआ है।

पाँच अरब वर्ष पूर्व जब पृथ्वी एक ज्वलित वाष्पपुंज के रूप में सूर्य से अलग हुई थी, तब इसमें विभिन्न तत्व वाष्पित अवस्था में थे। पृथ्वी के ठंडा होने पर लोहा, निकल आदि पदार्थ, हाइड्रोजन एवं ऑक्सीजन के संयोग से पानी बना। हाइड्रोजन तथा नाइट्रोजन के संयोग से कार्बन डाय-ऑक्साइड का निर्माण हुआ। वाष्पपुंजों से बने बादलों से अनवरत वर्षा हुई और पृथ्वी ठंडी हुई। उस पर पर्वतों, नदियों और सागरों का निर्माण हुआ। वायुमण्डलीय अमोनिया, मीथेन एवं खनिज लवण वर्षा के पानी में घुलकर समुद्र में पहुँचे। **हैल्डेन** ने इसे 'घुला हुआ सूप' (Dilute Soup) कहा। इन्हीं यौगिकों के रासायनिक संश्लेषण से समुद्र में प्रथम जीव का प्रादुर्भाव हुआ।

जीवकोशों से सारे संसार के जीव-जन्तुओं का विकास हुआ। ये जीव बढ़कर दो भागों में बँट जाते थे और प्रत्येक भाग एक स्वतंत्र जीव बन जाता था कालान्तर में एककोशीय जीव आपस में मिलकर एक संयुक्त कोशीय जीव का रूप धारण करने लगे। उनकी शरीर रचना में भी शनै:-शनै परिवर्तन होने लगा। इस तरह एककोशीय जीवों से बहुकोशीय जीव बने।

जैव विकास :- पृथ्वी असंख्य प्रकार के पेड़-पौधों एवं प्राणियों से भरी हुई है। कुछ जीवों में समानता दिखती है तथा कुछ जीवों में भिन्नता। जैव विकास के सिद्धान्त सभी जीवों के पूर्वज एक रहें है। इस दृष्टि से सभी जीव परस्पर सम्बन्धी हैं। जटिल जीवों की रचना सरल रचना वाले जीवों से हुई। जीवों में होने वाला यह परिवर्तन जैव विकास कहलाता है। जैव विकास धीमी गति से होने वाला क्रमिक परिवर्तन है, जो पूर्वकाल से चला आ रहा है और आज भी जारी है।

जैव विकास के सिद्धांत की तीन विशेषताएँ हैं -

1. **धीरे-धीरे संरचना का विकास :-** आजकल पाए जाने वाले जीवों का पूर्व में यह स्वरूप नहीं था, वरन् करोड़ों वर्ष पूर्व इनके पूर्वज सरल रचना वाले थे। कालांतर में उनकी सरल संरचना में परिवर्तन आया, धीरे-धीरे नई संरचना का विकास हुआ।

2. **शाश्वत प्रक्रिया :–** जीवों में आदिकाल से ही परिवर्तन होते रहे है, आज भी हो रहे हैं तथा भविष्य में भी होते रहेंगे। अत: जैव विकास एक अनवरत होने वाली शाश्वत प्रक्रिया है।

3. **जटिल एवं धीमी क्रिया :–** नए जीवों तथा नई जातियों की उत्पत्ति अत्यन्त जटिल एवं धीमी क्रिया है, जो वर्षो में पूर्ण होती है। अत: एक प्रकार के जीवों से दूसरे प्रकार के जीवों को बनते देखना सम्भव नहीं।

वैज्ञानिकों ने जैव विकास के इन सिद्धांतों की पुष्टि के लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। इन प्रमाणों को जुटाने के लिए उन्होंने प्राणियों की शरीर रचना, भ्रूणों, जीवाश्मों, जीवों के भौगोलिक विवरण, जीव रसायन व शरीर क्रिया विज्ञान, जीवों का वर्गीकरण तथा आनुवांशिकी की दृष्टि से जीवों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

जैव विकास के प्रमाण प्रस्तुत करने के उपरांत भी अनेक प्रकृति वैज्ञानिक, दार्शनिक जैव विकास की क्रिया का सतत् अध्ययन करते रहे और उन्होंने अपने-अपने वाद प्रस्तुत किए। इनमें प्रमुख हैं।

1. फ्रांस के जीन बेपटिस्ट लेमार्क (1744-1899)
2. इंग्लैड के चार्ल्स डारविन (1809-1882)
3. नव डार्विन वाद

1. **लेमार्कवाद** – लैमार्क ने अपने सिद्धांत में कहा कि जीवधारियों में होने वाले परिवर्तनों के पीछे वातावरण में होने वाले परिवर्तन मुख्य कारण हैं। जीवधारी की रचना और स्वभाव में परिवर्तन के लिए वातावरण में होने वाले परिवर्तन ही उन्हें विवश करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किसी विशेष वातावरण में कोई विशेष अंग अपेक्षा से अधिक उपयोग में नहीं आते वे धीरे-धीरे आकार में घटने लगते है और अन्त में लुप्त हो जाते हैं।

लैमार्क की इस स्थापना की कई अध्ययनकर्ताओ ने आलोचना भी की है।

2. **डार्विनवाद :–** प्राकृतिक अध्ययन द्वारा विकासवाद की सरल और सुन्दर ढंग से व्याख्या चार्ल्स डार्विन ने की। डार्विन के सिद्धांत को 'प्राकृतिक वरणवाद' के नाम से जाना जाता है। डार्विन ने बताया कि जीवधारियों में सन्तानोत्पत्ति की स्वाभाविक इच्छा तथा अपार क्षमता होती है। यदि सभी जीवों को सन्तानोंत्पत्ति का अवसर मिले तो शायद इस धरती पर जमीन खाली ही न बचे, लेकिन प्रकृति में ऐसा नहीं है। प्रकृति ने जहाँ प्राणियों को सन्तानोत्पत्ति की क्षमता प्रदान की हैं, वहीं उनकी संख्या को अपने ढंग से नियंत्रित भी किया है।

डार्विन ने प्रकृति में देखा कि सुरक्षित स्थान और भोजन पाने के लिए सभी जीवों में एक स्पर्धा चलती रहती है। अपने अस्तित्व के लिए जीवों में परस्पर संघर्ष चलता रहता है। डार्विन ने इसे जीवन संघर्ष 'Struggle for existance' कहा। इससे उनके प्राकृतिक वरणवाद की पुष्टि में मदद मिली। इसके अनुसार जीवों में जनन द्रुत गति तथा गुणोत्तर अनुपात में होता है, परन्तु जीव जितनी संख्या में पैदा होते है, उसी अनुपात में वास, स्थान और भोजन में वृद्धि नहीं होती, वरन् स्थान और भोजन सीमित रहते हैं। इसलिए भोजन और वास स्थान के लिए जीवों में अनवरत संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में बहुसंख्या में जीव मर जाते हैं, केवल कुछ बच पाते हैं। अत: प्रकृति में विभिन्न जीवों की संख्या में संतुलन बना रहता हैं।

डार्विन के अनुसार जीव संघर्ष :–

(i) **अंतर्जातीय संघर्ष :–** प्राय: यह एक ही जाति या वर्ग में चलता है। जैसे मनुष्य का मनुष्य के साथ, कुत्ते का कुत्ते के साथ। एक जाति के सभी सदस्यों की जरूरतें समान होती हैं। अतएव उनमें से प्रत्येक को आवश्यकता की पूर्ति के लिए कदम-कदम पर संघर्ष करना पड़ता हैं।

(ii) **आन्तरजातीय संघर्ष :–** प्राय: दो या दो से अधिक भिन्न-भिन्न जातियों या वर्गो के जीवों में होता है, जैसे साँप और नेवले के बीच, साँप और मेढ़क के बीच, कुत्ता और बिल्ली के बीच या बिल्ली और चूहे के बीच। इसमें एक जीव अपने शत्रुओं से सदा अपनी रक्षा करने के प्रयत्न में रहता है तथा दूसरा शिकार की टोह में लगा रहता है।

(iii) **पर्यावरणीय संघर्ष :–** जीवों को उपर्युक्त दोनों प्रकार के संघर्षो के अलावा पर्यावरणीय संघर्ष का भी सामना करना पड़ता है। यह संघर्ष उसके अपने प्राकृतिक वातावरण एवं परिस्थितियों के साथ होता है। जीवों को दैविक व भौतिक शक्तियों, जैसे व्याधि, आर्द्रता, शुष्कता, गर्मी, सर्दी, आँधी-तूफान, बिजली,

NOTES

बाढ़ आदि का सामना करना पड़ता है। ऐसे संघर्ष में वही जीव जीवित रह पाता है जो अपने प्रतिद्वन्द्वी से शक्तिशाली होता है। उसमें किसी प्रकार की बिशेषता हो और जो संघर्ष में सफल हो बच निकलने में सक्षम हो।

3. **नव डार्विनवाद :-** 1903 से 1935 के बीच जीव-विज्ञान की विभिन्न जानकारियों में वृद्धि हुई। मेण्डल ने आनुवांशिकता के सिद्धांत और डी. वेरीज ने उत्परिवर्तन का सिद्धांत प्रस्तुत किया। ज्ञान के इस विकास ने जैव विकास के सम्बन्ध में मान्य धारणाओं का अपने तरीके से प्रतिपादन किया।

इस नए वाद को नव डार्विनवाद या विकास का आधुनिक संश्लेषितवाद कहा गया। नव डार्विनवाद के अनुसार जीवों की नई जातियाँ पुरानी जाति के जीन्स (Genes) में परिवर्तन से बनी है। जीन्स में परिवर्तन होने पर जीवों के आनुवांशिक लक्षण भी बदलते हैं। ये परिवर्तन उत्परिवर्तन (Mutation) कहलाते हैं। नव डार्विनवाद के अनुसार नई जाति के विकास में विभिन्नताएँ (Variations), उत्परिवर्तन (Mutation), प्राकृतिक वरण (Natural Selection), तथा पृथक्करण (Isolation) चार प्रमुख कारक होते हैं।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. जीवन के उद्‌भव और विकास के संदर्भ में आप क्या जानते है? स्पष्ट कीजिए।
2. जीवोत्पत्ति के विविध चरणों की जानकारी प्रस्तुत कीजिए।
3. जैव विकास की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. जीवन संघर्ष सिद्धांत क्या है?
5. जीव स्वत: जनन विधि क्या है?
6. जीव संघर्ष कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
7. हैल्डेन ने जीव-विकास के सम्बन्ध में क्या कहा है?
8. वान हेल्मांट ने जीव-विकास के सम्बन्ध में क्या कहा है?
9. नव डार्विनवाद को समझाइये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. वेदों और पुराणों के अनुसार सृष्टि के के रचयिता कौन हैं?

   i. महेश   ii. विष्णु   iii. ब्रह्मा   iv. कुबेर

2. स्वत: जनन की धारणा कहाँ प्रचलित थी?

   i. बेबीलोन   ii. प्राचीन मिस्त्र   iii. भारत   iv. रूस में

3. जल की रचना किन गैसों के संयोग से सम्भव हुई?

   i. हाइड्रोजन + ऑक्सीजन   ii. कार्बन + ऑक्सीजन
   iii. नाइट्रोजन + अमोनिया   iv. कार्बन + हाइड्रोजन

4. किस वैज्ञानिक ने प्रतिपादित किया कि जीवन से ही जीवन की उत्पत्ति होती है?

   i. वान हेमाल्ट   ii. लुई पाश्चर   iii. डार्विन   iv. ए.आई.ओपेरिन

5. जीवों में होने वाला परिवर्तन क्या कहलाता है?

   i. जीवन संघर्ष   ii. अनुवांशिकता   iii. जैव विकास   iv. प्राकृतिक वरण

6. अनुवांशिकता का सिद्धांत किसने दिया?

   i. डार्विन   ii. मेण्डल   iii. लेमार्क   iv. हेल्डेन

उत्तर :- 1(iii), 2(ii), 3(i), 4(ii), 5(iii), 6(ii)

■ ■ ■

16. जनजातीय जीवन

NOTES

जनजाति एक अच्छा – खासा बड़ा मानव समूह है जो सभ्य समाज से दूर या पिछड़ी अवस्था में किसी निश्चित भू-भाग मे निवास करता है। इस समूह के सदस्य आदिकाल से धर्म व परम्पराओं को मानते है। इनकी बोली भी अजीब होती है। जनजाति के अर्थ को व्यक्त करने के लिए अनेक विद्वानों ने अपनी – अपनी परिभाषाएँ दी है। इनमें से कुछ निम्नलिखित है।

1. **गिलिन और गिलिन** (Gillin and Gillin) के अनुसार, ''किसी एक सामान्य भूभाग में रहने वाले, सामान्य भाषा बोलने वाले और सामान्य संस्कृति का अनुसरण करने वाले किसी स्थानीय आदिम समुदायों के समूह को एक जनजाति कहते है।''

2. **डॉ. डी. एल मजूमदार** (Dr. D. N. Majumdar) के मतानुसार ''एक जनजाति परिवारों या परिवार समूहों का वह संग्रह होता है जिसका एक सामान्य नाम हो, जिसके सदस्य एक निश्चित भूभाग में रहते हों, सामान्य भाषा बोलते हो, विवाह, व्यवसाय अथवा उद्योग में समान निषेधों का पालन करते हों, और एक – दूसरे के साथ व्यवहार के सम्बन्ध में अपने पुराने अनुभव के आधार पर कुछ निश्चित एवं उपयोगी नियम का विकास कर लिए हों।''

3. **डॉ. आर एन. मुकर्जी** (Dr. R. N. Mukerjee) ने लिखा है कि, ''एक जनजाति वह क्षेत्रीय मानव समूह है जो स्थानीय, भाषायी, सामाजिक नियमों और आर्थिक गुणों से एक सामान्य सूत्र में बँधा होता है।''

4. **बोआर्स की परिभाषा है** – ''आर्थिक दृष्टि से ऐसा स्वतन्त्र जनसमूह जो एक भाषा बोलता हो और बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा के लिए संगठित हो, एक जनजाति की संज्ञा पा सकता है।

5. **इम्पीरियल गजेटियर** (Imperial Gagetteer of India) के अनुसार, जनजाति परिवारों का एक ऐसा समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जो एक सामान्य बोली बोलता है, एक सामान्य प्रदेश में रहता या रहने का दावा करता है और प्राय: अन्तर्विवाह करने वाला नहीं होता चाहे आरम्भ में उसमें अन्तर्विवाह करने की प्रथा क्यों न रही हो।''

जनजाति की विशेषताएँ (Characteristics of tribe) – उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर एक जनजाति की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती है –

1. किसी भी जनजाति की एक निश्चित भूभाग होता है जिसमें एक बड़ा मानव समूह रहता है। इस समूह में अनेक परिवार होते है।
2. उस जनजाति का एक सामान्य नाम होता है। जिससे उसका परिचय मिलता है।
3. उसकी अपनी बोली होती है।
4. उसका अपना सामजिक संगठन होता है जो निश्चिय प्रथाओं, परम्पराओं, धर्म एवं अन्धविश्वासों पर आधारित होता है।
5. उसका एक स्वतन्त्र आर्थिक संगठन होता है। जनजाति अपने दैनिक प्रयोग की वस्तुओं का निर्माण स्वय करती है। अत: उसे आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर कहा जाता है। उसका व्यवसाय प्राकृतिक होता है।
6. जनजाति एक अन्तर्विवाही जनसमूह होता है अर्थात् किसी भी जनजाति के सभी लोग अपनी ही जनजाति के अन्दर विवाह करते है।
7. प्रत्येक जनजाति के सदस्य अपना एक नेता निर्वाचित करते है जिसके नियन्त्रण में जनजाति का सारा कार्य होता है।

8. प्रत्येक जनजाति का एक कुल देवता होता है जिसकी पूजा उस जनजाति के सभी लोग स्वेच्छा से करते है।

9. उनके लोग खानाबदोशी प्रकृति के होते है। मांस - भक्षण, मदिरा, नृत्य के प्रति उनकी विशेष रूचि होती है।

NOTES

10. उसका एक सुरक्षात्मक संगठन होता है। किसी बाहरी दुश्मन के आक्रमण करने पर उसके सभी लोग एकजुट होकर उसका मुकाबला करते है।

अर्थव्यवस्था के आधार पर जनजातियों का वर्गीकरण - अर्थव्यवस्था की दृष्टि से हम जनजातियों को निम्नांकित वर्गो में विभक्त कर सकते है।

1. **आखेटक जनजातियाँ** (Hunting tribes) - ये जनजातिर्या सबसे पुरानी प्रतीत होती है। भारत के दक्षिणी - पश्चिमी भागों की पहाड़ियों और पश्चिमी घाटों के किनारे ये अधिकतर पायी जाती है। इनका आर्थिक संगठन सरल और सादा है। इन्हें पेट पालन हेतु अत्याधिक संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि ये खेती करना नहीं जानती। शिकार और खाद्य संग्रह इनके जीवन के मुख्य साधन है इनमें चेंचू, कोरगा, युरूव, ईरूल, पणियन, कुरूम्ब, काडर, कणिक्थर, मलपन्तरम् ,टोंडा आदि जनजातियों के नाम विशेष उल्लेखनीय है। पालीयन कादर, माला पड़ारम यनापि, खरिया व राजी भी आखेटक जनजातियाँ है।

2. **खेतिहर जनजातियाँ** (Agriculturist tribes) - जनजातीय लोगों का अधिकांश प्रतिशत अब भी खेती पर निर्भर है। ये दो प्रकार की खेती करते है -

i) **स्थानान्तरित खेती** (Transferable or shifting agriculture) अस्थायी खेती जनजातियों में स्थायी से अधिक प्रचलित है। नागा जनजाति इसे 'झूम' (Jhum) बैगा 'बेवर' (Bewar) खोंड 'पोड्' (Podu) और मरिया, 'पेंडा' (Penda) कहते है। इसी प्रकार अलग - अलग जनजातियाँ इसे अलग - अलग नामों से पुकारती है। इस ढंग की कृषि कोंकण, ट्रावनकोर, आन्ध्र प्रदेश, मद्रास व मध्य प्रदेश की अनेक जनजातियाँ करती है। इससे निम्न स्तर की फसल और भूमि की अधिक बर्बादी होती है।

ii) **स्थायी खेती** (Permanent cultivation) - धीरे-धीरे अस्थायी खेती को त्याग कर स्थायी खेती की ओर सभी जनजातियाँ अग्रसर हो रही हैं। स्थायी कृषि पर निर्भर कुछ भारतीय जनजातियाँ हैं - राजस्थान की भील, बंगाल की संथाल, असम की खासी, मद्रास की बड़ग कोट, इरूला और परजा, उत्तर प्रदेश की थारू-माझी आदि।

3. **हस्तकार जनजातियाँ** (Handicraft trubes) विभिन्न प्रकार की जनजातियाँ अनेक सहायक उद्योग - धन्धे, दस्तकारी या हस्तकला कौशल में प्रवीण होती है। रस्सी, चटाई व टोकरी बनाना: सूत कातना या बुनना: बेंत, लोहे, मिट्टी व धातु के बर्तन और अन्य सामान बनाना आदि इनकी जीविका के साधन होते है। दक्षिण बिहार के छोटानागपुर एवं उससे सटे उड़ीसा के बिरहोर जंगल की कुछ लताओं से बहुत सुन्दर और टिकाऊ रस्सी बनायी जाती है। सूत, बेंत, मिट्टी व धातु के काम में सओरा, कोंड और गोंड बड़े कुशल है। लोहे को गलाकर उससे अनेक सामान बनाने में कोखा और अनरिया निपुण है। मद्रास की इरूला बाँस की चटाइयाँ व टोकरियाँ ही नहीं, हल व पहिया भी बनाती है। मूल जानवरों से ताँत तैयार करने में खासी का नाम उल्लेखनीय है।

4. **उद्योगलीन जनजातियाँ** (Tribes engaged in industries) - ये श्रमिक जनजातियाँ या तो नौकरी की तलाश में स्वय ही औधोगिक केन्द्रों में जा बसी है या उनके निवास क्षेत्र में ही उद्योग का विकास हुआ है। प्रथम प्रकार की जनजातियाँ अधिकतर चाय - बागानों, खानों व कुछ अन्य उद्योगों में भी कार्यरत है। श्रमिक जनजातियों में बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के नाम मुख्य है। जमशेदपुर में स्थित टाटा आयरन एवं स्टील कम्पनी के कारखानों में हजारों की संख्या में 'संथाल' और 'हो' जनजातियों से आये श्रमिक हैं। मध्य प्रदेश में मैंगनीज उद्योग में लगभग 50% श्रमिक जनजातीय श्रेणी के है।

NOTES

जनजातियों की शिक्षा के लिए भारत सरकार के कार्य

जनजातीय लोगों की बस्तियाँ दूर – दूर है, अत: छात्रों को पैदल चलकर बहुत दूर जाना पड़ता है। फिर, निर्धनता के कारण बच्चे पढ़ाई जारी नहीं रख पाते। अत: सरकार ने आश्रम स्कूल खोले हैं जहाँ नि:शुल्क शिक्षा, खाना – पीना तथा छात्रों की अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। इन स्कूलों से हस्तकला आदि की कुछ ऐसी बातें बतायी जाती हैं जिससे वे छात्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हो सकें। प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में दी जाती है। जिससे वे अधिक समझ सकें। बिहार और आसाम में तो आदिवासियों की भाषा में प्रारम्भिक पुस्तकें भी तैयार की गयी है।

जनजातीय छात्रों की उच्च शिक्षा हेतु विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्व – विद्यालयों एवं अन्य शिक्षा संस्थानों में स्थान सुरक्षित किये गये है। उनकी फीस में रियायत या माफी के साथ – साथ उदारता से छात्रवृति भी मिलती है। इन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए आयु और योग्यता के अवरोध को इनके लिए बहुत कम किया गया है। अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के शैक्षिक विकास में निम्न ऐच्छिक संगठन पूर्णत: कार्यरत है –

1. केन्द्रीय समाज कल्याण परिषद्, नई दिल्ली
2. टाटा इन्स्टीट्यूट आफ़ सोशल साइंसेज बम्बई
3.आन्ध्र प्रदेश आदिमजाति संघ, हैदराबाद
4. रामकृष्ण मिशन, शिंलाग तथा चेरापूँजी

कुछ जनजातीय कल्याण सम्बन्धी संस्थाएँ निम्नलिखित है –

1. जनजाति सलाहकार परिषद
2. केन्द्रीय आयुक्त
3. आदिमजाति शोध संस्थाएँ
4. प्रशिक्षण केन्द्र व सार्वजनिक संस्थाएँ

जनजातीय लोगो की प्रमुख समस्याएँ –

1. **अशिक्षा या निरक्षरता :**– शिक्षा के अभाव अनुसूचित जनजातियाँ कई समस्याओं से ग्रस्त है। शिक्षा के अभाव में जनजातियों सामाजिक – आर्थिक परिस्थितियों का सामना करने में असमर्थ रहती हैं। जनजातियों की अज्ञानता का लाभ उठाकर अन्य लोग उनका शोषण करते है।

2. **बीमारियाँ या रूग्णता :**– जनजातियाँ प्राय: मौसमों की विसंगति से जूझती हैं। भीषण शीत, घनघोर वर्षा और तपती हुई ग्रीष्म में वे खुले जंगलों में कार्य करते है। जी–तोड़ मेहनत करना, जंगली पशुओं से जूझना तथा प्रतिकूल मौसम की मार झेलना उन्हें रोगों का शिकार बना देता है। अर्थाभाव के कारण वे उपचार भी नहीं करा पाते।

3. **शोषणग्रस्तता :**– शोषण होना जनजातियों का सबसे बड़ा अभिशाप है। शताब्दियों से इनका शोषण हो रहा है। समाज के ठेकेदार, व्यापारी और कर्मचारी उनके विकास की रोटियाँ सदैव छीनते रहे है। सरकारी योजनाओं का लाभ उन तक पहुँच ही नहीं पाता।

4. **ऋणग्रस्तता :**– विवाह, त्यौहार तथा बीमारी आदि के लिए आवश्यक होने पर वे महाजनों से कर्ज पर रूपया लेते है। सूदखोर महाजन इनसे मनचाहा ब्याज लेते है। फलस्वरूप इन समूहों की ऋणग्रस्तता बढ़ती जाती है जो इनको दरिद्रता की ओंर भी बढ़ा देती है।

5. **बँधुआ मजदूरी :-** ऋणग्रस्तता बँधुआ मजदूरी को जन्म देती है। जनजातियों में यह प्रथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। साधन न होने के कारण लोग न खुद की खेती कर पाते हैं और न मालिक का ऋण चुका पाते है, इसलिए पूरा परिवार मालिक के यहाँ गंदा - उजला काम करने को अधिबंधित रहता है तथा बँधुआ बन जाता है।

NOTES

6. **बेगारी :-** जनजातियों के व्यक्ति जब साहूकारों के यहाँ कर्ज लेने या ब्याज देने पहुँचते हैं तो साहूकार उनसे ऋण चुकता होने तक बेगार करवाते है। इन जातियों का श्रम व्यर्थ जाता है तथा इस श्रम के बदले एक कौड़ी भी इन्हें प्राप्त नहीं होती।

7. **विस्थापन का संकट :-** वन ही इनके निवास स्थान है। शासन की विकास योजनाओं के अंतर्गत वन भूमि की अधिगृहीत कर लिया जाता है, फलत: जनजातीय समाज का विस्थापन हो जाता है। इसी तरह लोहे या कोयले की खदान के लिए या सिंचाई परियोजना और बाँध निर्माण के लिए जो भूमि डूब क्षेत्र में आ जाती है उसे खाली करना पड़ता है। अत: जनजातीय समाज को विस्थापन करना पड़ता है। विस्थापन से उनका आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार टूट जाता है।

8. **देह - व्यापार :-** जनजाति समाज अत्यंत सहज, ईमानदार और भोलाभाला होता है। वह छद्‌म कपट और आडम्बर को नहीं पहचानता उसके इस सहज जीवन का अनुसूचित लाभ उठाते हुए चालाक लोग जनजातीय स्त्रियों कर दैहिक शोषण करते हैं। आर्थिक प्रलोभन देकर प्रवर्चक लोग नारियों की खरीद - फरोख्त करते है और उन्हें अन्य प्रांतों या विदेशों में दुष्कर्म के लिए भेज देते है।

9. **पलायन :-** आजीविका की तलाश में जनजातियाँ घरबार छोड़कर बड़े शहरों की ओर प्रस्थान कर जाती है। गाँव के गावँ खाली हो जाते है।

10. **धर्मान्तरण :-** बाहरी धर्मावलम्बी जनजातियों के भोलेपन का लाभ उठाकर उनके धर्म और संस्कृति को विनष्ट कर रहे हैं। ईसाई मिशनरियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के नाम पर प्रलोभन देकर वनवासियों के सनातन धर्म को खत्म कर धर्म बदलने का कुचक्र चला रही है। बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मणिपुर, असम, त्रिपुरा आदि में तो बड़ी संख्या में वनवासियों का धर्मान्तरण कर दिया गया है।

11. **आंदोलनों के शिकार :-** विभिन्न राजनैतिक दल आदिवासी समाज के हित के नाम पर उन्हें आदोंलनों में झोंक देते हैं। आसाम का बोड़ो आंदोलन बस्तर का नक्सलवाद, झारखण्ड का मुक्ति आंदोलन आदि के द्वारा जनजातीय समाज को तोड़ा जा रहा है। इन आंदोलनों से एक वर्ग विशेष लाभ उठाता है और समूचा आदिवासी वर्ग अभिशाप झेलता है।

मध्यप्रदेश में जनजातीय वर्ग के विकास की योजनाएँ :-

जनजातीय वर्ग का एक बड़ा भाग मध्यप्रदेश में निवास करता है। जनजातीय लोग सदियों से शोषण का शिकार रहे है। तथा विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है। अत: जनजातियों के कल्याण तथा विकास के लिये कई योजनाएँ संचालित की जा रही है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं -

शिक्षा :- जनजातीय वर्ग के विद्यार्थियों को सस्ती एवं उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के लिए शासन ने विभिन्न सुविधाएँ तथा छात्रवृत्तियाँ प्रदान की है, जो इस प्रकार है -

1. विदेशों में उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए प्रतिवर्ष दस छात्र - छात्राओं को नि:शुल्क भेजने की व्यवस्था।
2. पैरामेडिकल संस्थाओं में सहज प्रवेश तथा छात्रवृत्ति की सुविधा।
3. आदिकाल छात्रावास तथा आश्रमों में रहने वाले छात्रों को शिष्यवृत्ति देना।
4. प्रदेश के 2043 आदिवासी छात्रावासों को टेलीविजन सेट उपलब्ध कराये।
5. 10वी एवं 12वी बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों का शंकरशाह और रानी दुर्गावती मेधावी सम्मान।

6. आदिवासी विकासखण्डों की सभी शाखाओं में मध्याह भोजन की व्यवस्था।
7. उच्च अध्ययन और शोध छात्रों को आठ हजार रूपए मासिक छात्रवृत्ति।
8. नौंवी पढ़ने वाले ग्राम छात्राओं को मुफ्त साइकिल वितरण।
9. गुणात्मक शिक्षा के लिए आदिवासी विद्यार्थियों को हर विकासखण्ड में सेटेलाइट के माध्यम से अंग्रेजी, विज्ञान और गणित की शिक्षा।
10. सभी जनजातीय विद्यार्थियों मे मुफ्त गणवेश वितरित तथा नि:शुल्क पुस्तकों का प्रदाय।

रोजगार और प्रशिक्षण :- अनुसूचित जाति के छात्र - छात्राओं को रोजगार देने एवं तदनुसार प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था शासन ने की है।

1. अनुसूचित जनजाति के युवाओं को रोजगारमूलक विधाओं में प्रशिक्षण देने की नि:शुल्क व्यवस्था।
2. दुधारू पशुओं को खरीदने एवं उनके आहार के लिए प्रति आदिवासी को 72 हजार रूपए की आर्थिक सहायता।
3. आदिवासी बच्चों को इण्डो - जर्मन टूल रूम के माध्यम से विशेष तकनीकी प्रशिक्षण।
4. जैविक खेती, ट्रैक्टर चालन और अन्य कृषि यंत्र चलाने का प्रशिक्षण।
5. किसान मित्र और किसान सहेली के रूप में चयन एवं प्रशिक्षण।
6. आई. टी. आई. में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों को नि:शुल्क टूल - किट की उपलब्धता।
7. संघ लोक सेवा आयोग तथा मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की तैयारी के लिए प्रशिक्षणों में प्रोत्साहन राशि।

अन्य सुविधाएँ :- 1. आदिवासी विकासखण्ड मुख्यालयों में एक - एक सामुदायिक भवन निर्माण। 2. सभी क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और चलित अस्पताल की व्यवस्था 3. आवासहीन आदिवासी परिवारों के लिए मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ और घरों का निर्माण 4. आदिवासी समाज सेवा के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले को दो लाख रूपए का ठक्कर बापा पुरस्कार 5. सर्वश्रेष्ठ आदिवासी खिलाड़ी के लिए एक लाख रूपए के टंट्या भील पुरस्कार की स्थापना।

इसके अलावा आँगनवाड़ी भवन, कुओं का निर्माण, कुपोषण मिटाने हेतु विशेष कार्य योजना, आदिवासी सामूहिक विवाह योजना आदि के माध्यम से जनजातीय कल्याण और उत्थान के लिए व्यापक कार्य किए जा रहे है।

जनजातीय गौरव पुरूष और नारियाँ :- जनजातीय समाज में ओजस और तेजस से पूर्ण गौरव पुरूष तथा शक्ति की स्रोतस्विनी नारियों ने समाज और राष्ट्र की महनीय सेवा की हैं। देश के लिए बलिदान करने वाले अनेक उदाहरण वनवासी समाज में मिलते है।

1. **रानी दुर्गावती :-** वीरांगना दुर्गावती ने अपने पति दलपतशाह की मृत्यु के बाद विशाल गोंडवाने की राज्य - व्यवस्था सोलह वर्षो तक सँभाली। अनेक बार शत्रुओं को परास्त किया और दूरस्थ वनवासियों के हित के लिए कार्य किए। सम्राट अकबर की सेना (आसफखों) का मुकाबला करते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

इस गोंड रानी ने प्रजा के लिए स्थान - स्थान पर जलकूप एवं जलाशय निर्मित कराए तथा बाधँ और नहरें खुदवाई। आधारताल, चेरीताल, हाथीताल, रानीताल जैसे सरोवर आज भी जबलपुर में विद्यमान हैं। रानी ने अपनी सेना में सभी वर्ग, जाति और सम्प्रदाय के लोगों को स्थान दिया। मुबारक खान, खानजहाँ, महारख ब्राह्मण, अर्जुन बैस जैसे योद्धा उनकी सेना के नायक थे। पिछड़ी जातियों में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासो एंव रूढ़ियों के विनाश के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किए। वे न पर्दे में कैद हुई, न विवाह के लिए जातिबंधन को स्वीकार किया और न ही पति के साथ सती हुई।

2. **फूलकुँवर देवी :**– गोंडराजा शंकरशाह की रानी फूलकुँवर ओजस्विनी महिला के साथ – साथ राजनैतिक गतिविधियों में पारंगत थीं। अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंककर वह गोंड सेनानियों का नेतृत्व करती रहीं। उसकी सेनानी महिलाएँ पुरूष वेश में संग्राम का झण्डा लेकर स्वाधीनता के लिए निकल पड़ती थीं। फूलकुँवर ने धनुषबाण, देशी बदूंक, तलवार का प्रशिक्षण देकर गुरिल्ला टोली बनाई थी। उन्होंने जगह – जगह अँग्रेजी चौकियों पर हमले किए और अँग्रेजों की 52वीं रेजीमेंट उखाड़ फेंकी। पति शंकरशाह और पुत्र रघुनाथशाह के मारे जाने के बाद रानी ने देश को आजाद कराने में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

3. **टंट्या भील :**– टंट्या भील, जिसे लोग टंट्या मामा कहते है, का जन्म निमाड़ (मध्यप्रदेश) में सन् 1842 में हुआ। टंट्या का नाम निमाड़ के लोग बड़ी श्रद्धा और आदरपूर्वक लेते है। टंट्या दयावान, गरीबों का आश्रयदाता और स्त्री जाति को बहुत सम्मान देता था। वह बच्चों को बेहद प्यार करता था, इसीलिए बच्चे उसे टंट्या मामा कहते थे।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उसने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। उसका बलिष्ट शरीर, रोबीली आँखें और तेज भरा व्यक्तित्व देखकर अंग्रेज भय खाते थे। सचमुच वह पुलिस का भी पुलिस था। आखिरकार सन् 1888 में अंग्रेंजी पुलिस दल ने घेरकर उसे गुप्त स्थान पर फाँसी के फंदे पर झुला दिया। टंट्या की कुर्बानी की सुंगध सर्वत्र फैल गई।

4. **बिरसा मुंडा :**– सन् 1875 को झारखंड की मुंडा जनजाति में जन्मे बिरसा सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी थे। शिक्षा प्राप्ति के बाद बिरसा ने आध्यात्म साधना की राह पकड़ ली और चार वर्ष तक एकांत में तपश्चर्या की। पीली धोती, खड़ाऊँ, तिलक और यज्ञोपवीत धारण कर वे अलख जगाने लगे। उन्होंने धर्मातरित वनवासी बंधुओं को स्वधर्म आचरण की शिक्षा दी तथा अंग्रेजों के विरूद्ध वनवासी संगठन का आव्हान किया। अंग्रेजों ने षड़यंत्रपूर्वक उन्हें गिरफ्तार किया और सश्रम कारावास की सजा सुनाई। कारावास से मुक्त होकर बिरसा ने अंग्रेजों के विरूद्ध सशस्त्र क्रांति का शंखनाद कर दिया। वनवासियों ने शस्त्र सजा लिए। अंग्रेज अधिकारियों पर तीरों की वर्षा कर दी तथा थानों पर आक्रमण कर दिया। इस सशस्त्र क्रांति में बिरसा के चार सौ अनुयायी मारे गए और इतने ही बंदी बनाए गए। बिरसा को भी सोते समय बंदी बना लिया गया और राँची जेल में कठोर यातनाएँ दी, जिससे उनकी मृत्यु हो गई। पच्चीस वर्ष के जीवन में उन्होंने स्वदेशी और स्वतंत्रता की जो प्रेरणा जगाई वह अनुकरणीय है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. जनजाति को परिभाषित दीजिए।
2. जनजाति की विशेषताएँ लिखिए।
3. जनजाति की प्रमुख समस्याओं को लिखिए।
4. विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों को समझाइये।
5. जनजाति की समस्याओं के सामधान हेतु सुझाव दीजिए।
6. जनजाति के उत्थान हेतु भारत सरकार के प्रयासों को लिखिए।
7. जनजाति के विकास हेतु म.प्र. सरकार की योजनाअें का उल्लेख कीजिए।
8. टंट्या भील के जीवन पर संक्षिप्त लेख लिखिए।
9. बिरसा मुंडा के राष्ट्र प्रेम को लिखिए।
10. रानी दुर्गावती का जीवन परिचय दीजिए।
11. फूलकुँवर देवी का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

NOTES

1. आदिवासी क्षेत्र में मामा के नाम से प्रसिद्ध आदिवासी है।

   i. बिरसा मुंडा ii. टंट्या भील iii. शंकरशाह iv. दुर्गावती

2. बिरसा मुंडा का जन्म किस राज्य में हुआ।

   i. म.प्र. ii. छत्तीसगढ़ iii. बिहार iv. झारखंड

3. ऋणग्रस्ता के कारण किसको बढ़ावा मिला।

   i. झगड़े को ii. बंधुवा मजदूरी iii. साहूकारी को iv. शिक्षा को

4. टंट्या भील का जन्म कहाँ हुआ।

   i. म.प्र. ii. छत्तीसगढ़ iii. बिहार iv. झारखंड

5. गोंडवाना राज्य की कमान 16 वर्षो तक किसने सम्भाली।

   i. रानी लक्ष्मीबाई ii. रानी दुर्गावती iii. फूलकुँवर देवी iv. अहिल्या बाई

6. गोंडराजा शंकरशाह की पत्नी का नाम था।

   i. रानी लक्ष्मीबाई ii. रानी दुर्गावती iii. फूलकँवर देवी iv. अहिल्याबाई

7. जनजातीय लोगों की प्रमुख समस्या क्या है।

   i. बेगारी iii. बंधुआ मजदूरी iii. ऋणग्रस्तता iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर :– 1. (ii), 2. (iv), 3. (ii), 4. (i), 5.(ii), 6. (iii), 7. (iv)

■ ■ ■

17. उसने कहा था

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'

NOTES

श्री चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकारों में से एक हैं। आपकी उन्ही कहानियों में से एक ''उसने कहा था'' हिन्दी की अमर कहानियाँ में से एक है। कहानी प्रथम विश्व युद्ध के समय की है। जिसमें बड़े ही मार्मिक ढंग से कथानक को गढ़ा गया है। कहानी मुख्य रूप से पाँच हिस्सों में बटी हुई है। फिर भी पूरी कहानी एक - दूसरे हिस्से से गुथी हुई है। कहानी का वास्तविक मर्म अंत में समझ आता है, जब कथानक अपने चरम स्तर तक पहुँचता है।

मूल कहानी - बड़े - बड़े शहरों के इक्के - गाड़ीवालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए है, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्टवालों की बोली का मरहम लगाएँ। जब बड़े - बड़े शहरों की चौड़ी सड़को पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्केवाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थापित करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न रहने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चोरकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार-भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने, नाक की सीध में चले जाते है, अमृतसर में उनकी बिरादरीवाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लड्ढीवाले के लिए ठहरा कर सब्र का समुद्र उमड़ा कर बचो खालसा जी', हाटो माई जी', ठहरना भाई', 'आने दो लाला जी', 'हटो बाछा' कहते हुए सफेद फेंटों, खच्चरों और बतकों, गन्ने, खोमचे और भाड़ेवालों के जंगल में रह रह लेते हैं, क्या मजाल कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हटाना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती नहीं, चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती है। यदि कोई बुढ़िया बार - बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी बचनावलीं के ये नमूने हैं- हट जा जीणें जोगिए, हट जा करमा वालिए, हट जा पुत्तां प्यारिए, हट जा लम्बी उमर वालिए। समष्टि में इसका अर्थ है तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहियों के नीचे आना चाहती है? बच जा।

ऐसे बम्बूकार्टवालों के बीच में होकर एक लड़का और एक लड़की चौक की एक दुकान पर आ मिले। उसके बालों, और उसके ढीले सुथने से जान पड़ता था कि दोनों सिख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था और यह रसोई के लिए बड़ियाँ। दुकानकाद एक परदेशी से गुँथ रहा था, जो सेर भर पीले पापड़ों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

'तेरे घर कहाँ है?'

'मगरे में! और तेरे?'

'माँझे में; - यहाँ रहती है?'

'अतरसिंह की बैठक में, वे मेरे मामा होते हैं।'

'मै भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरू बाजार में है।'

इतने में दुकानदार निबटा और इनका सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनो साथ - साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कराकर पूछा - 'तेरी कुड़माई हो गई? इस पर लड़की कुछ आँखे चढ़ाकर 'धत' कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया।

दूसरे-तीसरे दिन सब्जीवाले के यहाँ या दूधवाले के यहाँ, अकस्मात् दोनों मिल जाते। महीने भर यही हाल रहा। दो-तीन बार लड़के ने फिर पूछा- 'तेरी कुड़माई हो गई?'और उत्तर में वही 'धत' मिला। एक दिन जब फिर लड़के ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लड़की की सम्भावना के विरूद्ध बोली - 'हाँ, हो गई।'

'कब?'

'कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।'

लड़की भाग गई। लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढ़केल दिया, एक छाबडीवाले की दिन – भर की कमाई खोई, एक कत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले ठेले में दूध उँडेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पाई, तब कहीं घर पहुँचा।

राम, राम, यह भी कोई लड़ाई है? दिन – रात खन्दकों बैठे हड्डियाँ अकड़ गई। लुधियाने से दस गुना जाड़ा, मेह और बरफ। ऊपर से पिंडलियों तक कीच में धँसे हुए है। गनीम कहीं दिखती नहीं, घण्टे दो घण्टे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ – सौ गज धरती उछल पड़ती। इस गैबी गोले से बचे तो कोई नहीं। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक के बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक– से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।'

'लहनासिंह, तीन दिन और हैं। चार तो खन्दक में बिता ही दिए। परसों रिलीफ' आ जाएगी और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों झटका करेगे और पेट भर खाकर सो रहेंगे। उस फिरंगी मेम के बाग में मखमल की – सी हरी घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो।'

'चार दिन तक पलक नहीं झपकी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े–संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पटकने लगते हैं, यों अँधेरे में तीस–तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था– चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था।

पीछे जनरल साहब ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो–

'नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते। क्यों?' सूबेदार हजारासिंह ने मुस्कराकर कहा– लड़ाई के मामले जमादार या नायब के चलाए नहीं चलते। बड़े अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गए तो क्या होगा?'

'सूबेदार जी, सच है।' लहनासिंह बोला– 'पर करें क्या? हड्डियों में तो जाड़ा धँस गया है। सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ से चम्बे की बावलियों के से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाए तो गरमी आ जाए।'

'उदमी उठ, सिगड़ी में कोयले डाल। वजीरा, तुम चार जने बाल्टियाँ लेकर खाई का पानी बाहर फेंकों। लहनासिंह, शाम हो गई है, खाई के दरवाजे का पहरा बदल दे।' यह कहते हुए सूबेदार सारी खन्दक में चक्कर लगाने लगे। वजीरासिंह पल्टन का विदूषक था। बाल्टी में गन्दा पानी भरकर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला– मै पाधा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण। इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गए।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा– अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब भर में नहीं मिलेगाा।'

'हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमाव यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।'

'लाड़ी होराँ को भी यहाँ बुला लोगे! या वही दूध पिलानेवाली फिरंगी मेम।

'चुप कर। यहाँ वालों को शरम नहीं।

'देस–देस की चाल है। आज तक मै उसे समझा न सका कि सिख तम्बाकू नहीं पीते। वह सिगरेट पीने में हठ करती है, ओठों में लगाना चाहती है और मै पीछे हटता हूँ तो समझती है कि राजा बुरा मान गया, अब मेरे मुलक के लिए लड़ेगा नहीं।'

NOTES

'अच्छा, अब बोधासिंह कैसा है?'

'अच्छा है।

'जैसे मै जानता ही न होऊँ। रात भर तुम दोनों कम्बल उसे उढाते हो और आप सिगड़ी के सहारे करते हो। उसके पहरे पर आप पहरा दे आते हो। अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो, आप कीचड़ में पड़े रहते हो। कहीं तुम न माँदे पड़ जाना। जाड़ा क्या है, मौत है और 'निमोनियाँ' से मरने वालों को मुरब्बे नहीं मिला करते।

'मेरा डर मत करो। मै तो बुलेल की खड्ड के किनारे मरूँगा। भाई कीरत सिंह की गोदी पर मेरा सिर होगा और मेरे हाथ के लगाए हुए आँगन में आम के पेड़ की छाया होगी।'

वजीरासिंह ने त्योरी चढ़ाकर कहा– क्या मरने मारने की बात लगाई है? मरें जर्मन और तुरक!

'हाँ भाइयों, कुछ गाओ।

कौन जानता था कि दाढ़ियोंवाले घरबारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गाएँगे, पर सारी खन्दक गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गए, मानों चार दिन से सोते और मौज ही करते हों।

दो पहर रात बीत गई है, अँधेरा है। सन्नाटा छाया हुआ है। बोधासिंह खाली बिस्कुटों के तीन टिनों पर अपने दोनों कम्बल बिछाकर और लहनासिंह को दो कम्बल और दो बरानकोट ओंढ़कर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खड़ा हुआ है। एक आँख खाई के मुँह पर और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर। बोधासिंह कराहा।

'क्यों बोधा भाई, क्या है?'

'पानी पिला दो!'

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पूछा– कहो कैसे हो!

पानी पीकर बोधा बोला– कँपकँपी छूट रही है। रोम – रोम से तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे है।

'अच्छा, मेरी जरसी पहन लो।' और तुम?

'मेरे पास, सिगड़ी है, मुझे गरमी लगती है, पसीना आ रहा है।

'ना, मै नहीं पहनता, चार दिन से तुम मेरे लिए–

'हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जरसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत में मेंमे बुन–बुनकर भेज रही हैं। गुरू उनका भला करें। यो कहकर लहना अपना कोट उताकर जरसी उतारने लगा।

'सच कहते हो?'

'और नही झूठ?' यों कहकर नाहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता – भर पहनकर पहरे पर आ खड़ा हुआ। मेम की जरसी की कथा केवल कथा थी।

आध घंटा बीता। इतने में खाई के मुँह से आवाज आई– 'सुबेदार हजारासिंह।'

'कौन? लपटन साहब? हुकुम हुजूर' कहकर सूबेदार तनकर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

'देखो, इसी दम धावा करना होगा। मील भर दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है। उसमें 50 से ज्यादा जर्मन नहीं है। इन पेड़ों के नीचे– नीचे दो खेत काटकर रास्ता है। तीन – चार घुमाव हैं। जहाँ मोड़ है, वहाँ पन्द्रह जवान खड़े कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोड़कर सबको साथ ले, उनसे मिलो। खन्दक छीनकर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले, डटे रहो। हम यहाँ रहेंगे।

'जो हुक्म।'

चुपचाम सब तैयार हो गए। बोधा भी कम्बल उताकर चलने लगा। तब लहनासिंह ने उसे रोका। लहनासिंह आगे हुआ तो बोधा के बाप सूबेदार ने उँगली से बोधा की ओर इशारा किया। लहनासिंह समझकर

चुप हो गया। पीछे दस आदमी कौन रहें, इस पर बडी हुज्जत हुई। कोई रहना न चाहता था। समझा–बुझाकर सूबेदार ने मार्च किया। लपटन साहब लहना की सिगड़ी के पास मुँह फेरकर खड़े हो गए और जेब से सिगरेट निकालकर सुलगाने लगे। दस मिनट बाद उन्होंने लहना की ओर हाथ उठाकर कहा–

'लो, तुम भी पियो।'

आँख मारते – मारते लहनासिंह सब समझ गया। मुँह का भाव छिपाकर बोला– 'लाओ, साहब।' हाथ आगे करते ही सिगड़ी के उजाले में साहब का मुँह देखा, बाल देखे, तब उसका माथा ठनका। लपटन साहब के पट्टियों वाले बाल एक दिन में कहाँ उड़ गए और उनकी जगह कैदियों के से कटे हुए बाल कहाँ से आ गए?

शायद साहब पिए हुए है और उन्हें बाल कटवाने का मौका मिल गया है। लहनासिंह ने जाँचना चाहा। लपटन साहब पाँच वर्ष से उसकी रेजीमेंट में थे।

'क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जाएँगे।'

'लड़ाई खत्म होने पर। क्यों यह देश पसन्द नहीं?'

'नहीं साहब, शिकार के वे मजे यहाँ कहाँ? याद है, परसाल नकली लड़ाई के पीछे हम आप जगाधरी जिले में शिकार करने गए थे– हाँ, हाँ– वहीं जब आप खोते पर सवार थे और आपका खानसामा अब्दुल्ला रास्ते के एक मन्दिर में जल चढ़ाने को रह गया था? बेशक पाजी कहीं का – सामने से वह नीलगाय निकली कि ऐसी बड़ी मैने कभी न देखी थी और आपकी एक गोली कन्धे में लगी और पुट्ठे में से निकली। ऐसे अफसर के साथ शिकार खेलने में मजा है। क्यों साहब, शिमले से तैयार होकर उस नीलगाय का सिर आ गया था? आपने कहा था कि रेजीमेंट की मेस में लगाएँगे।' हाँ, पर मैने वह विलायत भेज दिया।'– 'ऐसे बड़े-बड़े सींग! दो–दो फुट के तो होंगे।'

'हाँ, लहनासिंह, दो फुट चार इंच के थे। तुमने सिगरेट नहीं पिया?'

'पीता हूँ साहब, दियासलाई ले आता हूँ। कहकर लहनासिंह खन्दक में घुसा। अब उसे सन्देह नहीं रहा था और उसने झटपट निश्चय

कर लिया कि क्या करना चाहिए।

अँधेरे में किसी सोने वाले से वह टकराया।

'कौन? वजीरासिंह?

'हाँ, क्यों लहना? क्या कयामत आ गई? जरा तो आँख लगने दी होती?

'होश में आओ! कयामत आई और लपटन साहब की वर्दी पहनकर आई है।

'क्या?'

लपटन साहब या तो मारे गए हैं या कैद हो गए है। उनकी वर्दी पहनकर यह कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने उसका मुँह नहीं देखा। मैने देखा है और बातें की है, सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू और मुझे पीने को सिगरेट दिया है।

'तो अब?'

'अब मारे गए। धोखा है। सूबेदार कीचड़ में चक्कर काटते फिरेंगे और यहाँ खाई पर धावा होगा। उधर उन पर खुले में धावा होगा, । उठो, एक काम करो, लपटन के पैरों के निशान देखते – देखते दौड़ जाओ। अभी अभी बहुत दूर न गए होंगे। सूबेदार से कहो कि एकदम लौट आएँ। खन्दक की बात झूठ है। चले आओ, खन्दक के पीछे से निकल जाओ, पत्ता तक न खड़के देर मत करो।'

'हुक्म तो यह है कि यहीं.......

'ऐसी-तैसी हुक्म की! मेरा हुक्म-जमादार लहनासिंह का, जो इस वक्त यहाँ सबसे बड़ा अफसर है, उसका हुक्म है। मै लपटन साहब की खबर लेता हूँ।

'पर यहाँ तो तुम आठ ही हो।

आठ नहीं दस लाख। एक - एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। चले जाओ।

NOTES

लौटकर खाई के मुहाने पर लहनासिंह दीवार से चिपट गया। उसने देखा कि लपटन साहब ने जेब से बेल के बराबर तीन गोले निकाले। तीनों को जगह-जगह पर खन्दक की दीवारों में घुसेड दिये और तीनों में एक तार-सा बाँध दिया। तार के आगे सूत की एक गुत्थी थी, जिसे सिगड़ी के पास रखा। बाहर की तरफ एक दियासलाई गुत्थी पर रखने......

बिजली की तरह दोनों हाथों से उल्टी बन्दूक को उठाकर साहब की कुहनी पर तानकर दे मारा। धमाके के साथ साहब के हाथ से दियासलाई गिर पड़ी। लहनासिंह ने एक कुन्दा साहब की गर्दन पर मारा और साहब 'आह! माई गॉड कहते हुए चित हो गए। लहनासिंह ने तीनों गोले बीनकर खन्दक के बाहर फेंके और साहब को घसीटकर सिगड़ी के पास लिटाया। जेबों की तलाशी ली। तीन-चार लिफाफे और एक ड़ायरी निकालकर उन्हें अपनी जेब के हवाले किया।

साहब की मूर्च्छा हटी। लहनासिंह हँसकर बोला- 'क्यो लपटन साहब मिजाज कैसा है? आज मैने बहुत-सी बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते है। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगाएँ होती है और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते है। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते है। और लपटन साहब खोते पर चढ़ाते है। पर यह तो कहो, ऐसी साफ उर्दू कहाँ से सीख के आए। हमारे लपटन साहब तो बिना 'डैम' के पाँच लफ्ज भी नहीं बोला करते।

लहना ने पतलून की जेबों की तलाशी नहीं ली थी। साहब ने मानो जाड़े से बचने के लिए, दोनों हाथ जेब में डाले।

लहनासिंह कहता गया- चालाक तो बड़े हो; पर माँझे का लहना इतने बरस लपटन साहब के साथ रहा है। उसे चकमा देने के लिए चार आँखे चाहिए। तीन महीने हुए, एक तुर्की मौलवी मेरे गाँव में आया था। औरतों को बच्चे होने की ताबीज बाँटता और बच्चों की दवाई देता था। चौधरी के बड़ के नीचे मंजा बिछाकर हुक्का पीता रहता था और कहता था कि जर्मनी वाले बड़े पण्डित हैं। वेद पढ़-पढ़कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गए हैं। गौ को नहीं मारते। हिन्दुस्तान में आ जाएँगे, तो गौ-हत्या बन्द कर देंगे। मण्डी के बनियों को बहकाता था कि ड़ाकखाने से रूपए निकाल लो, सरकार का राज्य जाने वाला है। डाकबाबू पोल्हूराम भी डर गया था। मैने मुल्ला जी की दाढ़ी मूँड दी थी और गाँव से बाहर निकालकर कहा था कि जो मेरे गाँव में अब पैर रक्खा तो..... । साहब की जेब में से पिस्तौल चला और लहना की जाँघ में गोली लगी। इधर लहना की हैनरी मार्टिनी के दो फायरों ने साहब की कपाल-क्रिया कर दी। धमाका सुनकर सब दौड़ आए।

बोधा चिल्लाया- 'क्या है?

लहनासिंह ने उसे तो यह कहकर सुला दिया कि एक हड़का हुआ कुत्ता आया था, मार दिया, औरों से सब हाल कह दिया; बन्दूकें लेकर सब तैयार हो गए। लहना ने साफा फाड़कर घाव के दोनों तरफ पट्टियाँ कसकर बाँधी। घाव मांस में ही था। पट्टयों के कसने से लहू निकलना बन्द हो गया।

इतने में सत्तर जर्मन चिल्लाकर खाई में घुस पड़े। सिक्खों की बन्दुको की बाढ़ ने पहले धावे को रोका, दूसरे को रोका, पर यहाँ थे आठ (लहनासिंह ताक - ताककर मार रहा था-वह खड़ा था और लेटे हुए थे)और वे सत्तर अपने मुर्दा भाइयों के शरीर पर चढ़कर जर्मन आगे घुसे आते थे। थोडे से मिनटों में वे.......

अचानक आवाज आई, वाह गुरूजी दी फतह! वाह गुरूजी दा खालसा! और धड़ाधड बन्दूको के फायर जर्मनों की पीठ पर पड़ने लगे। ऐन मौके पर जर्मन दो चक्की के पाटों के बीच में आ गए। पीछे से सूबेदार हजारासिंह के जवान आग बरसाते थे और सामने लहनासिंह के साथियों के संगीन चल रहे थे। पास आने पर पीछें वालों ने भी संगीन पिरोना शुरू कर दिया।

एक किलकारी और– 'अकाली सिक्खां दी फौज आई। वाह गुरूजी दी फतह! वाह गुरूजी दा खालसा!! सत्त सिरि अकाल पुरूष!!!' और लड़ाई खत्म हो गई। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पन्द्रह के प्राण गए। सूबेदार के कन्धे में से गोली आर–पार निकल गई। लहनासिंह की पसली में एक गोली लगी। उसने घाव को खन्दक की गीली मिट्‌टी से पूर लिया और बाकी का साफा कसकर कमरबन्द की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना के दूसरा घाव भारी लगा है।

लड़ाई के समय चाँद निकल आया था! ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसे कि वाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। वजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन–मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा–दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था। सूबेदार, लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर, उसकी तुरंतबुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आज सब मारे जाते।

इस लड़ाई की आवाज तीन मील दाहिनी ओर की खाईवालों ने सुन ली थी। उन्होने पीछे टेलीफोन कर दिया था। वहाँ से झटपट डॉक्टर और बीमार ढोने की दो गाड़ियाँ चली, जो कोई ड़ेढ घंटे के अन्दर – अन्दर वहाँ आ पहुँची। फील्ड अस्पताल नजदीक था सुबह होते –होते पहुँच जाएँगे इसलिए मामूली पट्‌टी बाँधकर एक गाड़ी में घायल लिटाए गए और दूसरी में लाशे रक्खी गई। सूबेदार ने लहनासिंह की जाँघ में पट्‌टी बाँधवानी चाही, पर उसने यह कहकर टाल दिया कि थोड़ा घाव है, सबेरे देखा जाएगा। बोधासिंह ज्वर में बर्रा रहा था। वह गाड़ी में लिटाया गया। लहना को छोड़कर सूबेदार जाते नहीं। यह देख लहना ने कहा– ''तुम्हे बोधा की कसम है और सूबेदारनी जी की सौगन्ध है, इसा गाड़ी में चले जाओ।''

''और तुम?''

'मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना और जर्मन मुर्दों के लिए भी तो गाड़ियाँ आती होंगी। मेरा हाल बुरा नहीं है। देखते नहीं , मै खड़ा हूँ। वजीरासिंह मेरे पास है ही!

''अच्छा पर–''

'बोधा गाड़ी पर लेट गया? भला, आप भी चढ़ जाओ। सुनिए तो; सूबेदार जी हीराँ को चिट्‌ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होने कहा था, वह मैने कर दिया।

गाडियाँ चल पड़ी थीं। सुबेदार ने चलते – चलते लहना का हाथ पकड़कर कहा– तैने मेरे और बोधा के प्राण बचाए हैं। लिखना कैसा? साथ ही घर चलेंगे। अपनी सूबेदारनी से तुम ही कह देना। उसने क्या कहा था?

''अब आप गाड़ी पर चढ़ जाओ। मैने जो कहा वह लिख देना और कह भी देना।''

''गाड़ी के जाते ही लहना लेट गया। वजीरा पानी पिला दे और मेरा कमरबन्द खोल दे। तर हो रहा है।''

मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति साफ हो जाती है। जन्म– भर की घटनाएँ एक – एक करके समने आती हैं। सारे दृश्यों के रंग साफ होते है, समय की धुन्ध बिल्कुल उन पर से हट जाती।

लहनासिंह बारह वर्ष का है। अमृतसर में मामा के यहाँ आया हुआ है। दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं, उसे एक आठ वर्ष की लड़की मिल जाती है। तब पूछता कि तेरी कुड़माई हो गई तब 'धत्' कहकर वह भाग जाती है। एक दिन उसने वैसे ही पूछा ता उसने कहा,

''हाँ कल हो गई। देखते नहीं, रेशम के फूलों वाला सालू?'' सुनते ही लहनासिंह को दु:ख हुआ। क्रोध हुआ। क्यों हुआ?

''वजीरासिंह पानी पिला दे।''

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह नं. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं। सात दिन की छुट्‌टी लेकर जमीन के मुकदमें

की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहाँ रेजीमेंट अफसर की चिट्ठी मिली कि फौज लाम पर जाती है। फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते है; लौटते हुए हमारे घर होते जाना? साथ चलेंगे। सूबेदार का गाँव रास्ते में पड़ता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था, लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा।

NOTES

जब चलने लगा, तब सूबेदार बेड़े में से निकलकर आया। बोला 'लहना, सूबेदारनी तुझको जानती है। बूलाती है, जा मिल आ। लहनासिंह भीतर पहुँचा़ सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से, रेजीमेट के क्वार्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं।

दरवाजे पर जाकर 'मत्था टेकना' कहा असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

''मुझे पहचाना?''

''नहीं''

''तेरी कुड़माई हो गई। धत् .... कल हो गई...... देखते नहीं, रेशमी बूटों वाला सालू.... अमृतसर में....''

भावों की टकराहट से मूर्च्छा खली। करवट बदली। पसली का घाव बह निकला।

वजीरा पानी पिला.......... उसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है– ''मैने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है। लायलपुर में जमीन दी है, आज नमकहलाली का मौका का आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की घँघरिया पलटन क्यों न बना दी, जो मै भी सूबेदार जी के साथ चली जाती? एक बेटा है। फौज में भरती हुए उसे एक ही वर्ष हुआ। उसके पीछे चार ओर हुए, पर एक भी नहीं जिया।'' सूबेदारनी रोने लगी, ''अब दोनो जाते है। मेरे भाग। तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़ों की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मै आँचल पसारती हूँ।''

रोती-रोती सूबेदारनी ओबरी में चली गई। लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया।

''वजीरासिंह पानी पिला....... उसने कहा था।''

लहना का सिर अपनी गोदी पर रक्खे वजीरासिंह बैठा है। जब माँगता है, तब पानी पिला देता है। आध घंटे तक लहना चुप रहा, फिर बोला–

'कौन? कीरतसिंह?

वजीरा ने कुछ समझकर कहा, ''हौ।''

''भइया, मुझे कुछ उँचा कर ले। अपने पट्टे पे मेरा सिर रख ले।''

वजीरा ने वैसा ही किया।

''हाँ अब ठीक है। पानी पिला दे। बस, अबके हाड़ में यह आम खूब फलेगा। चाचा- भतीजा यहीं बैठकर आम खाना। जितना बड़ा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने मैंने इसे लगाया था।''

वजीरासिंह के आँसू टप-टप टपक रहे थे।

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा–

फ्रांस और बेल्जियम – 68वीं सूची – मैदान में घावों से मरा– नं. 77 सिख राइफल्स जमादार लहनासिंह।

जीवन परिचय

हिन्दी के प्रमुख रचनाकार पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का जन्म 7 जुलाई, 1883 को पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ था । जयपुर के राजपण्डित के कुल में जन्म लेनेवाले गुलेरी जी का राजवंशों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। वे पहले खेतड़ी नरेश जयसिंह के और फिर जयपुर राज्य के सामन्त-पुत्रों के अजमेर के मेयो कॉलेज में अध्ययन के दौरान उनके अभिभावक रहे। सन् 1916 में उन्होंने मेयो कॉलेज में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष का पद सँभाला। सन् 1920 में पं. मदन मोहन मालवीय के प्रबंध आग्रह के कारण उन्होंने बनारस आकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग के प्राचार्य और फिर 1922 में प्राचीन इतिहास और धर्म से सम्बद्ध मनीन्द्र चन्द्र नन्दी पीठ के प्रोफेसर का कार्यभार भी ग्रहण किया।

इस बीच परिवार में अनेक दु:खद घटनाओं के आघात भी उन्हें झेलने पड़े। सन् 1922 में 12 सितम्बर को पीलिया के बाद तेज ज्वर से मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में उनका देहावसान हो गया।

गुलेरी जी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। आप संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी, बांग्ला, अंग्रेज़ी, लैटिन और फ्रेंच आदि भाषाओं पर एकाधिकार रखते थे । गुलेरी जी जब केवल दस वर्ष के थे तो एक बार आपने संस्कृत में भाषण देकर भारत धर्म महामंडल के विद्वानों को आश्चर्य चकित कर दिया था। आपने सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा में भी सर्वप्रथम रहे। आपकी रुचि विज्ञान में थी, प्राचीन इतिहास और पुरातत्व आपका प्रिय विषय था। 1904 से 1922 तक आपने अनेक महत्वपूर्ण संस्थानों में प्राध्यापक के पद पर कार्य किया।

विधाएँ	:	कहानी, निबंध, व्यंग्य, कविता, आलोचना, संस्मरण
प्रमुख कृतियाँ	:	गुलेरी रचनावली (दो खंडों में)
संपादन	:	समालोचक, नागरी प्रचारिणी पत्रिका (संपादक मंडल के सदस्य)समाज का यथार्थ चित्रण ।
		वर्जनात्मक, चित्रात्मक, विवरणात्मक शैलियों का प्रयोग
भाषा शैली	:	आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग, सजीव दृश्य चित्रण शैली।

शब्दार्थ

1. बिरादरीवाले = एक ही जाति वाले,
2. कुड़माई = सगाई,
3. पलटन = फौज, सेना की टुकड़ी
4. सूबेदार = फौज में अफसर,
5. विदूषक = हँसी करने वाला

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. 'उसने कहा था' कहानी का सार संक्षेप में लिखिए।
2. 'उसने कहा था' कहानी का संदेश लिखिए।
3. कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की आलोचना कीजिए।
4. यदि लहनासिंह जागरूक न रहा होता तो क्या परिणाम होता?
5. उसके मन की क्या दशा हुई होगी? सोचकर दस वाक्य लिखिए।
6. सुबेदारनी ने लहनासिंह से क्या याचना की थी?

7. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहनासिंह का चरित्र चित्रण कीजिए।
8. 'मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति साफ हो जाती है।' उसने कहा था कहानी के आधार पर इस कथन को सिद्ध कीजिए।
9. चंद्रधर शर्मा गुलेरी का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

NOTES

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. लहनासिंह की रेजीमेंट का नाम था–

   i. राजपूताना रेजीमेंट ii. महार रेजीमेंट iii. गोरखा रेजीमेंट iv. सिख रायफल्स

2. 'उसने कहा था' कहानी के प्रारम्भ की घटना है–

   i. मुम्बई की ii. कोलकाता की iii. अमृतसर की iv. दिल्ली की

3. 'उसने कहा था' कहानी के रचनाकार कौन हैं–

   i. प्रेमचंद ii. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

   iii. रामनारायण उपाध्याय iv. हजारीप्रसाद द्विवेदी

4. पंजाबी शब्द 'कुड़माई' का क्या अर्थ है–

   i. विवाह ii. जन्म iii. दोस्ती iv. सगाई

5. 'उसने कहा था' कहानी कब की है?

   i. प्रथम विश्व युद्ध ii. द्वितीय विश्व युद्ध iii. 1857 iv. बक्सर युद्ध

उत्तर – 1.(iv); 2.(iii); 3. (ii); 4. (iv); 5. (i)

■ ■ ■

18. महाजनी सभ्यता

मुंशी प्रेमचंद

NOTES

हिन्दी साहित्य के महान रचनाकार मुंशी प्रेमचंद जी जिन्हे अपने जीवन में ही उपन्यास सम्राट की उपाधि प्राप्त हुई। जिन्होंने 15 उपन्यास 300 से अधिक कहानियों की रचना कर हिन्दी साहित्य में अपना नाम स्वर्णांकित किया है, ने तत्समय् प्रचलित साहूकारी – महाजनी व्यवस्था को प्रस्तुत निबंध ''महाजनी सभ्यता'' में सजीव किया है। निबंध में आपके द्वारा इनके गुण – दोषों, अच्छाइयों – बुराइयों को बड़ी बेबाकी से लिखा है।

जागीरदारी सभ्यता में बलवान भुजाएँ और मजबूत कलेजा जीवन की आवश्यकताओं में परिगणित थे और साम्राज्यवाद में बुद्धि और वाणी के गुण तथा मूक आज्ञा – पालन उसके आवश्यक साधन थे, पर उन दोनों स्थितियों में दोषों के साथ कुछ गुण भी थे। मनुष्य के अच्छे भाव लुप्त नहीं हो गए थे। जागीरदार अगर दुश्मन के खून से अपनी प्यास बुझाता था, तो अक्सर अपने किसी मित्र या उपकारक के लिए जान की बाजी भी लगा देता था। बादशाह अगर अपने हुक्म को कानून समझता था और उसकी अवज्ञा को कदापि सहन न कर सकता था, तो प्रजा – पालन भी करता था, न्यायशील भी होता था। दूसरे के देश पर चढ़ाई, वह या तो किसी अपमान – अपहार का बदला फेरने के लिए या अपनी आनबान, रौब – दाब कायम रखने के लिए या फिर देश – विदेश और राज्य विस्तार की वीरोचित महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित होकर करता था। उसकी विजय का उद्देश्य प्रजा का खून चूसना कदापि न होता था। कारण, यह कि राजा और सम्राट जनसाधारण को अपने स्वार्थसाधन और धनशोषण की भट्टी का ईधन न समझते थे, किन्तु उनके दु:ख – सुख में शरीक होते थे और उनके गुणों की कद्र करते थे।

मगर इस महाजनी सभ्यता में तो सारे कामों की गरज महज पैसा होता है। किसी देश पर राज किया जाता है, तो इसलिए कि महाजनों, पूँजीपतियों को ज्यादा – से – ज्यादा नफा हो। इस दृष्टि से मानो आज दुनिया में महाजनों का ही राज्य है। मनुष्य – समाज दो भागों में बँट गया है। बड़ा हिस्सा तो मरने और खपने वालों का है और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का, जो अपनी शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने वश में किए हुए है। इन्हें इस बड़े भाग के साथ किसी तरह की हमदर्दी नहीं, जरा भी रू – रियायत नहीं। उसका अस्तित्व केवल इसलिए है कि अपने मालिकों के लिए पसीना बहाए, खून गिराए और एक दिन चुपचाप इस दुनिया से विदा हो जाए। अधिक दु:ख की बात तो यह है कि शासक – वर्ग के विचार और सिद्धांत शासित वर्ग के भीतर भी समा गए है, जिसका फल यह हुआ है कि हर आदमी अपने को शिकारी समझता है और उसका शिकार है समाज। वह खुद समाज से बिलकुल अलग है, अगर कोई सम्बन्ध है, तो यह कि किसी चाल या युक्ति से वह समाज को उल्लू बनाए और उससे जितना लाभ उठाया जा सकता हो, उठा ले।

धन – लोभ ने मानव – भावों को पूर्ण रूप से अपने अधीन कर लिया है। कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी, पैसा और केवल पैसा है। जिसके पास पैसा है वह देवता – स्वरूप है, उसका अन्त:करण कितना ही काला क्यों न हो। साहित्य, संगीत और कला – सभी धन की देहली पर माथा टेकनेवालों में है। यह हवा इतनी जहरीली हो गई है कि इसमें जीवित रहना कठिन होता जा रहा है। डॉक्टर और हकीम हैं कि वे बिना लम्बी फीस लिए बात नहीं करते। वकील और बैरिस्टर हैं कि वे मिनटों को अशर्फियों से तौलते हैं। गुण और योग्यता की सफलता उसके आर्थिक मूल्य के हिसाब से मानी जा रही है। अखबार इन्हीं का राग अलापते है। इस पैसे ने आदमी के दिलो-दिमाग पर इतना कब्जा जमा लिया है कि उसके राज्य पर किसी ओर से भी आक्रमण करना कठिन दिखाई देता है। वह दया और स्नेह, सचाई और सौजन्य का पुतला मनुष्य दया – ममता से शून्य जड़यंत्र बनकर रह गया है। इसे महाजनी सभ्यता ने नए – नए नीति – नियम गढ़ लिए है, जिन पर आज समाज की व्यवस्था चल रही है। उनमें से एक यह है कि समय ही धन है। पहले समय जीवन था और उसका सर्वोत्तम उपयोग विद्या – कला का अर्जन अथवा दीन – दु:खीजनों की सहायता था। अब उसका सबसे बड़ा सदुपयोग पैसा कमाना है। डॉक्टर साहब हाथ मरीज की नब्ज पर रखते हैं और निगाह घड़ी की सुई पर। उनका एक – एक मिनट एक – एक अशर्फी है। रोगी ने अगर केवल एक अशर्फी

नजर की है, तो वह उसे एक मिनट से ज्यादा वक्त नहीं दे सकते। रोगी अपनी दु:खगाथा सुनाने के लिए बेचैन है पर डॉक्टर साहब का उधर बिलकुल ध्यान नहीं, उन्हें उससे जरा सी दिलचस्पी नहीं। उनकी निगाह में उस व्यक्ति का अर्थ केवल इतना ही है कि वह उन्हें फीस देता है। वह जल्द – से जल्द नुस्खा लिखेंगे और दूसरे रोगी को देखने चले जाएँगे। मास्टर साहब पढ़ाने आते है उनका एक घण्टा वक्त बँधा है।

NOTES

घड़ी सामने रख लेते है, जैसे ही घण्टा पूरा हुआ, वह उठ खड़े हुए। लड़के का सबक अधूरा रह गया है तो रह जाए, उनकी बला से! अधिक समय कैसे दे सकते है क्योंकि समय रूपया है! इस धन – लोभ ने मनुष्यता और मित्रता का नाम – शेष कर डाला है। पति को पत्नी या लड़कों से बात करने की फुर्सत नहीं, मित्र और सम्बन्धी किस गिनती में है। जितनी देर वह बातें करेगा, उतनी देर में तो कुछ कमा लेगा। कुछ कमा लेना ही जीवन की सार्थकता है, शेष सब कुछ समय – नाश है। बिना खाए – सोए काम नहीं चलता, बेचारा इसके लिए लाचार है और इतना समय नष्ट करना ही पड़ता है।

पर आप उस पैसे के गुलाम को बुरा नहीं कह सकते। सारी दुनिया जिस प्रवाह में बह रही है, वह भी उसी में बह रहा है। मान – प्रतिष्ठा सदा से मानवीय आकांक्षाओं का लक्ष्य रहा है। जब विद्या – कला, मान – प्रतिष्ठा का साधन थी, उस समय लोग इन्ही का अर्जन – अभ्यास करते थे। अब धन उसका एकमात्र उपाय है, तब मनुष्य मजबूर है कि एकनिष्ठ भाव से उसकी उपासना – आराधना करे। वह कोई साधु – महात्मा, सन्यासी – उदासी नही: वह देख रहा हे कि उसके पेशे में जो सौभाग्यशाली सफलता की कठिन यात्रा पूरी कर सके हैं, वे उसी राज – मार्ग के पथिक थे, जिस पर वह खुद चल रहा है। समय धन है एक सफल व्यक्ति का।

इस सभ्यता का दूसरा सिद्धान्त है 'बिजनेस इज बिजनेस', अर्थात् व्यवसाय है, उसमें भावुकता के लिए गुंजाइश नहीं। पुराने जीवन – सिद्धान्त में वह लट्ठमार साफगोई नहीं है, जो निर्लज्जता कही जा सकती है और जो इस नवीन सिद्धान्त की आत्मा है, जहाँ लेन – देन का सवाल है, रूपए – पैसे का मामला है, वहाँ न दोस्ती का गुजर है, न मुरव्वत का, न इंसानियत का। 'बिजनेस' में दोस्ती कैसी! जहाँ किसी ने इस सिद्धान्त की आड़ ली और आप लाजवाब हुए। फिर आपकी जबान नहीं खुल सकती। एक सज्जन जरूरत से लाचार होकर अपने किसी महाजन मित्र के पास जाते है और चाहते हैं कि वह उनकी कुछ मदद करे! यह भी आशा रखते है कि शायद सूद की दर में वह कुछ रियायत कर दें, पर जब देखते हैं कि वह महानुभाव मेरे साथ भी वही कारोबारी बर्ताव कर रहे है, तो कुछ रियायत की प्रार्थना करते है, मित्रता और घनिष्ठता के आधार पर आँखों में आँसू भरकर बड़े करूण स्वर में कहते हैं – ''महाशय, मैं इस समय बड़ा परेशान हूँ, नहीं तो आपको कष्ट न देता, ईश्वर के लिए मेरे हाल पर रहम कीजिए। समझ लीजिए कि एक पुराने दोस्त........।'' वहीं बात काटकर आज्ञा के स्वर में फरमाया जाता है – ''लेकिन जनाब, आप 'बिजनेस इज बिजनेस' इसे भूल जाते है!'' उसी क्षण कातर प्रार्थी पर मानो बम का गोला गिरता है। अब उसके पास कोई तर्क नही, कोई दलील नहीं। चुपके से उठकर अपनी राह लेता है या फिर अपने व्यवसाय – सिद्धान्त के भक्त मित्र की सारी शर्ते कबूल कर लेता है।

इस महाजनी सभ्यता ने दुनिया में जो नई नीतियाँ चलाई है उनमें सबसे अधिक घातक और रक्त – पिपासु यही व्यवसायवाला सिद्धान्त है। मियाँ – बीवी में बिजनेस, बाप – बेटे में बिजनेस, गुरू – शिष्य में बिजनेस! सब मानवीय, आध्यात्मिक और सामाजिक नेह – नाते समाप्त। आदमी – आदमी के बीच बस कोई लगाव है तो बिजनेस का। लानत है इस 'बिजनेस' पर! लड़की अगर दुर्भाग्यवश कँवारी रह गई और अपनी कोई जीविका न निकाल सकी, तो उसे अपने बाप के घर में ही लौंडी बन जाना पड़ता है। यों लड़के – लड़कियाँ सभी घरों में काम – काज करते ही है, पर उन्हें कोई टहलुआ नहीं समझता, पर इस महाजनी सभ्यता में लड़की एक खास उम्र के बाद लौंडी और अपने भाइयों की मजदूरनी हो जाती है। पूज्य पिता जी भी अपने पितृ – भक्त बेटे के टहलुए बन जाते है और माँ अपने सपूत की टहलुई। स्वजन – सम्बन्धी को किसी मेहमानी का बिल भी चुकाना पड़ता है। इस सभ्यता की आत्मा है व्यक्तिवाद, आप स्वार्थी बना सब – कुछ अपने लिए।

अब तक दुनिया के लिए इस सभ्यता की रीति – नीति का अनुसरण करने के सिवा और कोई उपाय न था। उसे झख मारकर उसके आदेशों के सामने सिर झुकाना पड़ता था। महाजन अपने में फूला फिरता था: सारी दुनिया चरणों पर नाक रगड़ रही थी। बादशाह उसका बन्दा, वजीर उसका गुलाम, संधि – विग्रह की कुंजी उसके हाथ में, दुनिया उसकी महत्त्वाकांक्षाओं के सामने सिर झुकाए हुए, हर मुल्क में उसका बोलबाला।

परन्तु अब एक नई सभ्यता का सूर्य सुदूर पश्चिम से उदय हो रहा है, जिसने इस नाटकीय महाजनवाद या पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी है। जिसका मूल सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति, जो अपने शरीर या दिमाग से मेहनत करके कुछ पैदा कर सकता है, राज्य और समाज का परम सम्मानित सदस्य हो सकता है और जो केवल दूसरों की मेहनत या बाप – दादों के जोड़े हुए धन पर रईस बना फिरता है, वह पतिततम प्राणी है। उसे राज्य – प्रबन्ध में राय देने का हक नही और वह नागरिकता के अधिकारों, का भी पात्र नहीं। महाजन इस नई लहर से अति उद्विग्न होकर बौखलाया हुआ फिर रहा है और सारी दुनिया के महाजनों की शामिल आवाज इस नई सभ्यता को कोस रही है, उसे शाप दे रही है। व्यक्ति – स्वातंत्र्य, धर्म – विश्वास की स्वाधीनता और अपनी अन्तरात्मा के आदेश पर चलने की आजादी वह इन सबकी घातक, गला घोंट देने वाली बताई जा रही है। वह काले – से –काले रंग में रंगी जा रही है, कुत्सित – से – कुत्सित रूप में चित्रित की जा रही है। उन सभी साधनों से, जो पैसेवालों के लिए सुलभ है, काम लेकर उसके विरूद्ध प्रचार किया जा रहा है पर सचाई है जो इस सारे अन्धकार को चीरकर दुनिया में अपनी ज्योति का उजाला फैला रही है।

नि:स्संदेह इस नई सभ्यता ने व्यक्ति – स्वातंत्र्य के पंजे, नाखून और दाँत तोड़ दिए है। उसके राज्य में अब एक पूँजीपति लाखों मजदूरों का खून पीता रहकर मोटा नहीं हो सकता। उसे अब यह आजादी नहीं कि अपने नफे के लिए साधारण आवश्यकता की वस्तुओं के दाम चढ़ा सके, अपने सड़े – गले माल की खपत कराने के लिए युद्ध करा दे, गोला – बारूद्ध और युद्ध – साम्रगी बनाकर दुर्बल राष्ट्रों का दलन कराए। अगर इसकी स्वाधीनता का अर्थ यह है कि जन – साधारण को हवादार मकान, पुष्टिकर भोजन, साफ – सुथरे गाँव, मनोरंजन और व्यायाम की सुविधाएँ, बिजली के पंखे और रोशनी और सद्य:सुलभ न्याय की प्राप्ति हो, तो इस समाज– व्यवस्था में जो स्वाधीनता और आजादी है, वह दुनिया की किसी सभ्यतम कहलाने वाली जाति को भी सुलभ नहीं। धर्म की स्वतंत्रता का अर्थ अगर पुरोहितों, पादरियों, मुल्लाओं की मुफ्तखोर जमात के दम्भमय उपदेशों और अन्धविश्वास – जनित रूढ़ियों का अनुसरण है, तो निस्संदेह वहाँ इस स्वतंत्रता का अभाव है: पर धर्म – स्वतंत्रता का अर्थ यदि लोक – सेवा, सहिष्णुता, समाज के लिए व्यक्ति का बलिदान, नेकनीयती, शरीर और मन की पवित्रता है, तो इस सभ्यता में धर्माचरण की जो स्वाधीनता है और किसी देश को उसके दर्शन भी नहीं हो सकते।

जहाँ धन की कमी –बेशी के आधार पर असमानता है, वहाँ ईर्ष्या – द्वेष, जोर – जबर्दस्ती, बेईमानी, झूठे, मिथ्या अभियोग – आरोप, वेश्यावृत्ति, व्यभिचार और सारी दुनिया की बुराइयाँ अनिवार्य रूप से मौजूद है। जहाँ धन का आधिक्य नहीं, अधिकांश मनुष्य एक ही स्थिति में है, वहाँ जलन क्यों हो और सब्र क्यों हो? सतीत्व – विक्रय क्यों ही और व्यभिचार क्यों हो? झूठे मुकदमें क्यों चलें और चोरी–डाके की वारदातें क्यों हों? ये सारी बुराइयाँ तो दौलत की देन हैं, पैसे के प्रसाद हैं, महाजनी सभ्यता ने ही इनकी सृष्टि की है। वही इनको पालती है और वही यह भी चाहती है कि जो दलित, पीड़ित और विजित हैं, वे इसे ईश्वरीय विधान समझकर अपनी स्थिति पर संतुष्ट रहें। उनकी ओर से तनिक भी विरोध–विद्रोह का भाव दिखाया गया,तो उनका सिर कुचलने के लिए पुलिस, अदालत है, कालापानी है। आप शराब पीकर उसके नशे से बच नहीं सकते। आग लगाकर चाहें कि लपटें न उठें, असम्भव है। पैसा अपने साथ ये सारी बुराइयाँ लाता है, जिन्होंने दुनिया को नरक बना दिया। इस पैसा–पूजा को मिटा दीजिए, सारी बुराइयाँ अपने–आप मिट जाएँगी, जड़ न खोदकर केवल फुनगी की पत्तियाँ तोड़ना तो बेकार है। यह नई सभ्यता धनाढ्यता को हेय और लज्जाजनक तथा घातक विष समझती है। वहाँ कोई आदमी अमीरी ढंग से रहे तो लोगों की ईर्ष्या का पात्र नहीं होता, बल्कि तुच्छ और हेय समझा जाता है। गहनों से लदकर कोई स्त्री सुन्दरी नहीं बनती, घृणा की पात्र बनती है। साधारण जन–समाज से ऊँचा रहन–सहन रखना वहाँ बेहूदगी समझी जाती है। शराब पीकर वहाँ बहका नहीं जा सकता,

अधिक मद्यपान वहाँ दोष समझा जाता है- धार्मिक दृष्टि से नहीं, किन्तु शुद्ध सामाजिक दृष्टि से , क्योंकि शराबखोरी से आदमी में धैर्य और कष्ट-सहन, अव्यवस्था और श्रमशीलता का अंत हो जाता है।

हाँ, इस समाज-व्यवस्था ने व्यक्ति को यह स्वाधीनता नहीं दी है कि वह जन-साधारण को अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की तृप्ति का साधन बनाए और तरह-तरह के बहानों से उनकी मेहनत का फायदा उठाए या सरकारी पद प्राप्त करके मोटी-मोटी रकमें उड़ाए और मूँछो पर ताव देता फिरे। वहाँ ऊँचे से ऊँचे अधिकारी की तनख्वाह भी उतनी ही है, जितनी एक कुशल कारीगर की। वह गगनचुम्बी प्रासादों में नही रहता, तीन-चार कमरों में ही उसे गुजर करनी पड़ती है। उसकी श्रीमती जी रानी साहिबा या बेगम बनी हुई स्कूलों में इनाम बाँटती नहीं फिरती, बल्कि अक्सर मेहनत-मजदूरी या किसी अखबार के दफ्तर में काम करती है। सरकारी पद पाकर व्यक्ति अपने को लाट साहब नहीं, बल्कि जनता का सेवक समझता है। महाजनी सभ्यता का प्रेमी इस समाज-व्यवस्था को क्यों पसन्द करने लगा जिसमें उसे दूसरों पर हुकूमत जताने के लिए सोने-चाँदी के ढेर लगाने की सुविधाएँ नहीं। पूँजीपति और जमींदार तो इस सभ्यता की कल्पना से ही काँप उठते हैं। उनकी जूड़ी का कारण हम समझ सकते है। पर जब वे लोग भी जो अनजान में महाजनी सभ्यता का समर्थन कर रहे हैं, उसकी खिल्ली उड़ाने और उस पर फब्तियाँ कसने लगते हैं तो हमें उनकी इस दास-मनोवृत्ति पर हँसी आती है। जिसमें मनुष्यता, आध्यात्मिकता, उच्चता ओर सौन्दर्य-बोध है, वह कभी ऐसी समाज-व्यवस्था की सराहना नहीं कर सकता, जिसकी नींव लोभ,स्वार्थपरता और दुर्बल मनोवृत्ति पर खड़ी हो। ईश्वर ने तुम्हें विद्या और कला की सम्पत्ति दी है, तो उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग यही कि उसे जन-समाज की सेवा में लगाओ, यह नहीं कि उससे जन-समाज पर हुकूमत चलाओ, उसका खून चूसो और उसे उल्लू बनाओं।

सारांश :- 'महाजनी सभ्यता' प्रेमचन्द्र द्वारा समाज में फैली महाजनवादी सभ्यता के सन्दर्भ में लिखा गया एक सारगर्भित निबन्ध है। निबन्ध के प्रारम्भ में निबन्धकार ने जागीरदारी तथा साम्राज्यवादी सभ्यता का हवाला देते हुए बताया है कि जागीरदार या बादशाह लोग अगर अपने दुश्मन के खून के प्यासे होते थे अपना आदेश हर स्थिति में पूरा करवाने के पक्षधर थे, तो जरूरत पड़ने पर वे अपने मित्रों के लिए अपनी जान की बाजी भी लगा देते थे। अपनी प्रजा का बहुत ध्यान भी रखते थे तथा उसके सुख-दु:ख में भी बराबर शामिल होते थे। लेकिन महाजनी सभ्यता इससे बिल्कुल पृथक है। इसमें हर कार्य पैसों के नफे-नुकसान को ध्यान में रखकर किया जाता है। इसमें हर व्यक्ति अपने को शिकारी समझता है तथा समाज को अपना शिकार। वह समाज को उल्लू बनाकर, उससे यथासंभव लाभ उठाने का प्रयास करता है।

महाजनी सभ्यता ने मानवीय सद्‌भाव को पूर्ण रूप अपने अधीन कर लिया है। कुलीनता और शराफत, गुण तथा मनुष्य की कसौटी केवल पैसा हो गया है। जिसके पास पैसा है, वह देवता-स्वरूप है, चाहे उसका अन्त:करण कितना भी काला क्यों न हो। साहित्य, संगीत तथा कला- सभी धन के सामने सिर झुकाने वालों के पास है। डॉक्टर, हकीम, वकील, बैरिस्टर सबकी नजर में पैसा महत्वपूर्ण है। गुण और योग्यता मनुष्य के आर्थिक मूल्यों के आधार पर मापी जाती है। मौलवी, पण्डित सभी पैसे वालों की गुलामी करते हैं। पैसे ने आदमी के दिलो-दिमाग पर कब्जा कर लिया है। पहले 'समय' जीवन था तथा उसका सर्वोत्तम उपयोग विद्या तथा कला को अर्जित करना अथवा दीन-दुखियों की मदद करना था। लेकिन इस महाजनी सभ्यता ने नये-नये नियम गढ़कर समय का सबसे बड़ा सदुपयोग पैसा कमाना बना दिया है। डॉक्टर किसी मरीज को देखता है तो उसका ध्यान इस बात में रहता है कि एक से जल्द निजात पाकर दूसरे मरीजों को शीघ्र देख ले, ताकि ज्यादा लोगों से ज्यादा फीस कमा सके। ट्यूशन पढ़ाने वाला शिक्षक समय देखकर एक घंटे में अपनी पढ़ाई बन्द कर देता है। अर्थात् ये सब कम से कम समय देना चाहते है। क्योकि ये अधिक समय कैसे दे सकते हैं, क्योंकि समय 'रूपया' है। इस धन-लोभ ने मनुष्यता तथा मित्रता का लोप कर डाला है। व्यक्ति को अपनी पत्नी-बच्चों से बात करने की फुर्सत नहीं है तो मित्र तथा सम्बन्धी किस गिनती में हैं। सारी दुनिया की यही स्थिति है।

महाजनी सभ्यता का दूसरा सिद्धान्त है- 'बिजनेस इस बिजनेस अर्थात व्यवसाय सिर्फ व्यवसाय है- जिसमें भावुकता के लिए कोई स्थान नहीं है। इस व्यवसाय के सिद्धान्त में स्पष्ट निर्लज्जता है, जो इस सिद्धान्त

की आत्मा है। व्यवसाय में कोई 'अपना' नहीं होता। व्यवसाय में सिर्फ व्यवसाय होता है। पति-पत्नी के बीच में व्यवसाय, बाप-बेटे के बीच में व्यवसाय, गुरू-शिष्य के बीच में व्यवसाय। मानवीय, आध्यात्मिक तथा सामाजिक रिश्ते-नाते सब समाप्त। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच बस एक ही लगाव है, बिजनेस का। दुनिया के लिए इस महाजनी सभ्यता की रीति-नीति का अनुसरण करने के सिवा अब तक और कोई उपाय न था, अत: उसे झख मारकर उसके नियमों के सामने झुकना पड़ता था, लेकिन अब सुदूर-पश्चिम से एक नई सभ्यता का आगमन हो रहा है, जिसने इस नाटकीय महाजनवाद या पूँजीवाद से एक नई सभ्यता का आगमन हो रहा है, जिसने इस नाटकीय महाजनवाद या पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी है। इसका मूल सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक व्यक्ति, जो अपने शरीर या दिमाग से मेहनत करके कुछ पैदा कर सकता है, राज्य और समाज का परम सम्मानित सदस्य हो सकता है और जो केवल दूसरों की मेहनत या बाप-दादों के जोड़े हुए धन पर रईस बना फिरता है, वह पतिततम प्राणी है। 'महजन' इस नई लहर से अति उद्विग्न होकर बौखलाया फिर रहा है और सारी दुनिया के महाजनों की शामिल आवाज इस नई सभ्यता को कोस रही है, उसे शाप दे रही है।'

इस नई सभ्यता ने नि:संदेह व्यक्ति-स्वातंत्र्य के पंजे, नाखून और दाँत तोड़ दिए हैं। उसके राज्य में अब एक पूँजीपति लाखों मजदूरों का खून पीकर मोटा नहीं हो सकता। उसे अब यह आजादी नहीं कि अपने नफे के लिए साधारण आवश्यकता की वस्तुओं के दाम चढ़ा सके, अपने सड़े-गले माल की खपत कराने के लिए युद्ध करा दे, गोला-बारूद और युद्ध-सामग्री बनाकर दुर्बल राष्ट्रों का दलन कराए। अगर इसकी स्वाधीनता का अर्थ यह है कि जनसाधारण को हवादार मकान, पुष्टिकर भोजन, साफ-सुथरे गाँव, मनोरंजन और व्यायाम की सुविधाएँ, बिजली के पंखे और रोशनी तथा सद्य:सुलभ न्याय की प्राप्ति हो, तो इस समाज-व्यवस्था में जो स्वाधीनता और आजादी है, जो दुनिया की किसी सभ्यतम कहलाने वाली जाति को भी सुलभ नहीं। धर्म की स्वतन्त्रता का अर्थ अगर पुरोहितों, पादरियों, मुल्लाओं, की मुफ्तखोर जमात के दम्भमय उपदेशों और अन्धविश्वासजनित रूढ़ियों का अनुसरण है, तो नि:संदेह वहाँ इस स्वतंत्रता का अभाव है, पर धार्मिक स्वतंत्रता का अर्थ यदि लोकसेवा, सहिष्णुता, समाज के लिए व्यक्ति का बलिदान, नेकनीयती, शरीर और मन की पवित्रता है, तो इस सभ्यता में धर्माचरण की जो स्वाधीनता है और किसी देश को उसके दर्शन भी नहीं हो सकते।

जहाँ धन के आधार पर असमानता है, वहाँ ईर्ष्या-द्वेष, जोर-जबर्दस्ती, बेईमानी, झूठे, मिथ्या, अभियोग-आरोप, वेश्यावृत्ति, व्याभिचार और सारी दुनिया की बुराइयाँ अनिवार्य रूप से मौजूद हैं। जहाँ धन का आधिक्य नहीं, अधिकांश मनुष्य एक ही स्थिति में है, वहाँ ये बुराइयाँ क्यो हो? ये सारी बुराइयाँ तो दौलत की देन हैं, पैसे के प्रसाद हैं, महाजनी सभ्यता ने ही इसकी सृष्टि की है। वही इनको पालती है और वही यह भी चाहती है कि जो दलित, पीड़ित और विजित हैं, वे इसे ईश्वरीय विधान समझाकर अपनी स्थिति पर संतुष्ट रहें। उनकी ओर से तनिक भी विरोध-विद्रोह का भाव दिखाया गया, तो उनका सिर कुचलने के लिए पुलिस है, अदालत है, कालापानी है। पैसा अपने साथ सारी बुराइयाँ लाता है। पैसे के लोभ ने दुनिया को नरक बना दिया है। इस पैसा-पूजा को मिटा दीजिए, सारी बुराइयाँ अपने आप मिट जाएँगी, जड़ न खोदकर केवल फुनगी की पत्तियाँ तोड़ना तो बेकार है। यह नई सभ्यता धनाढ्यता को हेय और लज्जाजनक तथा घातक विष समझती है।

लेकिन इस समाज-व्यवस्था ने व्यक्ति को यह स्वाधीनता नहीं दी है कि वह जन-साधारण को अपनी महत्वाकांक्षाओं की तृप्ति का साधन बनाए और तरह-तरह के बहानों से उनकी मेहनत का फायदा उठाए या सरकारी पद प्राप्त करके मोटी-मोटी रकमें उड़ाए और मूँछो पर ताव देता फिरे। वहाँ ऊँचे से ऊँचे अधिकारी की तनख्वाह भी उतनी ही है, जितनी एक कुशल कारीगर की। वह गगनचुम्बी प्रासादों में नहीं रहता, तीन-चार कमरों में ही उसे गुजर करनी पड़ती है।

अत: स्वाभाविक है कि महाजनी सभ्यता का समर्थक, इस समाज व्यवस्था को पसन्द नहीं करेगा। क्योंकि यह तो उसके सिद्धान्तों के बिल्कुल विपरीत है। हमें यह याद रखना चाहिए कि जिस व्यक्ति में मनुष्यता, आध्यात्मिकता, उच्चता और सौन्दर्यबोध है, वह ऐसी ही समाज-व्यवस्था का समर्थन करेगा, न कि महाजनी

सभ्यता का। ईश्वर ने विद्या व कला की जो सम्पत्ति दी है उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग यही है कि उसे जनसेवा में लगाएँ, न कि उससे जन-समाज का शोषण करें।

जीवन परिचय

NOTES

मुंशी प्रेमचंद भारत के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं जिनके युग का विस्तार सन् 1880 से 1936 तक है। यह कालखण्ड भारत के इतिहास में बहुत महत्व का है। इस युग में भारत का स्वतंत्रता-संग्राम नई मंज़िलों से गुज़रा। प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। वे एक सफल लेखक, देशभक्त नागरिक, कुशल वक्ता, ज़िम्मेदार संपादक और संवेदनशील रचनाकार थे। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में जब हिन्दी में काम करने की तकनीकी सुविधाएँ नहीं थीं फिर भी इतना काम करने वाला लेखक उनके सिवा कोई दूसरा नहीं हुआ।

प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। प्रेमचंद के पिताजी मुंशी अजायब लाल और माता आनन्दी देवी थी। प्रेमचंद का बचपन गाँव में बीता था। वे नटखट और खिलाड़ी बालक थे और खेतों से शाक-सब्ज़ी और पेड़ों से फल चुराने में दक्ष थे। उन्हें मिठाई का बड़ा शौक़ था और विशेष रूप से गुड़ से उन्हें बहुत प्रेम था। बचपन में उनकी शिक्षा-दीक्षा लमही में हुई और एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फ़ारसी पढ़ना सीखा।

जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचन्द ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी। इंटरमीडिएट कक्षा में भी उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य एक विषय के रूप में पढा था।

व्यक्तित्व – सादा एवं सरल जीवन के मालिक प्रेमचन्द सदा मस्त रहते थे। उनके जीवन में विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। इस खेल को उन्होंने बाज़ी मान लिया जिसको हमेशा जीतना चाहते थे। कहा जाता है कि प्रेमचन्द हंसोड़ प्रकृति के मालिक थे। विषमताओं भरे जीवन में हंसोड़ होना एक बहादुर का काम है। इससे इस बात को भी समझा जा सकता है कि वह अपूर्व जीवनी-शक्ति का द्योतक थे। सरलता, सौजन्यता और उदारता की वह मूर्ति थे। जहाँ उनके हृदय में मित्रों के लिए उदार भाव था वहीं उनके हृदय में गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का अथाह सागर था।

साहित्य की विशेषताएँ – प्रेमचन्द की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया। उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। अपनी कहानियों से प्रेमचंद मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं।

कृतियाँ – प्रेमचंद की कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से वह कथाकार हैं। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गयी थी। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। जिस युग में प्रेमचंद ने क़लम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था।

उपन्यास – कर्मभूमि, निर्मला, गोदान, गबन, अलंकार, प्रेमा, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, प्रतिज्ञा

नाटक – सृष्टि, संग्राम

बाल-साहित्य – दुर्गादास, रामचर्चा

कहानियाँ–मानसरोवर (भाग–1 से 8 में कुल 202 कहानियाँ) साथ ही अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ–कफ़न, कश्मीरी सेब, जुरमाना, जीवन–सार, तथ्य, दुनिया का सबसे अनमोल रत्न।

पुरस्कार व सम्मान – प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से 31 जुलाई 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया। (29) गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। इसके बरामदे में एक भित्तिलेख है जिसका चित्र दाहिनी ओर दिया गया है। यहाँ उनसे संबंधित वस्तुओं का एक संग्रहालय भी है। जहाँ उनकी एक वक्षप्रतिमा भी है। प्रेमचंद की 125वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई कि वाराणसी से लगे इस गाँव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा। उनके बेटे अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' नाम से पिता की जीवनी लिखी है। उनकी सभी पुस्तकों के अंग्रेज़ी व उर्दू रूपांतर तो हुए ही हैं, चीनी, रूसी आदि अनेक विदेशी भाषाओं में उनकी कहानियाँ लोकप्रिय हुई हैं।

मृत्यु – अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर (सन 1934–35 जो मुंबई की फिल्मी दुनिया में बीता), उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुज़रा, जहाँ उन्होंने अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया और अपना साहित्य–सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ। इस तरह वह दीप सदा के लिए बुझ गया जिसने अपनी जीवन की बत्ती को कण–कण जलाकर भारतीयों का पथ आलोकित किया।

शब्दार्थ

1.	कुलीनता	=	उच्चता, श्रेष्ठता	2. रक्त पिपासु	=	खून का प्यासा
3.	उद्विग्न	=	परेशान, चिंतित,	4. कुत्सित	=	निंदित, बुरा
5.	टहलुए	=	सेवादार	6. सराहना	=	प्रशंसा, तारीफ

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. धन लोभ से क्या – क्या हानियाँ है?
2. महाजनी सभ्यता में पैसे का क्या महत्व समझाया है?
3. व्यवसाय वाले सिद्धान्त पर प्रेमचंद के क्या विचार है?
5. महाजनी सभ्यता निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
6. मुंशी प्रेमचंद की संक्षिप्त जीवनी लिखिए।
7. मुशी प्रेमचंद की 10 कृतियाँ के नाम लिखिए।
8. मुशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व को संक्षेप में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महाजनी सभ्यता के अनुसार धन लोभ से क्या नष्ट होता है?

   i. बाल – बच्चे ii. परिवार

   iii. मानवता – मित्रता iv. पैसा

2. महाजनी सभ्यता में आदर्श गुणों की कसौटी क्या है?

   i. प्रतिभा ii. पैसा iii. संस्कार iv. व्यक्तित्व

3. महाजनी सभ्यता के निबंधकार है?

   i. आचार्य शुक्ल ii. आचार्य द्विवेदी iii. प्रेमचंद iv. भारतेन्दु

NOTES

4. मुंशी प्रेमचंद का जन्म कब हुआ?

i. 1880　　ii. 1901　　iii. 1931　　iv. 1936

5. प्रेमचंद का वास्तविक नाम है?

i. प्रेमचंद　　ii. अजायब लाल　　iii. धनपतराय　　iv. आनंदी लाल

6. प्रेमचंद की कृति है?

i. निर्मला　　ii. रंगभूमि　　iii. गोदान　　iv. उपर्युक्त

उत्तर 1.(iii)　2.(ii)　3.(iii)　4.(i)　5.(iii)　6.(iv)

■ ■ ■

19. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

NOTES

संचार संप्रेषण अथवा प्रभावी वाक्कला या लेखन में प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तिया अद्वितीय माध्यम है विश्व की प्रत्येक भाषा में इनका प्रचलन है। वस्तुत: जो भाषा संप्रेषण में जितनी अधिक क्षमता रखती है, वह उतनी ही समृद्ध मानी जाती है। इनके द्वारा मनुष्य अपने अनुभवों को सहज अभिव्यक्ति देता है और वाकशक्ति सम्पन्न बनता है। लोकोक्तियों एवं मुहावरों से भाषा में ताजगी और अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता भी आती है।

मुहावरों का उद्भव - भावाभिव्यक्ति की विविधता ने प्रथमत: मुहावरों को जन्म दिया होगा। प्रेम, घृणा, क्रोध आदि की अभिव्यक्ति कभी - कभी अभिधा के द्वारा असम्भव सी हो जाती है, तब मनुष्य भाषा के नए - नए प्रयोग करता है है। इसी से शब्दों के प्रचलित अर्थ बदल जाते हैं। यह प्रक्रिया मुहावरों की जन्मदात्री है। भाषा में मनोवेगों या मनोभावों से संबंधित मुहावरे इसलिए अधिक है, क्योकि उनकी अभिव्यक्ति में अनेक प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं, यथा क्रोध के लिए दाँत पीसना, आग-बबूला होना, लाल-पीला होना आदि।

मुहावरों का वर्गीकरण - मुहावरों का व्यापक संसार है। पौराणिक संदर्भों, लोक व्यवहारों, मनोभावों और प्राकृति गतिचक्रों को व्यक्त करने वाले मुहावरे अधिक संख्या में प्रचलित हैं। अस्तु इनका निम्नलिखित रूप में वर्गीकरण किया जा सकता है :-

अंगवर्ती मुहावरे	-	सिर पर कफन बाँधना, आँख लाल-पीली करना, कान पर जूँ तक न रेंगना, पेट में चूहे कूदना, दाँत किटकिटाना, सिर मुँडाते ही ओले गिरना आदि।
प्रकृतिमूलक	-	आकाश के तारे तोड़ना, ईद का चाँद होना, सब्ज बाग दिखाना, पहाड़ टूट पड़ना आदि।
कूटनीति विषयक	-	अपना उल्लू सीधा करना, ईट का जवाब पत्थर से देना, दाल में काला होना, आस्तीन का साँप, आटा-दाल का भाव पता चलना आदि।
मनोविकार विषयक	-	मन के लड्डू खाना, फूट-फूटकर रोना, हवाई किले बनाना, चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना आदि।
पौराणिक	-	द्रोपदी का चीर होना, भीष्म प्रतिज्ञा करना, श्रीगणेश करना, अंगद का पैर होना आदि।
संख्यावाचक	-	एक ही थैले के चट्टे- बट्टे, दो टके की बात करना, पाँचों अँगुलियाँ घी में रहना, चार दिन की चाँदनी, नौ-दो ग्यारह होना, लम्बे हाथ होना, बैठे-बैठे मक्खी मारना आदि।
लोक व्यवहार विषयक	-	बहती गंगा में हाथ धोना, उल्लू सीधा करना, गड़े मुर्दे उखाड़ना, टोपी उछालना आदि।
प्रेरणा मूलक	-	तलवार की धार पर चलना, बीड़ा उठाना, जौहर दिखाना, दौड़ - धूप करना आदि।
उपालंभ विषयक	-	चूड़ियाँ पहनना, फब्तियाँ कसना, आटे-दाल का भाव मालूम होना, राई का पहाड़ बनाना आदि।
विविध	-	पसीना-पीसना होना, कसौटी पर कसना, आदि।

लोकोक्तियों का वर्गीकरण-

लोकोक्तियों का अन्यंत व्यापक और बहुआयमी विस्तार है। इनका क्षेत्र भी असीमित है। समग्रत: लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :-

चेतावनी विषयक	–	अपनी करनी, पार उतरनी, अब पछताए होत का जब चिड़ियाँ चुग गई खेत, घर का भेदी लंका ढावै, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
नीति विषयक	–	एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है, ओछे की प्रीति, बालू की भीति, आम के आम गुठलियों के दाम, बोए पेड़ बबूल का आम कहाँ ते होय, ऊँची दुकान फीके पकवान, थोथा चना बाजे घना, अंधों में काना राजा, एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा।
उपालंभ विषयक	–	चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात, नौ दिन चले अढाई कोस, आँख के अंधे, नाम नैनसुख, घर का जोगी जोगना, आन गाँव का सिद्ध।
विवशतामूलक	–	उलटा चोर कोतवाल को डाँटे, गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है, जिसकी लाठी उसकी भैस, जैसे साँपनाथ, वैसे नागनाथ।
लोकभाषा विषयक	–	बगल में लरका, गाँव में टेर, न लीलत बनै न उगलत बनै, चीटा मारो, पानी निकारो, दोई दीन के पांड़े, हलुआ मिला न मांडे।
सिनेमा विषयक	–	मेरा जीवन कोरा कागज, परदे में रहने दो, नीद भी खुली न थी कि हाय धूप ढ़ल गई, जब देश में थी दीवाली, वे खेल रहे थे होली।
विविध	–	न रहेगाा बाँस, न बजेगी बाँसुरी, नौ नकद न तेरह उधार, दूर के ढोल सुहावने, पर उपदेश कुशल बहुतेरे।

महावरे का अर्थ –'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा के 'मुहाविर' शब्द से बना है। 'मुहाविर' शब्द का अर्थ होता है–अभ्यास या बातचीत। अंग्रेजी में मुहावरे को 'इडियम' (Idiom) कहते है। हिन्दी में मुहावरे का अर्थ है– विलक्षण वाक्य रचना। यथार्थ में, ऐसे शब्द समूह, जो शाब्दिक अर्थ से भिन्न अर्थ के द्योतक है, 'मुहावरे' कहलाते हैं। ये वाक्यांश होते हैं। इनका स्वतंत्र रूप में प्रयोग नहीं होता है। ये लोक–मस्तिष्क की टकसाल में सदियो से ढ़लते रहते हैं। मुहावरों का शब्दश: न ग्रहण कर सदैव अवबोधक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है तथा ग्रहण किया जाने वाला अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है।

डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद ने मुहावरे की पभिाषा देते हुए लिखा है– ''ऐसा वाक्यांश जो समान अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए, 'मुहावरा' कहलाता है।''

उदाहरण– दौड़ धूप करना - अधिक मेहनत करना।

प्रयोग - आज के युग में सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए बड़ी दौड़धूप करना पड़ती है।

मुहावरे की विशेषताएँ -

1. मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है। अलग से किये प्रयोग से विलक्षण अर्थ प्रकट नहीं होता है। जैसे 'मैने पेट काटकर अपने लड़के को पढ़ाया'' में लाक्षणिकता है, यदि पेट काटना मात्र कहें तो उसमें लाक्षणिकता प्रकट नहीं होती है।

2. मुहावरे का वास्तविक रूप नहीं बदला जा सकता है। जैसे– ''कमर टूटना'' के स्थान पर 'कटिभंग' का प्रयोग सार्थक नहीं है।

3. मुहावरों में शब्द का अर्थ ग्रहण नहीं करते, अपितु उसके भावों को लेते है। जैसे 'आँख मारना' का अर्थ निकालना ओर उसे फेंककर मारना नहीं है।

4. मुहावरों का सीधा संबंध शरीर के विभिन्न अंगों से है। यह प्रवृत्ति सभी भाषाओं में पायी जाती है। जैसे– सिर, बाल, नाक, आँख, गर्दन, हाथ, पेट, पाँव आदि के मुहावरे।

5. मुहावरे समाज, देश–काल और परिस्थितियों के अनुरूप बनते और समाप्त होते है। जैसे– ''खिचड़ी पकाना'' भारतीय भाषा में हो सकता है, यूरोपीय भाषा में नहीं।

6. मुहावरे किसी भी भाषा की समृद्धि के प्रतीक हैं। मुहावरों में उस देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, औद्योगिक और सांस्कृति की झलक दिखाई देती है।

7. मुहावरों का सीधा संबंध सामाजिक जीवन से होता है। जैसे- ''घर की मुर्गी'' का अर्थ ''तुच्छता'' के लिए किया जाता है। वास्तव में 'मुर्गी' के भेद घर, बाहर, दुकान आदि के आधार पर नहीं होते है।

NOTES

मुहावरों का महत्व

मुहावरों के प्रयोग से भाषा की समृद्धि एवं विकास का सहज रूप में पता लगाया जा सकता है। जहाँ जितने अधिक मुहावरों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ का समाज उतना ही अधिक प्रगतिशील माना जाता है।

मुहावरों के प्रयोग से भाषा में रोचकता, व्यंजकता, परिष्कार, प्रवाह चमत्कार और प्रभविष्णुता आ जाती है। मुहावरे में भाषा को विशेष आकर्षण एवं प्राणवान बनाने की गजब की शक्ति होती है। मुहावरों के ललित प्रयोग से वक्ता अथवा रचनाकार की विशिष्ट अभिव्यक्नि-क्षमता का बोध होता है। जिस भाषा में जितने ही अधिक मुहावरे होते है, वह उतनी ही प्राणवान समझी जाती है। इनसे भाषा में लालित्य ओर प्रवाह का संचार होता है। इसलिएस इन्हें ''वाग्धरा'' अथा 'वाग्रीति' भी कहते हैं। वस्तुत: मुहावरे भाषा के लिए प्राण स्वरूप हैं और इन्हें साहित्यिक रचना में उचित स्थान दिया जाना चाहिये। एक आलोचक के शब्दों में, ''यदि व्याकरण को भाषा का अस्थिपंजर कहा जाये, तो मुहावरे ओर कहावते उसकी आत्मा है।'' **हरिऔधजी** ने कविता में मुहावरों के प्रयोग का समर्थन करते हुए उनके माध्यम से भाषा में प्रसाद और माधुर्य गुण के समावेश को सहज स्वाभाविक प्रक्रिया माना है। 'बोलचाल' शीर्षक कृति में व्यक्त उनके ये विचार दृष्टव्य है, ''यदि खड़ी बोली की कविता को मधुर बनाना हमें इष्ट है, यदि कर्कश शब्दावली से उसको बचाना है, यदि बोलचाल के रंग में उसे रँगना है यदि उसकी प्रसादमयी, सम्पन्न एवं हृदयहारिणी बनाने की इच्छा है, तो हमको मुहावरों का आदर करना होगा।

लोकोक्तियाँ (कहावत) - लोकोक्ति और कहावत एक ही है। ये दोनों शब्द एक-दूसरे के पर्यायवाची है। ''लोकोक्ति'' संस्कृत भाषा का शब्द है। 'लोकोक्ति' शब्द 'लोक' और 'उक्ति' की संधि से बना है, जिसका अर्थ है - वह उक्ति, जो लोक द्वारा मान्य हो अथवा लोक में प्रचलित हो। कभी-कभी समर्थ साहित्यकारों या महान् कवियों के सुन्दर वचनों या सूक्तियों को भी लोकोक्तियों कह दिया जाता है। किन्तु किसी सूक्ति को लोकोक्ति तभी कहा जा सकता है, जब वह लोक या समाज में पूरी तरह प्रचलित हो। लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य होती है। अत: इसे स्वतंत्र रूप में भी प्रयोग में लाया जा सकता है। लोकोक्ति का प्रयोग किसी पर व्यंग्य करने, उलाहना देने या चेतावनी देने के लिए भी किया जा सकता है। लोकोक्ति का प्रयोग करने के लिए कभी-कभी एक से अधिक वाक्यों की रचना भी करना पड़ती है। जब तक पूरा प्रंसग नही आ जाता, तब तक कहावत का प्रयोग प्रभावहीन होता है और भाषा में यथोचित सौन्दर्य भी नहीं आ पाता है।

लोकोक्ति (कहावत) की परिभाषा - 'लोकोक्ति' की परिभाषा देते हुए कहा गया है- ''लोकोक्ति'' या कहावत एक ऐसा मुहावरेदार वाक्य होता है, जिसे व्यक्ति अपने कथन की पुष्टि के रूप प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत करता है।'' संक्षेप में 'लोक' (समाज) में व्याप्त वे उक्तियों, जो प्रमाण रूप मे कही जाएँ, लोकोक्यिाँ कहलाती हैं।

मुहावरों की भाँति कहावतों के प्रयोग द्वारा भी भाषा को रोचक एवं भावों को सशक्त रूप प्रदान किया जाता है। लोकोक्ति में किसी पूर्ण सत्य अथवा सुन्दर विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। अत: उसका प्रयोग करके किसी सामान्य कथन का सहज समर्थन किया जा सकता है जो कि अन्यथा उतना प्रभावशाली न बन पाता। **डॉ. रामकुमार वर्मा** लोकोक्तियों की इस महत्ता को स्वीकार करते हुए लिखते हैं, 'बहुत-सी लोकोक्तियाँ जीवन के सत्यों का जिस सूक्ष्मता से अभिव्यंजन कर सकती है, बड़ी - बड़ी वाक्यावलियाँ उसके समीप तक नहीं पहुँचती।' उक्त कथन से स्पष्ट है कि भाषा की सरलता, शैली की स्वाभाविकता और भावों की प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से लोकोक्तियों अभिव्यंजना के सशक्त माध्यम के रूप में समादृत हैं। इसी कारण सामान्य वार्तालाप के साथ - साथ साहित्य में भी इनका समुचित प्रयोग किया जाना चाहिए।

NOTES

मुहावरे तथा लोकोक्ति

	मुहावरे		लोकोक्तियाँ/कहावतें
1.	मुहावरे वाक्यांश होते हैं। इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता है।	1.	लोकोक्तियाँ सम्पूर्ण वाक्य होती है। इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है।
2.	मुहावरे का प्रयोग भाषा को बल देने के लिए किया जाता है।	2.	लोकोक्तियों का प्रयोग किसी घटना विशेष पर बल देने के लिए किया जाता है।
3.	मुहावरे द्वारा लाक्षणिक अर्थ का सम्प्रेषण होता है।	3.	लोकोक्तियाँ भाषा का सामान्य कथन हैं।
4.	मुहावरों से भाषा में प्रभविष्णुता आती है।	4.	लोकोक्तियाँ भाषा को अलंकृत करती हैं।
5.	मुहावरे में वक्ता भाषा की रचना प्रक्रिया को अपनी अनुभूतियों से सम्बद्ध करता है।	5.	लोकोक्तियों में वक्ता अपने अनुभव को दूसरे के अनुभव से जोड़ता है।
6.	मुहावरे में वक्ता अभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण और पैना बनाता है।	6.	लोकोक्तियों में वक्ता अपनी अभिव्यक्ति को व्यापक एवं गंभीर बनाता है।
7.	प्रयोग करते समय मुहावरों का स्वरूप थोड़ा बदल जाता है।	7.	लोकोक्तियाँ अपने मूल रूप में ही प्रयोग में आती हैं।
8.	मुहावरे के द्वारा वक्ता अपनी अनुभूतियों को प्रकाशित करना चाहता है।	8.	लोकोक्तियों के द्वारा वक्ता किसी न किसी आदर्श की स्थापना करना चाहता है।
9.	मुहावरे भाषा को परिष्कृत करते हैं।	9.	कहावतें किसी कथन को अधिक प्रामा-णिकता के साथ व्यक्त करती हैं।
10.	मुहावरे में क्रियापद को कहीं-कहीं बदला जा सकता है।	10.	कहावतों में क्रियापद या पदबन्ध अपरि-वर्तनीय रहते हैं।
11.	मुहावरे में सामान्य व्यंग्य होता है।	11.	कहावतों में मुहावरों की अपेक्षा व्यंग्य अधिक होता है।
12.	मुहावरों में किसी घटना का सत्यांश होना आवश्यक नहीं है।	12.	कहावतें या लोकोक्तियाँ सत्यांश पर आधारित होती है।
13.	भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है।	13.	कहावतों का भाषा में प्रयोग वक्ता के कथन की पुष्टि के लिए होता है।

मुहावरे व प्रयोग :-

1. आँख से गिर जाना - नजरों से गिरना।

   प्रयोग - रमेश परीक्षा में तीन बार फेल होकर अपने पापा की नजरों से गिर गया।

2. आकाश - पताल एक करना- सभी सम्भव प्रयत्न करना।

   प्रयोग - किसी महान् कार्य को पूर्ण करने के लिए आकाश - पाताल एक करना पड़ता है।

3. ईंट से ईंट बजाना - बराबरी से टक्कर लेना।

   प्रयोग - महारानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों की ईंट से ईंट बजा दी थी।

4. कोल्हू का बैल - अज्ञानता, एक ही जगह चक्कर लगाना।

   प्रयोग - राकेश विवाह के बाद कोल्हू के बैल के समान कार्यालय से घर और घर से कार्यालय आ - जा रहा है।

5. हरा – भरा होना – प्रसन्न होना।

प्रयोग – वह अपने नाते – पोतों से सम्पन्न हरे– भरे घर में कितना सुखी है।

6. कमर तोड़ना – शक्तिहीन कर देना।

प्रयोग – महँगाई ने आम जनता की कमर तोड़ दी।

7. कलम तोड़ना – अत्यधिक पढ़ना।

प्रयोग – लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास करने के लिए वह कलम तोड़ रहा है।

8. टोपी उछालना – अपमानित करना।

प्रयोग – भरी सभा में उसने आपकी टोपी उछाल दी।

9. अँगूठा दिखाना – इन्कार करना।

प्रयोग – दुष्ट लोग संकट के समय अँगूठा दिखा देते है।

10. आँसू टपकाना – विलाप करना।

प्रयोग – पहले तो बच्चे पर ध्यान नहीं दिया, अब आँसू टपकाने से क्या फायदा?

11. ठोकर खाना – चोट लगना।

प्रयोग – ठोकर खाकर ही इंसान सम्भलता है।

12. एक न चलना – किसी की न सुनना।

प्रयोग – वह इतना विद्धान हो गया है कि अपने माता – पिता की एक न चलने देता है।

13. दाहिना हाथ होना – भरोसेमंद होना।

प्रयोग – संजय आजकल राम का दाहिना हाथ है।

14. हक्का – बक्का रह जाना – आश्चर्यचकित हो जाना।

प्रयोग – ग्रामीण परिवेश के लोग जब शहरी बच्चों की अंग्रेजी में बात करते देखते हैं तो हक्का–बक्का रह जाते हैं।

15. अंकुर जमना – प्रारम्भ होना।

प्रयोग – बचपन से ही सिद्धार्थ के मन में वैराग्य के अंकुर जमने लगे थे।

16. अंकुश रखना – नियंत्रण करना।

प्रयोग – महाराज पुरू अपने हाथियों पर अंकुश नहीं रख सके, इस कारण सिकन्दर से परास्त हो गये।

17. अंग – अंग ढीला होना – अत्यन्त थक जाना।

प्रयोग – जब पिताजी रेलयात्राा से लौटे, तो उनके अंग – अंग ढीले हो रहे थे।

18. अंगारों पर लोटना – कष्ट पाना।

प्रयोग – महँगाई के जमाने में निर्धन वर्ग अंगारों पर लोट–लोटकर अपने दिन काट रहा है।

NOTES

19. अन्धे की लाठी – एकमात्र सहारा।

प्रयोग – रघु अपने पिता के लिए अन्धे की लाठी है।

20. अन्धों में काना राजा– गुणहीनों में थोड़ा गुणी भी सम्मानित।

प्रयोग – वह तो अन्धों में काना राजा है।

21. अँगुली पर नचाना– वश में रखना–

प्रयोग – कुछ अफसरों का यह स्वभाव होता है कि वे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को अँगुली पर नचाते रहते हैं।

22. अक्ल का दुश्मन – मूर्ख व्यक्ति।

प्रयोग – राजू तो अक्ल का दुश्मन है, उसकी समझ में कोई बात नहीं आएगी।

23. अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनना – स्वयं की तारीफ करना।

प्रयोग – जो व्यक्ति अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनते है उनकी बात को कोई भी गम्भीरता से नहीं लेता है।

24. अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना – अपना नुकसान स्वयं करना।

प्रयोग – राम ने मोहन पर विश्वास करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है।

25. अपनी खिचड़ी अलग पकाना – सबसे अलग रहना।

प्रयोग – क्रिकेट के खेल में जो खिलाड़ी अपनी खिचड़ी अलग पकाना चाहते हैं, वे पराजित होते है।

26. अपना उल्लू सीधा करना – अपना काम निकालना।

प्रयोग – चालाक व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने में ही लगा रहता है।

27. आसमान टूटना – अकस्मात ही विपत्ति आना।

प्रयोग – ससुर एवं पति की मृत्यु के उपरान्त अहिल्याबाई पर विपत्तियों का आसमान टूट पड़ा।

28. आस्तीन का साँप – विश्वासघाती।

प्रयोग – पाकिस्तान की बनावटी मित्रता भारत के लिए आस्तीन का साँप ही साबित हुई।

29. आकाश के तारे तोड़ना – कठिन कार्य करना।

प्रयोग – यदि नवयुवक चाहें तो आकाश के तारे तोड़कर पृथ्वी पर ला सकते है।

30. आकाश – पाताल एक करना – सभी सम्भव प्रयत्न करना।

प्रयोग – किसी महान् कार्य को पूर्ण करने के लिए आकाश – पाताल एक करना पड़ता है।

31. आँख की किरकिरी – शत्रु

प्रयोग – वह उसकी आँख की किरकिरी बना हुआ है।

32. आँखे खुलना – समझ पड़ना।

प्रयोग – रमेश पर घर की सारी जिम्मेदारी अचानक आने पर उसकी आँखे खुल गयी।

33. आँख चुराना – आँखों से बचना।

प्रयोग – श्याम पैसे चुका न सकने के कारण राम से आँखें चुराने लगा है।

34. आँखों का तारा – सबसे अधिक प्रिय।

प्रयोग – श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा की आँखों के तारा था।

35. आँखों में धूल झोंकना – धोखा देना।

प्रयोग – परीक्षा में अध्यापको की आँखों में धूल झोंकना आसान नहीं है।

36. ईंट का जवाब पत्थर से देना – किसी की दुष्टता का करारा जवाब देना।

प्रयोग – पाकिस्तान कश्मीर में नीचता बता रहा है, अब शायद भारत को भी उसे ईंट का जवाब पत्थर से देना पड़े।

37. ईंद का चाँद होना – बहुत दिनों बाद दिखना।

प्रयोग – आजकल तुम दिखलाई नहीं देते हो, शायद ईंद के चाँद हो गये हो।

38. उलटी गंगा बहाना – प्रतिकूल कार्य करना।

प्रयोग – पानी में अग्नि प्रज्जलित करना वास्तव में उलटी गंगा बहाना है।

39. ऊँची दुकान फीका पकवान – बाहरी दिखावा।

प्रयोग – आजकल ऊँची दुकान, फीका पकवान अधिक मिलता है।

40. ऊँट के मुँह में जीरा – अल्प वस्तु।

प्रयोग – यह तो उसके लिए ऊँट के मुँह में जीरा है।

41. कमर कसना – पूर्णतः तैयार होना।

प्रयोग – संकटों में जूझने के लिए हमें कमर कसकर तैयार रहना चाहिए।

42. कागदी घोड़े दौड़ाना – व्यर्थ की लिखा-पढ़ी करना।

प्रयोग – आजकल सरकारी कार्यालयों में कागदी घोड़े अधिक दौड़ते हैं।

43. कलेजे पर साँप लौटना – ईर्ष्या होना।

प्रयोग – अपने पति के मुँह से पड़ौसिन की प्रशंसा सुनने पर पत्नी के कलेजे पर साँप लोट गया।

44. कच्चा चिट्ठा खोलना – सारा रहस्य खोलना।

प्रयोग – सच्चा भक्त ईश्वर के सम्मुख अपना कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देता है।

45. आग बबूला होना – क्रोधित होना।

प्रयोग – राम को चोरी करते देख उसके पिताजी आग बबूला हो उठे।

NOTES

46. कान पर जूँ नहीं रेंगना – ध्यान न देना।

प्रयोग – बुढ़िया ने दस रूपये के लिए सेठजी से खूब विनती की, किन्तु उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी।

47. कूपमंडूक – अल्पज्ञ।

प्रयोग – अनुभव एवं शास्त्रों के ज्ञान के बिना मनुष्य कूपमंडूक ही रहता है।

48. घड़ों पानी पड़ जाना– शर्मिदा होना

प्रयोग – राम को जब चोरी करते पकड़ा तो उसे ऐसा लगा जैसे उस पर घड़ों पड़ गया हो।

49. खरी – खोटी सुनाना – भला–बुरा कहना।

प्रयोग – उस बेशर्म को कितनी खरी – खोटी सुनाई, वह समझे तब न।

50. खून – पसीना एक करना – कठिन परिश्रम करना।

प्रयोग – उसके माता – पिता ने खून – पसीना एक करके पढ़ाया, अब वह उन्हें कुछ समझता ही नहीं।

51. गागर में सागर – थोड़े में बहुत कह देना।

प्रयोग – बिहरी के दोहे तो गागर में सागर है।

52. गिरगिट की तरह रंग बदलना – एक रंग ढंग पर न रहना।

प्रयोग – गयादीन का क्या भरोसा, वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता रहता है।

53. गुदड़ी का लाल – गरीब घर में गुणवान का जन्म होना।

प्रयोग – उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द सचमुच में गुदड़ी के लाल थे।

54. घाट – घाट का पानी पीना – अनुभवी होना।

प्रयोग – उसने घाट – घाट का पानी पिया है।

55. घोड़े बेचकर सोना – बैफिक्र होना।

प्रयोग – चोर, चोरी करके चले जाते है। और पुलिस घोड़े बेचकर सोती रहती है।

56. घी के दीये जलाना – अप्रत्याशित लाभ पर प्रसन्नता।

प्रयोग – सोवियत संघ का विघटन होने पर अमेरिका ने घी के दीये जलाए।

57. घर का न घट का– कहीं का नहीं रहना।

प्रयोग – गयाराम दलबदलू को अब कोई दल लेने को तैयार नहीं है, उसकी स्थिति तो घर का न घाट का सी हो गयी है।

58. चार चाँद लगाना – प्रतिष्ठा बढ़ाना।

प्रयोग – विशेष योगयता से परिणाम में चार चाँद लग जाते हैं।

59. चार दिन की चाँदनी –थोड़े दिन का सुख।

प्रयोग – औरंगजेब का शासन ही चार दिन की चाँदनी रहा तो हमारे गाँव के जमींदारो की क्या जमींदारी।

60. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना – भयभीत होना।

प्रयोग – आयकर वालों को आते देख, दुकानदार के चेहेरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

61. चादर से बाहर पैर परसारना – आय से अधिक व्यय करना।

प्रयोग – आठ हजार ही कमाते हो और इनती खर्चीली आदतें पाल रखी है। चादर से बाहर पैर पसारना कौनसी अक्लमंदी है?

62. चाँद पर थूकना – व्यर्थ निंदा।

प्रयोग – जिस भलेमानस ने कभी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा उसे ही तम बुरा – भला कह रहै हो? भला, चाँद पर भी थूका जाता है?

63. चूड़ियाँ पहनना– स्त्री की – सी असमर्थता प्रकट करना।

प्रयोग – इतने अपमान पर भी चुप बैठे हो! चूड़ियाँ तो नहीं रखी हैं तुमने!

64. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना – डरना, घबराना।

प्रयोग – साम्यवाद का नाम सुनते ही पूँजीपतियों के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगाती हैं।

65. छक्के छूटना –बुरी तरह घबरा जाना।

प्रयोग – सचिन नेन्दुलकर की बल्लेबाजी से अच्छे – अच्छे गेंदबाजों के छक्के छूट चुके हैं।

66. छाती पर पत्थर रखना – हानि होने पर भी मजबूत बने रहना।

प्रयोग – अपनी बेटी के सुख के लिए राधा अपने पति के विछोह को छाती पर पत्थर रखकर सहती रही।

67. जमीन पर पैर न रखना – शेखी दिखलाना।

प्रयोग – लोकेन्द्र को प्रथम श्रीणी क्या मिली, वह पैर जमीन पर नहीं रख रहा है।

68. जले पर नमक छिड़कना – दुखी को और दुखी करना।

प्रयोग – मेरे अनुत्तीर्ण होने पर वह मेरा परीक्षा परिणाम पूछ – पूछ कर जले पर नमक छिड़क रहे थे।

69. जान हथेली पर रखना – जोखिम उठाना।

प्रयोग – हवाई जहाज का पायलेट जान हथेली पर रखकर चलता है।

70. जहर उगलना – अपमानजनक बात कहना।

प्रयोग – आजकल की चुनाव – सभाओं में पार्टियाँ अपना कार्यक्रम बताती नहीं, अधिकतर अपने विरोधी उम्मीदवार के खिलाफ जहर उगलने का ही काम किया करती हैं।

71. टम – से–मस न होना – अपनी बात पर दृढ़ रहना।

प्रयोग – प्रेरणा को शादी के लिए सबने खूब समझाया, पर वह टस से मस न हुई।

72. टेढ़ी खीर – कठिन काम।

प्रयोग – बबलू को पढ़ाना टेढ़ी खीर है।

73. तलवे चाटना – दीन – हीन बनकर खुशामद करना।

प्रयोग – इन दिनों वह नेताजी के तलवे चाटने में लगा हुआ है।

NOTES

74. तूती बोलना – प्रभाव जमना।

प्रयोग – आजकल तो आपकी ही तूती बोल रही है।

75. तलवार की धार पर चलना – कठिन कार्य करना।

प्रयोग – गुप्तचर तलवार की धार पर चलकर देशहित का कार्य करते हैं।

76. तू – तू मैं – मै होना – कहासुनी होना।

प्रयोग – नल के पानी को लेकर पड़ोसियों में तू–तू मैं–मै होती रहती है।

78. तीन तेरह होना – तितर– बितर होना।

प्रयोग – यों तो आपसी मतभेद था ही, श्रीकृष्ण की आँखे मूँदते ही रहा–सहा यदुकुल भी तीन तेरह हो गया।

79. तिल का ताड़ करना – बात को तूल देना।

प्रयोग – मैने उसे बेहूदा ही कहा, मगर मोहल्ले वालों ने तिल का ताड़ कर दिया कि मैने उसे दुनिया भर की गालियाँ दी।

80. दाँत कटी रोटी होना – घनिष्ठता।

प्रयोग – गिरधारी से मेरी दाँत कटी रोटी है, मै उसका विरोध नहीं कर सकता।

81. दाँत खट्टे करना– पराजित करना।

प्रयोग – राणा प्रताप ने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये थे।

82. दाँतो तले उँगली दबाना – दंग रह जाना।

प्रयोग – सरकस के करतब देखकर, सभी दाँतो तले ऊँगली दबा कर रह गये।

83. दाल में काला होना – खुटका या आशंका होना।

प्रयोग – राजेश को पुलिस स्टेशन से निकलते देख, मुझे लग गया था कि दाल में कुछ काला है।

84. दुम दबाकर भागना– डरकर भागना।

प्रयोग – शरारती राजेश शिक्षक और पिताजी को साथ–साथ आते देख दुम दबाकर भाग गय।

85. दूध के दाँत न टूटना – ज्ञानहीन या अनुभवहीन होना।

प्रयोग – वह सभा में क्या बोलेगा? अभी तो उसके दूध के दाँत भी नहीं टूटे है।

86. नौ दो ग्यारह होना – चंपत होना या भाग जाना।

प्रयोग – लोग दौड़े कि चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

87. पेट में चूहे कूदना – जोर की भूख।

प्रयोग – भूख के मारे पेट में चूहे कूद रहे है।

88. पहाड़ टूट पड़ना – भारी विपत्ति आना।

प्रयोग – उस बेचारे पर तो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा।

89. पौ बारह होना – खुब लाभ होना।

प्रयोग – क्या पूछना है! आजकल व्यापारियों के तो पौ बारह हैं।

90. फूँक – फूँक कर कदम रखना – सतर्कतापूर्वक कार्य करना।

प्रयोग – सफल वही होते है, जो फूँक–फूँक कर कदम रखते है।

91. बहती गंगा में हाथ धेना – अवसर का लाभ उठाना।

प्रयोग – इस समय सरलता से स्थनानार हो रहे हैं, चाहो तो तुम भी बहती गंगा में जाकर हाथ धो डालो।

92. मक्ख्याँ मारना – बेकार बैठे रहना।

प्रयोग – आजकल पढ़े– लिखे लोग जब मक्खियाँ मार रहे है, तब जिसे कुछ नहीं आता उसका क्या कहना।

93. **मैदान मारना** – बाजी या लड़ाई जीतना।

प्रयोग – पानीपत की लड़ाई मे आखिर अब्दाली ने ही मैदान मारा।

94. मुट्ठी गरम करना – घूस देना।

प्रयोग – पुलिस की मुट्ठी गरम करो तो काम होगा।

95. मुँह में पानी भर आना – ललचाना।

प्रयोग – खाता–पीता घर और सुयोग्य वर देखकर लड़की वालों के मुँह में पानी आना स्वाभाविक था।

96. अक्ल ठिकाने लगाना– वास्तविकता से परिचित कराना।

प्रयोग – सोहन जैसे ही क्लर्क बना तो अपने आपको बड़ा समझने लगा। लेकिन महँगाई ने उसकी अक्ल ठिकाने लगा दी।

97. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है– एक भ्रष्ट तो सभी बदनाम।

प्रयोग – अच्छी भली चल रही सभा में जब उसने रूकावट डाली तो वह बिगड़ गई। लोगों ने कहा– एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

98. जान पर खेलना –जोखिम लेना।

प्रयोग – सीमा पर तैनात जवान देश की रक्षा के लिए अपनी जान पर खेलते हैं।

99. हिरन हो जाना – भाग जाना

प्रयोग – पुलिस को देखकर चोर हिरन हो जाते है।

100. मुँह फूलाना – नाराज होना।

प्रयोग – अंकित को उसके पिता फिल्म दिखाने नहीं ले गए तो अंकित ने मुँह फूला लिया।

101. गले का हार होना – बहुत प्रिय होना।

प्रयोग – सचिन तेंदुलकर भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के गले का हार है।

NOTES

लोकोक्तियाँ एवं प्रयोग

1. एक अनार सौ बीमार - वस्तु एक परन्तु चाहने वाले अनेक।

प्रयोग - आजकल एक - दो रिक्त स्थानों के लिए सैकड़ों आवेदन - पत्र आते है। वस्तुत: या तो ऐसी स्थिति है कि एक अनार सौ बीमार।

2. अन्धेर नगरी चौपट राजा - अक्षम नेतृत्व के कारण अव्यवस्था फैलाना।

प्रयोग - पाठशाला में कई दिनों से प्रधानाध्यापक का पद रिक्त होने से कोई किसी की नहीं सुनता। वहाँ तो अंधेर नगरी चौपट राजा वाला हाल हो गया है।

3. दूर के ढ़ोल सुहावने लगते हैं- दूर की बाते भली लगती हैं।

प्रयोग - उनकी प्रशसा सुन रखी थी, भेंट हुई तो कुछ खास नहं लगा। दूर के ढोल सुहावने लगते है।

4. बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद - आयोग्य व्यक्ति अच्छी वस्तु के गुण नहीं जान सकता

प्रयोग - वह खीर का मजा क्या जाने्? वह तो हड्डियाँ चबाना जानता है- बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।

5. एक पंथ दो काज - एक काम के साथ दूसरा काम हो जाना।

प्रयोग - दिल्ली जाने से दो काम होंगे। कवि सम्मेलन में कविता - पाठ भी करेगे ओर साथ ही वहाँ की ऐतिहासिक इमारतों को भी देख आयेगे।

6 एक और एक ग्यारह होते है- एक काम के साथ दूसरा हो जाना।

प्रयोग - आप मिलकर काम करेंगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी। कहते भी है एक और एक ग्यारह होते है।

7. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे - दोनों का एक जैसा दूषित होना।

प्रयोग - सत्तारूढ़ पार्टी वाले हॉ या विरोधी दल, सभी नेता एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होते है।

8. अन्धा पीसे कुत्ता खाय - परिश्रम कोई करे, फल किसी को प्राप्त हो।

प्रयोग - डाकुओं ने सेठ के यहाँ डाका डालकर सारा धन लूट लिया। उसकी जिंदगी की सारी कमाई चली गई। ठीक ही कहते हैं। अन्धा पीसे कुत्ता खाय।

9. अपनी - अपनी ढपली, अपना - अपना राग - व्यवस्था के अभाव में मनमाने कार्य करनाा।

प्रयोग - राजनीतिक पार्टियों को जनसाधारण के हित में कोई चिन्ता नहीं रहती है। वे तो अपनी- अपनी ढपली और अपना - अपना राग आलापती रहती है।

10. अधजल गगरी छलकत जाये - छोटे आदमी द्वारा अधिक दिखावा।

प्रयोग - बहुत कम पढ़ा - लिखा है, किन्तु बातें महान् ज्ञानी के समान करता है। सच ही कहते है - अधजल गगरी छलकत जाये।

11. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता - अकेला व्यक्ति कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।

प्रयोग – राष्ट्र की प्रगति सबके सम्मिलित प्रयत्नों पर ही निर्भर है। एक दो या कुछ नेतागण राष्ट्र को प्रगतिशील नहीं बना सकते। कहा भी गया है – अकेला चना भाड़ नही फोड़ सकता।

12. अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत – किसी काम के बिगड़ जाने पर पछताना व्यर्थ है।

प्रयोग – राम ने सालभर परिश्रम नहीं किया। परीक्षा निकट आ गई, तब पश्चाताप करने बैठा। यह देख शिक्षक ने कहा अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

13. अक्ल बड़ी कि भैंस – मोटा – ताजा किन्तु बुद्धिहीनः शरीर महत्वपूर्ण है अथवा बुद्धि।

प्रयोग – वह शरीर के प्रति सदैव सजग रहता था, किन्तु पढ़ने – लिखने में उसका ध्यान न लगा। यह देख उसके पिता ने पूछा अक्ल बड़ी या भैंस।

14. अन्धा क्या चाहे, दो आँखें – इच्छा पूर्ण होना।

प्रयोग – राजेश एक गरीब लड़का था। उसके एक मित्र ने उससे पूछा क्या तुम नौकरी करना चाहोगे। यह सुनकर राजेश बोला, अरे भाई ! अन्धा क्यों चाहे दो आँखे।

15. अन्धों में काना राजा – मूर्खों में कुछ पढ़ा – लिखा व्यक्ति।

प्रयोग – मेरे गाँव में कोई पढ़ा – लिखा व्यक्ति तो है नही, इसलिए गाँव वाले पण्डित अनोखेराम को ही सबकुछ समझते है। ठीक ही कहा गया है, अन्धों में काना राजा।

16. आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती – जान बुझकर बुरा काम नहीं करना।

प्रयोग – मैं अपनी एम.एम. पास एंव सुशील कन्या का विवाह सम्बन्ध एक अनपढ़ एंव व्यसनी लड़के के साथ कैसे कर दूँ। मुझसे आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती है।

17. आसमान से टपका और खजूर पर अटका – एक संकट से निकलकर दूसरे संकट में पड़ना।

प्रयोग – दो कमरों में मेरा निर्वाह नहीं होता था। अतः मैंने बड़ा मकान किराये पर लिया। परन्तु यहाँ शो के कारण मे कोई भी कार्य करने में असमर्थ हूँ। यह तो वही कहावत हो गई कि आसमान से टपका और खजूर पर अटका।

18. अन्धे के आगे रोना, अपने नैना खोना – हृदयहीन व्यक्तियों के सामने अपना दुखड़ा रोना उचित नहीं है।

प्रयोग – जब हमारे देश में जमींदारी प्रथा प्रचलित थी, तब गरीब किसानों के रोने – गिड़गिड़ाने का जमींदारों पर कोई असर नहीं पड़ता था। सच है – अन्धे के आगे रोना, अपने नैना खोना।

19. ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डर – काम करने पर उतारू होना।

प्रयोग – जब मैंने देशसेवा का व्रत ले लिया तो जेल से क्यों डरे? जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डर।

20. ऊँची दुकान फीके पकवाना – केवल बाह्य प्रदर्शन।

प्रयोग – लालाराम सुगन्धी शुद्ध सरसों के तेल का विज्ञापन करता है, लेकिन उसकी दुकान पर बिकता है घटिया सरसों का तेल। ठीक है, ऊँची दुकान फीके पकवान।

21. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे – स्वयं अपराध करके दूसरों को डाँटना।

प्रयोग – ट्रक ड्रायवर ने एक सायकल सवार को टक्कर मार दी और ऊपर से उसे डाँटने भी लगा। यह तो वही हुआ कि उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

22. एक तो करेला, दूजा नीम चढ़ा – स्पष्टवादी और कटु सत्य बोलने वाला।

प्रयोग – राजू झूठ ही नहीं बोलता, अब तो वह चोरी भी करता है। यह तो उसी प्रकार है कि एक तो करेला, दूसरा नीम चढ़ा।

23. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है – एक भ्रष्ट तो सभी बदनाम।

प्रयोग – अच्छी भली चल रही सभा में जब उसने रूकावट डाली तो वह बिगड़ गई। लोगों ने कहा – एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

24. काला अक्षर भैंस बराबर – वज्र मूर्ख, अशिक्षित, निरक्षर।

प्रयोग – किसी पढ़े – लिखें आदमी को काला अक्षर भैंस बराबर कहकर देखिये, वह बिल्कु चिढ़ जाएगा।

25. कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती – मूल स्वभाव नहीं बदलता।

प्रयोग – हम तो उसे नहीं सुधार सकते हैं। कुत्ते की दुम कभी भी सीधी नहीं होती है।

26. कहाँ राजा भोज, कहाँ गंग्गू तेली – बड़े से छोटे व्यक्ति की तुलना करना उचित नहीं।

प्रयोग – सचिन ने अपने पिता से सेठ जीवनदास की लड़की राधिका से रिश्ते की बात की तो उसके पिता ने कहा कि यह संभव नहीं होगा, कहाँ राजा भोज और कहाँ गंग्गू तेंली।

27. कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर – सबको एक – दूसरे से काम पड़ते है।

प्रयोग – मंत्री बन जाने पर, जनता से दुर्व्यवहार उसे महँगा पड़ेगा। आज गाड़ी पर नाव है, तो कल नाव पर गाड़ी दिखेगी।

28. कुए में भाँग पड़ना – सभी की बुद्धि मारी जाना।

प्रयोग – घर के सभी लोग एक जैसा आचरण कर रहे है। ये देखकर लगा कि कुए में ही भाँग पड़ रही है।

29. का बरखा जब कृषि सुखानी – वस्तु का महत्व आवश्यकता के समय ही होता है।

प्रयोग – पूरी बसी जलकर राख हो जाने के बाद फायर ब्रिगेड वहाँ पहुँची, तब सभी लोग कहने लगे, का बरखा जब कृषि सुखानी।

30. कोयले की दलाली में हाथ काले – बुरे का साथ देने पर बुराई मिलना।

प्रयोग – सटोरियों को बचाने में वह खुद पुलिस की पकड़ में आ गया। कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही है।

31. कौआ चला हंस की चाल – बड़ों की हास्यास्पद नकल।

प्रयोग – नौसिखिए कलाकार जब बड़े कलाकारों की तरह नाज – नखरे दिखाते है, तब लोग टिप्पणी करते है कि कौआ चला हंस की चाल।

32. खुदा की लाठी में आवाज नहीं होती – ईश्वर बुरे कामों की सजा अवश्य देता है, किन्तु हमें पता नहीं चलता।

प्रयोग – गाँव के बनिये ने भोले – भाले किसानों को ठग –ठग कर घर भर लिया, किन्तु डाकुओं ने एक ही रात में सब साफ कर दिया।

34. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे – लज्जित होने पर निरपराध व्यक्ति पर अपना क्रोध व्यक्त करना।

    प्रयोग – रीना ने तुम्हारी बात नहीं मानी तो उसे समझाना चाहिये था। यह क्या कि उसके चरित्र पर दोषारोपण करने लगे। सच है, खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे।

35. खग जाने खग ही की भाषा – चालाक ही चालाकों की बात समझता है।

    प्रयोग – नेताजी और पुलिस अधिकारी में क्या बत हुई, मुझे नहीं मालूम। अरे भाई ! खग जाने खग ही की भाषा।

36. गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी – सुख के प्रयत्न में दु:ख मिलना

    प्रयोग – सीताराम छुट्टी सोमवार की माँगने ऑफिस में गया, परन्तु सहब ने उसे रविवार का भी काम बता दिया। उसके साथ वैसा ही हुआ कि 'गये थे रोजा छुड़ाने, नमाज गले पड़ी।'

37. घर का भेदी लंका ढाये – आपसी मनमुटाव से हानि ही होती है।

    प्रयोग – इतिहास साक्षी है कि कुछ देशद्रोही भारतीयों ने स्वंय ही अंग्रेजों से मिलकर देश को परतन्त्र बनाने का उपक्रम किया था। सच है घर का भेदी लंका ढाये।

38. घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने – सामर्थ्य नहीं होने पर भी किसी कार्य को करना।

    प्रयोग – वह कुश्ती के दावँ – पेंच तो जानता नहीं था और कुश्ती लड़ने के लिए तैयार हो गया। उसके मित्र ने कहा – घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने।

39. चिराग तले अँधेरा – अपनी बुराई न दिखाई देना।

    प्रयोग – नेताजी के स्वंय के यहाँ एक दर्जन बच्चें है और दूसरों को परिवार नियोजन की सलाह देते है। वे क्यों नहीं समझते कि चिराग तले ही अँधेरा है।

40. चोर की दाढ़ी में तिनका – अपराधी स्वंय बोल पड़ता है।

    प्रयोग – मैं नही कह रहा हूँ कि तुमने मेरा काम बिगाड़ दिया है, फिर भी यदि मन में डर हो तो कहने में तो आयेगा ही कि चोर की दाढ़ी में जरूर कोई तिनका है।

41. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात – समय परिवर्तनशील है।

    प्रयोग – कल तक जो सिंहासन पर बैठते थे, आज से जमीन पर बैठते है। सच ही कहते है चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

42. चोर – चोर मौसरे भाई – बुरे लोगों में निकट ही मित्रता होती है।

    प्रयोग – भारत के प्रसंग में चीन और पाकिस्तान एक हो जाते हैं। चोर – चोर मौसेरे भाई।

43. जिसकी लाठी उसकी भैंस – शक्तिशाली का राज चलना।

    प्रयोग – नए राजनीतिक दल ने सत्ता में आते ही, अनेक कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया। कोई क्या करें, जिसकी लाठी उसकी भैंस।

44. जिस थाली में खाना उसी में छेद करना – कृतघ्नता, उपकारी का नुकसान करना। अपकारी, उपकार न मानने वाला।

    प्रयोग – कमलेश को जिस बुआ ने पाला, पोसा, पढ़ाया – लिखाया, वह उसकी ही बुराई करता रहता है। उसने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया।

NOTES

45. जहाँ गुड़ होगा मक्खियाँ आयेगी – लाभ के स्थान पर भीड़ एकत्र होना।

प्रयोग – जब से विनायक मंत्री बना है लोग उसे घेरे ही रहे हैं। क्यों नही घेरेंगे? जहाँ गुड़ होगा मक्खियाँ आयेगी ही।

46. जैसे नागनाथ, वैसे साँपनाथ – दोनों विकल्पों का एक जैसा दूषित होना।

प्रयोग – नई सरकार से भी मुझे कोई आशा नहीं है। इसके कर्णधार भी उनसे कम नहीं है। जैसे 'नागनाथ वैसे साँपनाथ।

47. जो गरजते है, वे बरसते नही – बड़बोले अकर्मण्य होते है।

प्रयोग – सज्जनसिंह बड़ी डींग हाँकते है, करते – धरते कुछ नही। गरजने वाले बरसते नहीं।

48. जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय – जिसका रक्षक ईश्वर हो, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

प्रयोग – ट्रक से टकराकर उसकी कार का कचूमर निकल गया, किन्तु वह बाल – बाल बच गयी। सच कहा है जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय।

49. तुम डाल – डाल, हम पात – पात – एक – दूसर से बढ़कर होशियार होना।

प्रयोग – मना करने पर भी जब अखाड़े वालो ने चौराहे पर सभा की, तो प्रशासन ने बिजली कटवा दी। तुम डाल – डाल, हम पात – पात।

50. डूबते को तिनके का सहारा – विपत्तिग्रस्त को थोड़ा सहारा भी बहुत होता है।

प्रयोग – जंगल में बिगड़ी कार को एक बैलगाड़ी वाले ने बस्ती तक पहुचायाँ। डूबते को तिनके का सहारा मिला।

51. धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का – न इधर का न उधर का रहना अथवा कहीं का न रहना।

प्रयोग – ससुर का दिवाला निकल जाने पर घर – जमाई की हालत, धोबी के कुत्ते जैसी हो गई, वह न घर का रहा न घाट का।

52. नक्कारखाने में तूती की आवाज – बुरे माहौल में अकेली अच्छाई की अनसुनी।

प्रयोग – अवसरवादियों की सभा में तेरी बात नक्कारखान में तूतर की आवाज होकर रह जायेगी।

53. नाच न जाने आँगन टेढ़ा – काम न जानना और बहाना बनाना।

प्रयोग – सुधा से गाने के लिए कहा तो उसने कहा – साज ही ठीक नही, क्या गाऊँ? सच ही कहा है नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

54. नौ नकद न तेरह उधार – अधिक उधारी से कम नकद भला।

प्रयोग – अधिकांश उधारी डूब जाती है, इसलिए साँई अपना सामान नकद बेचने लगा है, चाहे कम ही बिक्री क्यों न हो। नौ नकद, न तेरह उधार।

55. नाम बड़े दर्शन खोटे – प्रसिद्ध वस्तु/व्यक्ति का वास्तव में वैसा न पाया जाना।

प्रयोग – उद्योग प्रदर्शनी का प्रचार – प्रसार और प्रसिद्धि जरूरी है, पर देखने जाओगे तो निराश लौटोगे। नाम बड़ा है दर्शन खोटे है।

56. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी – साधन के अभाव का बहाना।

प्रयोग – साधना से जब भोजन बनाने के लिए कहा गया तो वह तरह – तरह के बहाने बनाने लगी। तभी उसके पति को कहावत याद आई – न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

57. नेकी कर दरिया में डाल – भलाई करके भूल जाना।

प्रयोग – वह तेरे उपकारो को भूल गया है तो दुखी क्यों होता है? उपकारों को भूल जाने में ही सार है – नेकी कर दरिया में डाल।

58. बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी – आखिर कब तक बचेगा।

प्रयोग – बम काण्ड के अपराधी कहीं भी छिपते फिरें, एक दिन पकड़े ही जायेंगे। आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।

59. हाथों के दाँत खाने के और, दिखाने के और – कथनी और करनी में अन्तर।

प्रयोग – नेता लोग कहते क्या है, और करते क्या हैं। हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और होते है।

60. हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल – गुणी व्यक्ति अपने गुणों की प्रशंसा नहीं करता।

प्रयोग – वह सदैव परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होता था। परन्तु इस संबंध मं वह कभी किसी को नहीं बतलाता था। सच ही कहते हैं – हीरा मूख से ना कहे, लाख हमारा मोल।

61. ऊँट के मुहँ में जीरा – जरूरत से बहुत कम होना।

प्रयोग – एक भूखे आदमी को मात्र एक बिस्किट देना, ऊँट के मुँह में जीरा देने के समान है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मुहावरों से क्या आशय है।
2. लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
3. मुहावरों की क्या विशेषताएँ है।
4. मुहावरों के वर्गीकरण पर अपनी जानकारी प्रस्तुत कीजिए।
5. लोकोक्तियों के उद्भव पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
6. लोकोक्तियें का वर्गीकरण कीजिए।
7. मुहावरों व लोकोक्तियों में क्या अंतर है स्पष्ट कीजिए।
8. कूटनीति विषयक तीन मुहावरे लिखिए।
9. नीचे लिखे मुहावरों के अर्थ लिखिए और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
   1. दाँत खट्टे करना
   2. कानों पर जूँ न रेंगना
   3. घड़ों पानी पड़ जाना
   4. दाँत काटी रोटी होना
10. मुहावरे का महत्व समझाइए।

NOTES

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः –

1. लोकोक्ति का अर्थ है।

   i. लोक में प्रचलित उक्ति ii. अप्रचलित उक्ति

   iii. व्यंग्यार्थ iv. गूढ़ार्थ

2. 'धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का' लोकोक्ति सही अर्थ है।

   i. गदहा होना ii. एक प्रकार की बीमारी

   iii. धीरे – धीरे चलना iv. कहीं ठौर न ठिकाना होना

3. 'ऊँट के मुँह में जीरा' का अर्थ है।

   i. बहुत थोड़ा ii. ऊँट के मुँह में बीमारी होना

   iii. ऊँट को जीरा खिलाना iv. पेट भरना

4. 'एक पंथ दो काज' का अर्थ है।

   i. अनेक कार्य करना ii. कार्य करें या न करें, सोचना

   iii. एकसाथ दो लाभ iv. एकसाथ दो पद ग्रहण करना

5. कपटी मित्र किस मुहावरे का अर्थ है।

   i. गदड़ी का लाल ii. आस्तीन का साँप

   iii. आँख का तारा iv. गाँठ का पूरा

6. 'उल्लू सीधा करना' मुहावरे का सही अर्थ है।

   i. धूर्तता करना ii. खुशामद करना

   iii. उल्लू पालना iv. अपना काम निकालना

7. लोकोक्ति होती है।

   i. एक व्यर्थ उक्ति ii. एक सम्पूर्ण वाक्य

   iii. एक वाक्यांश iv. लघुकथा

उत्तर :– 1. (i), 2. (iv), 3. (i), 4. (iii), 5. (iii), 6. (iv) 7. (ii)

■ ■ ■

20. सौरमण्डल

NOTES

सौरमण्डल, सूर्य और उसकी परिक्रमा करते ग्रह (उनके उपग्रह), क्षुद्रग्रह और धूमकेतुओं से बना है। सौरमण्डल में सूर्य और वह खगोलीय पिण्ड सम्मलित हैं, जो इस मण्डल में एक दूसरे से गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा बंधें हैं। इसके केन्द्र मे सूर्य है और सबसे बाहरी सीमा पर नेपच्यून ग्रह है। नेपच्यून के परे प्लुटो जैसे बौने ग्रहों के अलावा धूमकेतु भी आते है।

सौरमण्डल में किसी तारे के इर्द-गिर्द परिक्रमा करते हुई उन खगोलीय वस्तुओं के समूह को ग्रहीय मण्डल कहा जाता है जो अन्य तारे न हों, जैसे की ग्रह, बौने ग्रह, प्राकृतिक उपग्रह, क्षुद्रग्रह, उल्का, धूमकेतु और खगोलीय धूल।

ब्रह्माण्ड में वैसे तो कई सौरमण्डल है, लेकिन हमारा सौरमण्डल / सौर परिवार सभी से अलग है, जिसका आकार एक तश्तरी जैसा है। हमारे सूरज और उसके ग्रहीय मण्डल के पिण्डों में आठ ग्रह *(2006 में प्लूटो को हटाने के बाद)*, उनके 166 ज्ञात उपग्रह, पाँच बौने ग्रह और अरबों छोटे पिण्ड शामिल हैं। इन छोटे पिण्डों में क्षुद्रग्रह, बर्फ़ीला काइपर घेरा के पिण्ड, धूमकेतु, उल्काएं और ग्रहों के बीच की धूल शामिल हैं।

सौरमण्डल के चार छोटे आंतरिक ग्रह बुध, शुक्र, पृथ्वी और मंगल ग्रह, जिन्हें स्थलीय ग्रह कहा जाता है, मुख्यतया पत्थर और धातु से बने हैं। इसमें क्षुद्रग्रह घेरा, चार विशाल गैस से बने बाहरी गैस दानव ग्रह, काइपर घेरा और बिखरा चक्र भी शामिल हैं।

सूर्य से होने वाला प्लाज़्मा का प्रवाह (सौर वायु) सौरमण्डल को भेदता है। यह तारे के बीच के माध्यम में एक बुलबुला बनाता है जिसे हीलीयोस्फियर (हेलिओमण्डल) कहते हैं, जो इससे बाहर फैल कर बिखरी हुई तश्तरी के बीच तक जाता है।

सौरवायु, यह किसी तारे के बाहरी वातावरण द्वारा उत्सर्जीत आवेशीत कणों की एक धारा होती है। सौर वायु मुख्यत: अत्याधिक उर्जा वाले इलेक्ट्रान और प्रोटान से बनी होती है, इनकी उर्जा किसी तारे के गुरुत्व प्रभाव से बाहर जाने के लिये पर्याप्त होती है। सौर वायु सूर्य से हर दिशा मे प्रवाहित होती है जिसकी गति कुछ 100 कि.मी. प्रति सेकण्ड होती है। सूर्य के संदर्भ मे इसे सौर वायु कहते है, अन्य तारो के संदर्भ मे इसे ब्रह्माण्ड वायु कहते है।

सूर्य - सूर्य अथवा सूरज सौरमण्डल के केन्द्र में स्थित एक प्रथम श्रेणी का मुख्य-अनुक्रम तारा है जिसके इर्द-गिर्द पृथ्वी और सौरमण्डल के अन्य अवयव घूमते हैं। सूर्य हमारे सौरमण्डल का सबसे बड़ा पिण्ड है, जिसमें हमारे पूरे सौरमण्डल का 99.86% द्रव्यमान निहित है और उसका व्यास लगभग 13 लाख 90 हजार किलोमीटर है, जो पृथ्वी से लगभग 109 गुना अधिक है। ऊर्जा का यह शक्तिशाली भण्डार मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम गैसों का एक विशाल गोला है। परमाणु विलय की प्रक्रिया द्वारा सूर्य अपने केंद्र में ऊर्जा पैदा करता है। सूर्य से निकली ऊर्जा का छोटा सा भाग ही पृथ्वी पर पहुँचता है जिसमें से 15% अंतरिक्ष में परावर्तित हो जाता है, 30% पानी को भाप बनाने में काम आता है और बहुत सी ऊर्जा पेड़-पौधे एवं समुद्र सोख लेते हैं। सूर्य के संदर्भ में कुछ विशेषताऐं इस प्रकार हैं -

- सूर्य एक तारा हैं ।
- सूर्य की पृथ्वी से न्यूनतम दूरी 14.70 करोड़ किमी. है।
- सूर्य की पृथ्वी से अधिकतम दूरी 15.21 करोड़ किमी. है।
- सूर्य का व्यास लगभग 13,92,000 किमी. है।
- सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर 8 मिनट 16.6 सेकेण्ड में पहुँचता हैं।
- सूर्य की आयु लगभग 5 विलियन वर्ष है।
- सूर्य में हाइड्रोजन 71% हिलीयम 26.5% अन्य 2.5% का रासायनिक मिश्रण होता हैं
- सूर्य सहित सभी तारों में हाइड्रोजन और हिलीयम के मिश्रण को संलयन अभिक्रिया कहा जाता हैं।

NOTES

- सूर्य में हल्के-हल्के धब्बे को सौर्यकलन कहते है,जो चुम्बकीय विकिरण उत्सर्जित करते हैं जिससे पृथ्वी के बेतार संचार में खराबी आ जाती है.

सौरमण्डल के पिण्ड – अंतर्राष्ट्रीय खगोलशास्त्रीय संघ (International Astronomical Union - IAU) की प्राग सम्मेलन – 24 अगस्त 2006 के अनुसार सौरमण्डल में मौजूद पिण्डों को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है।

प्रधान ग्रह (परम्परागत ग्रह) (Major Planets) – सूर्य से उनकी दूरी के बढ़ते क्रम में हैं – बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, अरुण (यूरेनस) एवं वरुण (नेपच्यून) ।(आठ ग्रह हैं – चार पार्थिव/स्थलीय आंतरिक ग्रह और चार विशाल गैस से बने बाहरी ग्रह) शुक्र सूर्य से सब से करीब है और नेपच्यून सबसे दूर हैं।

बौने ग्रह (Dwarf Planet), यम (प्लूटो / Pluto), एरीज़ (Eris) , सीरीज़ (Ceres), हॉमिया (Haumea), माकीमाकी (Makemake) (प्लूटो को पहले खगोलिय वैज्ञानिक नवें ग्रह के रूप में मानते थे लेकिन अब नहीं मानते है) सीरीज़ (Ceres) क्षुद्रग्रह पट्टी में है और वरुण से परे चार बौने ग्रह यम (प्लूटो), हॉमिया (Haumea), माकीमाकी (Makemake), और एरीज़ (Eris) ।

लघु सौरमण्डलीय पिण्ड – 166 ज्ञात उपग्रह एवं अन्य छोटे खगोलिय पिण्ड जिसमे – क्षुद्रग्रह पट्टी, धूमकेतु (पुच्छल तारे), उल्कायें, बर्फीली क्विपर पट्टी के पिण्ड और ग्रहों के बीच की धूल शामिल हैं।

छह ग्रहों और तीन बौने ग्रहों की परिक्रमा प्राकृतिक उपग्रह करते हैं, जिन्हें आमतौर पर पृथ्वी के चन्द्रमा के नाम के आधार पर ''चन्द्रमा'' ही पुकारा जाता है। प्रत्येक बाहरी ग्रह को धूल और अन्य कणों से निर्मित छल्लों द्वारा परिवृत किया जाता है।

सौरमण्डल के ग्रह – सौरमण्डल में सूर्य के चारों और निश्चित समयमान, गति से चक्कर लगाने वाले खगोलीय पिण्ड जिनका पर्याप्त गुरुत्वाकर्षण बल हो वे ग्रह कहलाते हैं, इनकी संख्या 8 है, हमारी पृथ्वी इन्हीं में से एक है। सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रहों की जानकारी निम्नानुसार है-

- ग्रह उन खगोलीय पिण्डों को कहा जाता है जो एक निश्चित मार्ग पर सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं।
- सभी ग्रह सूर्य के पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा करते हैं,लेकिन शुक्र और अरुण इसके विपरीत परिक्रमा करते है पूर्व से पश्चिम।
- सूर्य से ग्रहों की दूरी का क्रम – बुध – शुक्र- पृथ्वी – मंगल – बृहस्पति – शनि – अरुण-वरुण।
- ग्रहों का आकार घटते क्रम में – बृहस्पति – शनि – अरुण – वरुण – पृथ्वी – शुक्र – मंगल-बुध ।

बुध – बुध ग्रह सूर्य से सबसे पहला / पास का ग्रह है और द्रव्यमान में आंठवा सबसे बड़ा ग्रह है और गुरुत्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी की अपेक्षा एक चौथाई है। यह सौरमण्डल का सबसे छोटा ग्रह है, जिसके पास कोई उपग्रह नहीं है। बुध ग्रह का व्यास 4880 किमी जो सौरमण्डल में दो चन्द्रमा गुरु का गेनीमेड और शनि का टाईटन व्यास में बुध से बड़े है लेकिन द्रव्यमान में आधे हैं। बुध सामान्यत: नंगी आंखो से सूर्यास्त के बाद या सूर्योदय से ठीक पहले (दो घंटा पहले) देखा जा सकता है। बुध सूर्य के काफी समीप होने से इसे देखना मुश्किल होता है।

-यह सौरमण्डल का सबसे छोटा तथा सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है।

-बुध सूर्य की परिक्रमा केवल 88 दिन में पूरी करता है सबसे कम समय में।

-इसका कोई उपग्रह नहीं है

-इस ग्रह पर वायुमण्डल नहीं है जिससे जीवन सम्भव नहीं ।

-पृथ्वी से आकार में 18 गुना छोटा है।

-पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल का 3/8 बुध का गुरुत्वाकर्षण बल है ।

NOTES

–बुध का तापांतर सर्वाधिक 560 सेंटिग्रेट है

–इसका घूर्णन काल 58.6 दिन है।

–मेरिनट– 10 बुध का कृत्रिम उपग्रह है।

शुक्र – शुक्र पृथ्वी का निकटतम ग्रह, सूर्य से दूसरा और सौरमण्डल का छठवाँ सबसे बड़ा ग्रह है। शुक्र पर कोई चुंबकिय क्षेत्र नहीं है। इसका कोई उपग्रह (चन्द्रमा) भी नहीं है। आकाश में शुक्र को नंगी आँखो से देखा जा सकता है। यह आकाश में सबसे चमकिला पिण्ड है। शुक्र ग्रह को प्रागैतिहासिक काल से जाना जाता। यह आकाश में सूर्य और चन्द्रमा के बाद सबसे ज़्यादा चमकिला ग्रह / पिण्ड है। बुध के जैसे ही इसे भी दो नामो भोर का तारा (यूनानी: Eosphorus) और शाम का तारा / आकाशीय पिण्ड के (यूनानी: Hesperus) नाम से जाना जाता रहा है। ग्रीक खगोलशास्त्री जानते थे कि यह दोनो एक ही है। शुक्र भी एक आंतरिक ग्रह है, यह भी चन्द्रमा की तरह कलाये प्रदर्शित करता है। गैलेलीयो द्वारा शुक्र की कलाओं के निरिक्षण कॉपरनिकस के सूर्यकेन्द्री सौरमण्डल सिद्धांत के सत्यापन के लिये सबसे मज़बूत प्रमाण दिये थे।

- यह सौरमण्डल का सबसे चमकीला तथा सबसे गर्म ग्रह है।
- इस ग्रह का तापमान लगभग 500 सेंटीग्रेट है।
- सूर्य की परिक्रमा करने मे 225 दिन लगते हैं।
- शुक्र अन्य ग्रहों के विपरीत दिशा में पूर्व से पश्चिम सूर्य की परिक्रमा करता है (वरुण के समान)। इसलिए सूर्योदय पश्चिम की तरफ तथा सूर्यास्त पूर्व में।
- इस ग्रह के वायुमण्डल में लगभग 95% कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) की मात्रा है तथा 3.5% भाग नाइट्रोजन का है।
- शुक्र पृथ्वी के सबसे निकट का ग्रह है।
- इस ग्रह को सांझ का तारा या भोर का तारा भी कहा जाता है।
- शुक्र को पृथ्वी की भगिनी ग्रह कहते है क्योंकि यह आकार,घनत्व एवं व्यास में लगभग पृथ्वी के समान है।
- इसका कोई उपग्रह नहीं है।
- सूर्य और पृथ्वी के बीच में होने के कारण यह भी अन्तर्ग्रह की श्रेणी में आता है।

पृथ्वी – पृथ्वी बुध और शुक्र के बाद सुर्य से तीसरा ग्रह है। आतंरिक ग्रहों में से सब से बड़ा एवं पूरे ब्रह्माण्ड में धरती ही अद्वितीय ग्रह है जहाँ पर ज़िन्दगी है। सुर्य से पृथ्वी की औसत दूरी को खगोलीय इकाई कहते हैं। ये लगभग 15 करोड़ किलोमीटर है। ये दूरी वासयोग्य क्षेत्र में है। किसी भी सितारे के गिर्द ये एक ख़ास झोन होता है, जिस में ज़मीन की सतह के ऊपर का पानी तरल अवस्था में रहता है। इसे नीला ग्रह भी कहते है?।

- सौरमण्डल का एकमात्र ग्रह जिस पर जीवन है।
- सूर्य से दूरी पर यह तीसरे स्थान पर है।
- ग्रहों के आकार एवं द्रव्यमान में यह पाँचवां स्थान पर है।
- पृथ्वी पर जल की उपस्थिति के कारण यह अंतरिक्ष से नीली दिखाई देता है। इसलिए इसे नीला ग्रह कहते हैं।
- पृथ्वी पर 71% भाग में जल है तथा 29% भाग स्थलीय है।
- यह अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^{o}$ झुकी हुई है जिससे ऋतु परिवर्तन होता है।
- यह पश्चिम से पूर्व अपने अक्ष पर 1610 किमी प्रति घंटा की चाल से 23 घंटे 56 मिनट और 4 सेकेण्ड में एक चक्कर लगाती है।
- पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा दीर्घवृत्ताकार पथ पर 29.72 किमी प्रति सेकेण्ड की चाल से 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट 46 सेकेंड (365 दिन 6 घंटे) मे करती है।

- पृथ्वी को सूर्य की परिक्रमा करने में लगे समय को सौरवर्ष कहते हैं।
- सूर्य से पृथ्वी की औसत दूरी 15 करोड़ किमी है। 3 जनवरी को पृथ्वी, सूर्य के निकट होती है तब यह दूरी लगभग 14.70 करोड़ किमी होती है इसे अवस्था को उपसौर कहते हैं।
- पृथ्वी 4 जुलाई को सूर्य से अधिक दूरी पर होती है लगभग 15.21 करोड़ किमी, इस अवस्था को अपसौर कहा जाता है।
- सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर 8 मिनट 18 सेकेण्ड में पहुँचता है तथा चन्द्रमा का प्रकाश 1 मिनट 25 सेकेण्ड में पहुँचता है।
- पृथ्वी का सबसे निकट का तारा सूर्य के बाद प्रॉक्सिमा सेन्चुरी है, जो पृथ्वी से लगभग 4.22 प्रकाश–वर्ष दूर है।
- पृथ्वी का विषुवतीय व्यास 12756 किमी है और ध्रुवीय व्यास 12714 किमी है।
- पृथ्वी का एक मात्र उपग्रह चन्द्रमा है।

मंगल – सौरमण्डल में मंगल ग्रह सूर्य से चौथे स्थान पर है और आकार में सातवें क्रमांक का बड़ा ग्रह है। मंगल ग्रह को रात में आंखों से स्पष्ट देखा जा सकता है। इसे युद्ध का भगवान भी कहते हैं। इसे यह नाम अपने लाल रंग के कारण मिला। पृथ्वी से देखने पर, इसको इसकी रक्तिम आभा के कारण लाल ग्रह के रूप में भी जाना जाता है। इसका लाल रंग, आयरन आक्साइड की अधिकता के कारण है। मंगल को प्रागैतिहासिक काल से जाना जाता रहा है। मंगल का निरिक्षण पृथ्वी की अनेकों वेधशालाओं से होता रहा है लेकिन बड़ी बड़ी दूरबीन भी मंगल को एक कठीन लक्ष्य मानती है, यह ग्रह बहुत छोटा है। यह ग्रह विज्ञान फतांसी के लेखको का पृथ्वी से बाहर जीवन के लिये चहेता ग्रह है। लेकिन लावेल द्वारा देखी गयी प्रसिद्ध नहरे और मंगल पर जीवन परिकथाओं जैसा कल्पना में ही रहा है।

- मंगल को लाल ग्रह कहा जाता है।
- मंगल का लाल रंग वहा मौजूद आयरन ऑक्साइड की अधिक मात्रा के कारण है।
- यह अपने अक्ष पर 25^0 के कोण पर झुका हुआ है जिसकी वजह से वहा मौसम परिवर्तन होता है।
- मंगल ग्रह का अक्षीय झुकाव तथा दिन का मान लगभग पृथ्वी के समान है।
- यह अपनी धुरी पर पृथ्वी के समान 24 घंटे 6 मिनट पर एक चक्कर लगाता है।
- मंगल ग्रह 687 दिन में सूर्य की परिक्रमा करता है।
- इस ग्रह के वायुमण्डल में 95% कार्बनडाई ऑक्साइड, 2–3% नाइट्रोज़न तथा 2% ऑर्गन गैस है।
- मंगल ग्रह के दो उपग्रह है – फोबोस और डीमोस।
- सौरमण्डल का सबसे बड़ा ज्वालामुखी ओलिपस मेसी (Olympus Monse) इसी ग्रह पर है।
- मंगल ग्रह पर सौरमण्डल का सबसे ऊचा पर्वत निक्स ओलंपिया है , जिसकी ऊँचाई माउन्ट एवरेस्ट से तीन गुना ज्यादा है।

बृहस्पति – बृहस्पति सूर्य से पांचवाँ और हमारे सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। यह एक गैस दानव है जिसका द्रव्यमान सूर्य के हजारवें भाग के बराबर तथा सौरमण्डल में मौजूद अन्य सात ग्रहों के कुल द्रव्यमान का ढाई गुना है। बृहस्पति को शनि, युरेनस और नेपच्यून के साथ एक गैसीय ग्रह के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इन चारों ग्रहों को बाहरी ग्रहों के रूप में जाना जाता है। यह ग्रह प्राचीन काल से ही खगोलविदों द्वारा जाना जाता रहा है तथा यह कई संस्कृतियों की पौराणिक कथाओं और धार्मिक विश्वासों के साथ जुड़ा हुआ था। रोमन सभ्यता ने अपने देवता जुपिटर के नाम पर इसका नाम रखा था। जब इसे पृथ्वी से देखा गया, तो यह चन्द्रमा और शुक्र के बाद तीसरा सबसे अधिक चमकदार निकाय बन गया (मंगल ग्रह अपनी ग्रहपथ के कुछ बिंदुओं पर बृहस्पति की चमक से मेल खाता है)।

- बृहस्पति आकार की दृष्टि से सबसे बड़ा ग्रह है तथा सूर्य से दूरी के क्रम में पाँचवां स्थान है।
- यह पृथ्वी से लगभग 1300 गुना अधिक बड़ा है।
- यह ग्रह अपनी धुरी पर सबसे तेजी से घूमता है, यह लगभग 9 घंटे 55 मिनट (10 घंटे) में अपनी धुरी पर चक्कर लगाता है।
- बृहस्पति को सूर्य की परिक्रमा करने में लगभग 11 वर्ष 9 महीने (लगभग 12 वर्ष) लगते हैं।
- इस ग्रह के वायुमण्डल में हाड्रोजन, हीलीयम की अधिकता है।
- बृहस्पति के लगभग 62 उपग्रह है जिसमें गैनीमीड सबसे बड़ा उपग्रह है यह पीले रंग का है।

शनि – शनि सौरमण्डल का एक सदस्य ग्रह है। यह सूरज से छटे स्थान पर है और सौरमण्डल में बृहस्पति के बाद सबसे बड़ा ग्रह हैं। इसके कक्षीय परिभ्रमण का पथ 14,29,40,000 किलोमीटर है। शनि के 60 उपग्रह हैं। जिसमें टाइटन सबसे बड़ा है। टाइटन बृहस्पति के उपग्रह गिनिमेड के बाद दूसरा सबसे बड़ा उपग्रह है। शनि ग्रह की खोज प्राचीन काल में ही हो गई थी। गैलीलियो ने सन् 1610 में दूरबीन की सहायता से इस ग्रह को खोजा था। शनि ग्रह की रचना 75% हाइड्रोजन और 25% हीलियम से हुई है। जल, मिथेन, अमोनिया और पत्थर यहाँ बहुत कम मात्रा में पाए जाते हैं। हमारे सौरमण्डल में चार ग्रहों को गैस दानव कहा जाता है, क्योंकि इनमें मिटटी–पत्थर की बजाय अधिकतर गैस है और इनका आकार बहुत ही विशाल है। शनि इनमे से एक है – बाकी तीन बृहस्पति, अरुण (युरेनस) और वरुण (नेपच्यून) हैं।

- यह ग्रह आकार में दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है।
- इसके चारों ओर एक छल्ला (वलय) पाया जाता है जो इसकी प्रमुख पहचान है।
- यह पीले रंग का ग्रह है।
- शनि ग्रह सूर्य की परिक्रमा 29 वर्षों में करता है।
- इसका घनत्व सबसे सबसे कम है पृथ्वी से लगभग तीस गुना कम।
- इस ग्रह को लाल दानव भी कहा जाता है।
- शनि के सबसे अधिक 62 उपग्रह है इसलिए इसे गैलेग्जी लाइक प्लेनेटस भी कहा जाता है।
- टाइटन इसका सबसे बड़ा उपग्रह है इसका आकार लगभग बुध के बराबर है।
- टाइटन ऐसा उपग्रह है जिस पर वायुमण्डल एवं गुरुत्वाकर्षण दोनों पाए जाते हैं।

अरुण या युरेनस – अरुण या युरेनस हमारे सौरमण्डल में सूर्य से सातवाँ ग्रह है। व्यास के आधार पर यह सौरमण्डल का तीसरा बड़ा और द्रव्यमान के आधार पर चौथा बड़ा ग्रह है। द्रव्यमान में यह पृथ्वी से 14.5 गुना अधिक भारी और अकार में पृथ्वी से 63 गुना अधिक बड़ा है। औसत रूप में देखा जाए तो पृथ्वी से बहुत कम घना है – क्योंकि पृथ्वी पर पत्थर और अन्य भारी पदार्थ अधिक प्रतिशत में हैं जबकि अरुण पर गैस अधिक है। हालांकि अरुण को बिना दूरबीन के आँख से भी देखा जा सकता है, यह इतना दूर है और इतनी माध्यम रोशनी का प्रतीत होता है के प्राचीन विद्वानों ने कभी भी इसे ग्रह का दर्जा नहीं दिया और इसे एक दूर टिमटिमाता तारा ही समझा। 13 मार्च 1781 में विलियम हरशल ने इसकी खोज की घोषणा करी। अरुण दूरबीन द्वारा पाए जाने वाला पहला ग्रह था।

- यह ग्रह आकार में तीसरा बड़ा ग्रह है तथा सूर्य से दूरी में सातवें स्थान पर है।
- अरुण ग्रह की खोज 'सर विलियम हर्शल' ने 13 मार्च 1781 ई. को की थी।
- अरुण ग्रह शुक्र की तरह पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता है।
- यह सूर्य की परिक्रमा 84 वर्ष में करता है। तथा इसका घूर्णनकाल 10 से 25 घंटे है।
- यह अपने अक्ष पर इतना झुका हुआ है (लगभग 82 डिग्री) लेटा हुआ दिखाई देता है इसलिए इसे लेटा हुआ ग्रह कहा जाता है।

- इसका आकार पृथ्वी से चार गुना बड़ा है लेकिन इसे बिना दूरबीन के नहीं देखा जा सकता।
- मीथेन गैस कही अधिकता के कारण यह हरे रंग का दिखाई देता है।
- अरुण ग्रह में शनि की तरह चारों ओर वलय पाए जाते हैं जिनके नाम – अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा एवं इप्सिलॉन।

- इसके 27 उपग्रह है जिसमें प्रमुख हैं – मिरांडा, एरियल, ओबेरॉन, टाइटैनिया, कॉर्डेलिया,ओफेलिया इत्यादि।

वरुण, नॅप्टयून या नेपच्यून – वरुण, नेपच्यून हमारे सौरमण्डल में सूर्य से आठवाँ ग्रह है। व्यास के आधार पर यह सौरमण्डल का चौथा बड़ा और द्रव्यमान के आधार पर तीसरा बड़ा ग्रह है। वरुण का द्रव्यमान पृथ्वी से 17 गुना अधिक है और अपने पड़ौसी ग्रह अरुण (युरेनस) से थोड़ा अधिक है। खगोलीय इकाई के हिसाब से वरुण की ग्रहपथ सूरज से 30.1 किमी. की औसत दूरी पर है, यानि वरुण पृथ्वी के मुक़ाबले में सूरज से लगभग तीस गुना अधिक दूर है। वरुण को सूरज की एक पूरी परिक्रमा करने में 164.79 वर्ष लगते हैं, यानि एक वरुण वर्ष 164.79 पृथ्वी वर्षों के बराबर है।

- इस ग्रह की खोज 1846 ई. में जॉन गाले ने की थी।
- यह सूर्य से सबसे दूर आठवें स्थान पर स्थित है
- यह सूर्य की परिक्रमा 166 वर्ष में करता है
- यह पीले रंग का दिखाई देता है क्योंकि इसके वायुमण्डल में अमोनिया, हाइड्रोजन, मीथेन, नाइट्रोजन गैस की अधिकता है।
- इसके 14 उपग्रह है जिसमें ट्राइटन एवं नेरिड प्रमुख हैं।

चन्द्रमा – चन्द्रमा वायुमण्डल विहीन पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह है, जिसकी पृथ्वी से दूरी 3,84,365 कि.मी है। यह सौरमण्डल का पाचवाँ सबसे विशाल प्राकृतिक उपग्रह है। चन्द्रमा की सतह और उसकी आन्तरिक सतह का अध्ययन करने वाला विज्ञान सेलेनोलॉजी कहलाता है। इस पर धूल के मैदान को शान्तिसागर कहते हैं। यह चन्द्रमा का पिछला भाग है, जो अंधकार में होता है।

- यह एक छोटा सा पिण्ड है जो आकार में पृथ्वी का एक चौथाई है।
- चन्द्रमा के अध्ययन करने वाले विज्ञान को सेलेनोलॉजी कहा जाता है।
- चन्द्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा लगभग 27 दिन 7 घंटे 43 मिनट 15 सेकेण्ड में करता है तथा इतने ही समय में अपने अक्ष पर घूर्णन करता है, यही कारण है कि पृथ्वी से चन्द्रमा का एक ही भाग दिखाई देता है।
- चन्द्रमा की पृथ्वी से औसत दूरी 38465 किमी है।
- चन्द्रमा और पृथ्वी महीने में दो बार समकोण बनाते हैं
- चन्द्र ग्रहण हमेशा पूर्णिमा को होता है जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आ जाती है।
- इसकी उच्चतम पर्वत चोटी का नाम लीबनिट्ज है, जिसकी ऊँचाई 35000 फुट (10668 मी.) है।
- चन्द्रमा का व्यास लगभग 3476 किमी. तथा त्रिज्या 1738 किमी है।
- सूर्य के संदर्भ में चन्द्रमा की परिक्रमा अवधि को साइनोडिक मास या चन्द्र मास कहते हैं।
- चन्द्रमा को जीवाश्म ग्रह भी कहा जाता है।
- चन्द्रमा पर जुलाई 1969 में अपोलो–11 अंतरिक्ष यान से नील आर्मस्ट्रांग तथा एडविन आल्ड्रिन गए थे जिन्होंने पहली बार चन्द्रमा की सतह पर कदम रखा।
- 'सी आफ ट्रांक्वेलिटी' नामक स्थान चन्द्रमा पर है।
- चन्द्रमा उतना ही पुराना है जितनी पृथ्वी लगभग 460 करोड़ वर्ष।

क्षुद्र ग्रह – क्षुद्र ग्रह पथरीले और धातुओं के ऐसे पिण्ड है जो सूर्य की परिक्रमा करते है लेकिन इतने लघु है कि इन्हे ग्रह नही कहा जा सकता। इन्हें लघु ग्रह या क्षुद्र ग्रह कहते हैं। इनका आकार 1000 किमी व्यास के सेरस से 1 से 2 इंच के पत्थर के टुकड़ो तक है। क्षुद्र ग्रहों का व्यास 240 किमी या उससे ज्यादा है। ये क्षुद्र ग्रह पृथ्वी की कक्षा के अंदर से शनि की कक्षा से बाहर तक है। लेकिन अधिकतर क्षुद्रग्रह मंगल और गुरु के बिच मे एक पट्टे में है। कुछ की कक्षा पृथ्वी की कक्षा को काटती है और कुछ ने भूतकाल मे पृथ्वी को टक्कर भी मारी है। एक उदाहरण महाराष्ट्र मे लोणार झील है।

क्षुद्रग्रह घेरा या ऐस्टरौएड बेल्ट हमारे सौरमण्डल का एक क्षेत्र है जो मंगल ग्रह (मार्स) और बृहस्पति ग्रह (ज्यूपिटर) की ग्रहपथओं के बीच स्थित है और जिसमें हज़ारों-लाखों क्षुद्रग्रह (ऐस्टरौएड) सूरज की परिक्रमा कर रहे हैं। इनमें एक 950 किमी के व्यास वाला सीरीस नाम का बौना ग्रह भी है जो अपने स्वयं के गुरुत्वाकर्षक खिंचाव से गोल अकार पा चुका है। यहाँ तीन और 400 किमी के व्यास से बड़े क्षुद्रग्रह पाए जा चुके हैं – वॅस्टा, पैलस और हाइजिआ। पूरे क्षुद्रग्रह घेरे के कुल द्रव्यमान में से आधे से ज़्यादा इन्ही चार वस्तुओं में निहित है। बाकी वस्तुओं का आकार भिन्न-भिन्न है – कुछ तो दसियों किलोमीटर बड़े हैं और कुछ धूल के कण मात्र हैं।

धूमकेतु या पुच्छल तारा – सौरमण्डल के अन्य छोटे पिण्डों के विपरित धूमकेतुओ को प्राचिन काल से जाना जाता रहा है। चीनी सभ्यता मे हेली के धूमकेतु को 240 ईसापूर्व देखे जाने के प्रमाण है। इंग्लैड मे नारमन आक्रमण के समय 1066मे भी हेलीका धूमकेतु देखा गया था। 1995 तक 878 धूमकेतुओ को सारणीबद्ध किया जा चूका था और उनकी कक्षाओ की गणना हो चूकी थी। इनमे से 184 धूमकेतूओ का परिक्रमाकाल 200 वर्षो से कम है; शेष धूमकेतुओ के परिक्रमाकाल की सही गणना पर्याप्त जानकारी के अभाव मे नही की जा सकी है।

धूमकेतुओं को कभी – कभी गंदी या किचड़युक्त बर्फीली गेंद कहा जाता है। ये विभिन्न बर्फो (जल और अन्य गैस) और धूल का मिश्रण होते है और किसी वजह से सौरमण्डल के ग्रहो का भाग नही बन पाये पिण्ड है। यह हमारे लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि ये सौरमण्डल के जन्म के समय से मौजूद है। सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हेलीका धूमकेतु है। 1994 मे शुमेकर लेवी का धूमकेतु चर्चा मे रहा था जब वह बृहस्पति से टुकड़ो मे टूटकर जा टकराया था।

उल्कापात – आकाशीय पिण्ड या चट्टानें जो पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण से तेजी से पृथ्वी की ओर आती हैं, वायुमण्डल में घर्षण से चमकती हैं और पृथ्वी तक आते-आते जलकर नष्ट हो जाती हैं उन्हें ही उल्काएँ और उनका गिरना या पृथ्वी के सम्पर्क में आना उल्कापात कहलाता है।

पृथ्वी जब किसी धूमकेतु की कक्षा से गुजरती है तब उल्कापात होता है। कुछ उल्कापात एक नियमित अंतराल मे होते है जैसे पर्सीड उल्कापात जो हर वर्ष 9 अगस्त और 13 अगस्त के मध्य होता है जब पृथ्वी स्विफ्ट टटल धूमकेतु की कक्षा से गुजरती है। हेलीका धूमकेतु अक्टूबर मे होनेवाले ओरीयानाइड उल्कापात के लिये जिम्मेदार है।

नक्षत्र – वे तारों का समूह जो निरन्तर पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाते है, भारतीय खगोल गणनाशास्त्रियों ने उन्हें नक्षत्रों की संज्ञा दी है। इनकी संख्या 27 है, किन्तु अभिजीत को भी 28 वाँ नक्षत्र माना जाता है। चन्द्रमा अपने भ्रमण पथ में प्रतिदिन एक नक्षत्र को पार कर लेता है।

सूर्यग्रहण – सूर्यग्रहण एक तरह का ग्रहण है जब चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्य के मध्य से होकर गुजरता है तथा पृथ्वी से देखने पर सूर्य पूर्ण अथवा आंशिक रूप से चन्द्रमा द्वारा आच्छादित होता है।

भौतिक विज्ञान की दृष्टि से जब सूर्य व पृथ्वी के बीच में चन्द्रमा आ जाता है तो चन्द्रमा के पीछे सूर्य का बिम्ब कुछ समय के लिए ढक जाता है, उसी घटना को सूर्यग्रहण कहा जाता है। पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती है और चाँद पृथ्वी की। कभी-कभी चाँद, सूरज और धरती के बीच आ जाता है। फिर वह सूरज की कुछ या सारी रोशनी रोक लेता है जिससे धरती पर साया फैल जाता है। इस घटना को सूर्य ग्रहण कहा जाता है। यह घटना सदा सर्वदा अमावस्या को ही होती है।

चन्द्रग्रहण – चन्द्रग्रहण उस खगोलीय स्थिति को कहते है जब चन्द्रमा पृथ्वी के ठीक पीछे उसकी छाया में आ जाता है। ऐसा तभी हो सकता है जब सूर्य, पृथ्वी और चन्द्रमा इस क्रम में लगभग एक सीधी रेखा में अवस्थित हों। इस प्रतिबंध के कारण चन्द्रग्रहण केवल पूर्णिमा को घटित हो सकता है।

किसी सूर्यग्रहण के विपरीत, जो कि पृथ्वी के एक अपेक्षाकृत छोटे भाग से ही दिख पाता है, चन्द्रग्रहण को पृथ्वी के रात्रि पक्ष के किसी भी भाग से देखा जा सकता है। जहाँ चन्द्रमा की छाया की लघुता के कारण सूर्यग्रहण किसी भी स्थान से केवल कुछ मिनटों तक ही दिखता है, वहीं चन्द्रग्रहण की अवधि कुछ घण्टों की होती है। इसके अतिरिक्त चन्द्रग्रहण को, सूर्यग्रहण के विपरीत, आँखों के लिए बिना किसी विशेष सुरक्षा के देखा जा सकता है, क्योंकि चन्द्रग्रहण की उज्ज्वलता पूर्ण चन्द्र से भी कम होती है।

NOTES

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. सौरमण्डल से क्या आशय है ? समझाईये ।
2. सौरमण्डल में सूर्य की स्थिति और महत्व का वर्णन कीजिए ।
3. ग्रहों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. पृथ्वी ग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. निम्नलिखित में अंतर बताइये –
   - क. ग्रह और उपग्रह
   - ख. भोर का तारा और पुच्छल तारा
   - ग. अरुण और वरुण
6. निम्नलिखित को समझाइए –
   - अ. क्षुद्रग्रह
   - ब. धूमकेतु
   - स. सूर्यग्रहण
   - द. चन्द्रग्रहण
7. पृथ्वी के उपग्रह (चन्द्रमा) पर संक्षिप्त लेख लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. सौरमण्डल में कुल कितने ग्रह हैं –
   i) आठ ii) नौ
   iii) दस iv) इनमें से कोई नहीं
2. सूर्य में मुख्यत: कौन-सी गैस होती है –
   i) हाइड्रोजन ii) ऑक्सीजन
   iii) नाइट्रोजन iv) हीलियम
3. लाल ग्रह किसे कहा जाता है –
   i) बृहस्पति ii) बुध
   iii) मंगल iv) शनि
4. भारतीय ज्योतिष में किस ग्रह को क्रूर ग्रह कहा गया है –
   i) शनि ii) बुध
   iii) अरूण iv) यम

5. भारतीय पंचांग के अनुसार नक्षत्रों की संख्या कितनी मानी जाती है –

i)	27	ii)	14
iii)	09	iv)	21

6. पृथ्वी का उपग्रह क्या है –

i)	सूर्य	ii)	चन्द्रमा
iii)	हेली धूमकेतु	iv)	सभी

7. सूर्य का चक्कर लगाने वाले पिण्ड कहलाते हैं –

i)	ग्रह	ii)	उपग्रह
iii)	धूमकेतु	iv)	उल्का

8. सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक लगभग कितने समय में पहुँचता है –

i)	8 सेकेण्ड	ii)	8 मिनिट
iii)	10 मिनिट	iv)	15 मिनिट

9. भोर का तारा किसे कहा जाता है –

i)	शुक्र	ii)	बुध
iii)	चन्द्रमा	iv)	सूर्य

उत्तर – 1. (i); 2. (i); 3. (iii); 4. (i); 5. (i); 6. (ii); 7. (i); 8. (ii); 9. (i)

■ ■ ■

21. ब्रह्माण्ड और जीवन

NOTES

हम जानते हैं कि जिस पृथ्वी पर हम आवास एवं विचरण करते हैं, वह ब्रह्माण्ड तथा सौरमंडल का एक छोटा-सा भाग है। पृथ्वी सौर-परिवार का एक सदस्य हैं, जिसका मुखिया सूर्य हैं। सूर्य पृथ्वी पर जीवों की शक्ति का एक प्रमुख स्रोत है।

सौरमंडल का स्वामी होने के बावजूद सूर्य भी विशाल आकाशगंगा-दुग्धमेखला नाम की मंदाकिनी का एक साधारण और औसत तारा है। सूर्य आकाशगंगा के केन्द्र के चारों तरफ परिक्रमा करता है। आकाश-गंगा की एक परिक्रमा को पूरी करने में सूर्य को लगभग 25 करोड़ साल लगते हैं। 25 करोड़ साल की इस लम्बी अवधि को ब्रह्माण्ड-वर्ष या कॉस्मिक-ईयर के नाम से जाना जाता है।

जैसाकि हम जानते हैं कि ब्रह्माण्ड मन्दाकिनियो का अत्यंत विराट एवं विशाल समूह है। यहाँ पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक हैं कि इतना विराट ब्रह्माण्ड कब, कैसे और किससे उत्पन्न हुआ? ब्रह्माण्ड इतना विशाल क्यों है? यह कितना विशाल है? क्या यह गतिशील है या स्थिर? ब्रह्माण्ड में कुल कितना द्रव्यमान है? क्या इसका कुल द्रव्यमान सीमित है या अनंत? ब्रह्माण्ड कब तक फैलता रहेगा? ब्रह्माण्ड का भविष्य क्या होगा? इसका अंत कैसे होगा? वैगरह-वैगरह।

ब्रह्माण्ड से संबंधित ऊपर लिखे प्रश्नों के उत्तर पाना हमेशा से ही कठिन रहा है! कोई यह नहीं बता सकता कि ब्रह्माण्ड का पहले जन्म हुआ या फिर उसके जन्म देने वाला का? यदि पहले ब्रह्माण्ड का जन्म हुआ तो उसके जन्म से पहले उसको जन्म देने वाला कहाँ से आया?

ब्रह्माण्ड क्या है?

ब्रह्माण्ड के बारे में बहुत कुछ अनुमानों के आधार पर वैज्ञानिकों ने अपने मत प्रस्तुत किये हैं। रात में आकाश की ओर देखे तो दूर-दूर तक हमे तारे ही तारे दिखाई देते हैं। दरअसल यही आसमान ब्रह्माण्ड का एक छोटा -सा भाग हैं । पूरा ब्रह्माण्ड हमें दिखाई नहीं देता, यह इतना असीम है कि हमारी नज़रे वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकतीं।

विश्व-प्रसिद्ध खगोलशास्त्री फ्रेड-होयल के अनुसार ब्रह्माण्ड सब-कुछ है। अर्थात् अंतरिक्ष, पृथ्वी तथा उसमें उपस्थित सभी खगोलीय पिण्ड, आकाशगंगा, अणु और परमाणु आदि को समग्र रूप से ब्रह्माण्ड कहते हैं। सब-कुछ समेट लेना ब्रह्माण्ड का एक विशेष गुणधर्म है। ब्रह्माण्ड से संबंधित अध्ययन को ब्रह्माण्ड-विज्ञान (Cosmology) कहते हैं।

ब्रह्माण्ड इतना विशाल हैं कि इसकी हम कल्पना नहीं नही कर सकते, अरबो-खरबों किलोमीटर लम्बा-चौड़ा मालूम होता है। ब्रह्माण्ड की दूरियाँ इतनी अधिक हैं कि उसके लिए हमें एक विशेष पैमाना निर्धारित करना पड़ा- प्रकाश वर्ष (Light Year)। दरअसल प्रकाश की किरणें एक सेकेंड में लगभग तीन लाख किलोमीटर की दूरी तय करती हैं। इस वेग से प्रकाश-किरणें एक वर्ष में जितनी दूरी तय करती हैं, उसे एक प्रकाश-वर्ष कहते हैं। इसलिए एक प्रकाश-वर्ष 94 खरब, 60 अरब, 52 करोड़, 84 लाख, 05 हजार किलोमीटर के बराबर होता है।

प्राचीन काल में ब्रह्माण्ड का अध्ययन- पूर्व में संसार के सभी देशों में ब्रह्माण्ड विषयक जानकारी प्रारम्भिक स्थिति में थी, जो क्रमशः यथार्थ और वैज्ञानिक होती गई। लोग पहले धार्मिक कार्यो, पर्वो और कृषि-कर्म के लिए गृह-नक्षत्रों की स्थिति पर विचार करते थे। भिन्न-भिन्न देशों में अब यह अध्ययन विकसित होता गया।

ग्रीक में ब्रह्माण्डकीय अध्ययन- ग्रीक में होमर, इलियड, अरस्तू जैसे अध्ययनकर्त्ताओं ने ग्रह और नक्षत्रों का प्रारम्भिक अध्ययन किया। इन्होंने सर्वप्रथम युद्ध, महामारी या अतिवृष्टि के लिए धूमकेतु के उदय को प्रमुख कारण माना है। इसी तारतम्य में यहाँ के निवासी ईश्वरीय सत्ता से ही ग्रह-नक्षत्रों का सबंधं जोड़ते थे। प्रथमतः यूडाक्सस ने कहा कि पृथ्वी स्थिर है और उसके चारों ओर गोलों की आकृति में ग्रह और तारे घूमते हैं। पर एरिस्टार्कस ने बताया कि सूर्य केंन्द्र स्थान में है तथा पृथ्वी इसकी परिक्रमा करती है। उन्होंने

यह भी प्रतिपादित किया कि पृथ्वी से सूर्य की दूरी चन्द्रमा और पृथ्वी की दूरी से 18 गुना अधिक है। सूर्य पृथ्वी से कई गुना बड़ा है।

हिपार्कस ने एक हजार तारों की सूची तैयार कर नया वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होने न केवल 'चित्रा' की खोज की अपितु बताया कि सूर्य और चन्द्रमा की स्वतंत्र कक्षाएँ है। चन्द्र मासों की गणनाएँ इसी खगोलशास्त्री ने की। आलमी नामक खगोलशास्त्री ने तारों के नामकरण किए और इनकी द्युति की सूचियॉ बनाई। इन्होंने ग्रहण संबंधी नियम भी बनाए।

मिस्र में ब्रह्माण्ड अध्ययन– मिस्र के अध्ययनकर्त्ताओं ने ज्योतिष की गणना और पंचांग की रचना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इनकी गणना का आधार चन्द्रमास ही रहा। मिस्र के ब्रह्माण्डविदों ने लीप-ईयर का भी आविष्कार किया तथा ध्रुव तारे के आधार पर उत्तर दिशा का निर्धारण किया। दिशा निर्धारण से मंदिरों की स्थापना और पिरामिडों का निर्माण किया गया।

चीन में ब्रह्माण्डकीय अध्ययन– चीन में ग्रहों का विशेष अध्ययन किया गया। सम्राट हुआंग-ति ने एक वेधशाला का निर्माण करवाया था और उसके निष्कर्षों को लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया था। चीनवासियों ने धूमकेतु का प्रेक्षण भी किया ओर नक्षत्र-विषयक खोजें की।

भारत में ब्रह्माण्डकीय अध्ययन– भारत के वेदों में ऋतुओं और नक्षत्रों का उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में 28 नक्षत्र गिनाए गए है। पराशर, गौतम और वशिष्ठ ज्योतिष विज्ञानी थे। वामदेव ने बृहस्पति और वेन ने शुक्र ग्रह का पता लगाया। भारतीय अध्येताओं ने ब्रह्माण्ड के तीन भाग माने-पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्यौ। पृथ्वी और द्यौ के बीच का भाग अंतरिक्ष है। पृथ्वी के चारों ओर चन्द्र, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति और शनि घूम रहे है। पृथ्वी गोल है। इसके चारों ओर वायु है। वैदिक ऋषियों ने यह ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि चंद्रमा सूर्य के प्रकाश से चमकता है।

ब्रह्माण्ड संबंधी अन्य अध्ययन– केपलर, गैलीलियों और न्यूटन जैसे अध्येताओं ने नई अवधारणाओं और नियमों को सूत्रबद्ध किया। न्यूटन महोदय ने प्रथमत: गणितीय व्याख्या देते हुए बताया कि सौरमंडल के ग्रह एक दूसरे से टकराए बिना परस्पर आकर्षण में बँधे सूर्य की परिक्रमा करते हैं। उन्होंने सेव के गिरने और धूमकेतुओं के भ्रमण पर आधारित गुरूत्वाकर्षण के नियम को स्पष्ट किया।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति– ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति की दो वैज्ञानिक परिकल्पनाएँ है– 1. स्थायी अवस्था सिद्धांत, 2. महाविस्फोट सिद्धांत।

1. **स्थायी अवस्था सिद्धांत**– इसके अनुसार सभी खगोलीय पिण्ड आरम्भ से एक ही स्थिति में है तथा सदैव उसी स्थिति में बने रहेंगे। फ्रेड हॉयल और जयन्त नारलीकर ने ब्रह्माण्ड का संशोधित प्रतिरूप किया। इनके अनुसार ब्रह्माण्ड का न तो आरम्भ हुआ है, और न ही उसका अंत होगा। यह सदैव एक जैसा ही बना रहेगा।

2. **महाविस्फोट सिद्धांत**– ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के संबंध में महाविस्फोट का सिद्धांत या बिग बेंग सिद्धांत प्रचलित और मान्य हैं। इसके अनुसार 20 अरब वर्ष पूर्व जब अंतरिक्ष भी नहीं था, और वर्तमान ब्रह्माण्ड का सारा पदार्थ अत्यंत संघनित रूप में ऊर्जा की धधकती हुई एक गेंद में समाहित था, तब अत्यंत विस्मयकारी परिस्थितियों में इस गेंद में एक शक्तिशाली महाविस्फोट हुआ। परिणामस्वरूप अत्यंत गर्म और सघन पदार्थ से पूरा अतंरिक्ष भर गया। इस समय ब्रह्माण्ड का तापमान दस अरब डिग्री सेल्सियस रहा होगा। जब तापक्रम कम हुआ तो हाइड्रोजन और हीलियम के अणुओं का निर्माण हुआ। गुरूत्वाकर्षण के फलस्वरूप गैस ने लघु पिण्डों का आकार लेना शुरू किया। इन पिण्डों ने लगभग 5 अरब वर्ष पश्चात् घनीभूत होकर ब्रह्माण्ड के वर्तमान स्वरूप, उसकी मंदाकिनियों और तारों का निर्माण किया।

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का विस्तृत राज जानने के लिए 10 सिंतबर, 2008 को देश-विदेश के 9000 वैज्ञानिकों ने 'बिग-बैंग-2' का महाप्रयोग किया। यह प्रयोग स्विट्जरलैंड और फ्रांस की भूमिगत प्रयोगशाला द्वारा किया गया। इस प्रयोग से यह ज्ञात हो सकेगा कि आत्मा क्या है? जीवन की प्रत्याशा क्या है?

तारे– गैसीय द्रव्य के उष्ण व स्वयं दीप्तिमान ब्रह्माण्ड में स्थित खगोलीय पिण्ड जो प्रकाश तथा विद्युत-चुंबकीय विकिरण उत्पन्न करते हैं, तारे कहलाते हैं। इनकी ऊर्जा का स्त्रोत नाभिकीय होता है। गैलेक्सी का 98% भाग इन्हीं तारों से बना है। भार के अनुसार तारे में 70% हाइड्रोजन, 28% हीलियम, 1.5% कार्बन-निऑन और 0.5% आयरन ग्रुप के भारी तत्त्व होते है। तारे गुरूत्वाकर्षण के कारण परस्पर प्रदक्षिणा कर रहे हैं। तारों

की नाभिकीय ऊर्जा धीरे-धीरे प्रकाश ऊर्जा में बदलती रहती है और अंत में तारे नष्ट हो जाते है। सूर्य भी एक तारा है, जो पृथ्वी के सबसे निकट है। प्रत्येक तारा स्वय की चमक से चमकता है, जबकि ग्रह एवं चन्द्रमा आदि सूर्य की रोशनी पाकर चमकते हैं। अधिकांशत: तारे सूर्य से कई गुना बड़े है पर अत्यधिक दूरी के कारण छोटे नजर आते है।

NOTES

ब्लेक होल (कृष्ण विवर)- ब्लेक होल बनने का कारण है, तारों की ऊर्जा समाप्त हो जाना। प्रत्येक तारा लगातार ऊर्जा का बड़ी मात्रा में उत्सर्जन करता रहता है और निंरतर सिकुड़ता जाता है। इससे गुरूत्वाकर्षण बल बढ़ता जाता है। इस अविरल ऊर्जा-उत्सर्जन के कारण अंत में एक समय आता है जब ऊर्जा समाप्त हो जाती है और तारों का दहन बंद हो जाता है। अब यदि तारा भार में सूर्य के लगभग बराबर होता है तो पहले धीरे-धीरे ठंडा होकर अंत में एक छोटे श्वेत पिंड में परिवर्तित हो जाता है। कुछ समय पश्चात् यह छोटा पिंड अपने ऊपर गिरने वाले प्रकाश को अवशोषित करने लगता है, कुछ समय पश्चात यह ऑखों से न दिखने वाले ब्लेक होल या कृष्ण विवर में बदल जाता है। अनुमान है कि सूर्य में लगभग एक अरब ब्लेक होल बन जाएगा।

तारा मंडल- आकाश के निश्चित क्षेत्र में स्थित तारों का झुंड जो किसी विशेष आकृति भी बाह्य रूपरेखा को स्पष्ट करता है, तारा मंडल कहलाता है। ये भौतिक रूप से एक दूसरे से अलग हैं किन्तु इनमें गहरा संबंध है। जैसे- ग्रेट बियर या सप्तर्षि मंडल जिसमें सात तारे होते है। सप्तर्षि में चार आयताकार और तीन पूँछनुमा तारे होते है। अन्य तारा मंडल है- कालपुरूष, कैसियोपिया आदि। द्वादश राशियाँ भी तारामंडल में आती है। राशियों को ज्योतिष विज्ञान ने बहुत महत्व दिया जाता है।

सप्तर्षि- सप्तर्षि तारों का नाम भारत के ऋषियों के नाम पर है जो इस प्रकार हैं- कश्यप, भारद्वाज, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, वशिष्ठ और जमदग्नि। ग्रीक ग्रंथों के अनुसार इनके नाम हैं- अल्फा, बीटा, गामा, डेल्टा, एर्पिसलोन, ईंटा और जीटा। यह पुच्छधारी सप्तर्षि ध्रुव का चक्कर लगाता है। परिवृत्त के साथ सप्तर्षि और ध्रुव के बीच की दूरी एक समान रहती है।

ध्रुव तारा- यह वह तारा है जो हमेशा उत्तर दिशा में चमकता है। यह किसी भी स्थान पर दिशा व ऊँचाई ज्ञात करने के काम आता है। यह लिटिल बियर या अर्सा माइनर तारा समूह का एक सदस्य है।

गैलेक्सी- तारों का ऐसा समूह जो धुँधला दिखाई देता है तथा जो तारा निर्माण प्रक्रिया की शुरूआत का गैस पुंज है, गैलेक्सी कहलाता है। अरबों वर्ष आयुवाली आकाशगंगाओं को आकाशगंगा न कहकर गैलेक्सी या दीर्घिका कहते थे। संपूर्ण सौर-मंडल करोड़ों गैलेक्सी का बना होता है नवीनतम ज्ञात सर्वाधिक बड़ी गैलेक्सी आकाशगंगा और एंड्रोमिडा है, जो सर्पाकार है। अमेरिका के खगोलशास्त्रियों ने 10 नई गैलेक्सी की खोज की है।

आकाशगंगा- हमारी आकाशगंगा भी एक गैलेक्सी ही है। रात में आकाश में एक क्षितिज से दूसरे क्षितिज तक दिखने वाली चौड़ी चमकीली पट्टी जो पृथ्वी से नदी के समान आकाश में दिखाई पड़ती है, आकाशगंगा कहलाती है। आकाशगंगा में लगभग एक खरब तारे है हमारा सौर परिवार आकाशगंगा का सदस्य है। तारों के मध्य में जो अँधेरी पट्टी दिखाई देती है यह खगोलीय धूल के कारण है जो दूसरी पार से आते तारों के प्रकाश को रोक लेती है। यही कारण है कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य लाल दिखाई देता है, क्योंकि उसकी रोशनी वायुमंडल की धूल से होकर गुजरती है। यह सर्पिल आकार की गैलेक्सी है जिसका व्यास 1,00,000 प्रकाशवर्ष है।

इस अति विशाल आकाशगंगा में क्या है? इसमें हैं भिन्न-भिन्न प्रकार के तारे, असंख्य तारों का समूह, प्रचण्ड वेग के बादल, हाइड्रोजन गैस के बादल, धूल के कण, अंतर तारकीय द्रव्य, गोलाकार तारों का गुच्छा आदि। आकाशगंगा के मध्य भाग में 'मृगबाहु' होते है। उसके बाहर केन्द्र की विपरीत दिशा में 'ययातिबाहु' है। केन्द्र की दिशा में धनुबाहु है और अभी हाल में ही नौकातलबाहु के बारे में जानकारी मिली है। आकाशगंगा में एक अरब तारे है जिनका वर्गीकरण रंग के आधार पर, तापमान के आधार पर और चमक के आधार पर किया जाता है। रंगों में लाल, पीले, नीले और श्वेत तारे है। तापमान के आधार पर वृषपर्वा तारे, द्वैती तारे, विस्फोट तारे और परमविस्फोट (सुपरनोवा) तारे हैं।

इस तरह महाविस्फोट अर्थात् बिग-बैंग-1 सिद्धांत के आधार पर विराट ब्रह्माण्ड का निर्माण और विस्तार हुआ तथा बिग-बैग-2 के महाप्रयोग के बाद नई-नई खोजों के परिणाम विश्व के समक्ष आएँगे। बह्माण्ड की कथा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म और विराट-से-विराट है।

ब्रह्मांड में जीवन– इस ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जिसमें जीवन पाया जाता है। मानव जीवन का विकास इस पृथ्वी पर लगभग पन्द्रह लाख वर्ष पूर्व हुआ था। वेदों ओर पुराणों के अनुसार ब्रह्मा ने इस सृष्टि की रचना की थी। प्राचीन यूनानी धारणा जीवन बाह्य अंतरिक्ष से दृढ़ बीजाणुओं के रूप में पृथ्वी पर आया। ताप और नमी की अनुकूल परिस्थितियों में इन बीजाणुओं ने प्रथम जीवन को जन्म दिया। एक प्राचीन मान्यता यह है कि जीवन अपने विभिन्न रूपों में ईश्वरीय आदेश से एकाएक उत्पन्न हो गया। यह तब तक चलता रहेगा जब तक यह संसार समाप्त नहीं हो जाता।

मिस्र के वैज्ञानिक स्वीकारते हैं कि जीव स्वत: जनन की विधि से उत्पन्न होते हैं, पर फ्रांस के वैज्ञानिक लुई पाश्चर ने प्रतिपादित किया कि जीवन से ही जीवन की उत्पत्ति होती है। ब्रिटेन के जीवविज्ञानी हैल्डेन और रूसी जीवविज्ञानी ओपेरिन दोनों ने बताया कि जीवन जड़ पदार्थों के कार्बनिक अणुओं से उपजा है।

आज के पाँच अरब पूर्व जब पृथ्वी सूर्य से अलग हुई, तब उसमें विभिन्न तत्व वाष्प अवस्था में थे। पृथ्वी के ठंडे होने पर लोहे, निकिल आदि पृथ्वी के केन्द्र भाग में चले गए तथा हाइड्रोजन, आक्सीजन, कार्बन डाई-आक्साइड से वायुमंडल निर्मित हुआ। वाष्पपुजों से बने बादलों से अनवरत वर्षा हुई और पृथ्वी ठंडी हुई। उस पर पर्वतों, नदियों और सागरों का निर्माण हुआ। खनिज लवण घुलकर समुद्र में पहुँचे। यौगिक रासायनिक संश्लेषण से समुद्र में प्रथम जीव का निर्माण हुआ।

जीव कोशों से सारे संसार के जीव-जन्तुओं का विकास हुआ। पहले एक कोशीय जीव और उनके मिलने से संयुक्त कोशीय जीव निर्मित हुए। जीवों में होने वाला परिवर्तन जैव विकास कहलाता है। जैव विकास धीमी गति से होने वाले क्रमिक परिवर्तन है, जो पूर्वकाल से चला आ रहा है और निरंतर जारी है। प्राकृतिक विकासवाद की समुचित व्याख्या चार्ल्स डारविन ने की। उनके सिद्धांत को 'प्राकृतिक वरणवाद' के नाम से जाना जाता है। डारविन ने प्रमाणित किया कि जीवधारियों में संतानोत्पत्ति की स्वाभाविक इच्छा तथा अपार क्षमता होती है। पर प्रकृति उन्हें नियंत्रित करती रहती है ताकि संख्या का संतुलन बना रहे। प्रकृति में विभिन्न जीवों की संख्या में संतुलन के लिए जीवन संघर्ष चलता रहता है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. ब्रह्माण्ड क्या है? इसकी प्राचीनकालिक अवधारणा लिखिए।
2. भारत में ब्रह्माण्डकीय अध्ययन का परिचय दीजिए।
3. ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति पर एक लेख लिखिए।
4. विश्व के देशों में ब्रह्माण्डकीय संबंधी क्या-क्या निष्कर्ष निकाले गए।
5. तारों की प्रस्थिति पर प्रकाश डालिए।
6. आकाशगंगा के स्वरूप और विस्तार का वर्णन कीजिए।
7. ब्रह्माण्ड में जीवन का विकास किस प्रकार हुआ।
8. महाविस्फोट सिद्धांत क्या है? इसके परिणाम लिखिए।
9. डार्विन के प्राकृतिक वरणवाद को स्पष्ट कीजिए।
10. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. ब्रह्माण्ड संबंधी विज्ञान को क्या कहते हैं।

   i. जैव विज्ञान ii. ब्रह्माण्डकीय iii. ज्योतिष विज्ञान iv. मानविकी

2. थालेस के अनुसार ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति किन नियमों के अनुसार हुई।

   i. गणित के नियम ii. प्राकृतिक नियम iii. भाषा विज्ञान के नियम iv. क्रीड़ा नियम

NOTES

3. नक्षत्र मण्डल के गोले का केन्द्र कौनसा ग्रह है।

i. बृहस्पति ii. पृथ्वी iii. अरूण ग्रह iv. सूर्य

4. पृथ्वी से सूर्य की दूरी से कितने गुना अधिक है।

i. बराबर है ii. चार गुना iii. 18 गुना iv. हजार गुना

5. यजुर्वेद के अनुसार नक्षत्र है।

i. 16 ii. 19 iii. 25 iv. 28

6. गुप्तकाल के प्रख्यात खगोलशास्त्री थे।

i. आर्यभट्ट ii. ब्रह्मगुप्त iii. भास्कराचार्य iv. वराहमिहिर

7. कौन सा तारा उत्तर दिशा में चमकता रहता है।

i. सूर्य ii. सायरस iii. ध्रुव iv. शुक्र

उत्तर– 1.(ii), 2. (ii), 3.(iv), 4.(iii), 5. (iv), 6.(i), 7.(iii)

■ ■ ■

22. शिकागो व्याख्यान

स्वामी विवेकानंद (शिकागो, 11 सिंतबर 1893ई.)

NOTES

भारत वर्ष के महान विचारक, चिंतक, उपदेशक, सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति व धर्म की पताका लहराने वाले स्वामी विवेकानंद ने 11 सितंबर 1893 को अमेरिका मे जब अपना व्याख्यान दिया, तब सम्पूर्ण सभागार तालियों से गूंज उठा और उन्हें मंत्रमुग्ध होकर सुनता रहा। इस व्याख्यान ने भारतीय संस्कृति और विचारधारा को संपूर्ण विश्व में श्रेष्ठता प्रदान की। प्रस्तुत अध्याय में उसी व्याख्यात के कुछ अंश पाठ्यक्रम की दृष्टि से प्रस्तुत है।

व्याख्यान सारांश-

अमेरिकावासी बहनों तथा भाईयों।

आपने जिस सौहार्द्र और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है, उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा है। संसार में सन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, धर्मो की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ, और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि-कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होनें प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रसारित करने के गौरव का दावा कर सकते है। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयामी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नही करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर स्वीकार करते हैं। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों को तथा देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों का आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट अंश को स्थान दिया था, जिन्होनें दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने महान जरथुष्ट्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ, जिसकी आवृत्ति मैं अपने बचपन से कर रहा हूँ, और जिसकी आवृत्ति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते है।

''रूचीनां वैचित्र्याद्रृजुकुटिलनानापथजुषान्।

नृणामेको गम्बस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।''

जैसे विभिन्न नादियाँ भिन्न-भिन्न स्त्रोतो से निकलकर समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार हे प्रभो। भिन्न-भिन्न रूचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जाने वाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते है।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है, स्वत: ही गीता के इस अद्‌भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत् के प्रति उसकी घोषणा है।

''ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।

मम वर्त्मानुर्वन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।''

जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे किसी प्रकार से हो, मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में मेरी ही ओर आते है।

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधरता इस सुंदर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। यह पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही है, सभ्यतओं को विध्वस्त करती और पूरे-पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही है। यदि यह वीभत्स दानवी न होती, तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर, अब उनका समय आ

गया है, आंतरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टाध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मान्धिता का तलवार या लेखनी के द्वारा होने वाले उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारम्परकि, कटुताओं का मृत्युनिनाद सिद्ध है।

(27, सितम्बर, 1893 ई.)

NOTES

विश्वधर्म- महासभा एक मूर्तिमान तथ्य सिद्ध हो गई है, और दयामय प्रभु ने उन लोगों की सहायता की है, तथा उनके परम नि:स्वार्थ श्रम को सफलता से विभूषित किया है, जिन्होंने इसका आयोजन किया।

उन महानुभावों को मेरा धन्यवाद है, जिनके विशाल ह्रदय तथा सत्य के प्रति अनुराग ने पहले इस अद्‌भुत स्वप्न को देखा और फिर उसे कार्यरूप में परिणत किया। उन उदार भावों को मेरा धन्यवाद, जिसने यह सभामंच आप्लावित कृपा रखी है और जिसने मत-मतान्तरों के मनोमालिन्य को हल्का करने का प्रयत्न करने वाले प्रत्येक विचार का सत्कार किया है। इस समसरता में कुछ बेसुरे स्वर भी बीच-बीच में सुने गए हैं। उन्हें मेरा विशेष धन्यवाद, क्योंकि उन्होंने अपने स्वरवैचित्र्य से इस समरसता को और मधुर बना दिया है।

धार्मिक एकता की सर्वसामान्य भित्ति के विषय में बहुत कुछ कहा जा चुका है। इस समय मैं इस सम्बन्ध में अपना मत आपके समक्ष नहीं रखूँगा, किन्तु यदि वहाँ कोई यह आशा कर रहा है कि यह एकता किसी एक धर्म की विजय और बाकी सब धर्मों के विनाश से सिद्ध होगी तो उनसे मेरा कहना है कि 'भाई, तुम्हारी यह आशा असम्भव है।' क्या मैं यह चाहता हूँ कि ईसाई लोग हिन्दू हो जाएँ? कदापि नहीं। ईश्वर इस इच्छा से बचाए।

बीज भूमि में बो दिया गया और मिट्टी, वायु तथा उसके चारों ओर रख दिए गए, तो क्या वह बीज मिट्टी हो जाता है? अथवा वायु या जल बन जाता है? नही, वह तो वृक्ष ही होता है। वह अपनी वृद्धि के नियम से ही बढ़ता है। वायु, जल और मिट्टी को अपने में पचाकर, उनको अभिज्य पदार्थ में परिवर्तित करके एक वृक्ष हो जाता है।

ऐसा ही धर्म के सम्बन्ध में भी है। ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं हो जाना चाहिए, और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई ही। पर हाँ प्रत्येक को चाहिए कि वह दूसरों के सारभाग को आत्मसात् करके पुष्टिलाभ करे और अपने वैशिष्ट्य की रक्षा करते हुए अपनी निजी वृद्धि के नियम के अनुसार वृद्धि को प्राप्त हो।

इस धर्म-महासभा ने जगत् के समक्ष यदि कुछ प्रदर्शित किया है, तो वह यह है, 'उसने यह सिद्ध कर दिया है कि शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय विशेष की एकान्तिक सम्पत्ति नहीं है, एवं प्रत्येक धर्म ने श्रेष्ठ एवं अतिशय उन्नत चरित्र स्त्री-पुरूषों को जन्म दिया है।'

अब इन प्रत्यक्ष प्रमाणों के बावजूद भी यदि ऐसा स्वप्न देखे कि अन्यान्य सारे धर्म नष्ट हो जाएँगे और केवल उसका धर्म ही जीवित रहेगा, तो उस पर मैं अपने ह्रदय के अन्तरतल से दया करता हूँ और उसे स्पष्ट बतलाए देता हूँ कि शीघ्र ही, सारे प्रतिरोधो के बावजूद, प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा रहेगा- ''सहायता करो, लड़ो मत, परभाव-ग्रहण, न कि परभाव-विनाश, समन्वय और शान्ति, न कि मतभेद और कलह!''

(स्वामी विवेकानंद का शिकागो में, 11 सितम्बर, 1893 को दिए गए व्याख्यान का अशं)

जीवन परिचय

स्वामी विवेकानन्द (जन्म: 12 जनवरी, 1863 कलकत्ता - मृत्यु: 4 जुलाई, 1902 बेलूर) एक युवा सन्यासी के रूप में भारतीय संस्कृति की सुगन्ध विदेशों में बिखरने वाले साहित्य, दर्शन और इतिहास के प्रकाण्ड विद्वान थे। विवेकानन्द जी का मूल नाम 'नरेंद्रनाथ दत्त' था, जो कि आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द के नाम से विख्यात हुए। युगांतरकारी आध्यात्मिक गुरु, जिन्होंने हिन्दू धर्म को गतिशील तथा व्यवहारिक बनाया और सुदृढ़ सभ्यता के निर्माण के लिए आधुनिक मानव से पश्चिमी विज्ञान व भौतिकवाद को भारत की आध्यात्मिक संस्कृति से जोड़ने का आग्रह किया। कलकत्ता के एक कुलीन परिवार में जन्मे नरेंद्रनाथ चिंतन, भक्ति व तार्किकता, भौतिक एवं बौद्धिक श्रेष्ठता के साथ-साथ संगीत की प्रतिभा का एक विलक्षण संयोग थे। भारत में स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

श्री विश्वनाथदत्त पाश्चात्य सभ्यता में आस्था रखने वाले व्यक्ति थे। श्री विश्वनाथदत्त के घर में उत्पन्न होने वाला उनका पुत्र नरेन्द्रदत्त पाश्चात्य जगत को भारतीय तत्वज्ञान का सन्देश सुनाने वाला महान विश्व-गुरु बना। स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 में कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता), भारत में हुआ। रोमा

रोलाँ ने नरेन्द्रदत्त (भावी विवेकानन्द) के सम्बन्ध में ठीक कहा है- 'उनका बचपन और युवावस्था के बीच का काल योरोप के पुनरूज्जीवन-युग के किसी कलाकार राजपुत्र के जीवन-प्रभात का स्मरण दिलाता है।' बचपन से ही नरेन्द्र में आध्यात्मिक पिपासा थी। सन् 1884 में पिता की मृत्यु के पश्चात परिवार के भरण-पोषण का भार भी उन्हीं पर आ पड़ा। स्वामी विवेकानन्द ग़रीब परिवार के थे। नरेन्द्र का विवाह नहीं हुआ था। दुर्बल आर्थिक स्थिति में स्वयं भूखे रहकर अतिथियों के सत्कार की गौरव-गाथा उनके जीवन का उज्ज्वल अध्याय है। नरेन्द्र की प्रतिभा अपूर्व थी। उन्होंने बचपन में ही दर्शनों का अध्ययन कर लिया। ब्रह्मसमाज में भी वे गये, पर वहाँ उनकी जिज्ञासा शान्त न हुई। उनकी प्रखर बुद्धि साधना में समाधान न पाकर नास्तिक हो चली।

शिक्षा- 1879 में 16 वर्ष की आयु में उन्होंने कलकत्ता से प्रवेश परीक्षा पास की। अपने शिक्षा काल में वे सर्वाधिक लोकप्रिय और एक जिज्ञासु छात्र थे। किन्तु हरबर्ट स्पेन्सर(1) के नास्तिकवाद का उन पर पूरा प्रभाव था। स्नातक उपाधि प्राप्त कर वे ब्रह्म समाज में शामिल हुए, जो हिन्दू धर्म में सुधार लाने तथा उसे आधुनिक बनाने का प्रयास कर रहा था।

गुरू रामकृष्ण परमहंस से भेंट - युवावस्था में उन्हें पाश्चात्य दार्शनिकों के निरीश्वर भौतिकवाद तथा ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ भारतीय विश्वास के कारण गहरे द्वंद्व से गुज़रना पड़ा। परमहंस जी जैसे जौहरी ने रत्न को परखा। उन दिव्य महापुरुष के स्पर्श ने नरेन्द्र को बदल दिया। इसी समय उनकी भेंट अपने गुरु रामकृष्ण से हुई, जिन्होंने पहले उन्हें विश्वास दिलाया कि ईश्वर वास्तव में है और मनुष्य ईश्वर को पा सकता है। रामकृष्ण ने सर्वव्यापी परमसत्य के रूप में ईश्वर की सर्वोच्च अनुभूति पाने में नरेंद्र का मार्गदर्शन किया और उन्हें शिक्षा दी कि सेवा कभी दान नहीं, बल्कि सारी मानवता में निहित ईश्वर की सचेतन आराधना होनी चाहिए। यह उपदेश विवेकानंद के जीवन का प्रमुख दर्शन बन गया।

वेदांत धर्म - 1897 में जब विवेकानंद भारत लौटे, तो राष्ट्र ने अभूतपूर्व उत्साह के साथ उनका स्वागत किया और उनके द्वारा दिए गए वेदांत के मानवतावादी, गतिशील तथा प्रायोगिक संदेश ने हज़ारों लोगों को प्रभावित किया। स्वामी विवेकानन्द ने सदियों के आलस्य को त्यागने के लिए भारतीयों को प्रेरित किया और उन्हें विश्व नेता के रूप में नए आत्मविश्वास के साथ उठ खड़े होने तथा दलितों व महिलाओं को शिक्षित करने तथा उनके उत्थान के माध्यम से देश को ऊपर उठाने का संदेश दिया।

25 वर्ष की अवस्था में नरेन्द्र ने गेरुआ वस्त्र धारण कर लिये। तत्पश्चात् उन्होंने पैदल ही पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। सन्1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानन्द उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुँचे। योरोप-अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहाँ लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानन्द को सर्वधर्म परिषद् में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किन्तु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गये। फिर तो अमेरिका में उनका अत्यधिक स्वागत हुआ। वहाँ इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय हो गया।

स्वामीजी तीन वर्ष तक अमेरिका में रहे और वहाँ के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान करते रहे। उनकी वक्तत्व-शैली तथा ज्ञान को देखते हुए वहाँ के मीडिया ने उन्हें 'साइक्लॉनिक हिन्दू' का नाम दिया। ''आध्यात्म-विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जाएगा'' यह स्वामी विवेकानन्दजी का दृढ़ विश्वास था। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएँ स्थापित कीं। अनेक अमेरिकन विद्वानों ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।

ग्रन्थों की रचना - 'योग', 'राजयोग' तथा 'ज्ञानयोग' जैसे ग्रंथों की रचना करके विवेकानन्द ने युवा जगत को एक नई राह दिखाई है, जिसका प्रभाव जनमानस पर युगों-युगों तक छाया रहेगा। कन्याकुमारी में निर्मित उनका स्मारक आज भी उनकी महानता की कहानी कह रहा है।

मृत्यु- उनके ओजस्वी और सारगर्भित व्याख्यानों की प्रसिद्धि विश्वभर में है। जीवन के अंतिम दिन उन्होंने शुक्ल यजुर्वेद की व्याख्या की और कहा ''एक और विवेकानंद चाहिए, यह समझने के लिए कि इस विवेकानंद ने अब तक क्या किया है।'' प्रत्यदर्शियों के अनुसार जीवन के अंतिम दिन भी उन्होंने अपने 'ध्यान' करने की दिनचर्या को नहीं बदला और प्रात: दो तीन घंटे ध्यान किया। उन्हें दमा और शर्करा के अतिरिक्त अन्य शारीरिक व्याधियों ने घेर रखा था। उन्होंने कहा भी था, 'यह बीमारियाँ मुझे चालीस वर्ष के आयु भी पार नहीं करने देंगी।' 4 जुलाई, 1902 को बेलूर में रामकृष्ण मठ में उन्होंने ध्यानमग्न अवस्था में महासमाधि धारण कर प्राण त्याग दिए।

NOTES

शब्दार्थ :-

1. अनुयायी = अनुचर, अनुसरण करने वाला,
2. अवशिष्ट = शेष
3. वीभत्स = घृणायुक्त,
4. हठधर्मिता = जिद
5. आप्लावित = डूबा हुआ, स्नात

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. शिकागो व्याख्यान पाठ का सारांश लिखिए।
2. धर्म के विषय में विवेकानन्द जी के क्या विचार है? लिखिए।
3. विवेकानन्द जी ने मंच से धन्यवाद क्यों ज्ञापित किया? स्पष्ट कीजिए।
4. 'गीता' के उपदेश के माध्यम से विवेकानन्द अपने वक्तव्य में क्या कहना चाहते थे? स्पष्ट कीजिए।
5. विवेकानन्द जी ने अपने व्याख्यान में किन – किन धर्मो की जातियों को, जिन्होंने भारतभूमि में शरण ली, के विषय में बताया।
6. विवेकानन्द जी धर्म की पताका पर क्या लिखे होने की बात कहते है।
7. स्वामी विवेकानन्द जी का संक्षिप्त जीवन परिचय दीजिए।

वस्तुनिष्ठ :-

1. विवेकानन्द धन्यवाद देते है।
   i. भारत की ओर से
   ii. सन्यासियों एंव कोटि – कोटि हिन्दूओं की ओर से
   iii. अमेरिका की ओर से
   iv. उपर्युक्त सभी की ओर से
2. विवेकानन्दजी ने उदाहरण दिया है।
   i. गीता से ii. उपनिषद् से
   iii. वेद से iv. पुराण से
3. भारतवासी विश्वास करते है।
   i. अर्थ पर ii. जैसे को तैसा पर
   iii. सहिष्णुता पर iv. अमेरिका पर
4. विवेकानन्दजी ने कहाँ पर व्याख्यान दिया था।
   i. न्यूयार्क में ii. शिकागो में
   iii. नई दिल्ली में iv. लन्दन में

NOTES

5. लोग भिन्न – भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में आते है।

   i. प्रभु की ओर ii. विवेकानन्द की ओर

   iii. अमेरिकी की ओर iv. सम्मेलन की ओर

6. स्वामी विवेकानन्द ने 'शिकागो व्याख्यान' दिया था।

   i. 11 व 27 सितम्बर 1893 को ii. 11 व 12 सितम्बर 1893 को

   ii. 26 व 27 सितम्बर 1893 को iv. 11 व 27 अक्टूबर 1893 को

7. स्वामी विवेकानन्द ने अपने शिकागो व्याख्यान में श्रोताओं को क्या कहकर सम्बोधित किया था।

   i. विश्वधर्म महासभा में उपस्थित महानुभावों!

   ii. प्रबुद्ध श्रोतागण

   iii. धर्म प्रतिनिधियों

   iv. अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों

8. विवेकानन्द का जन्म कब हुआ।

   i. 12 जनवरी 1863

   ii. 2 अक्टूबर 1869

   iii. 12 जनवरी 1893

   iv. 23 जनवरी 1863

उत्तर :– 1. (ii), 2. (i), 3. (iii), 4. (ii), 5. (ii), 6. (i), 7. (iv), 8. (i)

■ ■ ■

23. संक्षिप्तियाँ

NOTES

संप्रेषण, कौशल अथवा अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त भाषा का सरल, सहज व बोधगम्य होना आवश्यक है। भाषा लिखित व मौखिक दोनो रूपो मे प्रयोग की जाती है। समय के साथ - साथ , अभिव्यक्ति को आकर्षक बनाने हेतु कई परिवर्तन हुए है,उनमे शब्दों की संक्षिप्ति सबसे प्रमुख उदाहरण है।

संक्षिप्तियों का लेखन शैली मे प्रयोग कब प्रारम्भ हुआ कोई स्पष्ट प्रमाण नही है , किन्तु ज्ञान - विज्ञान के बढ़ते आयामो ने बड़े - बड़े शब्दों ,नामों , संस्थाओं के नामों , उपाधियो के नामों को संक्षेप में लिखने का चलन बढा दिया। कम्प्यूटर , मोबाईल व इंटरनेट के चलन मे संक्षिप्तियो के प्रयोग मे बहुत ज्यादा वृद्धि की है।

हिन्दी भाषा मे अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण करने की अद्‌भुत क्षमता है, यही कारण है कि इसका शब्द भण्डार व प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है । हिन्दी भाषा मे भी संक्षिप्तियो का प्रयोग वर्तमान लिखित साहित्य और मौखिक संप्रेषण मे ज्यादा मात्रा मे किया जाने लगा है । शब्द संक्षेप अथवा संक्षिप्तियो से भाषा प्रभावी व आकर्षक लगने लगती है। साथ ही समय की बचत भी होती है।

भाषा प्रयोग मानव अपने विचारों और भावों को प्रकट करने मे करता है। भाषा के अन्तर्गत वे सार्थक शब्द आते है। जो मनुष्य बोलता और लिखता है। मानव की बुद्धि के विकास के साथ मानव समाज ने बौद्धिक, सामाजिक , सांस्कृतिक, वैज्ञानिक , औघोगिक , व्यावसायिक , आर्थिक एवं राजनीतिक श्रेत्रो मे भी विकास किया। जिससे उसका शब्द - भण्डार बढ़ता गया । भावों और विचारों को प्रकट करने के सूक्ष्म , संक्षेप भेद-प्रभेद भी उत्पन्न होते गए । नवीन ज्ञान- विज्ञान एवं वैश्विक सम्पर्क के कारण शब्दो की संख्या मे वृद्धि होती गई । अत: अभिव्यक्ति के प्रकार और भेद भी बढ़ते गए। इन्ही प्रकारों में से एक संक्षिप्ति के नाम से प्रचलित है।

संक्षिप्ति : भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति की एक सुविधा है। जो निरन्तर उसकी सहजता की प्रवृत्ति से संबंध है। वास्तविक अर्थ मे संक्षिप्ति अभिव्यक्ति की सुविधा की प्रवृत्ति से उपजी एक कला है। अँग्रेजी का NEWS इसका एक ऐसा उदाहरण है। जो संक्षिप्ति की कलात्मक शक्ति को प्रमाणिक करता है। इसकी वर्तमान मे एक स्वतंत्र अर्थवत्ता है। जिसमे नार्थ , वेस्ट और साउथ अपने सम्पूर्ण अर्थ मे समाहित है।

संक्षिप्ति का शब्दिक अर्थ है - अल्पाक्षर, 'शब्द संक्षेप' शब्द - संकेत , ' शब्द चिन्ह । इसका प्रयोग संकेताक्षर के रूप मे भी होता है। अंग्रेजी मे इस ABBREVIATION कहा जाता है।

संक्षिप्ति की परिभाषा - शब्दों के वे संकेत या चिन्ह जो कालान्तर में अपने-आप में शब्दों की तरह प्रयुक्त होते हैं, संक्षिप्ति कहलाते हैं। ये इतने सर्वमान्य, प्रचलित और आकर्षक होते हैं कि लोगों द्वारा इनके मूल शब्द प्राय: भुला दिए जाते है, जैसे - टी.टी. नगर, एम.पी.नगर आदि।

इसी प्रकार - भेल, नाटो, सी.पी.एम, पी.सी.एस, यू.जी.सी, निफ्टी, यू.टी.आई, यू.एन. डी.पी., युनिसेफ, सी.एस, पी.एम.ओ., टी.ए.डी.ए., एन.डी.टी.वी, एन.डी.ए., यू.पी.ए.सी.आई.ए. आदि। यहाँ उल्लेख है कि 'संक्षिप्ति' में संक्षेप का चिन्ह (.) धीरे - धीरे लुप्त हो जाता है और संक्षिप्ति एक स्वंतत्र शब्द बन जाती है, जो अपने मूल शब्द का पूर्ण अर्थ वहन करती है।

संक्षिप्ति निर्माण की प्रक्रिया :-

1. जिस शब्द की संक्षिप्ति निर्माण की जानी है, उसके सम्पूर्ण अर्थ संदर्भ का ज्ञान होना आवश्यक है।

2. संक्षिप्ति में प्राय: आद्याक्षर (प्रथम अक्षर) ही सम्मिलित होते है।

3. संक्षिप्ति में प्राय: संक्षेप - चिन्ह (.) कर लोप स्वत: हो जाता है या कर दिया जाता है।

NOTES

4. संक्षिप्ति में फूहड़ता, मजाक, अश्लीलता, अशिष्टता या अतिरिक्त संदर्भ न तो जुड़ना चाहिए और न ही ध्वनित होना चाहिए।

5. संक्षिप्ति बोधगम्य एवं सहज होना चाहिए।

संक्षिप्तियों के कुछ प्रचलित उदाहरण :-

1. बी.ए (बेचलर ऑफ आर्ट्स)
2. एम.ए (मास्टर ऑफ आर्ट्स)
3. म.ल.बा. (महारानी लक्ष्मीबाई)
4. जन. (जनवरी)
5. मर्या. (मर्यादित)
6. रासुका (राष्ट्रीय सुरक्षा कानून)
7. ए.पी.जे (अबुल पाकिर जेनुल आबदीन – पूर्व राष्ट्रपति)
8. सी.आई.ए. (सेंट्रल इन्टेलीजेंस एजेन्सी)
9. के.रि.पु. (केन्द्रीय रिजर्व पुलिस)
10. जी.आर.पी. (गवर्नमेंट रेल्वे पुलिस)

11. वि. वि. अ. आ.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
12. स. पा.	समाजवादी पार्टी
13. वि. वि. उ.	विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
14. 11वीं	ग्यारहवीं
15. ई. का.	इंदिरा कांग्रेस
16. रा. प. नि.	राज्य परिवहन निगम
17. दक्षेस	दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय संगठन
18. इ. वि. प्रा.	इन्दौर विकास प्राधिकरण
19. लो. नि. वि.	लोक निर्माण विभाग
20. दू. मु. क.	दूरसंचार विभाग
21. द्र. मु. क.	द्रविण मुन्नेत्र कषगम्
22. जी. पी. ओ.	जनरल पोस्ट ऑफिस
23. एम. ए.	मास्टर ऑफ आर्ट्स
24. भेल (BHEL)	भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
25. वि. वि.	विश्वविद्यालय
26. स. ही. वात्स्यायन	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन
27. रा. से. यो.	राष्ट्रीय सेवा योजना

NOTES

28. कृ. पृ. उ.	कृपया पृष्ठ उलटिए
29. ज. ला. नेहरू	जवाहरलाल नेहरू
30. रा. स्व. संघ	राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ
31. मा. क. पा.	मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी
32. भा. क. पा.	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
33. इं. न. पा. नि.	इन्दौर नगर पालिक निगम
34. सं. रा. संघ	संयुक्त राष्ट्र संघ
35. म.प्र.	मध्यप्रदेश
36. जे.के.	जम्मू और कश्मीर
37. रा. कां. पा.	राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी
38. जद	जनता दल
39. वि. स.	विधानसभा
40. बसपा	बहुजन समाज पार्टी

अतः स्पष्ट है कि संक्षिप्तियाँ प्रयोजनमूलक भाषा का अभिन्न अंग है जिनके माध्यम से वर्तमान हिन्दी भाषा को व्यापक एवं सर्वतोग्राही बनाने में सहायता होगी।

संक्षिप्ति की विशेषताऐं - संक्षिप्ति की निम्नलिखित विशेषताएँ है :-

1. संक्षिप्ति एक स्वतंत्र शब्द है।

2. यह शब्द अपने आप में पूर्ण है।

3. संक्षिप्ति मूल शब्द का अर्थ वहन करती है।

4. संक्षिप्ति मूल शब्द का संकेत एवं पहचान है।

5. संक्षिप्ति लेखन सुविधा अथवा बोलने की सुविधा की उपज है।

6. संक्षिप्ति में मुख - सुख प्रमुख होता है।

7. संक्षिप्ति में भाषा का कोई व्यवधान नहीं होता।

संक्षिप्ति के अनेक 'रूप' है, किन्तु इसे दो प्रमुख रूपों में विभाजित किया गया है:-

1. **मौखिक संक्षिप्ति :-** मौखिक संक्षिप्ति में संक्षिप्ति का जो रूप बोलचाल में प्रचलित होता है, उसी रूप में लिखा जाता है, जैसे - भेल, द्रमुक, यूजीसी, जेपी, बी.ए, एम.ए, आई.ए.एस आदि।

2. **लिखित संक्षिप्ति :-** लिखित संक्षिप्ति में जो लिखा जाता है वह वैसा पढ़ा नहीं जाता है बल्कि उसका मूल शब्द पूरा पढ़ा या बोला जाता है। जैसे यूजीसी (यूनिवर्सिटी ग्राण्ट कमीशन), बी.जे.पी. (भारतीय जनता पार्टी) जे.एन.यू. (जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी), बी.यू. (बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी) आदि।

शिक्षा जगत में संक्षिप्तियों का प्रयोग अक्सर देखने में आया है। जितनी भी उपाधियाँ /पाठ्यक्रम (डिग्री/कोर्स) के नाम संक्षिप्त रूप में ही प्रयोग किये जाते है। जैसे :-

बी.ए., एम.ए., बी.कॉम., एम. कॉम., बी.एस.सी., एम.एस.सी., एल.एल.बी आदि।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. संक्षिप्ति से क्या तात्पर्य है।
2. संक्षिप्ति की विशेषताएँ लिखिए।
3. संक्षिप्ति निर्माण की प्रक्रिया को समझाइये।
4. संक्षिप्तियों के प्रयोग के महत्व को लिखिए।
5. संक्षिप्तियों के प्रयोग के दोष लिखिए।
6. शिक्षा – जगत में प्रयोग की जाने वाली 10 संक्षिप्तियों को लिखिए।
7. पाँच बैंकों के नाम 'शब्द संक्षेप' के रूप में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

1. Abbreviation का अर्थ है।

   i. विस्तार ii. पल्लवन iii. शब्द – संक्षेप iv. सभी

2. संक्षिप्ति का अर्थ नहीं है।

   i. विस्तार ii. अल्पाक्षर iii. शब्द – संक्षेप iv. शब्द – संकेत

3. ब. हि. वि. वि. में 'ब' से तात्पर्य है।

   i. बिहार ii. बनारस iii. बरकतउल्ला iv. भोपाल

4. शब्द – संक्षेप का उदाहरण नहीं है।

   i. भेल ii. आईसेक्ट iii. यूजीसी iv. विश्वविद्यालय

उत्तर – 1. (iii); 2. (i); 3. (ii); 4. (iv);

■ ■ ■

24. मध्यप्रेश के पर्यटन - स्थल

NOTES

मध्यप्रदेश भारतवर्ष का हृदय स्थल है। विंध्य की गहन घाटियों के साथ ही सतपुड़ा पर्वत श्रेणियाँ भी इस प्रदेश की प्राकृतिक सुन्दरता का सतत् सम्वर्द्धन करती हैं। चम्बल, बेतवा और नर्मदा जैसी नदियों के कारण यह प्रदेश निर्झरों, शिखरों और शैलाश्रयों के लिए भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। मध्यकाल के युद्ध प्रधान वातावरण में सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ सुदृढ़ दुर्गों का निर्माण किया गया तथा सघन वनों में सर्वत्र तीर्थस्थल विकसित हुए। इस प्रदेश में न केवल अनेक संग्रहालय, बल्कि राष्ट्रीय उद्यान भी विकसित किए गए है। इस प्रकार यह प्रदेश पर्यटन के लिए विशेष महत्त्वपूर्ण बन गया है। अपार नैसर्गिक - सौन्दर्य, गौरवपूर्ण ऐतिहासिक विरासत, समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा एवं कलात्मक उत्कर्ष के समुन्नत सोपानों से सुसज्जित मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक पर्यटन स्थलों के रूप में रेखांकित किया जाना युक्तियुक्त है।

1. **प्रमुख दुर्ग** - मध्यप्रदेश में स्थित ऐतिहासिक महत्त्व के दुर्गों में ग्वालियर, धार असीरगढ़, चंदेरी, गिन्नौर, रायसेन, बाँधवगढ़, अजयगढ़, ओरछा, मण्डला, मन्दसौर, नरवर आदि स्थलों पर स्थित किले प्रमुख है।

(i) ग्वालियर के दुर्ग का निर्माण सन् 525 ईसवी में राजा सूरजसेन द्वारा कराया गया था। उत्तर भारत के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण समझा जाने वाला यह किला अत्यंत विशाल, भव्य एवं सुदृढ़ है। इसमें पाँच मुख्य द्वार हैं- आलम गिरी-दरवाजा, हिंडोला दरवाजा, गूजरी महल दरवाजा, चतुर्भुज मंदिर दरवाजा तथा हाथी पौड़ दरवाजा। मान मंदिर, चतुर्भुज मंदिर, विष्णु मंदिर, बादल महल, गूजरी महल आदि अनेक भव्य मंदिरों और महलों से युक्त ग्वालियर भारत के श्रेष्ठतम दुर्गो में गिना जाता है।

(ii) पश्चिमी मध्यप्रदेश में स्थित धार जिले में एक छोटी पहाड़ी पर बना 'धार का किला' ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्त्व का है। इस किले का निर्माण परमार वंशीय राजा मुंज ने कराया था। सन् 1344 ईसवी में मुहम्मद तुगलक ने दक्षिण विजय के समय देवगिरि जाते हुए इसका पुनर्निर्माण कराया। किले के अंदर एक प्राचीन झील के तट पर कालका देवी का प्राचीन मंदिर है। यह विशेषत: दर्शनीय स्थल है।

(iii) बेतवा नदी के तट पर स्थित चंदेरी का दुर्ग मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक शौर्य गाथाएँ सँजोए हुए है। चंदेरी - बीना- कोटा रेलमार्ग के मुँगावली स्टेशन से मात्र 38 किलोमीटर और ललितपुर से 34 किलोमीटर दूर स्थित है। इस किले का निर्माण प्रतिहार नरेश कीर्तिपाल ने ग्यारहवीं शताब्दी में कराया था। यह सुदृढ़ पर्वतीय दुर्ग 70 मीटर ऊँची पहाड़ी पर बना है, जहाँ 800 क्षत्राणियाँ बाबर के आक्रमण के समय जौहर व्रत लेकर जीवित जल मरीं थी।

(iv) असीरगढ़ का दुर्ग दृढ़ता की दृष्टि से सर्वथा बेजोड़ है।'आसा' नामक अहीर राजा द्वारा बनवाया गया यह किला इटारसी -भुसावल रेलवे लाइन पर स्थित बुरहानपुर रेलवे स्टेशन से मात्र बीस किलोमीटर दूर है। यह महेश्वर नगर के निकट स्थित है। 250 मीटर ऊँची दीवारों वाले इस किले में आशा देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। किले के निचले भाग में दसवीं शताब्दी में निर्मित एक अत्यंत प्राचीन शिव मन्दिर भी है।

(v) मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से मात्र 60 किलोमीटर दूर गिन्नौरगढ़ में 390 मीटर लम्बी और 50 मीटर चौड़ी पहाड़ी पर एक सुदृढ़ किला स्थित है। तेरहवीं शताब्दी में राजा उदयवर्मन द्वारा बनवाए गए इस दुर्ग के समीपस्थ क्षेत्र में तोते बहुत पाए जाते है। इसलिए इसे तोतों का दुर्ग भी कहते हैं। किले में अनेक दर्शनीय ऐतिहासिक स्थल हैं।

(vi) भोपाल के समीपवर्ती जिला रायसेन में एक पर्वत शिखर पर सोलहवीं शताब्दी में निर्मित दुर्ग स्थित है। राजा राजवसंत द्वारा बनवाए गए इस दुर्ग का सैन्य महत्व अवर्णनीय है। इस दुर्ग में बादल महल, राजा रोहित महल और इत्रदार महल नाम से तीन विशालकाय महल, 40 कुएँ एवं चार तालाब स्थित है। यह दुर्ग विशेष रूप से दर्शनीय है।

(vii) बाँधवगढ़ का किला कटनी – बिलासपुर रेलमार्ग पर उमरिया स्टेशन से तीस किलोमीटर दूर स्थित है। विंध्य पर्वत माला के सघन वनों में 900 मीटर की ऊँचाई पर बना यह दुर्ग अजेय, सुदृढ़ और भव्य है। चौदहवीं शताब्दी में बना यह किला अंदर से सुविशाल, ऊबड़–खाबड़ और भयावह है, किन्तु सुरक्षा की दुष्टि से अद्वितीय है।

(viii) ओरछा मध्यप्रदेश का विशेष चर्चित स्थल है। झाँसी के निकट स्थित इस स्थल पर बुंदेला राजाओं द्वारा बनवाया गया सुदृढ़ दुर्ग यहाँ के पराक्रम और भक्तिभाव का साक्षी है। इस दुर्ग में चतुर्भुज मंदिर, राममंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि मंदिर बुंदेला नरेशों की धार्मिक भावनाओं को सफलतापूर्वक प्रकाशित करते हैं।

(ix) मध्यप्रदेश के प्रख्यात पन्ना क्षेत्र से मात्र 34 किलोमीटर की दूरी पर उत्तर दिशा में अजयगढ़ नामक एक स्थान है। इस छोटे से नगर में राजा अजयपाल द्वारा बनवाया गया एक विशाल, सुदृढ़ एवं दुर्गम किला है।

'राजा अमन का महल' वास्तु–शिल्प का अद्‌भुत नमूना है। अठारहवी शताब्दी में इस दुर्ग का पुनर्निर्माण कराया गया था, अत: यह आज भी सुदृढ़ है। ग्वालियर के समीप स्थित शिवपुरी जिले के उत्तर में 19 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 'सतनवाड़ा' नामक रेलवे स्टेशन है। यहाँ से 25 किलोमीटर उत्तर में 'नरवर' नगर है। यह भी एक पहाड़ी दुर्ग है और अत्यंत सुदृढ़ है।

(x) जबलपुर मुख्यालय से 96 किलोमीटर दूर 'महिष्मती' नामक प्राचीन स्थान है। पुराण प्रसिद्ध महिष्मती नगरी अब 'मण्ड़ला' जिला है। मण्ड़ला दुर्ग में 'राज राजेश्वरी' देवी की स्थापना निजामशाह ने कराई थी। सन् 1789 ईसवी में गोंड़ वंशीय नरेशों का यह दुर्ग मराठों के अधिकार में आ गया।

(xi) मन्दसौर का किला मध्यप्रदेश के किलों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिम भाग में मालवा की शस्य श्यामला भूमि पर 'शिवना' नदी के किनारे स्थित मंदसौर नगर प्राचीनकाल में 'दशपुर' के नाम से प्रसिद्ध था। इस स्थान पर चौदहवीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी ने एक किले का निर्माण करवाया था। इसकी प्राचीर में चुने गए पत्थरों पर हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बनी हैं। इस किले में बारह दरवाजे है, जिनमें से चार प्रमुख द्वार–भाई दरवाजा, खानपुरा दरवाजा, मण्डी दरवाजा और महादेवघाट दरवाजा नाम से जाने जाते हैं। यहाँ लगभग 500 वर्ष पुराना 'तापेश्वर महादेव मंदिर' है। न केवल मंदसौर का किला बल्कि पूरा मंदसौर नगर अपने वैशिष्ट्य के कारण दर्शनीय है। इस प्रकार मध्यप्रदेश में स्थित सुदृढ़ दुर्गों की एक समृद्ध विरासत इतिहास ने भारतवर्ष को सौपी है। पर्यटन स्थल के स्प में विकसित होने पर ये दुर्ग न केवल हमें हमारी संस्कृति और इतिहास से परिचित कराएँगे अपितु चिरकाल तक सुरक्षित भी रखे जा सकेंगे

2. **राजमहल** – राजमहल राजाओं और अन्य महत्त्वपूर्ण लोगों की सुरक्षा के लिए बनाये जाते थे। से वास्तव में दूसरा सुरक्षा घेरा था जो किले के अंदर सुरक्षित स्थान पर बनाया जाता था। राजमहलों का संबंध किसी –न–किसी किले से रहा है। मध्यप्रदेश के किलों से संबंधित राजमहलों में 'गूजरी महल', 'मोती महल', 'जय विलास', 'राजमंदिर', 'रूपमती महल' आदि विशेषत: प्रसिद्ध हैं। राजमहलों के अतिरिक्त धार के किले में स्थित 'खरबूजा महल', रायसेन दुर्ग में स्थित 'बादल महल', 'इत्रदार महल' और राजा मदन का महल, चंदेरो के किले में स्थित 'नौखण्डा महल', अजयगढ़ के दुर्ग में बना 'राजा अमन का महल', ओरछा दुर्ग के निकट स्थित 'राजमंदिर' आदि अनेक राजमहल मध्यप्रदेश के पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र हैं। इनमें न केवल भारत के गौरवशाली यश की कथाएँ अंकित हैं अपितु भारतीय वैभव की, कलाप्रियता की झलक भी दिखाई देती है। इसलिए इनका महत्त्व है।

3. **संग्रहालय** – ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व की सामग्री को सुरक्षित रखने के लिए मध्यप्रदेश में अनेक संग्रहालय बनाए गए हैं। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, धार, शिवपुरी, विदिशा आदि जिलों में स्थित संग्रहालयों में यहाँ की दुर्लभ पुरातात्विक सम्पदा सुरक्षित है। मौर्यकालीन सुविशाल यक्ष

प्रतिमाएँ विदिशा में स्थित संग्रहालय के विशेष आकर्षण हैं। सन् 1887 ईसवी में 'एडवर्ड म्यूजियम' के नाम से स्थापित किया गया भोपाल का शासकीय संग्रहालय 'पाषाण प्रतिमाओं' के लिए प्रसिद्ध है। कृष्ण जन्म, हरिहर पितामह, बुद्ध, पंचमुखी गणेश आदि अनेक प्रतिमाओं के अतिरिक्त 'प्रागैतिहासिक गैलरी' भी यहाँ का मुख्य आकर्षण है।

'केंद्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय, इंदौर' में ईसा से पाँच हजार वर्ष पूर्व निर्मित हस्त कुठार, लीवर, स्क्रेपर, भाला, हँसिया आदि उपकरण सुरक्षित हैं। हिंगजाजगढ़ और मंदसौर से प्राप्त लगभग पाँच सौ पाषाण प्रतिमाएँ, दसवी शताब्दी से लेकर अठारहवी शताब्दी तक की विभिन्न मुद्राएँ और दुर्लभ अभिलेख यहाँ की शोभा हैं। सन् 1930 ई. में स्थापित शिवपुरी जिला संग्रहालय जैन पाषाण प्रतिमाओं के लिए विशेष प्रसिद्धा है। 'शासकीय संग्रहालय, धुलेबा (नौगाँव) में स्कंदगुप्त आदि राजाओं के अभिलेख और लगभग 2200 सिक्कों का संग्रह सुरक्षित है। 'पुरात्त्व' संग्रहालय साँची में 'ब्राह्मण और बौद्ध संस्कृति का समन्वय मिलता है। यहाँ के स्तूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात हैं। 'पुरातत्त्व संग्रहालय खजुराहों' में दसवी-बारहवी शताब्दी की खण्ड़ित प्रतिमाएँ हैं, जिन्हें देखने के लिए विदेशों से लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। ग्वालियर किले के गूजरी महल में स्थित केद्रीय पुरातत्त्व संग्रहालय ग्वालियर' मृणमूर्तियों, मंजूषाओं, धातु एवं पाषाण प्रतिमाओं के लिए प्रसिद्ध है।

मध्यप्रदेश में उपर्युक्त प्रख्यात संग्रहालयों के अतिरिक्त भानपुरा, गंधर्वपुरी (देवास), आशापुरी (रायसेन), रामवन (सतना), रीवा, मंड़ला, शहडोल, राजगढ़, दमोह, पन्ना, जबलपुर आदि स्थानों पर महत्त्वपूर्ण संग्रहालय स्थित हैं। राज्य में सागर, जबलपुर और उज्जैन विश्वविद्यालयों में स्थित संग्रहालय भी पर्यटको के आकर्षण केन्द्र हैं। निजी संस्थाओं द्वारा संचालित संग्रहालय में 'राजा मृगेंद्र सिंह संग्रहालय, शहडोल, 'गोविंदगढ़ महल संग्रहालय, रीवा, 'राजकमल मड़वैया संग्रहालय, विदिशा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

2. **सांस्कृतिक महत्व के पर्यटन-स्थल** - भगवान महाकाल की पवित्र नगरी उज्जैन और पुण्य सलिला नर्मदा के पावन प्रवाह से युक्त विंध्य - सतपुड़ा की यह धरती सांस्कृतिक परम्पराओं से समृद्ध है। यहाँ के तीर्थस्थल न केवल मध्यप्रदेश अपितु संपूर्ण भारतवर्ष की संस्कृति विरासत के संरक्षक है। अमरकंटक, चित्रकूट, साँची, मुक्तागिरि, उज्जैन, ओंकारेश्वर, महेश्वर, खजुराहो, बावनगजा आदि असंख्य पर्यटन-स्थल इस राज्य के संस्कृतिक महत्त्व वाले पर्यटन-स्थल हैं। अनूपपुर जिले का 'तीर्थ पुष्पराजगढ़' तहसील के दक्षिण पूर्व की मैकल पर्वत माला में स्थित अमरकंटक (आम्रकूट पर्वत) नर्मदा एवं सोन नदी का उद्गम स्थल है। लगभग 3500 फुट की ऊँचाई पर स्थित यह शीतल प्रदेश सघन वनों से घिरा है और सर्वदा शस्य श्यामल है। यहां के प्रमुख तीर्थ-स्थलों में 'नर्मदा कुण्ड' मुख्य है। माई का मंदिर, कपिलधारा प्रपात, माई की बगिया, सोनमूड़ा आदि यहाँ के दर्शनीय स्थल हैं।

भोपाल से मात्र 46 किलोमीटर दूर स्थित साँची बौद्ध धर्मस्थल के रूप में विख्यात है। बौद्धकालीन शिल्पकला के सारे नमूने यहाँ पर विद्यमान हैं। स्तूपों, चैत्यों, मंदिरों और अन्य ऐतिहासिक संदर्भों के कारण साँची का सांस्कृति महत्त्व सर्वविदित है। बैतूल जिले में मुक्तागिरि जैन धर्मावलम्बियों का पवित्र तीर्थ है। इंदौर से 128 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बावनगजा भी प्रमुख जैन तीर्थ है। यहाँ की पहाड़ियों में पन्द्रहवीं शताब्दी की 72 फुट ऊँची जैन मूर्ति है। इसकी दर्शनीयता के कारण यह स्थान भी सांस्कृतिक महत्त्व का पर्यटन-स्थल सिद्ध होता है।

इस प्रदेश में उज्जैन, ओंकारेश्वर और महेश्वर प्रसिद्ध शिवतीर्थ है। इंदौर से 53 किलोमीटर दूर स्थित उज्जैन अनेक पौराणिक संदर्भों से समृद्ध है। भगवान शंकर ने यही पर 'त्रिपुर' नामक असुर का वध किया था। यहाँ स्थित 'क्षिप्रा' नदी पर कुंभ का पर्व आयोजित होता है। उज्जैन स्थित महाकाल 'शिवलिंग' भारत में मान्य बारह ज्योतिलिंगों में एक है। वेधशाला, गोपाल मंदिर, सांदीपनि आश्रम पाताल भैरवी, गढ़कालिका, काल भैरव आदि उज्जैन के अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिर हैं। मुख्य नगर से मात्र ग्यारह किलोमीटर दूर भर्तृहरि की गुफाएँ भी यहाँ का विशेष आकर्षण है। इंदौर से 77 किलोमीटर दूर नर्मदातट पर 'ओंकारेश्वर' महादेव का मंदिर है। यह भी ज्योतिर्लिंगों में गिना जाता है। यहाँ के अन्य मंदिरों में सिद्धनाथ मंदिर, 24 अवतार मंदिर, गौरी सोमनाथ मंदिर, आदि शंकराचार्य की गुफाएँ आदि दर्शनीय स्थान हैं।

इंदौर से 90 किलोमीटर दूर स्थित महेश्वर नगर प्राचीन पौराणिक नगरों में अग्रणी है। हैहयवंशी नरेश कार्तवीर्य अर्जुन सहस्त्रबाहु के पराभव के उपरांत इस नगरी का वैभव क्षीण हो गया, किन्तु 19वी शताब्दी में महारानी अहिल्याबाई ने इस नगर का जीर्णोद्धार कराया। खजुराहों में स्थित मंदिर भी सांस्कृतिक महत्त्व को रेखांकित करते हैं। हिन्दू स्थापत्य एवं शिल्पकला के इन उत्कृष्ट नमूनों में अब 85 में से केवल 25 मंदिर ही शेष बचे हैं। ये शिल्पियों के अद्वितीय कला–कौशल को प्रकट करते है तथा न केवल मध्यप्रदेश अपितु सम्पूर्ण देश की सांस्कृतिक विरासत के प्रतिनिधि है।

3. **प्राकृतिक महत्त्व के पर्यटन-स्थल** – मध्यप्रदेश में प्राचीन गुफाएँ, जल प्रपात एवं राष्ट्रीय एवं उद्यान मुख्य प्राकृतिक स्थल है। यहाँ की गुफाएँ अत्यंत प्राचीन है और अधिकतर गुफाएँ सघन वनों में स्थित हैं। इनमें भीम बेठिका उदयगिरि, भर्तृहरि गुफाएँ बाघ की गुफाएँ विशेष प्रसिद्ध है। भीमबेठिका लगभग 500 प्रागैतिहासिक गुफाएँ है, जिनमें शैलचित्र अंकित हैं। अंधिकांश चित्रों में सफेद और लाल रंग प्रयुक्त हुआ है। उदयगिरि की गुफाएँ म.प्र. के विदिशा के निकट स्थित हैं। यहाँ पत्थरों को खोदकर बीस गुफाएँ बनाई गई हैं। ये गुफाएँ ईसा के बाद चौथी और पाँचवी शताब्दी की रचनाएँ हैं, जिनमें गुप्त वंश की निर्माण कला का उत्कृष्ट रूप मिलता है। प्रख्यात तीर्थस्थल, उज्जैन में कालियादह महल के समीप भर्तृहरि–गुफाएँ हैं। यहाँ कुल 09 गुफाएँ हैं। जिनमें पाँच सुरक्षित और चार खण्डित हैं। परमारवंशीय नरेशों द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में राजा भर्तृहरि की स्मृति में बनवाई गई ये गुफाएँ रंगीन चित्रों से युक्त हैं। ये इस क्षेत्र की सभ्यता और संस्कृति की परिचायक हैं।

विंध्याचल की पहाड़ियाँ 'बाघ की गुफाएँ माण्डू से 125 किलोमीटर दूर स्थित हैं। इनमें अजंता जैसे कलापूर्ण भित्तिचित्र अंकित हैं। पाँचवी एवं सातवीं शताब्दी के मध्य बने ये भित्तिचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। बाघ की गुफाएँ ऊँची–ऊँची पहाड़ियों को काटकर बनाई गई हैं। ये बाघ नदी के तट पर स्थित हैं। इसलिए इन्हें बाघ की गुफाएँ कहा जाता है। मध्यप्रदेश के पर्वतीय अंचलों में प्रवाहित जलप्रपात विशेष आकर्षक हैं। रीवा से मात्र 46 किलोमीटर दूर बीहड़ नदी पर 'चचाई का सुंदर जल प्रपात है।130 मीटर की ऊँचाई से गिरने वाला यह प्रपात प्राकृतिक–सौंदर्य का अनुपम नमूना है। जबलपुर में भेड़ाघाट के निकट संगमरमर की चट्टानों के मध्य 18 मीटर ऊँचाई से गिरता नर्मदा जल 'धुआँधार' के नाम से प्रसिद्ध है। अमरकंटक में नर्मदा कुण्ड से निकलकर नर्मदा जलधारा 06 किलोमीटर तक प्रवाहित होकर 15 मीटर की ऊँचाई से भूमि पर गिरती है। 'कपिल धारा' नाम से प्रसिद्ध यह प्रपात अत्यंत नयनाभिराम है। होशंगाबाद जिले में पिपरिया रेलवे स्टेशन से 47 किलोमीटर दूर 'पचमढ़ी' नामक स्थान है। 1946 मीटर की ऊँचाई पर सतपुड़ा के पठार का यह भाग अपने अंचल में 20 जलाशय, 05 जल प्रपात और 70 अन्य दर्शनीय स्थल सँजोए है के उन्नत शिखरों में धूपगढ़, चौरागढ़, महादेव, जटाशंकर आदि अनेक दर्शनीय स्थल अवस्थित हैं। इनकी प्राकृतिक शोभा देखते ही बनती है।

मध्यप्रदेश में 09 राष्ट्रीय उद्यान और 23 वन्यजीव अभयारण्य हैं। इनमें बाँधवगढ़ (शहड़ोल), माधव (शिवपुरी), पेंच (सिवनी/छिंदवाड़ा), सतपुड़ा (होशंगागाद), वनविहार (भोपाल), कान्हा (मण्डला), फासिल (मण्डला) आदि मुख्य हैं। इन राष्ट्रीय उद्यानों में बाघ, चीतल, तेदुआ, साँभर, चिंकारा, जंगली सुअर आदि वन्य पशु पाए जाते हैं। उपर्युक्त उद्यानों में 'कान्हा किसली' राष्ट्रीय उद्यान सबसे अधिक चर्चित और महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार मध्यप्रदेश भारत में पर्यटन के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण, सर्वाधिक सुरम्य और विशिष्ट सांस्कृतिक विरासतयुक्त प्रदेश है। इतिहास, संस्कृति एवं पुरातात्विक दृष्टि से यहाँ के पर्यटन–स्थल अति विशिष्ट और आकर्षक हैं।

मध्यप्रदेश के स्थान विशेष के आधार पर पर्यटन स्थलों की जानकारी निम्ननानुसार हैं–

NOTES

इन्दौर

1. इन्दौर पूर्व में **इन्द्रपुर** ग्राम था, जिसका नामकरण इंद्रेश्वर मंदिर के कारण हुआ था।

2. **दर्शनीय स्थल :** लालबाग पैलेस, राजबाड़ा, छत्रीबाग की छत्रियाँ, फूटी कोठी, काचँ मंदिर, बड़ा गणपति मंदिर, खजराना, अन्नपूर्णा मन्दिर, इन्द्रेश्वर मन्दिर, हरसिद्धि मन्दिर, शनि मन्दिर।

3. **खजराना** देवी अहिल्याबाई द्वारा निर्मित प्रसिद्ध गणेश मन्दिर है।

उज्जैन

1. उज्जैन की गिनती भारत के सप्तपुरियों में होती हैं। ये हैं – उज्जैन, अयोध्या, कांची, पुरी, हरिद्वार, वाराणसी व द्वारका। इसके अतिरिक्त भारत के जिन स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है, उनमें उज्जैन **(सिंहस्थ)** भी एक है। शेष स्थान है – हरिद्वार, प्रयाग नासिक।

2. यहाँ के महाकालेश्वर शिवलिंग की विशिष्टता यह है कि यह **दक्षिणमुखी** है।

3. इसके अतिरिक्त हरसिद्धि मंदिर, संदीपनी आश्रम, काल भैरव, कलियादेह महल, भर्तृहरि की गुफा, गुरू मत्स्येंद्र नाथ स्मारक, न्याय सिंहासन, वेधशाला (इसमें सम्राट यंत्र लगा है) आदि के लिए भी उज्जैन प्रसिद्ध है।

4. वेधशाला का निर्माण जयपुर के राजा जयहिं द्वितीय ने करवाया था।

5. भगवान कृष्ण, उनके भाई बलराम और सखा सुदामा ने संदीपनी मुनि के आश्रम में ही शिक्षा पाई थी नीति शतक, श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक के रचनाकार भर्तुहरि (भरथरी) भी उज्जैन से सम्बंधित रहे हैं।

भोपाल

1. **झीलों की नगरी** के नाम से भोपाल सात पहाड़ियों पर बसा है।

2. **दर्शनीय स्थल :** गुफा मंदिर, बिड़ला मंदिर, ताजुल मस्जिद, जामा मस्जिद, ढाई सीढ़ी की मस्जिद, भारत भवन, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, वन विहार, आंचालिक विज्ञान केन्द्र, नवीन विधान सभा भवन, बिड़ला संग्रहालय आदि।

3. **नवीन विधान सभा भवन:** यह भोपाल के प्रमुख आकर्षणों में है, जो अरेरा पहाड़ी पर स्थित है। इसकी डिजाइन सुप्रसिद्ध वास्तुकाल चार्ल्स कोरिया ने तैयार की थी। पूरा भवन वृत्ताकार है।

4. भोपाल से लगभग 60 किमी दूर **देलावाड़ी** एक प्राकृतिक स्थल है। रातापानी अभ्यारण्य गित्रोरगढ़ का किला, चोर बावड़ी, भदभदा प्रपात, जावरा गुफाएँ आदि यहाँ के दर्शनीय स्थल है।

5. भोपाल में 50 करोड़ की लागत से **इस्कान मंदिर** बनाया जा रहा है। इसका स्थापत्य वृन्दावन के इस्कानॅ मन्दिर की तरह होगा। ज्ञात हो कि इन्दौर व उज्जैन में भी इस्कॉन मन्दिर है। ISKCON (International Society for Krishna Consciousness) को हरे कृष्णा आन्दोलन भी कहा जाता है। इसकी स्थापना 1966 में न्यूयॉर्क में हुई थी। इसका मुख्यालय मायापुर (पश्चिम बंगाल) में है।

जबलपुर

1. भेड़ाघाट, चौंसठ योगिनी मन्दिर, धुँआधार जलप्रतात, संगमरमर की चट्टानें, मदनमहल, त्रिपुरी त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर, ग्वारी घाट, तिलवारा घाट, रानी दुर्गावती संग्रहालय आदि प्रसिद्ध स्थल है।

2. मदनमहल का किला गौंड राजा मदनशाह द्धारा निर्मित है।

3. त्रिपुरी जबलपुर के पास भेड़ाघाट रोड पर तेवार गाँव में मिला एक पुरातात्विक स्थल है। यह जबलपुर की सबसे पुरानी बस्ती है। 1939 में यहाँ कांग्रेस का त्रिपुरी सत्र हुआ था।

4. त्रिपुर सन्दरी मन्दिर एक विशाल मन्दिर है, जिसमें देवी की तीन मुखों वाली प्रतिमा है – काली, सरस्वती और दुर्गा।

5. जबलपुर में गढ़ा देवताल की पहाड़ियों पर एक अद्‌भुत मन्दिर आकार ले रहा है। वैज्ञानिक दृष्टिकोंण वाले इस मन्दिर का निर्माण कार्य 15 वर्षो से जारी है। यहाँ शिवलिंग और बजरंगबली की ऐसी प्रतिमा होगी, जिन पर जबलपुर शहर में पहली और अन्तिम सूर्य किरण पड़ेगी। शिव मन्दिर का शिखर भी पूरा होने के बाद पहली और अन्तिम किरण से सुसज्जित होगा। इस मन्दिर की हर प्रतिमा दर्पण में दिखाई देती है, जिससे परावर्तित किरणों के माध्यम से प्रतिमा की उर्जा दर्शनार्थियों को मिल सके। मन्दिर में नवग्रह भी स्थापित किए गए है, जो घूमते है।

ग्वालियर

1. ग्वालियर का नामकरण **ग्वालव**/ग्वालिपा/गालव ऋषि के नाम पर हुआ है।

2. ग्वालियर का किला लाल बलुए पत्थर से गोपाचल पहाड़ी पर बना है। ग्वालियर नगर और यहाँ के किले का संस्थापक **राजा सूरजसेन** को माना जाता है। ऐतिहासिक काल में किला इतना अभेद्य रहा है कि बाबर ने इसे **भारत के सभी किलों का मोती** (द पर्ल इन द नेकलेस ऑफ हिन्द) कहा है।

3. ग्वालियर के किले में स्थित **सास बहू का मन्दिर** का वास्तविक नाम **सहस्त्रबाहु मन्दिर** था। सहस्त्रबाहु भगवान विष्णु का ही एक नाम है। इस मन्दिर की संरचना पिरामिड जैसी है।

4. तेली का मन्दिर ग्वालियर के किले का सबसे पुराना मन्दिर है। इस मन्दिर की छत द्रविड़ स्थापत्य के अनुसार है, जबकि मूर्तियाँ और नक्काशी उत्तर भारतीय कला के अनुरूप है। यह मन्दिर भगवान विष्णु को समर्पित है।

5. ग्वालियर में स्थित सिन्धिया राजघराने का जय विलास पैलेस इटालियन स्थापत्यकला का उत्कृष्ठ नमूना है।

6. जयविलास पैलेस का विशाल डाइनिंग रूम दरबार हॉल कहलाता था।

7. इल महल के 35 कमरों को अब संग्रहालय में परिवर्तित कर दिया गया है।

8. ग्वालियर के पास छह जगहों को **ईको टयूरिज्म स्पॉट** के रूप में चिन्हित किया गया है। इमें तिघरा, ककेटो और हरसी जलाशय, ए बी रोड पर मद्‌दाखोह, सुल्तानगढ़ में पार्वती नदी पर बना झरना ओर तानसेन की जन्मभूमि बेहट शामिल है।

9. तिघरा जलाशय प्रवासी पक्षियों का गढ़ है। मद्‌दाखोह घाटीगाँव के पास है, जो अपनी हरीतिम के लिए जाना जाता है। योग, ध्यान और एकांत साधना के लिए यह एक उपयुक्त स्थान है।

अमरकंटक

1. अनूपपुर जिले में स्थित। नर्मदा, सोन और जाहिला नदियों का उद्रम स्थल। कालिदास ने इसे आम्रकूट कहा है। सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि और भृगु ऋषि की तपस्थली रही है। दर्शनीय स्थलः नर्मदा कुण्ड, माई की बगिया, सोनमूढ़ा, सोनाक्षी मन्दिर, जलेश्वर महादेव, कबीर चबूतरा, कपिलधारा, दुग्धधारा, धूनीपानी, भृगुकमंडल।

2. **दर्शनीय स्थल :** नर्मदा कुण्ड, माई की बगिया, सोनमूढ़ा, सोनाक्षी मंदिर, जलेश्वर महादेव, **कबीर चबूतरा**, कपिलधारा, दुग्धधारा, धूनीपानी, भृगुकमण्डल।

चित्रकूट

NOTES

1. सतना जिले में **मन्दाकिनी** नदी के तट पर स्थित है। यहाँ भगवान राम ने अनुज लक्ष्मण और पत्नी जानकी के साथ वनवास के साढ़े ग्यारह साल व्यतीत किए थे। किंवदंती है कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव ने यहाँ अवतार लिया था। यह अत्र ऋषि और सती अनुसूया क तपस्थली है। तुलसीदास भी यहाँ आए थे।

2. **दर्शनीय स्थल :** रामघाट, जानकी कुंड, कामदगिरि, भरत कूप, राम शय्या, सत अनुसूया आश्रम, गुप्त गोदावरी, हनुमान धारा, सीता रसोई, पुत्रदा वृक्ष। कामदगिरी में भगवान राम ही कामदनाथ के रूप में विराजमान है। इस पर्वत की **पंचकोशी परिक्रमा** की जाती है।

मैहर

सतना जिले में स्थित है। यहाँ त्रिकुटा पहाड़ी पर शारदा मन्दिर है इसका संबंध आल्हा ऊदल से भी है। कहते हैं यहाँ पर सती का हार गिरा था। इसीलिए यह मैहर (माई का हार) कहलाया। मैहर से उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का रिश्ता भी है। वे मैहर महाराज के आमन्त्रण पर यहाँ आए और फिर यही के होकर रह गए। उन्हें **बाबा अलाउद्दीन** खाँ कहा जाता है।

पचमढ़ी

1. पचमढ़ी शब्द दो शब्दों पंच और मढ़ी से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है पाँच गुफाएँ । ये पाँच गुफाएँ पाण्डवों की थीं। इसे मध्य प्रदेश का कश्मीर कहा जाता है।

2. पचमढ़ी को **सतपुड़ा की रानी** कहा जाता है। ज्ञात हो कि सतपुड़ा शब्द सप्त और पुत्रा: से मिलकर बना है, जिसका अर्थ हुआ सात पुत्र।

3. पचमढ़ी की खोज **कैप्टन जेम्स फोरसिथ** ने की थी। यह मध्यप्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन है। यहाँ पहुँचने के लिए सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन पिपरिया है।

4. **प्रमुख स्थल :** जटाशंकर, चौरागढ़ और महादेव गुफा, धूपगढ़, पाण्डव गुफाएँ, अप्सरा विहार, रजत प्रपात, डचेस फाल्स, बी फाल्स (क्योंकि पहाड़ी से गिरते हुए यह बिल्कुल मधुमक्खी की तरह प्रतीत होता है.... वैसे अब इसे जमुना प्रपात कहते है), **प्रियदर्शिनी प्वाईट,** हांडी खोह, बॉयोस्फियर रिजर्व।

5. धूपगढ़ से सूर्योदय और सूर्यास्त का मनोरम दृश्य दिखाई देता है।

6. जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पचमढ़ी आए तो उनके सम्मान में यहाँ के पेनोरमा गिरि का नाम **राजेन्द्र गिरि** रख दिया गया।

7. पचमढ़ी – पिपरिया रोड पर **अम्बा माई का मन्दिर** है।

चन्देरी

1. **अशोक नगर** जिले में स्थित चन्देरी का संबंध प्राचीन चेदि जनपद से स्थापित किया जाता है, जो वस्तुत: वर्तमान चन्देरी कस्बे से 20 किमी की दूरी पर उर्वशी नदी के तट पर स्थित **बूढ़ी चन्देरी** है।

2. चन्देरी नगर को बसाने का श्रेय प्रतिहार नरेश कीर्तिपाल को दिया जाता है। उसी ने इस स्थान की किलेबन्दी भी की। इसीलिए चन्देरी के किले को कीर्ति दुर्ग भी कहते है।

3. बाबर ने जिस समय चन्देरी पर आक्रमण किया था उस समय यहाँ का राजा **मेदिनी राय** था।

4. चन्देरी अपनी उत्कृष्ट साड़ियों के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है।

खजुराहो

1. यहाँ के मन्दिर तीन समूहों – पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी में विभक्त हैं।

2. सबसे विशाल मन्दिर **कन्दरिया महादेव** का है। यह पश्चिमी समूह के मन्दिरों में है।

3. **चौंसठ योगिनी मन्दिर** ग्रेनाइट निर्मित है।

4. **चित्रगुप्त मन्दिर** सूर्य को समर्पित है।

5. **आदिनाथ मन्दिर** की मूर्ति काले पत्थर से बनी है।

6. वामन मन्दिर विष्णु के पाँचवें अवतार भगवान वामन को समर्पित है।

7. **मतंगेश्वर मन्दिर** शिव को समर्पित है।

सीहोर

1. सीहोर पार्वती की सहायक सीवन नदी के तट पर बसा है। इसका प्राचीन नाम सिद्धपुर मिलता है।

2. **दर्शनीय स्थल :** सलकनपुर का मन्दिर, सारूमारू की गुफाएँ, गिन्नोरगढ़ का किला और 1857 से पहले के शहीद **कुँवर चैन सिंह** की छत्री यहाँ है।

3. सारूमारू की गुफाओं का निर्माण सम्राट अशोक ने बौद्ध भिक्षुओं के निवास हेतु कराया था।

भोजपुर

1. यह स्थान भोपाल के निकट रायसेन जिले में बेतवा के तट पर स्थित है।

2. भोजपुर का **भोजेश्वर शिव मन्दिर** राजा भोज द्वारा निर्मित है। यह पश्चिमाभिमुखी मन्दिर है।

3. भोजपुर के मन्दिर के संबंध में एक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि यह अधूरा बना है।

4. भोज द्वारा निर्मित शिवमन्दिर को पूर्व का सोमनाथ भी कहते है।

5. मन्दिर से थोड़ी दूरी पर माता पार्वती की गुफा है।

6. राजा भोज द्वारा निर्मित शिव मन्दिर के पास ही एक जैन मन्दिर भी है। मन्दिर में जैन तीर्थकर भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमा स्थित है। शिवमन्दिर की ही तरह यह भी अधूरा है। यहाँ के शिलालेख पर राजा भोज का उल्लेख है। यह क्षेत्र जैन मुनि मनतुंगाचार्य से संबंधित है।

असीरगढ़

1. असीरगढ़ का किला बुरहानपुर से लगभग 20 किमी उत्तर की ओर सतपुड़ा की पहाड़ियों पर स्थित है।

2. इसका संस्थापक **आसा अहीर** है।

3. इस किले को कुछ इतिहासकार अति प्राचीन बताते हैं और इसे महाभारत काल के अश्वत्थामा की पूजा स्थली बताते है।

4. असीरगढ़ के किले को इतिहासकारों ने **बाब ए दक्खन** (दक्षिण का प्रवेश द्वार) और **कलोद ए दक्खन** (दक्षिण की कुंजी) कहा है।

5. यह किला सतपुड़ा पहाड़ी से गुजरने वाले उस दर्रे को नियंत्रित करता था जो उत्तर में नर्मदा घाटी और दक्षिण में ताप्ती घाटी को सम्बद्ध करता है।

NOTES

6. मध्यकाल में यह किला मध्य प्रदेश के फारूकी वंश के अधीन रहा। 1601 में इस पर अकबर ने अधिकार कर लिया।

महेश्वर

1. महेश्वर का प्राचीन नाम माहिष्मती है। मांधाता के पुत्र मुचकुंद तृतीय द्वारा नर्मदा के तट पर ऋच्छ एवं परिपात्र पर्वतों के मध्य नगर बसाए जाने का उल्लेख है, जिसे हैयय माहिष्मान ने विजित कर माहिष्मती नाम दिया।

2. देवी अहिल्याबाई ने 1767 ईस्वी में महेश्वर को अपनी राजधानी बनाई।

3. **दर्शनीय स्थल :** महेश्वर अपने घाटों और मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है। महेश्वर का किला, मंडलाखोह, पेशवा घाट, कालेश्वर, रावणेश्वर, काशी विश्वेसर, राजराजेश्वर मन्दिर, देवी अहिल्या पुरातत्व संग्रहालय, अहिल्याबाई और सरदार विट्ठलराव की छत्रियाँ आदि यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

4. चीनी यात्री ह्वेनसांग भी 640 ईस्वी में महेश्वर आया था। उसने लिखा है कि यहाँ कोई ब्राह्मण राज्य करता था। अनुश्रुति है कि शंकराचार्य से शास्त्रार्थ करने वाले मंडन मिश्र और उनकी पत्नी महिष्मती के ही निवासी थे। कहा जाता है कि महेश्वर के निकट मंडलेश्वर नामक जगह मंडन मिश्र के नाम पर ही है। महेश्वर और मंडलेश्वर ये दोनों नगर इतने घनिष्ठ रूप से संबंधित है कि इन्हें जुड़वा शहरों के रूप में जाना जाता है।

5. माहेश्वरी साड़ियों के निर्माण का आरम्भ देवी अहिल्याबाई के प्रयत्नों से हुआ है। उन्होंने गुजरात के कारीगरों को महेश्वर बुलाकर इस साड़ियों की आधारशिला रखी। स्वतंत्रा के बाद माहेश्वरी साड़ियों को पुनर्जीवन देने का काम रिचर्ड होल्डर ने किया। इसके लिए उन्होने रेहवा सोसाइटी की स्थापना की।

छिंदवाड़ा

1. छिंदवाड़ा दो शब्दों छिंद + वाड़ा से बना है, जिसका अर्थ है, छिंद (खजूर) का स्थान। मान्यता है कि किसी समय यह स्थान खजूर के वृक्षों से भरा पड़ा था। उल्लेखनीय है कि खजुराहो का नामकरण भी खजूर वृक्षों के आधार पर ही मानते है।

2. एक अन्य कथा के अनुसार छिंदवाड़ा में सिंह की बहुतायत थी, इसीलिए इसे सिंहवाड़ा कहा जाता था। आगे चलकर यह छिंदवाड़ा हो गया।

3. छिंदवाड़ा जिले के पांढुर्ना में जाम नदी के नट पर प्रति वर्ष प्रसिद्ध गोटमार मेले का आयोजन होता है।

4. छिंदवाड़ा में श्री बादल भोई राज्य आदिवासी संग्रहालय (Shri Badal Bhoi State Tribal Museum) स्थित है। इसका आरम्भ 1954 में हुआ था और 1975 में इसे राज्य संग्रहालय का दर्जा दिया गया। 1997 में इसका नामकरण बादल भोई के नाम पर किया गया बादल भोई इस जिले के क्रांतिकारी जनजातीय नेता थे।

5. छिंदवाड़ा से 39 किमी दक्षिण में देवगढ़ का किला स्थित है, जिसका निर्माण गोंड राजा जाटव ने कराया था। 18वीं शताब्दी तक यह गोंडवाना वंश की राजधानी रहा है।

6. 1500 फीट की गहराई में स्थित पातालकोट, छिंदवाड़ा जिले का एक सुन्दर प्राकृतिक स्थल है। यह स्थल सतपुड़ा की वादियों में बसा है। वर्षा के समय यह क्षेत्र दुनिया से कट जाता है। यहाँ भारिया जनजाति पाई जाती है।

7. छिंदवाड़ा से 11 किमी की दूरी पर स्थित सालीमेटा लिंगा गाँव में भारत के अत्याधुनिक ड्राइवर ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना की गई है। यह संस्थान सी आई व अनेक औद्योगिक संस्थाओं तथा भारत सरकार द्वारा प्रायोजित व अशोक लीलैंड द्वारा स्थापित है। बताया जाता है कि छिंदवाड़ा में रोजगार व प्रशिक्षण के जितने केन्द्र है, उतने संभवत: भारत के किसी शहर में नहीं है।

8. **मसाला पार्क :** मसाला उत्पादक किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने और रोजगार उपलब्ध कराने हेतु 20 करोड़ की लागत से छिंदवाड़ा में निर्मित किया गया है।

9. छिन्दवाड़ा में सहजयोग केन्द्र भी है। इसकी संस्थापिका माननीय श्रीमाता निर्मला देवी हैं।

दतिया का रतनगढ़ माता का मन्दिर

1. यह मन्दिर दतिया जिले से 55 किमी दूर सेवढ़ा तहसील में रामपुरा गाँव के पास स्थित है, जो छत्रपति शिवाजी द्वारा निर्मित माना जाता है। नवरात्रि व भाई दूज के दिन इस मन्दिर में भारी भीड़ होती है।

2. यहाँ दो मन्दिर है – रतनगढ़ माता का और कुँवर महाराज का। कुँवर महाराज, रतनगढ़ माता के भाई है।

चोरल

1. यह इन्दौर 45 किमी दूर महू (अम्बेदकर नगर) के निकट स्थित एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है।

2. यहाँ और निकटवर्ती क्षेत्रों में चोरल नदी, चोरल बाँध, पातालपानी, जलप्रपात, जनापाव, शीतला माता जलप्रपात, काला कुन्ड, मेंहदी कुन्ड जल प्रपात, बेरछा बाँध आदि रमणीय पर्यटन स्थल है।

3. चम्बल नदी महू से 15 किमी कुटी गाँव के निकट जनापाव पहाड़ी से निकलती है। इस पहाड़ी पर परशुराम के पिता जमादाग्नि ऋषि का आश्रम भी स्थित है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मध्यप्रदेश के प्रमुख पर्यटन–स्थलों की जानकारी दीजिए।
2. मध्यप्रदेश के प्रमुख किलों–दुर्गों के संबंध में संक्षेप में जानकारी दीजिए।
3. मध्यप्रदेश के प्रमुख संग्रहालयों की जानकारी दीजिए।
4. मध्यप्रदेश के प्रमुख प्राचीन मंदिरों के संबंध में आप क्या जानते हैं? लिखिए।
5. उज्जैन के पर्याटन स्थलों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. ग्वालियर के दुर्ग का निर्माण कराया था–

(i) राजा सूरजसेन ने (ii) राजा विचित्र सेन ने

(iii) राजा मानसिंह तोमर ने (iv) राजा सिंधिया ने

NOTES

2. बाँधवगढ़ का किला किस रेलमार्ग पर स्थित है–
   (i) वाराणसी–मुंबई (ii) दिल्ली–भोपाल
   (iii) कटनी–बिलासपुर (iv) कटनी–बीना
3. पुराण प्रसिद्ध महिष्मती नगरी किस जिले पर स्थित है–
   (i) उज्जैन (ii) मण्डला
   (iii) बालाघाट (iv) जबलपुर
4. मोतीमहल और जयविलास महल किस राजा से संबंधित है–
   (i) राजा मानसिंह तोमर (ii) राजा मार्तण्ड़ सिंह
   (iii) जीवाजीराव सिंधिया (iv) राजा मदनशाह
5. आम्रकूट पर्वत (अमरकंटक) किन नदियों का उद्‌गम स्थल है–
   (i) गंगा–यमुना (ii) बेतवा–केन
   (iii) नर्मदा–सोन (iv) चम्बल–बेतवा
6. शिव की पुत्री किस नदी को कहा जाता है–
   (i) यमुना (ii) नर्मदा
   (iii) चम्बल (iv) शिप्रा
7. मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय उद्यानों की संख्या है–
   (i) 09 (ii) 11
   (iii) 12 (iv) 17

उत्तर – 1. (iii); 2.(iii); 3.(ii); 4.(iii); 5.(iii); 6. (ii); 7. (i)

■ ■ ■

25. फिल्टर तो चाहिए ही

डॉ. देवेन्द्र 'दीपक'

NOTES

मध्यप्रदेश के ख्याति प्राप्त साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र 'दीपक' भोपाल जिन्हे अपनी पुस्तक 'संत रविदास की राम कहानी' पर वर्ष 2011 का बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार प्रदान किया गया, उनके ललित निबंध 'फिल्टर तो चाहिए ही' में, उन्होंने संस्मरण लेखन की मर्यादाओं, भाषा, शैली, वचन का प्रयोग कैसे किया जाये? को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

मूल निबन्ध :- सायफन एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। फिल्टर करना भी एक प्रक्रिया है, लेकिन 'फिल्टर' एक सामाजिक आवश्यकता भी है। जीवन में अच्छा-बुरा, चाहा-अनचाहा जो कुछ घटित होता है, वह सब न याद रखने लायक होता है और न भूलने लायक। कुछ ही होता है जो हमारी याद में बचा रहता है। बहुत कुछ तो ऐसा होता है जिसे हम भूल जाते हैं।

संस्मरण लेखन में चयन जरूरी है। यह चयन ही 'फिल्टर' है।

संस्मरणों का लिखा जाना जरूरी है। 'आज', 'अब' और 'अभी' से आजकल हम लोग इतने बँधे हैं कि धीरे-धीरे स्मृतिभ्रंश का शिकार होते जा रहे हैं। जिस व्यक्ति का, जिस जाति का, जिस समाज का, जिस देश का स्मृतिभ्रंश हो जाए, उसका विनाश निश्चित है। ऐसे दौर में संस्मरण एक विधा नहीं, बल्कि स्मृतिभ्रंश के विरूद्ध एक प्रतिरोध है। हम सब जानते हैं कि आरोग्य के लिए प्रतिरोध क्षमता का रहना जरूरी है और इसके लिए पथ्य-अपथ्य का विचार रखना ही पड़ता है।

संस्मरण भी साहित्य की अन्य विधाओं की ही तरह साहित्य की एक विधा है। संस्मरण आत्मकथा भी है और जीवनी भी। वह एक संकर विधा है। संस्मरण में कभी लेखक अपने बारे मे लिखता है और कभी दूसरे के बारे में। सही यह है कि तीनों 'पुरूष' संस्मरण में रहते हैं। साहित्य से समाज जो अपेक्षा करता है, वह संस्मरण से भी है। एक दृष्टि से देखा जाए तो संस्मरण में लेखक का दायित्व कहीं अधिक है। वह साहित्य में छाई 'मनहूसियत' को दूर करने के लिए कुछ भी लिखने के लिए स्वतंत्र नहीं है। संस्मरण लेखक को यह अधिकार किसने दिया कि वह अपने साथ में कोलतार का डिब्बा लेकर दूसरे लोगों की चमकती नेम प्लेट को बिगाड़ता फिरे।

इधर संस्मरण के नाम कुछ ऐसी सामग्री प्रकाशित हो रही है, जिसे सामाजिक स्वास्थ्य के लिए वांछनीय नहीं कहा जा सकता। कथ्य-अकथ्य का कोई विचार संस्मरण लेखक नहीं रखना चाहते। वैध-अवैध प्रेम-प्रसंगों का रस ले-लेकर चर्चा, व्यसनों के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन, मैत्री में दुरभि सन्धि का एक पक्षीय उल्लेख, यह सब पाठकों को पढ़ने को दिया जा रहा है।

संस्मरण लेखन में विवाहपूर्व और विवाहेत्तर प्रेम-प्रसंगो की चर्चा में जिन स्त्री-पुरूषों का उल्लेख होता है, उनके बारे में झूठ-सच, नमक-मिर्च लगाकर बात कहने का उन स्त्री-पुरूषों पर, उनके परिवारों पर क्या अच्छा-बुरा असर होता है, क्या इन सरोकारों से मुक्त हुआ जा सकता है? उनकी स्थिति और प्रतिष्ठा पर पड़ने वाले प्रभावों को क्या अनदेखा किया जा सकता है? कहानी और उपन्यास की बात और है। वहाँ पात्र और स्थितियाँ कल्पित होती हैं। संस्मरण में तो संस्मृत पात्र वे है जो हमसफर हैं, हमसे जुड़े हैं। ये वे लोग हैं, जिनसे मिलकर हमारा अपना छोटा-सा 'समाज' बनता हैं।

'काम' को एक पुरूषार्थ तो भारत ने ही माना, लेकिन इसे निर्बाध खेलने और निर्बध रहने के लिए खुला नहीं छोड़ दिया।

सम्बन्धों की गैर आनुपातिक चर्चा से क्या सामाजिक लाभ होगा? कौन-सी सामाजिक क्रांति होगी? सामाजिक स्वास्थ्य में इन चर्चाओं का क्या योगदान होगा?

इधर लेखन-जगत में एक शब्द पढ़ने को मिल रहा है- 'बोल्ड लेखन'। क्या है इसका आशय? बोल्ड लेखन का आशय है यौनाचार, कदाचार, समलैंगिकता का खुला-खुला समर्थन, परिवार की, समाज की, मर्यादाओं की खिल्ली, शील, सदाचार और मूल्य-बोध पर कुटिल व्यंग्य।

कथित बड़े लोगों के छोटे कामों को, कहिए कि खोटे कामों को, याद करने से पाठक को क्या मिलेगा? लेकिन कथित छोटे लोगों के बड़े कामों की चर्चा से पाठक को अवश्य लाभ होगा। अंगुलि-निर्देश अच्छाई की ओर, उदात्त की ओर हो, तो जीवन-संघर्ष में आदमी टूटेगा नहीं, शक्ति पाएगा।

संस्मरण में कभी लेखक अपने को महत्वपूर्ण सिद्ध करने की कोशिश करता है, तो कभी दूसरे को छोटा सिद्ध करने की। कभी स्वयं को प्रभा-मण्डित करता है, तो कभी दूसरे की छवि को धूमिल करता है। ये दो अतिरेक हैं। इन अतिरेकों से संस्मरण लेखकों को बचना चाहिए।

कौन है जो निरापद है? कौन है जो पूर्ण है? कौन है जिस पर आयु, समय और परिस्थिति का दबाब नहीं पड़ता? मनुष्य मनुष्य है- देवता से नीचे ही और पशु से ऊपर ही, लेकिन हमारी दिशा पशुत्व की ओर बढ़ने की तो नहीं हो सकती। सब कपटी हैं, सब चोर हैं, सब मक्कार हैं, सब स्वार्थी हैं, सब निकम्मे हैं, यह ध्वनि यदि संस्मरणों से निकले, तो ऐसे संस्मरणों के लिखने का क्या लाभ? समग्रता में कसौटी यही है कि संस्मरण के पढ़ने-सुनने से शुभ और मंगल की दिशा को विस्तार मिलना चाहिए।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए पेय-अपेय का, खाद्य-अखाद्य का, पथ्य-अपथ्य का विचार सार्वभौम है। इसके लिए शासन ने विभाग खोल रखे हैं। ये विभाग मानक तय करते हैं। इन मानकों का पालन उत्पादकों को करना होता है। दोषी पाए जाने पर उत्पादक के लिए दण्ड का प्रावधान है। इसी तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए पठनीय-अपठनीय का विचार भी सार्वभौम है। शुद्ध पानी के लिए पानी को छानने की व्यवस्था नई तो नहीं है। शहरों में आज लोग 'फिल्टर' का उपयोग करते है। जहाँ 'फिल्टर' नही, वहाँ छानने के लिए आज भी कपड़े का प्रयोग करते हैं। एक कहावत ही है - 'पानी पीजै छान के, गुरू कीजै जान के।' पानी छानकर पिएँ और गुरू देख-भालकर बनाएँ। गाँव में आज जहाँ पानी अधिक गन्दा होता है, वहाँ लोग फिटकरी घुमाकर गंदगी निथार लेते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए यह सब जरूरी समझा जाता है। समाज के मानसिक स्वास्थ्य के लिए क्या बिल्कुल निरपेक्ष हुआ जा सकता है?

शुभ-अशुभ, मंगल-अमंगल, शील-अश्लील, नैतिक-अनैतिक का विचार सामाजिक जीवन में आपसी व्यवहार के लिए आवश्यक है। यह कोई नई बात नहीं है। सदियों से यह सिलसिला चला आ रहा है। यह कल भी आवश्यक था, आज भी आवश्यक है और भविष्य में भी आवश्यक बना रहेगा।

संस्मरण किसी लेखक के अपने हो सकते हैं, लेकिन लिखे जाने पर वह सामाजिक हित की कसौटी पर ही कसे जाएँगे? उनकी स्वीकार्यता के समय सामाजिक स्वास्थ्य का सवाल उठाया ही जाएगा?

यह सही है कि साहित्यकारों के संस्मरण हमें बहुत-सी सामग्री देते हैं, जिनमें साहित्यकार के, उसकी कृति के पेंचों को समझने में सहायता मिलती है। हिन्दी में 'बायोग्राफिकल क्रिटिसिज्म' की कमी को किसी हद तक ये संस्मरण पूरा भी करते हैं, लेकिन सामाजिक स्वास्थ्य की चिंता को ध्यान में रखना जरूरी है।

संस्मरण पाठकों में सकार को जगाएँ, विधायक सोच-समझ के विकसित होने में सहायक हों, आरोहरण में विश्वास पैदा करें, मूर्त संकल्प बनने की प्रेरणा दें, मूल्यधर्मी चेतना और सामाजिक न्याय के बोध को पुष्ट करें, संस्मरण लेखन में इन बिंदुओं की अनदेखी नहीं की जा सकती।

देश की अर्थव्यवस्था में निजीकरण का विरोध करने वाले लेखक संस्मरण लेखक के रूप में साहित्य में निजीकरण की एक अजीब राह अपना रहे हैं। पब्लिक सेक्टर के समर्थक साहित्यकार साहित्य को एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की तरह चलाना चाह रहे हैं।

स्मरण और संस्मरण के बीच में 'सायफन' है, लेकिन साथ में 'फिल्टर' भी चाहिए। यह 'फिल्टर' कोई और नहीं, लेखक स्वयं लगाएगा। वह कब, कहाँ, कैसा 'फिल्टर' लगाता है, यह उसकी अपनी रूचि,

संस्कार, हेतु और प्रयोजन पर निर्भर करता है। साहित्य में बेड़ियाँ नहीं, बंधन काम करते हैं। बेड़ियाँ दूसरे डालते हैं, बंधन व्यक्ति स्वयं लगाता है।

संस्मरण लेखन मे ध्यान रखने योग्य बातें :-

एक अच्छे संस्मरण में निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ होती हैं - जिनका संस्मरण लेखन में विशेष ध्यान रखा जाना चाहिये।

1. संस्मरण ऐसा होना चाहिए जो पाठकों में सकारात्मक विचारों को जगाए।
2. संस्मरण, विधायक सोच-समझ के विकसित होने में सहायक होना चाहिए।
3. आरोहरण में विश्वास पैदा करने वाला संस्मरण होना चाहिए।
4. एक अच्छा संस्मरण मूर्त संकल्प बनने की प्रेरणा देने वाला होना चाहिए।
5. मूल्यधर्मी चेतना तथा सामाजिक न्याय के बोध को पुष्ट करने वाला संस्मरण होना चाहिए।

वर्तमान संस्मरण लेखन के दोष :-

1. सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अवांछनीय
2. कथ्य-अकथ्य का कोई विचार नही
3. वैध-अवैध प्रेम-प्रसंगो की रस ले-लेकर चर्चा
4. व्यसनों के अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन
5. मैंत्री में दुरभि सन्धि का एक पक्षीय उल्लेख
6. विवाह पूर्व एवं विवाहेत्तर प्रेम-प्रसंगों की चर्चा
7. सामाजिक स्वास्थ्य के लिए दोषपूर्ण सामग्री

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. संस्मरण लेखक को किन बातों से बचना चाहिए?
2. संस्मरण लेखन में किन बातों को महत्व देना चाहिए?
3. अच्छे संस्मरण की विशेषताएँ लिखिए।
4. आजकल के संस्मरण लेखन में क्या-क्या दोष हैं?
5. संस्मरण लेखन क्यों आवश्यक है?
6. संस्मरण लेखन में 'फिल्टर' से लेखक का क्या आशय है?
7. कथित बड़े लोगों को छोटे कामों (खोटे कामों) को याद करने से पाठक को क्या मिलेगा?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. 'फिल्टर तो चाहिए ही' संस्मरण के लेखक का नाम है-

   i. विद्यानिवास मिश्र ii. देवेन्द्र 'दीपक'

   iii. धर्मपाल iv. रामनारायण उपाध्याय

NOTES

2. संकर विधा किसे कहा गया है–

i. आत्मकथा ii. जीवनी

iii. संस्मरण iv. यात्रा वृतान्त

3. साहित्य में फिल्टर कौन लगाएगा–

i. लेखक स्वयं ii. आलोचक

iii. पत्रकार iv. मीडिया

4. साहित्य में बेड़ियाँ नहीं तो क्या काम करते हैं–

i. आजादी ii. बंधन

iii. सम्बन्ध iv. इनमें से कोई नहीं

5. पब्लिक सेक्टर के समर्थक साहित्यकार साहित्य को किस तरह चलाना चाहते है?

i. पब्लिक कं. ii. प्रायवेट कं.

iii. सहकारी कं. iv. घरेलू कं.

उत्तर – 1. (ii); 2. (iii); 3. (i); 4. (ii); 5. (ii)

■ ■ ■

26. भारतीय वनस्पतियाँ और जीव

NOTES

पृथ्वी पर जीवन अथवा जैविक घटकों के अंतर्गत सभी जीवधारी – वनस्पति और प्राणियों को शामिल किया जाता है इसमें सूक्ष्मतम बैक्टीरिया (जीवाणु) से लेकर विशालतम हाथी और व्हेल तथा शैवाल से लेकर वटवृक्ष जैसे विशाल वृक्ष आते है। एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 75 हजार प्राणियों की प्रजातियाँ एवं लगभग 45 हजार पेड़ – पौधों की प्रजातियाँ विद्यमान है। 75 हजार प्राणियों में 50 हजार कीटों की प्रजातियाँ है। अन्य प्रजातियों में चार हजार प्रकार के मोलस्क, दो हजार प्रकार की मछलियाँ, बारह सौ प्रकार के पक्षी, 420 सरीसृप प्रजातियाँ, 340 स्तनधारी प्रजातियाँ और 140 प्रकार के उभयचर जीव है।

भारत में वनस्पतियों की प्रजातियों में 7000 प्रजातियाँ ऐसी है, जो स्थानीय है और दुनिया में अन्यत्र कहीं नहीं मिलती है। हमारे देश में 2,500 किस्म के ऐसे पौधे है, जिनका औषधीय महत्व है। वे सभी जीव एवं वनस्पतियाँ जो अपने प्राकृतिक वास में प्राकृतिक रूप से पाई जाती है, उन्हें वन्यजीव (Wlidlife) कहा जाता है। इसमें वनस्पति, प्राणी दोनों सम्मिलित है।

भारत में पायी जाने वाली प्रमुख वनस्पतियाँ :– भारत एक विशाल देश है। इस कारण यहाँ पायी जाने वाली वनस्पतियाँ जलवायु की भिन्नता के कारण भिन्न – भिन्न तरह की पाई जाती है। यहाँ विषुवतरेखीय जलवायु से लेकर अल्पाइन किस्म की वनस्पति भी पाई जाती है। जलवायु के आधार पर भिन्नता के कारण भारत में पायी जाने वाली वनस्पतियों को निम्नांकित स्वरूपों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **उष्ण कटिबन्धीय सदापर्णी पौधे :–** भारत में इस प्रकार की वनस्पतियाँ 250 सेमी. से अधिक बारिश वाले क्षेत्रों में पायी जाती हैं। ये भारत के जिन क्षेत्रों में पायी जाती है, उनमें प्रमुख हैं – महाराष्ट्र, कर्नाटक, तथा केरल राज्यों के पश्चिमी घाट, अण्डमान – निकोबार द्वीप समूह, उत्तर – पूर्वी भारत में बंगाल तथा असम के पर्वतीय ढाल।

इन प्रदेशों में वार्षिक औसत तापमान लगभग 27 डिग्री सेन्टीग्रेड और आर्द्रता 70 प्रतिशत से भी अधिक होती है। ये वन विषुवत रेखीय वनों की जाति के है। अधिक वर्षा व ऊँचे ताप के कारण ये घने और सदाहरित होते हैं। इन वृक्षों की ऊँचाई 30 से 60 मीटर तक होती है। शाखाएँ छोटी – छोटी होती है। वृक्षों के ऊपरी सिरे छतरीनुमा होते है। वृक्ष एक – दूसरे के समीप होते है जिसके कारण सूर्य का प्रकाश भी कठिनाई से भूमि तक पहुँच पाता हैं। इन वनों में उत्पन्न होने वाले महत्वपूर्ण वृक्षों – गुरजन, आन, नागकेसर, जेक, अयनी, चपलाश, आन, चाँप, मेचीलस आदि। कठोर स्थान व मिलेजुले होने के कारण इन वनों का शोषण अधिक हुआ है।

2. **पर्णपाती अथवा मानसूनी पौधे :–** ये पौधे विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत, छोटा नागपुर का पठार तथा असम की पहाड़ियों, दक्षिण पूर्वी घाट पर मिलते हैं। यह सदापूर्णी वनों के निकट उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत है। मानसूनी पौधों के अन्तर्गत मुख्य वृक्ष है – साल, सागौन, साखू, लोह, काष्ठ, चंदन, रोजवुड, एवोनी, आम आदि। इनके अलावा आँवला, महुआ, कत्था, पैडुक, शहतूत आदि भी इनमें सम्मिलित है।

3. **मानसूनी वनस्पति :–** इस प्रकार के वन 50 सेन्टीमीटर से 100 सेन्टीमीटर तक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इनके अन्तर्गत आम, महुआ, बरगद शीशम, हन्दू, कीकर, बबूल आदि प्रमुख किस्में हैं। इन वृक्षों को जड़ें लम्बी व नुकीली गाठें होती है। वृक्षों के बीच – बीच में कँटिदार झाड़ियाँ और घास के मैदान, सवाना की भाँति होते हैं। उत्तरप्रदेश व पश्चिमी बंगाल में भूँज व काँस उगती है।

4. **मरूस्थली और अर्द्ध – मरूस्थली वनस्पति :–** इसके अन्तर्गत मुख्य वनस्पति बबूल, नागफनी, रामवास, खेजड़ा, कौर, खजूर आदि शुष्क वनस्पति में उगने वाली प्रमुख किस्में हैं। यह वनस्पति पंजाब, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में पाई जाती है।

5. **शीतोष्ण कटिबन्धीय सदापर्णी वनस्पति :-** इस वर्ग में नीलगिरी, अनामलाई, पतली, शिवराय आदि पहाड़ियों पर पीला चम्पा प्रमुख किस्म है।

6. **पूर्वी हिमालय में पाये जाने वाले पेड़ - पौधे :-** इसमें मुख्यतया दालचीनी अमूरा, दिलेनिया, साल, लाख, चिनौली, शीशम, चंदन, खैर और अमेल आदि के वृक्ष भी उगते हैं। अनेक प्रकार की लताओं, झाड़ियों और बाँस उग जाने के कारण ये वन घने हो जाते है। लम्बी घास इन वनों में खूब उगती है।

7. **पश्चिमी हिमालय की वनस्पति :-** इस क्षेत्र में वर्षा की न्यूनता स्पष्ट देखने को मिलती है। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति में भी अन्तर पाया जाता है। यहाँ पाये जाने वाले वृक्षों में साल, सेमल, ढाक, शीशम, जामुन, बेर आदि पाये जाते है तथा चीड़, देवदार, नीला पाइन, एल्डर एल्ब, बर्च, पॉपलर आदि वृक्ष मिलते है। यहाँ सिल्वर फर के वृक्ष अधिक पाये जाते है।

प्रमुख पेड़ - पौधे :-

1. **वट वृक्ष :-** यह अपनी घनी व शीतल छाया के लिए मशहूर है। भारत में पाए जाने वाले वृक्षों में यह सबसे बड़ा और अधिक समय तक जीवित रहने वाला पेड़ है। वट वृक्ष की शाखाओं से आकाश मूल निकलती है जो पृथ्वी पर पहुँचकर साधारण जड़ों के रूप में परिवर्तित हो जाती है। मोटी होने पर यह तने के समान प्रतीत होती है। यही कारण है कि यह वृक्ष अक्षय कहलाता है। भारत में महिलाएँ वट सवित्री का व्रत रखती है और इसकी पूजा करती है।

2. **पीपल :-** भारत में पीपल, आँवला, वटवृक्ष, तुलसी आदि की पूजा की जाती है। भारतीय संस्कृति में पीपल को भगवान श्रीकृष्ण का अवतार माना गया है। पीपल से पर्यावरण सुधार की अद्वितीय क्षमता का ज्ञान भारतवासियों को प्राचीन समय से ही था। इसकी पत्तियाँ हाथी, ऊँट, बकरी व भेड़ों के चरने के काम आती है। इसकी छाल और दूध औषधि के काम आते है।

3. **नीम :-** नीम पूरे भारत में सुगमता से पाया जाता है। यह मूल रूप से भारतीय वृक्ष है। प्राचीन समय से ही मार्गो के किनारे छाया के लिए इसका रोपण किया जाता रहा है। मराठी व गुजराती में इसे निम्बा, तमिल व मलयालम में बेपा कहते है। ग्रामीण क्षेत्रों में नीम के दातून करने की आम प्रथा है। नीम की पत्ती में कीटनाशक गुण होते है: इसलिए अनाज के सुरक्षित भण्डारण में इनका उपयोग होता है। चैत्र मास में नीम की कोंपले खाने की परम्परा है। इनके फल निम्बोली कहलाते है। इनके बीजों से तेल प्राप्त होता है, जिसे मार्गोस आइल कहते है। नीम का अर्थ होता है 'आधा' अर्थात् नीम को आधा वैद्य भी कहते है।

4. **आम :-** यह एक सदा हरित ऊँचा वृक्ष है। आम का फल सब फलों का राजा है। जनवरी - मार्च में यह पुष्पित होता है। अप्रैल में इसमें फल लग जाते है। हमारे देश में आम की कई किस्में पाई जाती है।

5. **महुआ :-** यह पेड़ अपने फूलों के लिए जाना जाता है। मध्य भारत के पहाड़ी स्थानों पर ज्यादा होता है। यह पेड़ साठ से सौ फुट तक ऊँचा होता है। बसन्त ऋतु में इसमें पीले - पीले फूल आ जाते है। जुड़ी हुई आठ सौ पंखुड़ियों वाला यह फूल आकार में प्याले जैसा होता है। जब सारे पत्ते गिर जाते है, तब पेड़ फूलों से लद जाता है। फूलों में से मीठी, नशीली - सी सुगन्ध आती है। गूदेदार फलों में रस भरा रहता है। भालू, सियार इन्हें चाव से खाते है। इनके फलों से एक प्रकार की शराब भी बनाई जाती है। अँग्रेजी में इसे बटर ट्री कहते है।

6. **आँवला :-** आँवला साधारण ऊँचाई का वृक्ष है। इसकी छोटी - छोटी पत्तियाँ विशेष हरी नहीं होती है। मार्च से मई तक इसमें हरे पीले और छोटे पुष्प प्रकट होते है: तथा नवम्बर से फरवरी तक फल पकते है। औषधियों में आँवले का प्रयोग भिन्न - भिन्न रूपों में किया जाता है।

7. **तुलसी :-** हमारे देश में प्राचीनकाल से ही तुलसी की मान्यता रही है। हिन्दू परिवारों में तुलसी की पूज्य तथा पवित्र माना जाता है। प्राचीन समय में इसे सुरस और राक्षसी कहा जाता था। पुराणों में इसे वृन्दा भी कहा जाता है। कहते है, जहाँ तुलसी होती है, वहाँ रोग नहीं फटकते है। तुलसी के पत्ते, मूल, फल और बीज चिकित्सा के काम आते है।

8. **पलाश :**– 'जंगल की ज्वाला' के नाम से लोकप्रिय यह वृक्ष भारत के शुष्क और उष्ण प्रदेशों में मिलता है। जनवरी के प्रारम्भ होते ही इस पेड़ पर कलियाँ दिखाई देती है। फरवरी, मार्च में यह पेड़ पुष्पों की लालिमा से लाल हो जाता है। पलाश के फूलों से आकर्षक पीला रंग बनता है। पलाश के पत्तों से पत्तल–दोने बनाए जाते है।

9. **बिल्व :**– बिल्व एक मध्यमाकार छोटा वृक्ष है। पत्ते समान्यतया तीन पर्णकों में विभक्त होते है। फल गोल, चिकने तथा पकने पर पीले पड़ जाते है इनके कठोर छिलकों में स्वाददार गूदा भरा होता है। इसके फलों का रस आँतों के रोगों में लाभ पहुँचाता है।

10. **नारियल :**– यह काफी ऊँचा एवं शाखारहित वृक्ष है। नारियल मांगलिक प्रंसगों की सामग्री में प्रमुख होता है। इसके फल में मीठा जल होता है। नारियल से तेल भी निकाला जाता है। नारियल का पानी पीने से गुर्दे ठीक से काम करने लगते हैं। समुद्र किनारों पर नारियल के पेड़ देखे जा सकते है।

प्रमुख जंगली प्राणी :–

1. **सिंह :**– भारत में अब केवल गुजरात के जूनागढ़ जिले के गिर वन में ही सिंह पाए जाते है। एक शताब्दी के पहले ये भारत में पश्चिम से पूर्व तक सर्वत्र पाए जाते थे। जूनागढ़ के शासकों ने इसके शिकार का निषेध करके इसे विलुप्त होने से बचाया था। वर्तमान में इनकी संख्या 250 लगभग है। इसे हमारे राज्यचिन्ह में स्थान पाने का गौरव मिला है। इसे जंगल का राजा भी कहते है। ये घने जंगलों के बजाय घास के खुले मैदानों में रहना पसन्द करते है। नर के कन्धे पर एक फुट लम्बे बाल या अयाल होते है। इसलिए इन्हें बब्बर शेर कहा जाता है। सिंह, बाघ, तेंदुआ, चीता सभी बिल्ली परिवार के सदस्य है।

2. **नीलगाय :**– यह हिरन परिवार का सदस्य है। यह बंगाल और असम को छोड़कर सारे देश में पाया जाती है। नर के छोटे सींग रहते है: लेकिन मादा बिना सींग की होती है। नर के गले पर बालों का गुच्छा भी निकला रहता है।

3. **गेंडा :**– गेंडा हमारे देश का प्रसिद्ध जानवर है। हमारे यहाँ ये असम के जंगलों में और नेपाल की तराई में ही पाए जाते है। इनकी संख्या अब बहुत कम रह गई है। गेंडा साढ़े दस फुट लम्बा और पाँच फुट ऊँचा होता है। इसके थूथन पर एक लम्बी सींगनुमा खाल होती है। यह सींग नहीं बल्कि कड़े बालों के चिपक जाने से सींग जैसा दिखता है। इसकी खाल मोटी और सिलेटी होती है।

4. **बारहसिंगा :**– इसके प्रत्येक सींग में छह – छह शाखाएँ फूटी रहती है। इसीलिए इसे बारहसिंगा कहते है। हमारे देश में ये हिमालय की तराई तथा मध्य प्रान्त के जंगलों में पाए जाते है। मध्यप्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में बारहसिंगा देखा जा सकता है। यह मध्यप्रदेश का राज्य – पशु है।

5. **जंगली गधा :**– यह थार के कच्छ के रण तक ही सीमित है। इसकी संख्या काफी घट गई है। इसे गोखर भी कहा जाता है। इसका कद पालतू गदहों से ऊँचा होता है। इनके बड़े – बड़े समूह होते है। यह घास – पात खाता है। ये भागने में काफी तेज होते है। इन्हें पकड़ना आसान नहीं होता है।

6. **कस्तूरी मृग :**– यह बिना सींग का हिरन होता है। यह कस्तूरी मृग के नाम से प्रसिद्ध है। यह आठ हजार फुट ऊँचाई वाले हिमालय के जंगल में रहता है। इसकी लम्बाई तीन फुट से ज्यादा नहीं होती। इसके बदन का रंग गाढ़ा भूरा रहता है, जिस पर कहीं – कहीं सिलेटी चित्तियाँ पड़ी रहती है। इनकी पिछली टाँगें बड़ी रहती है। यह अकेला रहनेवाला प्राणी है। नर के पेट के पास एक ग्रंथि होती है, जिसमें एक प्रकार का गाढ़ा सुगन्धित पदार्थ जमा हो जाता है। यही कस्तूरी या मुश्क है।

7. **सोन चिड़िया :**– यह एक भारी शरीर वाला पक्षी है, जो अपनी मजबूत लम्बी टाँगों के कारण ऊँचाई में चार हजार फुट तक पहुँच जाता है। नर – मादा एक जैसे रहते है। इसके ऊपर का रंग कत्थई रहता है। यह पंजाब, कच्छ, गुजरात तथा मध्यप्रदेश में पाया जाता है। इसका माँस स्वादिष्ट होने से इनका काफी शिकार हुआ है और यह पक्षी विलुप्ति की कगार पर पहुँच गया है।

8. **मोर :-** शक्ति और सन्दरता का अदुभुत मेल है मोर। इसकी चोंच बहुत शक्तिशाली होती है। माथे पर कलँगी, सुराहीदार नीली गर्दन और संतरगें पंख। मोर जब अपने पंख फैलाकर नृत्य करता है तो बडा ही सुन्दर दृश्य नजर आता है। मोरनी झाड़ियाँ में दो से छह अण्डे एक बार में देती है। मोर भारत के अधिकतर राज्यों में पाया जाता है। मोर को हमारे राष्ट्रीय पक्षी होने का गौरव प्राप्त है।

NOTES

9. **तेन्दुआ :-** इसके शरीर पर काले चट्टे (Spots) होते हैं तथा इसका आकार बाघ से कम होता है। यह खतरनाक जानवर है, क्योंकि यह पेड़ पर चढ़ सकता है, कहीं भी रह सकता है, कुछ भी खा सकता है तथा आक्रामक एवं एकांकी होता है। यह भारत में पाया जाता है। यह पूरे वर्ष प्रजनन करता है तथा एक गर्भ में 2 - 4 बच्चे 13 सप्ताह के गर्भकाल के बाद होते है। यह कभी - कभी आदमखोर हो जाता है।

10. **हाथी :-** यह अपने भव्य एवं भारी शरीर के द्वारा पहचाना जाने वाला जंगली प्राणी है। यह पर्वतीय जंगलों में पाया जाता है। यह हमेशा समूह में रहता है। यह बुद्धिमान तथा संवेदनशील प्राणी है तथा भारी बोझ को ढोने एवं परिवहन हेतु भी इनका उपयोग किया जाता है। इनकी लम्बी आयु होती है।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. देश की विभिन्न वनस्पतियों पर एक निबंध लिखिए।
2. भारत के बहु-उपयोगी पेड़ों की जानकारी प्रस्तुत कीजिए।
3. भारत के प्रमुख जंगली प्राणियों पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
4. भारत की प्रमुख वनस्पतियों के सम्बंध में आप क्या जानते है? विस्तार से लिखिए।
5. अक्षय वृक्ष किसे कहते है? इसका यह नाम कैसे पड़ा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः -

1. निम्नलिखित में से कौन - सा वृक्ष औषधीय है।

   i. महुआ ii. बट
   iii. पीपल iv. नीम

2. 'जंगल की ज्वाला' नाम से कौन - सा वृक्ष लाकप्रिय है।

   i. पलाश ii. आम
   iii. आँवला iv. वट

3. निम्नलिखित में से किस वृक्ष की पूजा घर - घर की जाती है।

   i. पीपल ii. बट
   iii. तुलसी iv. आँवला

4. हमारा राष्ट्रीय पक्षी है।

   i. सोन चिड़िया ii. हंस
   iii. मोर iv. बारहसिंगा

उत्तर - 1. (iv); 2. (i); 3. (iii); 4. (iii)

■ ■ ■

27. पर्यावरण

NOTES

जीवन कभी भी शून्यता/निर्वायु (Vaccum) में नही पाया जाता है, यदि हम सजीव-मनुष्य सहित प्राणियों एवं पादपों की जीवन क्रियाओं का अध्ययन करें, तब हमको यह ज्ञात या महसूस होगा, कि सभी सजीव जीव एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। जैसे कि: गाय, हिरण, हाथी अपनी उत्तरजीविता या जीवित रहने के लिये पौधों को खाते हैं, और शेर, चीता प्राणियों को खाते हैं। सभी पौधे मृदा (Soil) या मिट्टी से अपना पोषण प्राप्त करते हैं और यह पोषण पौधों को मानव एवं प्राणियों के द्वारा नाइट्रोजनयुक्त पदार्थो के उत्सर्जन/बहिकृष्ण करने के द्वारा प्राप्त होता है। अत: **प्रत्येक सजीवन जीव चारों ओर से पदार्थों एवं प्रभावों/शक्तियों द्वारा घिरे रहते हैं, जोकि पर्यावरण को निर्मित करते हैं,** और जिससे अपनी आवश्यकताओं को व्युत्पन्न करते है। अपनी उत्तरजीविका या जीवित रहने के लिये, पादप, प्राणी या सूक्ष्मजीव को अपने वातावरण से ऊर्जा प्रदाय पदार्थो का प्रदाय और व्यर्थ पदार्थो को बाहर निकालने की आवश्यकता होती है। इन मूलभूत आवश्यकताओं के लिये प्रत्येक सजीव जीवन विभिन्न **निर्जीव या अजैविक** (non-living or abiotic) एवं **सजीव** (Living biotic) **पर्यावरण के घटकों** पर निर्भर रहने के लिये और अन्तरक्रिया करने के लिये कटिबद्ध या बाध्य होता है। अत: इससे हम यह निष्कर्ष निकालते है कि कोई भी सजीव जीव-पादप या प्राणी, उसके चारों ओर पाये जाने वाले अन्य प्राणियों एवं पादपों के साथ-साथ भौतिक कारकों-मृदा, वायु, जल, प्रकाश तापक्रम, वर्षा, वायु/हवा, धारायें, सौर्य विकिरण आदि और **जैविकी कारकों** (biotic faciors) भोजन आदि से प्रभावित होता है। **अजैविकी** (abiotic) पर्यावरणीय घटकों के अन्तर्गत मूलभूत अकार्बनिक, कार्बनिक यौगिकों, जैसे कि, ऑक्सीजन, जल, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड, कार्बोनेट्स, फॉस्फोरस एवं विभिन्न प्रकार के कार्बनिक यौगिक जीवों की अनुक्रियाओं का मृत्यु के उपजात/उपोत्पाद के द्वारा प्रभावित होता है।

उपरोक्त वर्णन से यह निश्चित हो चुका है कि किसी भी जीव को चारो और से जो आव्रत एवं प्रभावित करता है वह उसका पर्यावरण/वातावरण होता है। जिसके अन्तर्गत भौतिक के साथ-साथ जैविक कारक आते है। विज्ञान की वह शाखा जोकि पादप, मनुष्य सहित प्राणियों के वातावरण या पर्यावरण के साथ सम्बंधित होती है उसको **पारिस्थितिकी** या **पर्यावरणीय** जैविकी कहते है।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी : (Environment and Ecology)

पर्यावरण प्रत्येक सजीव की सम्पूर्णता को दर्शाता है, जोकि प्राणियों का उत्तरजीविता या प्रजनन के अवसरों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जीवों के घनिष्ठ रूप से स्थानीय एवं आस-पास के वातावरण को सूक्ष्म-पर्यावरण (Micro-environment) कहते हैं। सजीव जीवों के बाहरी भाग एवं उसके सूक्ष्म वातावरण में पाई जाने वाली भौतिक एवं जैविकी दशाओं की सम्पूर्णता को **ब्रहत/दीर्घ पर्यावरण** (Macro-environment) कहते है। विश्व या संसार का सम्पूर्ण जीवन एवं जीवन आधारी पर्यावरण भूमण्डल के चारों और बहुत सूक्ष्म एवं अनियमित संवरण तक सीमित होता है। पृथ्वी के सजीव पदार्थो के सूक्ष्म आच्छादन को **जैवमण्डल**(biosphere) या **परिमण्डल** (Ecosphere) कहते है।

1. **वायुमण्डल (Atmosphere)**- गैसों के सुरक्षात्मक आवरण को जो पृथ्वी को चारों ओर से आव्रत करता है, वायुमण्डल कहलाता है। यह पृथ्वी का उसी प्रकार से भाग होता है जिस प्रकार भूमि या जल होता है। इसको हम महसूस नहीं कर सकते, केवल वायु गति करती है। भूमि या जल के सामन वायुमण्डल अधिक सघन नहीं होता है, लेकिन यह भार एवं दबाव रखता है। वायुमण्डल में अनेक गैसों का मिश्रण पाया जाता है। इसमें से दो प्रमुख गैसें हैं- ऑक्सीजन 21% भाग एवं नाइट्रोजन 78% भाग।

2. **स्थलमण्डल (Lithosphere)**- स्थलमण्डल चट्टानों का ठोस भू-पृष्ठ (Crust) होता है, जिसकी सतह पर हम सभी सजीव जीव जीवन व्यतीत करते हैं। वास्तव में स्थलमण्डल पृथ्वी के भू-पृष्ठ

NOTES

में पाये जाने वाले खनिजों को संदर्भित करता है, और जटिल एवं खनिजों के परिवर्तनीय मिश्रण, कार्बनिक पदार्थ, जल एवं वायु जो कि मृदा बनाते है को भी संदर्भित करता है।

परिभाषा - पर्यावरण
(Definition - Environment)

पर्यावरण (Environmetn) का शाब्दिक अर्थ "**वह जो हमें चारों ओर से घेरे हुये है**" निकलता है। पर्यावरण (Environment) शब्द एक संशिलष्ट (Composite) शब्द है, जो कि उन दशाओं को दर्शाता है, जिसमें जीव (Organisms) आवास करते है, इसमें वायु, जल, भोजन (Food), सूर्य प्रकाश (Sun light) आता है, जो सभी प्रकार के सजीवों (Living beings), पादप जीवन (Plants life) की मूलभूत आवश्यकता है, जिससे कि वह अपने कार्यों को निरंतर संचालित करते है। पर्यावरण (Environment) सभी प्रकार के सजीवों के अस्तित्व एवं विकास के लिए उपयुक्त दशाओं को निर्मित करता है।

पर्यावरण दो शब्दों- "परि" एवं "आवरण" से बना है। "परि" शब्द का तात्पर्य है- चारों तरफ एवं "आवरण" से आशय है, घेरा अर्थात पृथ्वी के चारों तरफ के घेरे को पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण शब्द प्राचीन समय से प्राणी, पादप एवं प्रकृति वैज्ञानिकी (Naturalists) के लिए एक पहेली बना हुआ है। विभिन्न युगों में जीव-विज्ञान (Biologists) भूगोलवेत्ता (Geographer),पर्यावरणवेत्ता (Environmentalists), भूवैज्ञानिक (Geologists), पर्यावरण शब्द को परिभाषित करने का प्रयास करते आ रहे है। पर्यावरण (Environment) या एनवायरमेण्ट शब्द फ्रेन्च (French) भाषा के "एनवायरन- Environe" से बना है, जिसका अर्थ होता है- समस्त पारिस्थितिकी (Ecology)या परिवृत। इसके अन्तर्गत सभी दशायें, परिस्थितियाँ, स्थितियाँ एवं प्रभाव आते है जो कि जैविकी समूह पर प्रभाव डाल रहे है। पर्यावरण (Environment)अंग्रेजी शब्द एनवायरमेण्ट (Environment) का अनुवाद है, जो कि दो शब्दों "एनवायरन" (Environe)एवं 'मेण्ट' (Ment) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ- आर्वत/आव्रत करना है, या जो चारों ओर से घेरे हुए है, वह पर्यावरण है। शाब्दिक रूप स इसका तात्पर्य आसपास/प्रतिवेश या 'सराउॅन्डिग्स (Surroundings) है जिसका आशय होता है "चारों ओर से घेरे हुए" जैसे कि पृथ्वी (Earth) वायुमण्डल से आव्रत है, इसी प्रकार धरातलीय जीव स्थल (Lithosphere) जल, वायु एवं इसके विभिन्न घटकों (Components) के द्वारा आव्रत है। अर्थात् पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है, जो मनुष्य एवं सजीवों को जीवन पर्यन्त उनकी जीवन शैली एवं कार्य शैली को प्रभावित करता है। मनुष्य एवं सजीवों के सभी पक्षों को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है।

पर्यावरण को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है, जैसे कि:-

1. **पर्यावरण पृथ्वी के भौतिक घटकों** (Physical Components) का प्रतिनिधि है, जबकि मनुष्य अपने वातावरण को प्रभावित करने वाला प्रमुख/महत्वपूर्ण कारक है।

2. **पर्यावरण** (Environment) दशाओं की सम्पूर्णता को दर्शाता है, जो कि मनुष्य को एक निश्चित स्थान एवं समय में निश्चित बिन्दु पर आवरित करता है।

3. **पर्यावरण सभी सामाजिक** (Social), **आर्थिक** (Economical), **जैविकी** (Biological), **भौतिक** (Physical) एवं **रासायनिक** (Chemical) कारकों का सम्पूर्ण योग (Sum Total) है, जो कि मनुष्य के प्रतिवेश (Surroundings) को स्थापित करता है, जो कि अपने पर्यावरण का रचयिता (Creator) एवं निर्माता (Moulder) है।

4. पर्यावरण चारों ओर की उन बाहरी दशाओं का **सम्पूर्ण योग** (Sum Total) है, जिसके अन्दर एक जीव (Organism) या समुदाय (Community) रहता है।

5. **ब्रिटेन के विश्व ज्ञान कोश** (Encyclopedia of Britanica) के अनुसार- "पर्यावरण उन सभी प्रकार के बाहरी प्रभावों का समूह है, जो कि जीवों (Organisms) को भौतिक, एवं जैविक शक्ति से प्रभावित करते है तथा प्रत्येक सजीव को आव्रत किये रहते है।"

6. **विश्व शब्द कोश** (World Dictionary): के अनुसार पर्यावरण के अंतर्गत उन सभी प्रकार की दशाओं, संगठन एवं प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है, जो कि किसी भी जीव (Organisms), प्रजाति (Species) के उद्भव (Origin), विकास (Development) एवं मृत्यु को प्रभावित करते है।

पर्यावरण की व्यापक रूप से स्वीकृत परिभाषा निम्न प्रकार से है:

प्राणियों/सजीवों की प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करने वाली आस-पास की सभी जैविक-अजैविक स्थितियों का समुच्चय पर्यावरण कहलाता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर सारांश निकाला जा सकता है कि-पर्यावरण किसी एक तत्व (Element) का नाम नहीं है, बल्कि उन समस्त दशाओं या तत्वों का सम्पूर्ण योग है, जो कि सभी प्रकार के सजीवों (Living beings) के जीवन एवं विकास को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते है।

विश्व साहित्य में व्याप्त पर्यावरणीय संचेतना प्राचीन काल से मनुष्य को स्वस्थ-पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रेरित करती रही है। भारतीय साहित्य में पर्यावरणीय संचेतना सर्वत्र संव्याप्त है। वेद, उपनिषद, आरण्यक, पुराण आदि धार्मिक साहित्य के साथ-साथ महाकवि वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास, अश्वघोष, भारवि, श्री हर्ष, माघ, भवभूति, बाणभट्ट, भर्तृहरि, भोजराज आदि रचनाकारों के साहित्य में प्राकृतिक पर्यावरण का चित्रण उनकी तद्विषयक चिंताओं को स्वर देता है।

ऋषिओं ने पर्यावरण की पवित्रता की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होंने मानव जीवन के साथ अनुस्यूत प्रकृति की एकसूत्रता को बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था। इसीलिए प्रकृति के साथ उनके अपरोक्ष संवाद-संदर्भ वैदिक साहित्य में सर्वत्र सुलभ है।

विचारणीय है कि आकाश, अंतरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ आदि समस्त प्राकृतिक-स्थितियाँ सभी की शान्त गति में कोई व्यतिक्रम न हो। वेदों में नदी, वृक्ष, वायु, पृथ्वी, अग्नि आदि प्राकृतिक तत्त्वों को सूक्तों के माध्यम से संस्तुत किया गया है। 'ऋग्वेद' में वर्णित नदी - सूक्त देश की पवित्र नदियों के प्रति उच्चाग्रह, हार्दिक अनुराग और उत्कृष्ट प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है। 'पृथिवी-सूक्त' में पृथ्वी के प्रति ऋषि का मातृभाव मनुष्य की धरती के प्रति रागात्मकता का द्योतक है। 'अथर्ववेद' के 'अरण्यानी-सूक्त' में प्रकृति की 'अरण्यानी' संज्ञक नारी-कल्पना अत्यंत मनोहर है। ऋषि अमूर्त प्रकृति रूप अरण्यानी से प्रश्न करते है- ''हे अरण्यानी! जब मेरे पुत्र वनों को काटकर काष्ठ लाते हो, तब तुम कैसा अनुभव करती हो?''- यह प्रश्न प्रकृति के प्रति मानवीय संचेतना को व्यक्त करता है। संस्कृत का वैदिक-साहित्य इस दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है।

प्रकृति के प्रति पूज्यभाव और प्राकृतिक उपादानों में देवी-देवताओं का दर्शन भारतीय-परम्परा में पर्यावरण संरक्षण का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। जहाँ अन्य देशों में नदी केवल जल स्त्रोत मात्र है, वहाँ भारत में वह माँ है। 'गंगा मैया', 'नर्मदा मैया', 'यमुना मैया', जैसा पूज्यभाव कहीं-न-कहीं इन नदियों के जल को प्रदूषण मुक्त बनाए रखने की ही अंत:प्रेरणा है।

भारतीय-परम्परा विशालकाय पीपल और बरगद से लेकर लघुकाय तुलसी तथा दूर्वा तक की पूजा और सुरक्षा हेतु प्रेरित करती है। उसमें स्थूलकाय हाथी गणेश का प्रतीक है, उल्लू लक्ष्मी का वाहन है तो कुछ चूहे और चींटी तक पूज्य हैं। मत्स्य और कच्छप यहाँ नारायण के अवतार रूप हैं तो अपवित्र समझे जाने वाले कुत्ते और कौए तक यमलोक के पथ-रक्षक होने के कारण मानवीय कृपा के अधिकारी है। इन्हे आहत करना पाप है। वनस्पति और जीवजगत् की सुरक्षा के लिए ऐसी विराट आयोजना, आत्मिक अनुशासनपरक ऐसी धर्म-व्यवस्था अन्यत्र दुर्लभ हैं।

धर्म के प्रति अनास्था और नास्तिकता के कारण आज हम पर्यावरणीय प्रदूषण के संकट में घिरे है। अन्यथा वनस्पतियों की सुरक्षा, जीवों का पोषण और यज्ञीय अनुष्ठानों के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा और संवर्द्धन का पूर्ण प्रयत्न भारतीय-संस्कृति की यही पर्यावरणीय दृष्टि हिन्दी-साहित्य में भी तथैव अवतरित है। कबीरदास लिखते है पत्ती में ब्रह्मा, पुष्प में विष्णु और फूल-फल में महादेव हैं। फिर तुम इसे तोड़कर किस अन्य देव की पूजा करने जाते हो।

NOTES

भारतीय-साहित्य की भाँति पाश्चात्य-साहित्य में भी पर्यावरण-संचेतना की उत्तम अभिव्यक्ति हुई है। जान कीट्स, पर्शी, विशि, विलियम वड्र्सवर्थ आदि की कविताओं में पर्वतों, नदियों, निर्झरों, वृक्षों, पंक्षियों, वन्य जीवों, पुष्पों के जीवंत चित्र उनकी पर्यावरण की संचेतना से व्याप्त हैं। शेक्सपियर के नाटकों में पर्यावरण की संचेतना का उत्कृष्ट निरूपण हुआ है। मिल्टन कृत 'पैराडाइज लॉस्ट' एवं दाँते कृत 'डिवाइन कॉमेडी' में पर्यावरण का गरिमामय स्वरूप वर्णित है। भारतीय साहित्य से पाश्चात्य साहित्य तक सर्वत्र वनदेवी-वनदेवता का वर्णन मिलता है। इन्हें वन-रक्षक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार साहित्य विविध प्रकार से पर्यावरण के संरक्षण का संदेश देता है।

आज पर्यावरण सर्वत्र प्रदर्शित है। मनुष्य के चिंतन की दिशा इतनी अधिक भोगवादी हो गई है कि उसने अविचारपूर्वक सारा वातावरण विषाक्त बना दिया है। अधिक-से-अधिक धन-सग्रह की चाह ने उसे असहज और असामान्य कर दिया है। मिलों की धुआँ उगलती चिमनियों और कल-कारखानों के प्रदूषित रासायनिक कीचड़-कचरे में उसे विकास दिखाई देता है। यह कैसी मूढ़ दृष्टि है जो विकास और विनाश के भेद को भी नहीं जानती! जब जीवनदाई प्राणवायु (आक्सीजन) और प्राण पोषक तत्त्व शुद्ध जल ही नहीं मिलेगा तो जीवन कैसे बच सकेगा? और जीवन न रहने पर वह कथित विकास किसके काम आएगा, जिसे पाने के लिए विनाश के ताण्डव को निंरतर प्रश्रय दिया जा रहा है। हमारी प्रगति की दिशा रेखांकित करने वाली निम्नांकित पक्तियाँ इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि हम विकास की दुहाई देते हुए उत्तरोत्तर विनाश की ओर दौड़ रहे है।

प्रदूषण आज विविध रूपों में जीवन को निगल रहा है। जीवन के अनिवार्य तत्व वायु और जल में शुद्धता की दुर्लभता के साथ-साथ तापमान में वृद्धि, अनावृष्टि, शोर आदि अन्य अनेक रूपों में भी पर्यावरण अंसतुलित और अनियंत्रित हो रहा है। पर्यावरण असंतुलन के कारण पृथ्वी के तापमान में निंरतर वृद्धि हो रही है। इसका प्रमुख कारण 'ओजोन परत' का क्षतिग्रस्त होना है। यह परत सूर्य के प्रकाश में स्थित हानिकारक पराबैंगनी किरणों को हम तक पहुँचने से रोकती है। वनों की अनियंत्रित कटाई के कारण इस परत में छेद हुए हैं और तापमान बढ़ा है। वनों-वृक्षों के कम होने के साथ-साथ नाइट्रिक आक्साइड गैस, क्लोरिन आक्साइड गैस, क्लोरो-फ्लोरो कार्बनिक रसायनों का बढ़ता उपयोग भी ओजोन परत को क्षतिग्रस्त कर रहा है। उद्योगो में प्रयुक्त रसायनों ने जल और वायु के साथ ही ओजोन परत में भी छेद किए है। विमानों, राकेटों का प्रक्षेपण और धुएँ की बढ़ती मात्रा ओजोन परत को नष्ट करने पर तुली है। पर्यावरण संतुलन बनाए रखने और तापमान को नियंत्रित रखने के लिए ओजोन परत की सुरक्षा की ओर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है।

पर्यावरण-प्रदूषण में शोर भी एक महत्त्वपूर्ण कारक है। यह आधुनिक युग की देन है। यातायात के यांत्रिक साधन, कल-कारखानों में यंत्रों का संचालन, आग्नेय अस्त्रों का उपयोग-परीक्षण, निर्माण कार्यों में होने वाले शोर और संगीत के नाम पर विद्युतयंत्रों का अनियंत्रित उपयोग 'आकाश' तत्त्व के महत्त्वपूर्ण गुण 'शब्द' को प्रदूषित कर रहे है। शब्द को हमारे शास्त्रों में 'ब्रह्मा' कहा गया है। यह ब्रह्म शांत एवं संयत अवस्था में वरदान है तो अनियंत्रित-अशांत स्थिति में शाप भी। मनुष्य के मस्तिष्क और हृदयतंत्र को दुष्प्रभावित करके यह अनेक रोगों को जन्म देता है। हृदय रोग, रक्तचाप, श्वास, वमन, अनिद्रा, श्रांति, मानसिक अंशाति, चिड़चिड़ाहट आदि कितनी ही जीवन घातक व्याधियों पर्यावरण प्रदूषण के इस पक्ष से जुड़ी हैं। यदि हमें इनसे बचना है तो शब्द के सदुपयोग (शोर पर नियंत्रण) की ओर ध्यान देना होगा।

पर्यावरण-संचेतना की सपुष्टि के लिए सामाजिकों में सौंदर्य की भावना जाग्रत करने की आवश्यकता है। यादि मनुष्य वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं के प्रति: पूज्यभाव विकसित कर ले तो उसके संवेग, उसकी संवेदनाएँ फिर प्रकृति से रागात्मक संबंध स्थापित कर सकती है और तब वह इस दिशा में सच्चा प्रयत्न कर सकता है। काव्य में प्राकृतिक सौंदर्य की पर्याप्त प्रतिष्ठा मिलती है, ऐसे अंशों के प्रचार-प्रसार से भी पर्यावरण संचेतना की संपुष्टि सम्भव है।

विगत शताब्दी में वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण पर्यावरण को जो क्षति पहुँची है, उसकी पूर्ति होना आवश्यक है। इस क्षति पूर्ति के लिए पर्यावरण-निर्माण की आवश्यकता है। वृक्षों के मूल में जल अर्पित करना भारतीय परम्परा में युगों से प्रचलित है। आज भी कितने ही जन जो हिन्दू-धर्म में सच्ची आस्था रखते

हैं, स्नान के उपरांत पीपल, बरगद, तुलसी आदि पुण्य पौधों-वृक्षों को जल अर्पित करने के उपरांत ही जलग्रहण करते हैं। रात्रि शयन के पश्चात् बिना मुख प्रक्षालन किए 'बेड टी' ग्रहण करने वालों के लिए यह ढोंग और आडम्बर लग सकता है, किंतु वास्तव में यह नियम का पालन करने वाले के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे पूज्य वृक्ष उसके आवास के समीप हों। घर-घर में तुलसी और मोहल्ले-मोहल्ले में पीपल बरगद का होना इस नियम-परम्परा के लिए अपेक्षित है और यह परम्परा, पर्यावरण संरक्षण के लिए उपयोगी है, प्रासंगिक हैं।

पर्यावरण के सरंक्षण के लिए उसे क्षति पहुँचाने वालों को दण्डित किए जाने का प्रावधान भी आवश्यक है। प्राचीन ग्रंथों में इसके उल्लेख मिलते हैं। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' में लिखा है-

''पासुन्यासेरथ्यायामष्टभागो दण्ड:।

पंकोदकसन्निरोध यदि:।

राजमार्ग: द्विगुण: पुण्यस्थानोदकस्थान

देवग्रह राजपरिग्रहेषु

पणोन्नपरा विष्ठा दण्डा, मूत्रोष्वर्धा दण्डा:।।''

(अर्थात् सार्वजनिक मार्ग पर कूड़ा-कचरा, धूल-मिट्टी आदि डालने पर 1/8 स्वर्णमुद्रा का दण्ड दिया जाए, कीचड़ फैलाने पर 1/4 स्वर्णमुद्रा दण्ड स्वरूप लिया जाए। दोनों अपराध करने पर दण्ड दुगना कर दिया जाए। मंदिर, कुएँ और तालाब के निकट और पवित्र एवं सरकारी संस्थानों के समीप विष्ठा फेंकने पर प्रत्येक अपराध के लिए एक स्वर्ण मुद्रा वसूल की जाए। सार्वजनिक स्थल पर मूत्र विसर्जन के लिए यह दण्ड आधा कर दिया जाए।)

आज स्वर्णमुद्राएँ वसूलने का समय नहीं है, किन्तु प्रदूषण फैलाने वालों को दण्डित करने की युगानुरूप व्यवस्था और प्रोत्साहन तथा बुरे कार्य के लिए दण्ड एवं हतोत्साहन आवश्यक विधान है। पर्यावरण-प्रदूषण को रोकने और पर्यावरण निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए जागरूकता जरूरी है।

पर्यावरण जागरूकता के उद्देश्य:

1. जनमानस को पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान कराना एवं विचार। सोचने-विचारने की योग्यता को विकसित करना।
2. पर्यावरण असन्तुलन होने के कारणों की पहचान करना।
3. पर्यावरणीय स्त्रोतों का समुचित एवं उपयुक्त दक्षता के साथ विदोहन करना।
4. प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण असन्तुलन एवं स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं एवं उनसे होने वाली हानियों के बारे में जानकारी प्रदान करना।
5. पर्यावरण संरक्षण के उपाय करना।
6. पर्यावरण एवं मानव की पारस्परिक निर्भरता की पहचान एवं पर्यावरण विकास को समझना।
7. जनमानस में पर्यावरण सन्तुलन बनाए रखने की रूचि उत्पन्न करना।
8. जैव - भौतिक (Bio - physical) पर्यावरण की गुणवता सम्बन्धी समस्याओं के समाधान में सहभागी बनने हेतु जनमानस की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना।
9. पर्यावरण को किसी भी रूप में हानि नहीं पहुँचाना।
10. पर्यावरण एवं मानव की पारस्परिक निर्भरता को पहचानना एवं पर्यावरणीय विकास को समझना।

11. प्रत्येक स्तर/क्षेत्र में कम से कम एक विज्ञान केन्द्र/आंचलिक विज्ञान केन्द्र की स्थापना करना, जिससे पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं, उनके निवारण/नियंत्रण एवं उनसे सम्बन्धित नियमों एवं कानूनों की जानकारी जनमानस को मिल सके।
12. पर्यावरणीय समस्याओं से बचना एवं उनका समाधान खोजना।

NOTES

पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत भूमिका

(Role of an Individual in Conservation of Environment)

मानव के विकास के लिये प्राकृतिक संसाधन के सभी तत्व आवश्यक एवं उपयोगी है। इन सभी प्राकृतिक संसाधनों के तत्वों का मानव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से अपने विकास के लिये उपयोग करता है। इन तत्वों का दुरूपयोग, अत्याधिक दोहन का परिणाम सम्पूर्ण मानव जाति को भुगतना पड़ेगा। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कानून बनाये गये है, फिर भी प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देवें, जिससे पर्यावरण के अवनयन, सर्वनाश को रोका जा सके। मनुष्य व्यक्तिगत रूप से पर्यावरण संरक्षण में निम्नानुसार कार्य कर सकता है -

1. वनों को नष्ट होने से बचाना, अधिक वृक्षारोपण।
2. ईधन के वैकल्पिक साधनों का उपयोग करना जैसे-सौर्य ऊर्जा, पवन ऊर्जा, तापीय ऊर्जा आदि।
3. वर्षा का जल, भूजल का उचित उपयोग एवं जल संरक्षण करके, तथा व्यर्थ रूप में जल को बहने से बचाकर।
4. जनसंख्या नियंत्रण, दो से अधिक बच्चों को पैदा नहीं करके।
5. नव्यकरणीय संसाधनों का अधिक उपयोग करके।
6. खनिज का कम से कम, केवल आवश्यक दोहन एवं उपयोग करके।
7. चारागाह के स्थानों के अलावा अन्य स्थानों पर पशुओं के चारण नहीं कराकर।
8. कृषि में कम से कम रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशी एवं जीवनाशी साधनों का कम से कम उपयोग करके पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अन्य समस्याओं पर नियंत्रण रखा जा सकता है।
9. उपरोक्त कार्यो के अतिरिक्त पर्यावरण, वन एवं अन्य संसाधनों, पर्यावरणीय कानूनों, नियमों की जानकारी एवं जागरूकता रखकर अपनी भूमिका को मनुष्य अच्छी प्रकार से निभा सकता है।

भारत में पर्यावरणीय व्यवस्था

(Environmental legislation)

1. वन्यजीवन (सुरक्षा) नियम, 1972 [Wild Life (Protectionhh) Act 1972]
2. वन्य (संरक्षण) नियम 1980 [Forest (Conservation) Act, 1980]
3. जल (संरक्षण एवं प्रदूषण का नियंत्रण) नियम, 1974

   [The Water (Prevention and Control of Pollution) Act, 1974]
4. जल (उपकर) नियम, 1977 [Water (Cess) Act, 1977]
5. राष्ट्रीय पर्यावरण अपील सम्बन्धी अधिकारी, नियम, 1977

(National Environment Appllate Authority, Act, 1977

6. वायु (संरक्षण एवं प्रदूषण का नियंत्रण) नियम, 1981 [Air (Protction and Control of Pollution) Act, 1981
7. पर्यावरण (संरक्षण) नियम, 1986 (Environmet (Protection) Act, 1986
8. सार्वजनिक उत्तरदायित्व बीमा नियम, 1991 (Public Liability Insurance Act, 1991) एवं
9. राष्ट्रीय पर्यावरण न्यायधिकरण नियम, 1995 (National Environment Tribunal Act, 1995)

पर्यावरण जागरूकता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न (International Efforts for Environmental Awareness)

वर्तमान समय में पर्यावरीय समस्याओं के प्रति सम्पूर्ण विश्व के जन मानस में जागरूकता में वृद्धि हुई है। पर्यावरण की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को समझने एवं समाधान के लिए सम्पूर्ण विश्व में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों (International Organisations) का गठन हुआ है। वर्तमान समय में पर्यावरण शोध संरक्षण, चेतना (awareness) की दिशा में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन/संस्थाएँ कार्यरत हैं। पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व एवं जन-चेतना को व्यापक बनाने के क्षेत्र में निम्नलिखित संगठन/संस्थाएँ प्रमुख है:

वर्ष 1972 में **स्टाकहोम** (Stockholm) में 5 से 6 जून को पर्यावरण सम्मेलन आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन में यह निश्चय किया गया था कि विश्व के सभी देश **5 जून** को प्रतिवर्ष **''विश्व पर्यावरण दिवस** (World Environment Day) को मनाएँ। इस पर्यावरण सम्मेलन के मुख्य बिन्दु निम्नलिखित है:

1. विश्व पर्यावरण दिवस को मनाने का संकल्प,
2. दूसरे सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव
3. मानवीय पर्यावरण के लिए कार्य करने की योजना।
4. आणविक ऊर्जा अस्त्रों (Atomic Weapons) के परीक्षण पर रोक लगाना।
5. संस्थागत एवं वित्तीय व्यवस्थाओं के उपाय एवं निर्णय का प्रस्ताव।
6. मानवीय पर्यावरण पर घोषणा।
7. राष्ट्रीय स्तर पर कार्यवाही हेतु विभिन्न राज्यों के प्रशासन/सरकारों को प्रेरित करने हेतु निर्णय लेना।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. पर्यावरण से क्या आशय है? समझाइए।
2. पीपल के वृक्ष में किन देवताओं का वास माना जाता है।
3. भारतीय परम्परा में पर्यावरण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपक्रम क्या है।
4. ओजोन परत के क्षय होने के क्या कारण है।
5. ओजोन परत के क्षय होने से क्या दुष्परिणाम होंगे।
6. ध्वनि (शोर) पर्यावरण को किस तरह प्रदूषित करता है।
7. 'प्राचीन भारत में पर्यावरण पर गम्भीर चिंतन किया गया था', उदाहरण देकर सिद्ध कीजिए।
8. वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषित हो गया है, इसके क्या कारण है? लिखिए।
9. पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए अपने विचार प्रकट कीजिए।
10. पर्यावरण संरक्षण संबंधी विधियों का उल्लेख करें।

11. पर्यावरण संरक्षण के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को लिखिए।

12. पर्यावरण संबंधी जागरूकता को लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

NOTES

1. हिमालय पर्वत को 'देवात्मा' किस कवि ने माना है।

    i. कबीर ने　　ii. मलूकदास ne

    iii. दिनकर ने　　iv. कालिदास ने

2. गीता में श्रीकृष्ण ने अपने आपको माना है।

    i. बेलवृक्ष　　ii. पीपल वृक्ष

    iii. वट वृक्ष　　iv. तुलसी वृक्ष

3. पर्यावरण को क्षति पहुँचाने पर किस विद्वान ने दण्ड विधान की अनुशंसा की है।

    i. कबीर ने　　ii. कालिदास ने

    iii. चाणक्य ने　　iv. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने

उत्तर – 1. (i); 2. (ii); 3. (iii)

■ ■ ■

28. भोलाराम का जीवन

हरिशंकर परसाई

हिन्दी साहित्य जगत के महानतम व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई द्वारा लिया गया यह व्यंग्य लेख राजनैतिक व प्रशासनिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार पर केन्द्रित है, जिसमें आपने अपनी चिर – परिचित शैली में तत्कालीन व्यवस्थाओं पर सीधे कटाक्ष किया है।

ऐसा कभी नहीं हुआ था, ...

धर्मराज लाखों वर्षों से अंसख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नर्क में निवास–स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे – पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार – बार चश्मा पोंछ, बार – बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में ही आ रही है। आखिर उन्होंने खीझकर रजिस्टर इतने जोर से बन्द किया, कि मक्खी, चपेट में आ गई। उसे निकालते हुए वह बोले – ''महाराज, रिकार्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और मेघदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।

धर्मराज ने पूछा ''और वह दूत कहाँ है?''

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बदहवास – सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, ''अरे तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?''

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, ''दयानिधान, मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्योंही मै, उसे लेकर एक तीव्र वायुतंरग पर सवार हुआ त्यों ही, वह मेरे चंगुल से छुटकर ज जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।''

धर्मराज क्रोध से बोले, ''मूर्ख, जीवों को लाते–लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।''

दूत ने सिर झुकाकर कहा, ''महाराज, मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी। मेरे इन अभ्यस्त होथों से अच्छे–अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वे रास्ते में ही रेल्वे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे–अफसर पहनते है। मालगाड़ी के ड़िब्बे–के–ड़िब्बे रास्ते में कट जाते है। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?''

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा, ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गई।'' भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना–देना?

इसी समय कहीं से घूमते–फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले, ''क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हो। क्या नर्क में निवास–स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?''

धर्मराज ने कहा, ''वह समस्या तो कभी की हल हो गई, मुनिवर! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगार आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारते बनायीं। बड़े–बड़े इंजीनियर भी आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय– योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गये ही नहीं। इन्होने बहुत जल्दी

नर्क में कई इमारते तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था, कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान मारा, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।''

नारद ने पूछा, ''उस पर इन्कम-टैक्स का बकाया तो नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''इन्कम हो तो टेक्स होता ....भुखमरा था।''

नारद बोले, ''मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा, मुझे उसका नाम- पता तो बतलाओ। मैं पृथ्वी पर जाता हुँ।''

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया, '' भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक-डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार-समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग पैंसठ साल। सरकारी नौकर था, पाँच साल पहले रिटायर हो गया था।

मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान-मालिक, वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गये।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई, ''नारायण .... नारायण।'' लड़की ने देखकर कहा, ''आगे जाओ, महाराज।''

नारद ने कहा, ''मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी।''

भोलाराम की पत्नी बाहर आई। नारद ने कहा, ''माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?''

''क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे, पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरखास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब ही नहीं आता था और आता तो यहीं कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेचकर हम लोग खा गये। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।''

नारद ने कहा, ''क्या करोगी, माँ?'' .... उनकी इतनी ही उम्र थी।'

''ऐसा तो मत कहो, महाराज। उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रूपया महीना पेंशन मिलती, तो कुछ और काम कहीं करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गये और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।''

दुख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी नहीं। वह अपने मुद्दे पर आये, माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगाा हो?''

पत्नी बोलो, ''लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होता है।''

''नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है। मेरा मतलब है, कोई स्त्री...........

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, ''बको मत, महाराज। साधु हो, कोई लुच्चे-लफंगे नहीं हो। जिन्दगी-भर उन्होने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर भी नहीं देखा।''

नारद हँसकर बोले, ''हाँ तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा माता, मैं चला।''

व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया। स्त्री ने कहा, ''महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरूष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रूकी हुई पेंशन मिल जाये। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाएगा।''

नारद को दया आ गई थी। वे कहने लगे, ''साधुओं की बात कौन मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।''

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें की। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होगी।''

नारद ने कहा, ''भई, ये बहुत से पेपरवेट तो रखे हैं इन्हें क्यों नहीं रख दिया?''

बाबू हँसा, ''आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नही आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं..... खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।''

नारद उस बाबू के पास गये। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पचीस-तीस बाबुओं ओर अफसरों के गये। आप अगर साल-भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जायेगा।''

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें एकदम बिना विजिटिंग-कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए। बोले, ''इसे कोई मन्दिर-वन्दिर समझ लिया है क्या?'' धड़धड़ाते चले आये चिट क्यों नहीं भेजी?''

नारद ने कहा, ''कैसे भेजता? चपरासी तो सो रहा है।''

''क्या काम है?'' साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन - केस बतलाया।

साहब बोले, ''आप हैं बैरागी: दफ्तरों के रीति - रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भई, यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी दान - पुण्य करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते है। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं, उन पर वजन रखिए।''

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले, भई सरकारी पैसे का मामला है। पेंशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है, उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है मगर साहब रूके।

नारद ने कहा, ''मगर क्या?''

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, ''मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना - बजाना सीखती है। यह मै उसे दे दूँगा। साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई, तो उसकी शादी हो जाएगी।''

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर जरा घबराये। पर फिर सँभलकर उन्होंने वीणा टेबल पर रखकर कहा, ''यह लीजिए। अब जरा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।''

NOTES

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घंटी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, ''बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।''

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ - डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, ''क्या नाम बताया, साधु जी, आपने?''

नारद ने समझा कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसीलिए जोर से बोले, ''भोलाराम!''

सहसा फाइल में से आवाज आई, ''कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या? पेंशन का ऑर्डर आ गया?''

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गये। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये। बोले ''भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो।''

''हाँ'' आवाज आई।

नारद ने कहा, ''मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग मैं तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।''

आवाज आई, ''मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता हूँ!..........''

जीवन परिचय

हरिशंकर परसाई हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे। ये हिन्दी के पहले रचनाकार थे, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती हैं, जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असम्भव है। लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को हरिशंकर परसाई ने बहुत ही निकटता से पकड़ा है। सामाजिक पाखण्ड और रूढ़िवादी जीवन मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी भाषा-शैली में एक ख़ास प्रकार का अपनापन नज़र आता है।

हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त, 1922 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले में 'जमानी' नामक गाँव में हुआ था। गाँव से प्राम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे नागपुर चले आये थे। 'नागपुर विश्वविद्यालय' से उन्होंने एम. ए. हिन्दी की परीक्षा पास की। कुछ दिनों तक उन्होंने अध्यापन कार्य भी किया। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्र लेखन प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने जबलपुर से साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन भी किया, परन्तु घाटा होने के कारण इसे बंद करना पड़ा। हरिशंकर परसाई जी ने खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को बहुत ही निकटता से पकड़ा है। उनकी भाषा-शैली में ख़ास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है।

कार्यक्षेत्र - मात्र अठारह वर्ष की उम्र में हरिशंकर परसाई ने 'जंगल विभाग' में नौकरी की। वे खण्डवा में छ: माह तक बतौर अध्यापक भी नियुक्त हुए थे। उन्होंन एक - दो वर्ष (1941-1943 में) जबलपुर में 'स्पेस ट्रेनिंग कॉलेज' में शिक्षण कार्य का अध्ययन किया। 1943 से हरिशंकर जी वहीं 'मॉडल हाई स्कूल' में अध्यापक हो गये। किंतु वर्ष 1952 में हरिशंकर परसाई को यह सरकारी नौकरी छोड़नी पड़ी। उन्होंने वर्ष 1953 से 1957 तक प्राइवेट स्कूलों में नौकरी की। 1957 में उन्होंने नौकरी छोड़कर स्वतन्त्र लेखन की शुरूआत की।

भाषा शैली – हरिशंकर परसाई की भाषा में व्यंग्य की प्रधानता है। उनकी भाषा सामान्य और सरंचना के कारण विशेष क्षमता रखती है। उनके एक-एक शब्द में व्यंग्य के तीखेपन को स्पष्ट देखा जा सकता है। लोकप्रचलित हिन्दी के साथ-साथ उर्दू, अंग्रेज़ी शब्दों का भी उन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। परसाईजी की अलग-अलग रचनाओं में ही नहीं, किसी एक रचना में भी भाषा, भाव – भंगिया के प्रसंगानुकूल विभिन्न रूप और अनेक स्तर देखे जा सकते हैं। प्रसंग बदलते ही उनकी भाषा-शैली में जिस सहजता से वांछित परिवर्तन आते-जाते हैं, और उससे एक निश्चित व्यंग्य उद्देश्य की भी पूर्ति होती है, उनकी यह कला, चकित कर देने वाली है।

कृतियाँ – निबंध संग्रह: तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेईमानी की परत, पगडण्डियों का जमाना, सदाचार का तावीज, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर, माटी कहे कुम्हार से, शिकायत मुझे भी है, और अंत में, हम इक उम्र से वाकिफ हैं, अपनी अपनी बीमारी, प्रेमचंद के फटे जूते, काग भगोड़ा, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, तुलसीदास चंदन घिसें

कहानी संग्रह	:	जैसे उसके दिन फिरे, दो नाकवाले लोग, हँसते हैं रोते हैं, भोलाराम का जीव
उपन्यास	:	तट की खोज, रानी नागफनी की कहानी, ज्वाला और जल
संस्मरण	:	तिरछी रेखाएँ
सम्पादन	:	वसुधा (साहित्यिक पत्रिका) के संस्थापक-सम्पादक

सम्मान और पुरस्कार –

साहित्य अकादमी पुरस्कार	–	'विकलांग श्रद्धा का दौर' के लिए
शिक्षा सम्मान	–	मध्य प्रदेश शासन द्वारा
डी.लिट् की मानद उपाधि	–	'जबलपुर विश्वविद्यालय' द्वारा
शरद जोशी सम्मान		

निधन – अपनी हास्य व्यंग्य रचनाओं से सभी के मन को भा लेने वाले हरिशंकर परसाई का निधन 10 अगस्त, 1995 को जबलपुर, मध्य प्रदेश में हुआ। हरिशंकर परसाई ने हिन्दी साहित्य में व्यंग विधा को एक नई पहचान दी और उसे एक अलग रूप प्रदान किया, जिसके लिए हिन्दी साहित्य उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. भोलाराम के रिटायर होने के बाद उसे और उसके परिवार को किन परेशानियों का सामना करना पड़ा।
2. साहब ने भोलाराम की पेंशन में देर होने की क्या वजह बताई।
3. लेखक इस व्यंग्य के माध्यम से वर्तमान में किन अव्यवस्थाओं पर सीधा प्रहार कर रहा है? अपने मौलिक विचार लिखिए।
4. धर्मराज के अनुसार नर्क की आवास समस्या किस प्रकार हल हुई।
5. ''भोलाराम की दरख्वास्ते उड़ रही हैं उन पर वजन रखिए।'' वाक्य में 'वजन' शब्द किसकी ओर संकेत कर रहा है।
6. भोलाराम की जीवात्मा कहाँ अटकी थी वह स्वर्ग क्यों नहीं जाना चाहता था।
7. अगर मकान मालिक वास्तव में मकान मालिक है तो उसने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा, इस वाक्य में निहितार्थ व्यंग्यार्थ को स्पष्ट कीजिए।
8. यदि नारद के स्थान पर आप होते, तो क्या करते।
9. वर्तमान प्रशासकीय व्यवस्था पर अपना मत व्यक्त कीजिए।

10. 'भोलाराम का जीव' व्यंग्य का सारांश लिखिए।
11. हरिशंकर परसाई का जीवन परिचय दीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

NOTES

1. 'भोलाराम का जीव' किस व्यंग्य लेखक ने लिखा है।

   i. शरद जोशी ने ii. रवीन्द्रनाथ त्यागी ने
   iii. हरिशंकर परसाई ने iv. के.पी. सक्सेना ने

2. यमदूत को किसने चकमा दिया था।

   i. हरिशंकर परसाई ii. भोलाराम के जीव ने
   iii. नारद ने iv. साहब ने

3. भोलाराम का जीव ढूँढने के लिए धरती पर कौन गया।

   i. यमदूत ii. नारद
   iii. हरिशंकर परसाई iv. साहब

4. भोलाराम के मरने का क्या कारण था।

   i. भुखमरी ii. बीमारी
   iii. हृदयाघात iv. दुर्घटना

उत्तर – 1. (iii); 2. (ii); 3. (ii); 4. (i)

■ ■ ■

29. आँगन का पंछी

डॉ. विद्यानिवास मिश्र

NOTES

डॉ. विद्यानिवास मिश्र द्वारा लिखित निबंध आँगन का पंछी में लेखक ने गौरैया (चिड़िया) के विषय में अपनी प्रभावी शैली भी उसके महत्व को, सरल-सहज भाषा में प्रस्तुत किया है। डॉ. मिश्र के कई निबंध प्रकाशित हुए है। आपको पदमश्री व पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। गाँवों में कहा जाता है : जिस घर में गौरैया अपना घोंसला नहीं बनाती वह घर निवंश हो जाता है। एक तरह से घर के आँगन में गौरैया का ढ़ीठ होकर चहचहाना, दाने चुगकर मुँडेरी पर बैठना, हर साँझ, हर सुबह हर कहीं तिनके बिखेरना, और घूम-फिरकर फिर रात में घर में ही बस जाना। अपनी बढ़ती चाहनेवाली गृहस्थ के लिए बच्चों की किलकारी, मीठी शरारतों का प्रतीक है। फूल तो बहुत से होते हैं : एक-से-एक चटकीले, एक-से-एक खुशबूवाले, एक-से-एक कँटीले, पर बेला, गुलाव, जूही चमेली, कुमुद, कमल बहुत कम आँगन में मिलते हैं और अकिंचन से आकिंचन आँगन में भी तुलसी की वेदी जरूर मिलती है, और उस वेदी पर तुलसी की मंजरी जरूर खिलती है। जिस तरह गौरैये में कोई रूप-रंग की विशेषता नहीं, कण्ठ में कोई विशेष प्रकार की विहलता नहीं, उड़ान भरने की भी कोई विशेष क्षमता नहीं, महज आँगन में फुदकने का उछाह है, उसी प्रकार तुलसी के पौधे में न तो सघन छाँह की शीतलता है, न गन्ध का जादू, न रूप का श्रृंगार, केवल आँगन का दु:ख-दर्द बँटाने की मन में बड़ी उत्कण्ठा है। तुलसी की पूजा के लिए तो खैर शास्त्रीय आधार है, पर गौरैया के लिए मात्र जनविश्वास का यह उपहार-भर है कि वह पक्षियों में ब्राह्मण है, इसीलिए इतनी ढीठ, इतनी निर्भय, इतनी आत्मीय और इतनी मंगलास्पद है। जो लोग चिड़ियों का शिकार करते भी हैं, वे गौरैया नहीं मारते, गौरैया मारना पाप समझते हैं। मैने अपनी ससुराल के बड़े आँगन में देखा है कि वहाँ गौरैयों के लिए धानों की मोजर आँगन के चारों ओर ओरियों की नीचे बराबर लटकाई रहती हैं और धान की मंजरियों की यह पंक्ति रीतती नहीं। शायद इसलिए कि गौरैयों को भी इनके प्रति मोह हो। बहरहाल उस बड़े आँगन में बराबर धान सुखाया जाता हैं और उस पर बराबर गौरैयों के दल-के-दल आते रहते हैं, जरा-सी देर में जरा-से इशारे से ये दल तितर-बितर हो जाते हैं पर जरा-सी आँख ओझल होते ही फिर वहीं जम जाते जाते हैं। घर में रहते हुए भी ये स्वछन्द रहते हैं,। वह आँगन बड़ा तो है पर भरा नहीं है। साल में केवल कभी-कभी वह आँगन मेहमान की तरह आये हुए बच्चों से भरता है, पर आँगन उनसे भरनेवाला है या उनसे भर चुका है, मानो इसी आशा और इसी स्मृति में इन गौरैया को ऐसा प्यार दिया जाता है।

एक दिन मैं वहीं था, जब किसी अखबार में पढ़ा कि चीन में एक नया पुरूषार्थ जागा है। वहाँ की उत्साही सरकार ने गौरैयों को खेती का शत्रु मानकर उनके खिलाफ सामूहिक अभियान शुरू किया है। खैर चीन में अभियान हो और वह सामूहिक न हो तो यह अनहोनी बात होगी, पर जब यह पढ़ा कि कुछ लाखों की तादाद में वहाँ के तरूण सैनिक बन्दूक लेकर गौरैयों के शिकार के लिए कनल पड़े हैं तो मुझे हँसी भी आई और रोना भी पड़ा। हँसी इसलिए कि गौरेयों पर वीरता का अपव्यय हो रहा है और रोना इसलिए कि जिस तरीके से और जिस पैमाने पर गौरैयों के वध की योजना बनाई है, वह कितना अमानवीय है। उसी अखबार में पढ़ा कि बन्दूक दाग-दागकर झुण्ड-के-झुण्ड इन गौरैयों को खदेड़ते हैं और खदेड़ते ही रहते हैं ताकि ये कहीं बैठने को ठौर न पा सकें और अन्त में बेदम होकर जमीन पर आ गिरें। ऐसे मासूम और मनुष्य के प्रति सहज विश्वास रखनेवाले पक्षी को इस प्रकार निर्मूल करने की योजना सचमुच उन्माद-से प्रेरित नहीं हैं तो क्या है? मैंने भी बुद्धिवादी कविताएँ पढ़ी है, जिनमें ताजमहल के निर्माण पर शोक प्रकट किया गया है: जब कि मनुष्य का शव कफन के लिए भी तरस रहा है, जहाँ चीटिंयों के लिए आटा छींटने और मछलियों के लिए आटे की गोली फेंकने पर व्यंग्य कसा गया है, जबकि मनुष्य भूखों मर रहे हैं, जहाँ कि गुलाब को क्यारियों पर तरस खाया गया है क्योंकि गेहूँ की देश में कमी है, जहाँ कि कला की उपासना को ऐश समझा गया है, जब कि मनुष्य अभाव से ग्रस्त हैं। मैंने इस अभियान की सफाई के लिए उन कविताओं को एक - एक करके याद किया, पर मुझे लगा कि यह तो अभाव की पूर्ति की योजना नहीं है, यह तो सृष्टि में सर्वोपरि मानने का कोई नया तरीका भी नहीं हो सकता है। गौरैया दाना चुगती है पर शायद जिस मात्रा में दाना चुगती है उससे कहीं अधिक लाभ वह खेत का इस प्रकार करती है कि अनाज में उगनेवाले कीड़ों को वह साफ करती रहती

है। थोड़ी देर के लिए ही माना कि वह दाना देती नहीं केवल लेती भर है तो भी क्या इस प्रकार समूची सृष्टि को समरसता के साथ खिलवाड़ करना उचित है? मनुष्य को इस प्रकार लाभ की आशा से नहीं मात्र अपनी प्रतिहिंसा की भावना से निरीह और अपने ही साथ अपने बच्चों की तरह निर्भय विचरने वाले का इस प्रकार थका – थका के, सता – सता के मारना कहीं न्याय हैं? यह कौन – सा पंचशील का उदाहरण है। शायद जितना अनाज गौरयों ने खाया न होगा उससे कहीं अधिक कहीं दाम की गोलियाँ उन्हें सताने में बरबाद हो गई होंगी। माना कि मनुष्य को अपने ही समान बुद्धि – बलवाले दूसरे देशवासी मनुष्य के साथ प्रतिहिंसा करने का सहज अधिकार थोड़ी देर के लिए हो भी और वह अपने निर्माण से अधिक अपने तुल्यबल भाई के विध्वंस पर खर्च करने के लिए पागल हो जाएँ तो अनुचित नहीं, परन्तु मनुष्य जिस उत्फुल्लता के लिए, जिस मुक्ति के लिए जिस राहत के लिए इस गला – काट व्यापार में लगा हुआ है, उसी उत्फुल्लता, मुक्ति और राहत के इन जीते – जागते प्रतिबिम्बों को इस प्रकार नष्ट करने पर उतारू हो जाए, यह किस प्रकार समझ में आए?

हमारे देश में भी ऐसे सयाने लोग हैं, जो नाच की अयोग्यता आँगन के टेढ़ेपन के ऊपर थोपने के लिए ऐसे–ऐसे सुझाव देते हैं कि अन्न इसलिए कम पैदा हो रहा है कि चिड़ियाँ उन्हें खा जाती हैं, बन्दर उन्हें तहस–नहस कर जाते हैं, चूहें उन्हे कुतर जाते हैं और धूप उन्हें सुखा जाती हैं, इसलिए पहले इनके ऊपर नियन्त्रण होना चाहिए ताकि खेती अपने–आप बिना मनुष्य के परिश्रम के अधिक उपजाऊ हो जाए पर चीन के ये सयाने तो इस मात्र नियन्त्रण तक सन्तुष्ट नहीं हैं, वे निर्मूलन में विश्वास करते हैं। सृष्टि के सन्तुलन बनें–बिगड़ें, यहाँ तक कि मनुष्य जिसके लिए यह कर रहा हैं। वह भी उसे मिले न मिले पहले वह अपने दिल का गुबार तो उतार लें। और चीन प्रज्ञापारमिता का देश है, बुद्ध की मैत्री का देश है, नये युग में मनुष्य के उद्धार का दावा करने वाला देश है, और है सह–अस्तित्व, परस्पर सहयोग ओर प्रेम की कसम खाने वाला देश है, लगता यह है कि चीन में जैसे कोई घर न रह गया हो, कोई आँगन रह गया हो, किसी घर और किसी आँगन के लिए कोई मुहब्बत न रह गई हों, किसी घर और किसी आँगन में मुक्त हँसी न रह गई हो, उसमें बच्चे न रह गए हों, ओर अगर रह भी गये हों तो किसी बच्चे के चेहरे पर विश्वास की चमक न रह गई हो। तभी तो इन गौरैयों के साथ नादिरशाही बदला लिया जा रहा है। उनका अपराध केवल यही है कि वे नि:शंक है और नि:शंक होकर वे हर घर में आनंद के दाने बिखेर जाती हैं, उन्हें चौगुना करके आनंद में परिवर्तित कर हर आँगन में मुक्त हस्त लुटा जाती हैं। उनका अपराध केवल यही है कि वे गमगीन नहीं हैं, उनका अपराध हैं कि वे कबूतर की तरह दूर तक गले में पाती बाँधकर पहुँचा नहीं सकती, उनका अपराध है कि तोते की तरह हर एक स्तुति और हर एक गाली दुहरा नहीं सकती, उनका अपराध है कि वे अपने पंखों में सुर्खी नहीं लगा सकतीं, उनका अपराध हैं कि उनके पास वह लाल कलँगी नहीं है, जिसको सिर में लगाकर–कूड़े की ढेरी पर खड़े होकर रात के धुंधले में बाँग दे सकें कि अरूणोदय होने वाला है, उनका अपराध है कि वे सुबह की साथी नहीं, दोपहर की साथी हैं, वे गगन का पंछी नहीं, आँगन का पंछी हैं।

मुझे लगता है कि गौरैयों की खिलाफ यह अभियान जिन राहगीरों ने चलाया है उनको अपने राह की मंजिल नहीं मालूम। वे बिलकुल नहीं जानते कि आखिर इस राह का अन्त कहाँ है। आज यह गौरैया हैं, कल घर की बिल्ली हो सकती है, परसों घर का दूसरा पशु हो सकता है, और फिर चौथे दिन घर के प्राणी भी हो सकते हैं। यह आक्रोश असीम है, उसका अन्त नहीं है। सन्तोष की बात इतनी ही है कि भारत में ऊपर चाहे जो हो, भीतर एक दूसरी ही शक्ति का प्रवाह है जो मनुष्य को सृष्टि से ऊँचा बनाने पर बल नहीं देती बल्कि मनुष्य को सृष्टि के साथ एकरस बनाने में ही उसका गौरव मानती है। गौरैया के प्रति हमारी प्रीति हमारे निजी स्वार्थ से प्रेरित है। हम उस गौरैया की उच्छृंकलता अपनी सन्तान में पाना चाहते हैं, उस गौरैया का विश्वास अपनी आने वाली पीढ़ी को देना चाहते हैं जो हमसे ढिठाई के साथ हमारी विरासत छीनकर हँसते–हँसते और हमें हैसाते–हँसाते हमसे आगे बढ़ जाएगी। हम तुलसी का पौधा इसलिए नहीं लगाते कि तुलसी को वन में कहीं जगह नहीं है, और सबसे पहले दीया तुलसी की वेदी पर इसलिए नहीं जलाते कि उस दिए की लौ के बिना तुलसी को अपने जीवन में कोई गरमी नहीं मिलेगी, बल्कि हम तुलसी की वेदी अपने दर्द के निवेदन के लिए रचाते है और तुलसी को दीप अपने सर्द दिल को गरमी पहुँचाने के लिए जलाते है। हम जिस पारिवारिक जीवन के अभ्यास हैं उसमें राग–रंग और तड़क–भड़क के लिए कोई स्थान नहीं है, केवल एक–दूसरे में मिल–जुलकर एक–दूसरे के प्रति बिना किसी अभिमान की तीव्रता के सहज भाव से समर्पित होने ही में हम जीवन की अखण्डता मानते हैं। हमारा सांस्कृतिक जीवन भी इस पारिवारिक प्रेम से आप्लावित

है, देवी-देवताओं की कल्पना, कुल-पर्वतों, कुल-नदियों की कल्पना, तीर्थों-धामों की कल्पना और आचार्यों-मठों की कल्पना पारिवारिक विस्तार के ही विविध रूपान्तर हैं। यही नहीं, पारिवारिक साहचर्य भाव ही हमारे साहित्य की सबसे बड़ी थाती है। यह कुटूम्ब-भाव ही हमें चर-अचर, जड़-चेतन जगत् के साथ कर्त्तव्यशील बनाता है। हम इसी से देश-काल की सीमाओं की तनिक भी परवाह न करके, अरबों प्रकाशवर्ष दूर नक्षत्रों से और युगों दूर उज्ज्वल चरित्रों से उसी प्रकार अपनापन जोड़ते हैं, जिस प्रकार अपने घर के किसी व्यक्ति से। ग्रहों की गति से अपने जीवन को परखने का विश्वास कोई अर्थ-शून्य और अन्धविश्वास नहीं है, वह कुटुम्ब-भावना का ही हमारे विराटदर्शी भाव-जगत् पर प्रतिक्षेप है।, जैसे परिवार में छोटे-से-छोटे और बड़ा-से-बड़ा एक सा ही समझा जाता है, वैसे ही सृष्टि में हम 'अणोरणीयान्' और 'महतो महीयान्' को एक-सी नजर से देखने के आदी हैं।

गौरैया मेरे लिए छोटी नहीं है, बहुत बड़ी है, वैसे ही, जैसे मेरी दो साल की मिनी छोटी होती हुई भी मेरे लिए बहुत बड़ी है। 'बालसखा' के सम्पादक मित्रवर सोहनलाल द्विवेदी ने एक बार मुझसे बालोपयोगी रचना माँगी। मैने उन्हें मिनी का फोटोग्राफ भेज दिया और लिखा कि इससे बड़ी रचना मै आज तक नहीं कर पाया हूँ। मिनी बड़ी है : मेरे अर्जित परिष्कार से, मेरी अर्जित विद्या से और मेरी अर्जित कीर्ति से, क्योंकि उसकी मुक्त हँसी में जो मोंगरे बिखर जाती हैं, उनकी सुरभि से बड़ी कोई परिष्कृति, सिद्धि या कीर्ति क्या होगी? वहीं मिनी जब गौरैयों को देखकर नाचती है, उन्हें बुलाती है, उनके पास आते ही खुशी में ताली बजाती है, उन्हें धमकाती है, फिर मनाती है, तब मुझे लगता है कि सृष्टि की दो चरम आनन्दमाई अभिव्यक्तियाँ ओत-प्रोत हो गई हैं-गीता की दो ब्राह्मी स्थितियाँ एकाकार हो गई हैं और मुक्ति की दो धाराएँ मिल गई हैं। इसीलिए गौरैयों के विरूद्ध अभियान मुझे लगता है-मेरी और न जाने कितनों की मिनियों के विरूद्ध अभियान है। गौरैये और मिनियाँ राजनीति से कोई सरोकार नहीं रखती, सो मैं राजनीति की सतह पर इनके बारे में नहीं सोचता, परन्तु मनुष्य की राजनीति का जो चरम ध्येय है उसको जरूर सामने रखना पड़ता है और तब मुझे बहुत आक्रोश होता है कि भले आदमी मनुष्य बनने चले हो तो पहले मनुष्य के विश्वास की रक्षा तो करो, बन्धुता बाँधने चले हो पर ममताओं के बाँध तो बने रहने दो। मुक्तिपर्व मनाओं बड़ा अच्छा है पर मुक्ति की जीती-जागती तस्वीरें क्यों फाड़ते हो? जन का आर्थिक और नैतिक अभ्युदय चाहते हो, ठीक है, पर उसके सहज आनन्द का क्षण क्यों छीनते हो? अपनी चित्रकला में बाँस के झुरमुट बनाकर उस पर चिड़ियों को बिठलाने वाले चितेरे, उन चिड़ियाँ को उनके बसेरों से क्यों उजाड़ते हो? चिड़ियों की चहचहाती लोक-कथाओं के रंग-बिरंगे अनुवाद छपाते हो, छपाओ, पर उन चिड़ियों की चहचहान हमेशा के लिए क्यों खत्म किये दे रहे हो? तुम अपने घर आनेवाली खुशी के लिए फरमान निकालकर गमी मनाओ, पर तुम मेरे घर की खुशी, मेरी मिनी और उसकी सहेली गौरैयों की खुशी पर गमी की गैस क्यों छिड़क रहे हो?

मन में यह आक्रोश आता है पर फिर सोचता हूँ यह आक्रोश प्रतिगामिता है। मुझे धरती और धरती की परम्परा की बात-भर करनी चाहिए, धरती के आनन्द के उत्तराधिकारियों की बात करने पर आनन्दवादी कहा जाता हूँ-मेरे एक मार्क्सवादी मित्र ने मुझे यही संज्ञा दे रखी है। पर क्या करूँ, गंवार आदमी हूँ : क्या कहने से क्या समझा जाएगा, यह जानता ही नहीं, केवल जब कहे बिना रहा नहीं जाता तभी कहता हूँ। गौरैयों ने विवश किया, तुलसी ने विवश किया, मिनी में विवश किया, तब मुझे कहना पड़ा। इन तीनों में मुझे सीता की सुधि आती है, इन तीनों में मुझे धरती का दुलार छलकता नजर आता है, इसलिए मुझे उस दुलार के नाम पर यह गुहार लगानी पड़ती है कि धरतीवासियों, धरती वहीं नहीं है जो तुम्हारे पैरों के नीचे है, धरती तुम्हें अपने और असंख्य शिशुओं के साथ अपनी गोद में भरने वाली व्यापक सत्ता है धरती की विरासत सँभालना आसान नहीं, उस विरासत के असंख्य साझीदारों को मिलाये बिना तुम घर के कर्त्ता नहीं बन सकते। यह गौरैया, यह तुलसी, यह मेरी-और मेरी ही नहीं, तुम्हारी भी-मिनी है तो उस विरासत की असली मालिक है, यही है कि वे बिना माँगे अपनी मिल्कियत लुटा देती हैं। उनके प्रति कृतज्ञ बनो, अपने आप तुम्हारी बढ़ती होगी। क्योंकि-

''अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्

अनुल्लङ्ध्य सतां मार्ग यत्स्वल्पमपि तद् बहु।।''

जीवन परिचय

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार, सफल सम्पादक, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान और जाने-माने भाषाविद थे। हिन्दी साहित्य को अपने ललित निबंधों और लोक जीवन की सुगंध से सुवासित करने वाले विद्यानिवास मिश्र ऐसे साहित्यकार थे, जिन्होंने आधुनिक विचारों को पारम्परिक सोच में खपाया था। साहित्य समीक्षकों के अनुसार संस्कृत मर्मज्ञ मिश्र जी ने हिन्दी में सदैव आँचलिक बोलियों के शब्दों को महत्व दिया। विद्यानिवास मिश्र के अनुसार- 'हिन्दी में यदि आँचलिक बोलियों के शब्दों को प्रोत्साहन दिया जाये तो दुरूह राजभाषा से बचा जा सकता है, जो बेहद संस्कृतनिष्ठ है।' मिश्र जी के अभूतपूर्व योगदान के लिए ही भारत सरकार ने उन्हें 'पद्‌मश्री' और 'पद्‌मभूषण' से भी सम्मानित किया था।

जन्म तथा शिक्षा – हिन्दी की ललित निबन्धों की परम्परा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाले कुशल शिल्पी पंडित विद्यानिवास मिश्र का जन्म 28 जनवरी, सन 1926 में पकडडीहा गाँव, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। वे अपनी बोली और संस्कृति के प्रति सदैव आग्रही रहे। सन 1945 में 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' से स्नातकोत्तर एवं डाक्टरेट की उपाधि लेने के बाद विद्यानिवास मिश्र ने अनेक वर्षों तक आगरा, गोरखपुर, कैलिफोर्निया और वाशिंगटन विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। वे देश के प्रतिष्ठित 'संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय' एवं 'काशी विद्यापीठ' के कुलपति भी रहे। इसके बाद अनेकों वर्षों तक वे आकाशवाणी और उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग में कार्यरत रहे।

निबंध लेखन – विद्यानिवास मिश्र के ललित निबन्धों की शुरुआत सन 1956 ई. से होती है। परन्तु आपका पहला निबन्ध संग्रह 1976 ई. में 'छितवन की छाँह' प्रकाश में आया। उन्होंने हिन्दी जगत को ललित निबन्ध परम्परा से अवगत कराया। 'तुम चन्दन हम पानी' शीर्षक से जो निबन्ध प्रकाशित हुए, उनमें संस्कृत साहित्य के सन्दर्भ का प्रयोग अधिक हो गया और पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति के कारण लालित्य दब गया, जो आपकी पहली दो रचनाओं में मिलता था। तीसरे निबन्ध संग्रह 'आंगन का पंछी और 'बनजारा मन' में परिवर्तन आया। इस तथ्य को स्वयं निबन्धकार स्वीकार करता है-'छितवन की छांह' मेरे मादक दिनों की देन है, 'कदम की फूली डाल' मेरे विन्ध्य प्रवास का, जो बाद में आवास ही बन गया, का फल है और 'तुम चन्दन और हम पानी' मेरे संस्कृत अन्वेषण की देन है। अब चौथा संग्रह आपके हाथों में है, दुविधा के क्षणों की सृष्टि है। इसलिए इसका शीर्षक भी द्विविधात्मक है। बरसों तक भोजपुरी वातावरण के स्मृतिचित्र उरेहता रहा, उसी में मन चाहे पद पर जब वापस होने की आशंका। इसलिए जहाँ मन 'आगंन का पंछी' बनकर चहका, वहीं उसका बनजारा मन' उसे विगत और अनागत दिशाओं में रमने-घूमने के लिए अकुलाता भी रहा।

योगदान – विद्यानिवास मिश्र के ललित निबंधों में जीवन दर्शन, संस्कृति, परम्परा और प्रकति के अनुपम सौंदर्य का तालमेल मिलता है। इस सबके बीच वसंत ऋतु का वर्णन उनके ललित निबंधों को और अधिक रसमय बना देता है। ललित निबंधों के माध्यम से साहित्य को अपना योगदान देने वाले विद्यानिवास हिन्दी की प्रतिष्ठा हेतु सदैव संघर्षरत रहे, मारीशस से सूरीनाम तक अनेकों हिन्दी सम्मेलनों में मिश्र जी की उपस्थिति ने हिन्दी के संघर्ष को मजबूती प्रदान की। हिन्दी की शब्द सम्पदा, हिन्दी और हम, हिन्दीमय जीवन और प्रौढ़ों का शब्द संसार जैसी उनकी पुस्तकों ने हिन्दी की सम्प्रेषणीयता के दायरे को विस्तृत किया। तुलसीदास और सूरदास समेत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अज्ञेय, कबीर, रसखान, रैदास, रहीम और राहुल सांकृत्यायन की रचनाओं को सम्पादित कर उन्होंने हिन्दी के साहित्य को विपुलता प्रदान की।

आकाशवाणी पर व्याख्यान – जयपुर का साहित्य जगत आज भी भूला नहीं है कि आकाशवाणी जयपुर के आमंत्रण पर मिश्र जी ने सन 1994 के 30 नवम्बर और 1 दिसम्बर को आकाशवाणी की राजेन्द्र प्रसाद स्मारक व्याख्यान माला में 'साधुमन' और 'लोकमत' पर दो व्याख्यान दिए थे।

रचनाएँ – 'छितवन की छाँह' (1976), 'तुम चन्दन हम पानी', 'आंगन का पंछी' और 'बनजारा मन', 'कदम की फूली डाल'।

'हिन्दी और हम', 'हिन्दी साहित्य का पुनरालोकन', 'साहित्य के सरोकार', 'व्यक्ति व्यंजना', 'भारतीय संस्कृति के आधार', 'बसन्त आ गया पर कोई उत्कण्ठा नहीं', 'फागुन दुइ रे दिना'।

पुरस्कार तथा सम्मान – विद्यानिवास मिश्र ने कुछ वर्ष 'नवभारत टाइम्स' समाचार पत्र के सम्पादक का दायित्व भी सम्भाला। उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' के 'मूर्तिदेवी पुरस्कार', 'के. के. बिड़ला फाउंडेशन' के 'शंकर सम्मान' से नवाजा गया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' और 'पद्म भूषण' से भी सम्मानित किया था। राजग (राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन) शासन काल में उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया।

निधन – 'पद्म भूषण' विद्यानिवास मिश्र राज्यसभा सांसद के रूप में कार्य करते हुए 14 फरवरी, 2005 को एक सड़क दुर्घटना के कारण लगभग अस्सी वर्ष की उम्र में दिवंगत हुए। उस समय साहित्य जगत को यह एहसास होना स्वाभाविक ही था कि हिन्दी के ललित निबन्धों का पुरोधा असमय ही चला गया।

अभ्यास हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

1. भारत में गौरैयों को लेकर क्या धारणा है?
2. चीन किस प्रकार का देश है?
3. लेखक मिनी को किस प्रकार बड़ी मानता है?
4. चीन में किसके खिलाफ व क्यों सामूहिक अभियान चलाया गया?
5. भारत और चीन देश की वैचारिक भिन्नता के बारे में लिखिए।
6. आँगन का पंछी निबन्ध का सार लिखिए।
7. डॉ. विद्यानिवास मिश्र का जीवन परिचय दीजिए।
8. डॉ. मिश्र की पाँच रचनाओं के नाम लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'आँगन का पंछी' के रचनाकार कौन हैं–
   - i. महादेवी वर्मा — ii. हजारी प्रसाद द्विवेदी
   - iii. हरिशंकर मिश्र — iv. विद्याानिवास मिश्र
2. गौरैया, पक्षियों में क्या है–
   - i. शिकारी — ii. शिकार
   - iii. ब्राह्मण — iv. दानवी
3. मिनी कौन है–
   - i. बिल्ली — ii. गौरेया
   - iii. लेखक की बेटी — iv. कबूतर
4. चीन में गौरैयों के साथ कौनसा बदला लिया जा रहा है–
   - i. हिटलरशाही — ii. नादिरशाही
   - iii. मानवी — iv. पाश्विक
5. 'बालसखा' के सम्पादक को लेखक ने क्या भेजा–
   - i. कविता — ii. कहानी
   - iii. मिनी की फोटो — iv. गौरैया की फोटो

NOTES

6. लेखक के मार्क्सवादी मित्र ने उन्हें क्या संज्ञा दे रखी है–
   - i. निबन्धकार की
   - ii. साहित्यकार की
   - iii. आनन्दवादी की
   - iv. धरतीवादी की
7. 'बालसखा' के सम्पादक कौन थे–
   - i. विद्या निवास मिश्र
   - ii. महादेवी वर्मा
   - iii. सोहनलाल द्विवेदी
   - iv. इनमें से कोई नहीं
8. 'आँगन का पंछी' कैसा निबंध है–
   - i. ललित
   - ii. ऐतिहासिक
   - iii. राजनीतिक
   - iv. इनमें से कोई नहीं

उत्तर – 1. (iv); 2. (iii); 3. (iii); 4. (ii); 5. (iii); 6. (iii); 7. (iii); 8. (i);

■ ■ ■